सामुद्रिक की लाल किताब
के
अरमान
1940

लाल किताब के रचयिता

पंडित श्री रूपचन्द जोशी जी

18 जनवरी 1898 - 24 दिसम्बर 1982

हिन्दी लिप्यांतरण

मिलख राज बाघला
चंडीगढ़
(फ़ाजिल्का वाले)

सुखविंदर शर्मा
संगरूर
(पिंड - कांझला)

आवाज सुनता हू किसी की
न ही भूला कोई है।
सबसे पहले याद उसकी
फिर सभी दुनिया की है।

ये सफ़ा असली “लाल किताब 1940 अरमान” का नहीं है

रंगों का असर हथेली पर

ये सफ़ा असली “लाल किताब 1940 अरमान” का नहीं है

© विद्यार्थी लाल किताब (हरेश पंचोली) (अहमदाबाद)

* प्रकाशक की अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रोनिक, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि अथवा अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उस का संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

* इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त पर की गई है की प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर पुन: विक्रय, या फिर किराये पर न दी जायेगी, न बेची जायेगी।

* इस प्रकाशन का सही मूल्य पुस्तक के आवरण पर मुद्रित है। रबड़ कि मोहर, चिपकाई गई पर्ची, स्टिकर या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

प्रकाशक :- विद्यार्थी लाल किताब
हरेश पंचोली
(अहमदाबाद)
मूल्य : निशुल्क ("लाल किताब" के विद्यार्थियों के लिए)

पुष्पांजलि

लालकिताब ज्योतिष से संबंध रखने वाले सभी दोस्तों, विद्वानों, विद्यार्थियों और इस विद्या में प्रेम और आस्था रखने वाले भाई बहनों के लिए बड़ी ख़ुशी की बात है की आज 18 जनवरी 2016 को इल्म सामुद्रिक की लालकिताब उर्दू के दो मूल ग्रन्थों "अरमान 1940" और "गुटका 1940" का हिन्दी लिप्यांतरण आप सब को इंटरनेट पर निशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है।

18 जनवरी का दिन लालकिताब ज्योतिष जगत में एक विशेष स्थान और ख़ास मायने रखता है। क्यूँ की ये दिन उस महान शख़्सियत का जन्मदिन है। जिन्होने भारतीय ज्योतिष समाज को एक नयी कल्याणकारी विद्या का तोहफा दिया। उस महान शख़्सियत का नाम है पंडित श्री रूपचंद जोशी जी (पिंड - फ़रवाला, पंजाब) जिन की जन्म तिथि है 18 जनवरी 1898।

उन के द्वारा जारी की गई इस कल्याणकारी विद्या को आगे बढ़ाने हेतु, सुगमता पूर्वक जनसाधारण तक पहुचाने हेतु और उस पर शोध एवम अनुसंधान करने हेतु **"लालकिताब के विद्यार्थी"** ग्रुप ने संकल्प लिया है। जीसके पहले चरण में लालकिताब के सभी (पांचों) मूल अंक जो की उर्दू में हैं उन का हिन्दी लिप्यांतरण करके जनसाधारण को निशुल्क उपलबद्ध करवाना और इस के इलावा उर्दू के सभी असल मूल अंक भी इंटरनेट पर निशुल्क उपलबद्ध करवाना। दूसरे चरण में इस विद्या से संबंधित सभी प्रकार की साहित्य सामग्री इकट्ठी करना, पंडित जी के जीवन के संदर्भित जानकारियाँ इकट्ठी करना और पंडित जी द्वारा पढ़ी गयी या देखि गयी जन्म कुंडलियाँ प्राप्त करके इस सारे ज्ञान साहित्य को इंटरनेट पर डाल कर निशुल्क उपलब्ध करवाना और तीसरा चरण है इस विद्या पर शोध और अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाना।

यहाँ पर मैं यह बताना जरूरी है की पिछले वर्ष 18 जनवरी 2015 को इस ग्रुप द्वारा लालकिताब के प्रथम अंक "फ़रमान 1939" का हिन्दी लिप्यांतरण (दुरस्तीयां सहित) इंटरनेट पर उपलब्ध करवाया जा चुका है।

आज 18 जनवरी 2016 को लालकिताब के रचयिता का जनम दिन है। जो लालकिताब ज्योतिष जगत के लिए प्रेरणा दिवस है। इस पावन अवसर पर जो कार्य "लालकिताब के विद्यार्थी" ग्रुप ने किया है। वह अत्यंत सराहनीय है। जिसके लिए इस के सभी सदस्य बधाई के पात्र है। जिनहोने

दिन रात अनथक महेनत करके इस महान कार्य को अंजाम दिया है।

मुझे उम्मीद है लालकिताब प्रेमियों के लिए ये तीनों किताबें (जो लालकिताब के विद्यार्थी ग्रुप ने डाली है) सहायक और कल्याणकरी साबित होंगी और इस विद्या को आगे बढ़ाने में एक मील पत्थर का काम देंगी।

अंत में मैं एक बार फिर इस ग्रुप के सभी सदस्यों तथा विशेष रूप से ग्रुप सदस्य श्री हरेश पंचोली (विद्यार्थी लालकिताब - अहमदाबाद - गुजरात) जिन के अदम्य साहस, प्रेरणा और अनथक महेनत के फल स्वरूप लालकिताब के ज्ञान क्षेत्र में "एक नयी किरण एक नयी रोशनी" का प्रकाश महसूस कर रहा हूँ, को इन के प्रयासो के लिए बधाई और शुभकामनायें देता हूँ।

"लालकिताब के विद्यार्थी" ग्रुप द्वारा पंडित जी के जन्मदिन पर किया गया ये कार्य उन के श्री चरणों में ग्रुप कि तरफ से अर्पित प्यार भरी "एक पुष्पांजलि" है।

मिलख राज बाघला
चंडीगढ़
(फ़ाज़िल्का वाले)

"लाल किताब एक अनुठा ग्रंथ"

लालकिताब के रचयिता पंडित श्री रूपचंद जोशी जी के द्वारा लिखे गये 5 ग्रंथ अलग अलग सालों में उन के भाई गिरधारी लाल शर्मा जी के नाम से प्रकाशित हुए थे। पंडित श्री रूपचंद जोशी जी द्वारा तमाम की तमाम किताबे उर्दू में लिखी गई थी। आज कल के दौर में उर्दू जानने वालों की कमी के होते हुए इस महान ग्रंथ को पढ़ना या समझना मुश्किल हो रहा था। कुछेक हिन्दी लिप्यांतरण उपलब्ध है पर सब के लिए खरीद करना पाना मुश्किल हो जाता है। इस वजह से ये सोच विचार के बाद तय किया गया की 5 की 5 किताबे एक एक कर के इंटरनेट पर निशुल्क उपलब्ध करवायी जाएँ।

इस कार्य को मेरे दोस्त हरेश पंचोली जी ने पिछले वर्ष शुरू किया था और इस की आगे की कड़ी में जुडने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। पंडित श्री रूपचंद जोशी जी की 119वीं वर्षगांठ के पावन पर्व पर पंडित जी के आशीर्वाद और आप सब के लाल किताब के प्रति स्नेह के कारण दूसरी शृंखला में "लालकिताब के अरमान 1940" इंटरनेट पर निशुल्क उपलब्ध करवाते हुए अपने आप को हर्षित और सौभाग्यशाली महसूस कर रहा हूं।

इस पूरे कार्य को हमारे ग्रुप "लालकिताब के विद्यार्थी" के सभी सदस्य ने मिलकर ही किया है।

सुखविंदर शर्मा
संगरूर
(पिंड - कांझला)

ये सफ़ा असली "लाल किताब 1940 अरमान" का नहीं है

सरसरी नोट

लाल किताब 1939 के सरसरी नोट के बाद

(5) अरमानों में लंबी लंबी इबारत लिखने के बजाए सिर्फ़ हवाला लाल किताब लिखा है। जिस से लिखी हुई इबारत के सबूत की शहादत से मुराद नहीं बल्कि इबारत मज़कुरा के बाद और इबारत साथ मीला लेने की तरफ़ इशारा है। इस लिए हवालों की इबारत को जरूर साथ मिलाकर पढ़ते जावें।

(6) कुंडली का बनाना और उसकी दरुस्ती का जांचना तमाम मुतल्लका इल्म की वाक़फ़ि के बाद शुरू करें और दौराने वक़्त में अरमान नंबर 181 के असूल पर इस किताब के आख़िर पर दिए हुए फॉर्म को साथ लेकर तजुर्बा हासिल करें।

(7) बताये हुए फ़रमान के जवाब की गलती बताने वाला इस इल्म को बढ़ाने के लिए सब से मददगार दोस्त होगा।

(8) बात की असलियत पाने के लिए किसी दूसरे इल्म या आलम की बदखोई से परहेज़ चाहिये।

(9) इस में शक़ नहीं के निंदक और अहमक़ मखौल उड़ाने वाले से क़राहत आ ही जाया करती है मगर दुनियावी साथियों को हस्ब-ए-हैसियत इस इल्म से फ़ायदा पहुचाना इंसानी शराफ़त होगी ख़्वाह फ़ायदा उठाने वाला शख़्स कृतघ्न या नाशुक़रा ही क्यूं न हो।

"कर भला होगा भला आख़िर भले का भला"

लाल किताब के अरमान

1. सबसे पहले इस किताब के आख़िर पर दी हुइ फ़ेहरिस्त (तमाम) दरुस्ती के मुताबिक लाल किताब को दरुस्त कर लें। (ये दरुस्तियाँ 1939 में कर ली गई है)

2. फ़रमान व अरमान दोनों एक ही नंबर के हैं। इसलिये दोनों को इकट्ठा मिलाकर पढते जावें। इन शर्तों के बग़ैर पढने से कोई मतलब हल न होगा।

अरमान नंबर 1

लाल किताब के मुताबिक बुलंद आसमान की आख़िरी हद और पाताल की गहरी तै से घिरे हुए दरम्यानी ख़ाली खलाव या आकाश में ग़ैबी और ज़ाहिरा हवा के दोनों जहानों में आने जाने के कुल रास्तो को जनम मरण की गांठ लगा देने वाली चीज बच्चा कहलायी। ज्यूं ही कि इस बच्चे ने इधर का रुख़ किया बंद मुट्ठी के आकाश में 9 निधि की अटल ताक़त व 12 सिद्धि की ख़ुद अपनी हिम्मत की हवा (बरूये हस्त रेखा) कुण्डली के आकार में ग्रह व राशि (बहिसाब इल्म ज्योतिष) नारया बैल के सींगो पर कुल दुनिया की धरती माता का बोझ या ज़मीन का अपने महवर पर घूमने का कियास (बखयाल दीगरां) का चक्कर पहले ही घुमने लगा। मालिक के हुकम के क़रिश्मे की चमक से क़िस्मत की आवाज का प्रकाश होते ही इसकी हर गांठ के साथी

बृहस्पत शुक्र चंदर बुध
" सिधी बारह - ब्रह्म - नौ निधी - मोह - माई - आकाश,

राहु केतु सनीचर मंगल सूरज
राई घटे न तिल बढे - मच्छ - भाई - प्रकाश।"

आ हाज़िर हुए।

ग्रहों के इलावा सिर्फ़ नौ निधी बारह सिद्धि के हरफ़ ख़ाली बचते हैं। यही दो हरूफ़ दुनियादारों ने बच्चे का नाम रखा। इसीलिये सिर्फ़ नाम पर ही बाज़ों ने क़िस्मत का असर माना है। (1) नौ ग्रह जरब बारह राशि कुल 108 गांठ की माला का सीधा उल्टा चक्कर माना गया है। जो 35 साला चक्कर का पहला व दूसरा हिस्सा होता है। (2) मुकम्मल इन्सान के नाम से पहले 9X12 = 108 का हिंदसा लिखते हैं।

आगाज़

बुध (आकाश) और बृहस्पत (हवा) को गांठ लगाकर बांध लेने वाली चीज को बच्चा गिना तो बच्चे की हर गांठ से नौ ग्रहों की मिलायी हुइ चमक इंसानी क़िस्मत का खज़ाना हुइ और इन सब गांठो से गांठा हुआ सामुद्रिक का इलम सब भेदों के खोलने वाला मुकर्रर हुआ। जिसमें बंद मुट्ठी को ग्रह कुण्डली माना गया। तो

(ये कुण्डली तमाम ग्रहों के अपने अपने ऊंच होने के घरों की बुनियाद पर रखी गयी है।)

कुण्डली के खाने लाल किताब का आम असूल

इल्म ज्योतिष की जनम राशि (लगन) लाल किताब में मेख राशि होगी। जिसका पक्का घर हमेशा हिंदसा नंबर 1 वाला होगा। जिसके बाद बाकी घर बातरतीब होंगे।

बंद मुट्ठी का अंदर या बच्चे का साथ लाया हुआ अपनी क़िस्मत का खज़ाना (तमाम ही नर ग्रह) } 1 - 7 - 4 -10 होंगे

जवानी का हाल देखने के खुद अपना बचपन और जनम से पहले वालदैन की हालत } 9 - 11 - 12 होंगे

औलाद के जनम दिन से अपना बुढापा - मरने पर इसके बाकी रहे हुओं का हाल } 2 - 3 - 5 - 6 होंगे

मौत बीमारी मंदा जमान .... 8 - मारग अस्थान होगा

100 फ़ीसदी द्रष्टि के खाने .....1 - 7 - 4 - 10 होंगे। साथ लाये हुए भरे खज़ाने।

50 फ़ीसदी द्रष्टि के खाने........3 - 11 - 5 - 9 होंगे दूसरों की मदद से पैदा करदा हालत

25 फ़ीसदी द्रष्टि के खाने .... 2 - 6 - 12 होंगे रिश्तेदारों से ली हुइ चीजें।

आगे की बजाये पीछे को देखने वाला ख़ाना नंबर 8 मौत नमानी का फंदा गिना है।

अरमान नंबर 2

हस्त रेखा या ज्योतिष के मजमुआ से या दोनों में से किसी एक के जरिये से दूसरे को पैदा कर लेने वाले मजमून को इल्म सामुद्रिक कहा है। जिससे हस्ती से नेस्ती या नेस्ती से हस्ती का भेद खुलता है या ख़ासीयत से इसके मुतल्लका ठोस हाथ में आ जाने वाली चीज या ठोस चीज से उसका हवाई और ख़याली असर का पता चल जाता है और इस रूह बुत के हवाई व बदनी मैदान का अंदर-बाहर या इन्सानी व ख़ुदाई राज का बाहमी ताल्लुक चलता है।

अरमान नंबर 3

रूह बुत के झगड़े के मालिक इंसानी जिस्म के हिस्से और उनकी हर इक ताक़त। हस्त रेखा के तमाम जुज। कुण्डली की 12 राशियां और 9 ग्रहों की चाल व बाहम लगाव झुकाव का पैदा करदा असर। क़िस्मत का क़रिश्मा या ख़ुदाई हुक्म कहलाता है। जिसकी तामील से जनम मरन या शुरू व आख़िर के मैदान की फतैह व शिकस्त का नतीजा ख़ुशी ग़मी की ख़ुश्बू बदबू हुआ करती है।

अरमान नंबर 4

हस्त रेखा व ज्योतिष की बुनयादी चीजों के मुकर्ररा मैदानों से हर शख़्स की क़िस्मत का मैदान मुकर्रर करके एक अक्स से असल चीज की हालत या नकल से असल और असल से नकल करके असल मकसद या बात का पूरा पता चल जाता है। (राहु केतु का ताल्लुक उन ग्रहों में ज़िकर है)।

सफ़ेद कागज (बुध) पर फटकड़ी (बुध) से लिखा हुआ चंदर की रोशनी या पानी में नजर न पड़ा। लेकिन जब सूरज का साथ या आग का ताल्लुक हुआ तो वही गुमनाम हरूफ़ सफ़ेदी से ख़ुद-ब-ख़ुद स्याह हो गये। हुबहू इसी तरह राहु केतु (मशनोई शुक्र गृहस्ती दुनिया में) बुध के आकार में घूम रहे हैं और सूरज चंदर के रास्ते में ख़ुद-ब-ख़ुद पैदा हो जाते हैं।

अरमान नंबर 5

दुनिया की 12 तरफें और हरइक तरफ का इल्म सामुद्रिक में ताल्लुक

राशि	कुंडली का ख़ाना नंबर	मालक ग्रह	तरफ	ताल्लुक
मेख	1	मंगल नेक	तख़्त वजूद	जिस्म के तमाम अजूं-और तमाम दुनियादारों का अलैहदा अलैहदा होते हुए और फिर इकट्ठे एक होकर काम करने की हिम्मत व ताक़त (मानिंद राजा व रैय्यत)
बिरख	2	शुक्र	मोह माया	तमाम चीजों की सिफ़्तों का ऐजान.......
मिथुन	3	बुध	आकाश	मुख़्तलिफ़ चीजों या ताक़तों का एक ही वजूद या एक ही जुज में इकट्ठे होकर काम करना। मर्द औरत के जोड़े से बच्चा बनना।
कर्क	4	चंदर	शुमाल मशरिक़	धन दौलत-शांति- धरती माता- सब का सहारा।
सिंह	5	सूरज	मशरिक़	रोशनी-रूह-आग-क़िस्मत की चमक।
कन्या	6	बुध	शुमाल	अंदरूनी अक्ल- भाखया भाव अपार-रिश्तेदार-नक्कारा खलक।
		केतु	पाताल	नेकी-फलना फूलना
तुला	7	शुक्र	जनूब मग़रिब	गृहस्त उन्नति-बढना (नसल दर नसल)
बृच्छक	8	मंगल बद	जनूब	मौत-मंदे हाल-बदी। हरएक का फंदा
धन	9	बृहस्पत	ग़ैबी दुनिया	हवा-माता का पेट-पिछला जनम - बुज़ुर्गों की जगह।
मकर	10	सनीचर	मग़रब	अंधेरा - सनीचर की ख़ुद अपनी ताक़त (जाती ताक़त)
कुंभ	11	सनीचर	जनम	छिपे छिपाये अपने ऐजंट राहु केतु से सनीचर का फ़ैसला।
मीन	12	बृहस्पत	शुमाल मग़रिब	दुनयावी धन दौलत का सुख।
		राहु	जनूब मशरिक़	अचानक ख़याल भासरना। श्राप व आशीर्वाद।
		बृहस्पत राहु	आसमान	दोनों जहानों की बजाये सिर्फ़ एक तरफ का बृहस्पत जिसे

आसमान या राहु दो की बजाये एक ताक़त का कर देगा। यानि बृहस्पत राहु के साथ आसमान के ऊपर हुआ तो ग़ैबी ताक़त का मालिक अगर आसमान के नीचे दुनिया की तरफ हुआ तो गृहस्ती गुरू होगा।

गर्जेकि राहु के साथ होने पर आसमान नीले रंग वाला बृहस्पत को सिर्फ़ एक तरफ का मालिक कर देगा। दूसरे हिस्से के लिये बृहस्पत चुप होगा।

ख़ाना नंबर 8-11 में सनीचर का राहु केतु का ताल्लुक-

ख़ाना नंबर 8 सनीचर का हैडक्वाटर है। जहां की राहु केतु नेकी बदी के कारनामें सनीचर को पहुंचाते हैं। उन कारनामों को साथ लेता हुआ ख़ाना नंबर 11 में जाकर सनीचर दोनों जहान के गुरू (बृहस्पत का घर) के दरबार में ख़ुदा को हाज़िर नाज़िर कह कर फ़ैसला करेगा। जिसमें बृहस्पत की रजामंदी जरूरी होगी।

कुंडली के 12 ख़ाने

मकान का ताल्लुक (अरमान नंबर 95) से मुतल्लका	ख़ाना नंबर	इन्सान का ताल्लुक अरमान नंबर 94 से मुतल्लका
चार दीवारी मय तै ज़मीन के गोशे	1	रूह - नमक
मकान का वास्ता यानि घर है या बैठक, गुरूदवारा है या ज़िबह ख़ाना वग़ैरह।	2	सुभाव (नेकी) - भूक
मकान के साजो सामान वासते आरायश (अंदरूनी)	3	जिगर - ख़ून - मीठा
मकान की तै ज़मीन (ख़ाली तै)	4	दिल - दूध - धनदौलत
रोशनी व हवा	5	हवास खेमा - पांच इंद्रियों की ताक़त } हाजमा
हमसाये यानि पड़ोसी इर्द गिर्द वाले	6	पट्ठे नाड़ें, ज़ायका, साग सब्जी, फूल पतर
पलस्तर , सफ़ेदी	7	चेहरा, घी जर्द
छत	8	पित, बदहजमी, कड़वाहट
कच्चा पक्का, मय हर हिस्से की अंदर की पैमाइश	9	सांस, मूल , जड़
लोहा लकड़ी (ईंट पत्थर)	10	बाल , कांटे
मकान की शान व शौकत (जाहिरदारी)	11	पुस्त, खाल, छिलका, परविरश
आबाद या वीराना	12	हड्डी, खटाई

कुण्डली के 12 खाने

असर मुतल्लका	ख़ाना नंबर	हस्त रेखा के जुज
(माता, भुआ, मासी, फूफी वगैरह)। (औरत, बेवा औरतें या माशूका) } स्त्री ताल्लुक	2	अगुंलियां (लंबाई,छोटाई,सीधी,टेढी) पेशानी पर तिलक की ख़ास जगह
बदनामी या चालाकी की शोहरत व चमक। मर्द औरत का बाहमी साथ	B12 *	हथेली व अंगुलियों का मय अंगूठा अंदर या बाहर को झुकाव। नाख़ून पांवो के।
अपनी जाती ख़ासीयत(रूहानी, जिस्मानी, दिमाग़ीं)मकानात के इर्द गिर्द की चीजों का ताल्लुक	A6 *	चेहरा व पेशानी का हाल। नाख़ून हाथ के। इन्सान ख़ुद किस ग्रह का है।
मकानात का बनना वगैरह। पराई दौलतका मिलना।	7	जिस्म के बाल। हथेली की हर हालत का हाल।
दुनिया में नाम किस हैसीयत का होगा। } मर्दों का ताल्लुक	1	हाथ पर ख़ास निशान ।
कुदरती तौर पर तबीयत का झुकाव क्या होगा।	4	चक्र शंख सदफ। अंगुलियों पर जौ के निशान।
सेहत व आम बरताओ	10	बडी तिकोन, बडी मुस्तैल
आम ख़ुशी व ग़मी की औसत हालत चोरी यारी -नुक़सान-अय्यारी(ठग्गी)	3	मंगल के बुरजों की चरबी का भर जाना। ख़ुशी ग़मी की रेखा।
आराम या हराम खोरी	9	अंगुलियों पर सीधे खडे या लेटे हुए खत।
चालाकी की चमक- बदनामी की शोहरत।	B12 *	हथेली पर बृहस्पत के खत अगुंलियों पर के बृहस्पत(बजज ऊपर के ख़ाना नंबर 4) के निशान।
औलाद व अपने ख़ून का ताल्लुक। नेकी की मशहूरी।	5	रफ़्तार, गुफ़्तार, तहरीर, अंगुलियों के दरम्यान की ख़ाली जगह।
आमदन, आयी चलायी का जरिया।	11	हाथों की किसमें हर अजू मय नाख़ून का हाल रंग - वो किस किस तरह के हैं। पेशानी सिवाय तिलक की ख़ास जगह का हाल।
अपने वालदैन की तरफ से रिश्तेदार (नानके वगैरह)	A 6 *	कद व कामत, हथेली व अंगुलियों की तनासब का असर
मौत नमानी	8	सब की ख़त्म कहानी

अरमान नंबर 6

हाथ व पावों की अंगुली के नाख़ून के सिरे से कलाई व टखने तक और 9 ग्रह व 12 राशि की कुण्डली से 12 तरफों के दरम्यानी मैदान में बनातात, जमादात, इन्सानात(तो क़िस्म क़िस्म के लोग), हैवानात, मकान आम व ख़ास व जाये रिहायश, ख़्वाब, शगुन, माल - मवेशी, चरिंद, परिंद, दरिंद, दोस्त व दुश्मन, ज़हर व अमृत, दुन्यावी दीगर साथियों और इल्म क्याफ़ा वगैरह से जो सामुद्रिक के जरूरी हिस्से हैं। वक्त से पहले ही लिखे हुए 9 निधी 12 सिद्धि के खज़ाने की कमी बेशी के मुतल्लका कुदरती और अनमिट (जो मिटाये न जा सकें) लेख या हुक्मनामे को सिर्फ़ पढा ही जा सकता है। मगर इसमें अपनी मर्जी के मुताबिक अदली बदली नहीं की जा सकती। भेद सिर्फ़ शक़्की बात को दरुस्त करके शक़ का फायदा उठा लेने की गुंजाइश है। जो ग्रहफल और राशिफल की मिलावट के वक़्त हुआ करती है। यही एक बात इस इल्म का ख़ास मतलब है।

ग्रहफल व राशिफल

1.) जब कोई ग्रह अपनी मुकर्रर राशि (यानि वो राशि जिसके कि वो घर का मालिक ग्रह गिना जाता है) या ऊंच नीच फल की ठहराई हुइ राशि (फ़रमान नंबर 113 सफ़ा नंबर 114) या अपने पक्के घर (फ़रमान नंबर 103 सफ़ा नंबर 97) की बजाये किसी गैर राशि में जा बैठे या किसी दूसरे ग्रह का साथी ग्रह (जङ अदला बदली कर लेने वाला वगैरह) बन जावे तो वो ग्रह ऐसी हालत में राशिफल या शक़्की हालत का ग्रह होगा। जिसके बुरे असर से बचने के लिये इसके शक़ का फायदा उठाया जा सकता है। इसके बरख़िलाफ़ यानि ऊपर कही हुइ हालत के उल्टे हाल पर वो ग्रह "ग्रहफल" या पक्की हालत का ग्रह होगा। जिसके बुरे असर को तबदील करने की कोशिश करना बेमायनी बल्कि इन्सानी ताक़त से बाहर होगा। सिर्फ़ ख़ास ख़ास ख़ुदा रशीदा और महदूद हस्तियां ही रेख में मेख (रेखा में मेखा - सूरज मेख ख़ाना नंबर 1 में कैद) लगा सकती हैं। वो भी आख़िर तबादला ही होगा। यानि एक जानदार या दुन्यावी चीज या ताक़त को इसकी हस्ती से मिटाकर इसके ऐवज में दुसरा जानदार दुन्यावी चीज या ताक़त पैदा कर देगी। (बाबर हमांयू के किस्से) मगर नया ही दूसरा हिंदसा फिर भी पैदा न होगा। सिवाये उस वक्त के जबकि ऐसी हस्तियां ख़ुद अपनी ताक़त या अपना ही आप तबाह कर लेती हैं और किसी

दूसरे ऐवज तक नौबत नही आने देंते। ये हालत भी उनकी ख़ुदाई शरीक़ होने की होगी। कोई न कोई तबादला दिया ही गया। ग्रहफल फिर भी न टला।

2.) ग्रहफल को अगर राजा कहें ता राशिफल इसका साथी वजीर होगा।

हर ग्रह कौन कौन से घर (राशि नंबर) में राशिफल का होंगा।

"बृहस्पत"

कुण्डली के ख़ाना नंबर......6.......में.........केतु का उपाय नेक फल पैदा करेगा।

कुण्डली के ख़ाना नंबर.....7.......में.........चंदर के उपाय से नेक फल पैदा होगा।

पापी ग्रहों मय बुध के साथ...मुतल्लका ग्रह हरएक के अलैहदा अलैहदा उपाय से नेक हो।

"सूरज"

i सूरज कभी राशिफल का नहीं होता।

ii सिवाये ख़ाना नंबर 1 व 5 के सूरज जिस राशि में बैठा हो इस राशि का मालिक ग्रह या उस राशि नंबर के मालिक ग्रह का "साथी ग्रह" राशिफल का हो जाएगा। ऐसी हालत में उस राशिफल में हो जाने वाले ग्रह के लिये उस के दुश्मन ग्रह से बचाने के लिये उपाय करें। क्योंकि सूरज ख़ुद कभी नीच नहीं होता। बल्कि अपने दुश्मन ग्रह को नीचे दबा कर इस नीचे दब जाने वाले ग्रह का फल ख़राब कर दिया करता है।

iii ख़ाना नंबर 1 और 5 में बैठा हुआ सूरज हर दोस्त व दुश्मन ग्रह (सिर्फ़ सूरज के ख़ुद दोस्त या दुश्मन) को मदद पर कर दिया करता है। ऐसी हालत में राशिफल का सवाल या किसी उपाय की जरूरत न होगी।

iv महादशा के वक्त ख़राब हो चुके नष्ट या बरबाद या ज़हरीले हुए ग्रहों के असर के लिये जो सूरज के ताल्लुक से राशिफल के हो गये हों ख़ुद सूरज का उपाय ही नेक असर पैदा करेगा। जिस पर वो बरबाद शुदा ग्रह मददगार हो जाएंगे। लेकिन अगर सूरज का ख़ुद अपना ही असर दूसरों पर बुरा हो रहा होवे तो सूरज के दुश्मन ग्रहों को नेक करने का उपाय करें। ये हालत सिर्फ़ ख़ाना नंबर 6 या 7 में सूरज होने की होगी। जबकि बुध का किसी उपाय से नेक कर लेना मददगार होगा। अगर ख़ाना नंबर 7 में सूरज हो और सनीचर का टकराव आवे तो चंदर को नष्ट करने से सूरज की मदद होगी।

"चंदर"

चंदर हंमेशा राशि फल का होता है। खासकरः-

ख़ाना नंबर ....3...में....... चंदर से पूरा नेक मंगल होगा जो दुनिया की तमाम जंग व जदल और मैदाने जंग में पूरी फ़तेह देगा।

ख़ाना नंबर....7............में............ पूरा नेक असर लक्षमी अवतार होगां

ख़ाना नंबर ...8 ....में.............मौत के यम को मारने वाला यमराज लंबी उम्र देने वाला होगा।

"शुक्र"

ख़ाना नंबर..........4.............में ....बृहस्पत का उपाय नेक असर देगा।

"मंगल"

ख़ाना नंबर ....6............में.....सनीचर का उपाय नेक फल पैदा करेगा।

ख़ाना नंबर ....4.........में (मंगलीक)...........चंदर का उपाय मददगार होगा।

"बुध"

1.ख़ाना नंबर.....9......में या ख़ाना नंबर 9 के ग्रहों का साथी ग्रह हो जाने वाला बुध यानि बुध जिस घर में बैठा हो उस घर का मालिक ग्रह ख़ाना नंबर 9 में बैठ जावे।	ख़ाना नंबर 9 के तमाम ही ग्रहों को (ख़्वाह वो बुध के दोस्त हों या दुश्मन या वो बुध से जबरदस्त हों या कमज़ोर) या ख़ाना नंबर 9 के उस ग्रह को जिसका कि बुध "साथी ग्रह" बन रहा हो

अपनी यानि बुध के ख़ाली दायरा की तरह ही बेबुनियाद-मुर्दा और निष्फल (यानि जो कोई भी काम न देवे या किसी भी काम न आ सके) कर देगा ऐसी हालत में नर ग्रहों (सूरज-बृहस्पत-मंगल) से उस नर ग्रह का उपाय करें। जो नर ग्रह कि ख़ाना नंबर 9 के ग्रह का या ख़ाना नंबर 9 में बुध के "साथी ग्रह" हो जाने वाले ग्रह को या ख़ुद बुध को ही बरबाद न करें। फिर यही शर्त मद्देनजर रखते हुए जबकि नर ग्रह काम न आ सकें। स्त्री ग्रहों (चंदर-शूककर) का उपाय करें। अगर इस तरह भी शर्त को मद्दे नज़र रखते हुए काम न बने तो बाकी मख़न्नस ग्रहों की मदद लेंवें। मगर उपायों से बरबाद हो जाने वाले ग्रह का ख़याल न भूल जावें।

ii. ख़ाना नंबर.......10........में.........सनीचर का उपाय मदद करेगा।

iii. ख़ाना नंबर.......12......में ....केतु का उपाय मदद करेगा।

4 ख़ाना नंबर 9 में इतफाकिया सूरज और मंगल मुश्तरका इकट्ठे ही आ जावें ख़्वाह बुध ख़ाना नंबर 3 में हो ख़्वाह ख़ाना नंबर 9 में तो बुनियाद ख़ाली तो न करेगा मगर न ख़ुद बोलेगा न उनको बोलने देगा लसूड़े की गिटक का हाल होगा मंदे मायनों में दोनों ग्रहों को सुला देगा। और ख़ुद भी सोया हुआ होगा। चमगादड़ के मेहमान। जहां हम लटके वहां तुम लटको। उपाय ख़ासः- अरमान नंबर 62 से 94 -" ग्रह नष्ट में मदद" के मुताबिकः- नाक में सुराख़ कर देना । बुध की तमाम गड़बड़ से बचायेगा।

"सनीचर"

ख़ाना नंबर......... 3............में........... केतु का उपाय नेक फल देगा।

ख़ाना नंबर...6....में...राहु का उपाओ इच्छाधारी सांप (मददगार) कर देगा।

ख़ाना नंबर......9.. में...........बृहस्पत का उपाय त्यागी गुरू की तरह मदद देगा।

" राहु "

राहु राशिफल का होगा ख़ाना नंबर...1...में........सूरज का उपाय मदद करेगा

राहु राशिफल का होगा ख़ाना नंबर....7..में........सनीचर का उपाय मदद करेगा

" केतु"

केतु राशिफल का होगा ख़ाना नंबर..4..में.......बृहस्पत का उपाय नेक फल देगा

केतु राशिफल का होगा ख़ाना नंबर..10..में..........मंगल का उपाय मदद करेगा।

मंदरजा बाला खाने 1-7-4-10 बंद मुट्ठी के खाने हैं। इन घरों में राहू या केतु के राशिफल में सिर्फ़ उन घरों के ऊंच ग्रह ही मदद दे सकते हैं।

कौन ग्रहफल का राजा हुक्मरान होगा	कौन इसका साथी वजीर राशिफल का होगा
1- बालिग़ शुदा ग्रह 2- 9 ग्रह 3- क़िस्मत का ग्रह 4- एक दो तीन की तरतीब से पहले घरों के ग्रह जबकि वो अपनी जगह से मिले* हुए हों। (ज्योतिष में)	नाबालिग़ ग्रह 12 राशियां क़िस्मत को जगाने वाला ग्रह बाद के घरों के ग्रह जबकि वो अपनी अपनी मुकर्रर जगह से चल कर किसी दूसरी मुकर्रर जगह हों।

आम तौर पर वर्षफल के हिसाब से तख़्त पर आ जाने वाला राजा बनता है। और राशि

नंबर के हिसाब से बोलने वाला वजीर बनता है। लेकिन अगर ऐसे राजा और वजीर में कुण्डली के पहले घरों और बाद के घरों में होने का सवाल भी साथ झगड़ा खड़ा करे तो पहल घरों वाले बेशक़ आम असूल पर वजीर बनता होवे। मगर अब वो राजा हो जाएगा और बाद के घर वाला इसका वजीर बनेगा। बेशक़ वो राजा बनने का हकदार है।

कौन ग्रहफल का राजा हुक्मरान होगा	कौन राशिफल का इसका साथी वजीर होगा
ज्योतिष में :-	
5. ख़ाना नंबर 1 के ग्रह (या मकान ख़ुद साखता)	ख़ाना नंबर 9 के ग्रह या मकान जद्दी
6. ग्रह का इसके अपने कायम होने की हालत का असर।	ग्रह की बाहम द्रष्टि का असर।
7. तख़त का मालिक ग्रह अपने तख़त के दौरा तक।	राशि नंबर के हिसाब से उम्र पर बोलने वाले ग्रह। अपने राशि नंबर में बोलने की म्याद तक यानि 3 साल।
8. महादशा में धोके का 12 साला चक्र।	तमाम उम्र पर धोके का 12 साला चक्र
9. महादशा में हो जाने वाला ग्रह।	महादशा वाले ग्रह के दोस्त/बराबर के ग्रह
10. जनम वक़्त का ग्रह (पक्की दोपहर मंगल-शाम पूरी राहू वगैरह)	जनमदिन का ग्रह (मुफ़्फ़सल अरमान नंबर 9 में देखें) (इतवार सूरज-वीरवार बृहस्पत वगैरह)

हस्त रेखा में

11. 21 साला उम्र से रेखा।	12 साला उम्र तक रेखा।
12. वो ग्रह जिसका कि वो इन्सान हो।	वो ग्रह जिसका कि इसका मकान हो।
13. मर्द का दायां हाथ मर्द के ख़ुद अपने लिये।	मर्द का बायां हाथ मर्द के ख़ुद अपने लिये।
14. औरत का बायां हाथ औरत के अपने लिये।	औरत का दायां हाथ औरत के अपने लिये।
15. मर्द का बांयां हाथ इसकी औरत के लिये ग्रह फल का नेक नजारा देने वाला।	मर्द का दायां हाथ इसकी औरत के लिये। (नंबर 16 ख़ाली है)
17. औरत का बायां हाथ इसके खाविंद के लिये ग्रह फल का नेक नजारा देने वाला	औरत का बायां हाथ उसके खाविंद के लिये।

18- बच्चा दोनों के लिये राशिफल के देने वाला हुआ करता है।

19-दायें हाथ पर से लिये गये नरग्रह प्रबल। बांये हाथ से लिये हुए स्त्रीग्रह प्रबल।

आगाज़

और मखन्नस ग्रह दोनों में से किसी भी हाथ पर से लिये हुए हर तरफ अपने अपने घरों का जिसमें कि वो पाये जायें असर करने वाले होंगे। औरत का यही हाल उल्ट हाथों से होगा।

ii ग्रहों का निशान हथेली पर और अंगुलियों की पोरियों पर राशि का निशान पक्के असर का होता है। लेकिन इसके बरख़िलाफ़

ग्रहफल का होगा	राशिफल का होगा
20 अंगुलियों की पोरियों पर जिस ग्रह का निशान हो। उस ग्रह की वो राशि (ख़्वाह एक मुकर्रर राशि हो ख़्वाह उसके लिये दो मुकर्रर हों) जिसका कि वो घर का मालिक ग्रह कहलाता है और उस राशि नंबर के तमाम ग्रह जिस राशि नंबर की पोरी पर कि वो ग्रह निशान पाया जावे। ग्रहफल का होगा।	हथेली पर जिस राशि का निशान हो। उस राशि का मालिक ग्रह ओर हथेली के उस राशि नंबर में जिस नंबर पर कि वो निशान पाया जावे। होने वाले तमाम ग्रह राशि फल के होंगे। ii अंगुली की पोरी पर अगर किसी नंबर पर उसी नंबर की राशि के इलावा किसी गैर राशि का निशान पाया जावे तो वो राशि जिसका कि वो निशान है और वो राशि नंबर की जिस में की वो निशान हो तमाम ही ग्रहों के लिये राशिफल का होगा। ख़्वाह वो दोस्त हो या दुश्मन।

कौन ग्रहफल राजा हुक्मरान होगा	कौन राशिफल इसका वजीर साथी होगा
21. मच्छ रेखा काग रेखा धन रेखा या श्रेष्ठ रेखा वगैरह वगैरह मुकर्रर रेखायों से कोई भी या हथेली पर के ख़ास निशान जिन का ज़िकर लाल किताब सफ़ा 76 ता 78 पर दर्ज है। अपनी अपनी मुकर्रर जगह और दायें हाथ पर वाक्या हों। तो ग्रहफल के और अगर अपनी जगह पर की बजाये किसी और जगह मगर दायें ही हाथ पर हों। तो महादशा जिसमें केतु का ताल्लुक होगा असर देंगे।	मच्छ रेखा वगैरह मय ख़ास निशान लाल किताब सफ़ा 76 ता 78 पर मुकर्रर जगह मगर बायें हाथ पर तो राशि फल के होंगे। और अगर बायें ही हाथ पर मगर अपनी अपनी मुकर्रर जगह की बजाये किसी और जगह पर पाये जावें तो महादशा (जिसमें राहु का ताल्लुक हो) का असर देंगे।

आग़ाज़

अपनी मुकर्रर जगह की बजाये जब मच्छरेखा काग रेखा वगैरह किसी और जगह वाक्या हों तो जिस ग्रह की राशि या पक्के घर में बालिहाज़ा बुरज व रेखा वो वाक्या होवे। उस ग्रह की पूजना से नेक फल होगा। मसलन मच्छ रेखा बुध की सिर रेखा पर वाक्या हो तो सनीचर व बुध की चीजों की पालना यानि स्याह परिंन्द व कव्वे की पालना करना मुबारिक अगर शुक्र पर हो तो स्याह गाये वगैरह को पूजना पालना मुबारिक फल पैदा करेगा।

जुज़ 22

आम तौर पर जनम कुण्डली ग्रहफल का असर	आम तौर पर चंदर कुण्डली राशिफल का असर
23. मर्द की जनम कुण्डली ख़ुद मर्द के लिये मर्द पर असर ग्रहफल का।	मर्द की चंदर कुण्डली ख़ुद मर्द केलिये मर्द पर राशि फल का क़रिश्मा यानि महादशा की हालत के उल्ट नेक और अचानक चमकारा।
24. मर्द की चंदर कुण्डली इसकी औरत पर ग्रहफल का नेक नजारा यानि महादशा के अरसा में ख़ाली साल रखे हुओ में क़िस्मत का नेक और अचानक असर देगी।	मर्द की जनम कुण्डली इसकी औरत पर राशिफल (आम साधारण) का असर देगी।
25. औरत की जनम कुण्डली औरत के लिये औरत पर ग्रहफल का असर देगी।	औरत की जनम कुण्डली इसके ख़ाविंद के लिये आम हालत की राशि फल का असर देगी।
26. औरत की चंदर कुण्डली इस के ख़ाविंद के लिये ग्रहफल का नेक नजारा (महादशा के ख़ाली सालों में क़िस्मत की अचानक व नेक चमक होगी।	औरत की चंदर कुण्डली औरत के लिये औरत पर राशिफल।

अरमान नंबर 7

ग्रहण:- महादशा से मुराद दुन्यावी ख़याल में ग्रहण का जमाना होता है। सामुद्रिक में ग्रहण तमाम ही ग्रहों के लिये मुकर्रर है। जिस का मुफ़्फ़सल हाल महादशा में दर्ज है।

अरमान नंबर 8

दो चीजों के/को इकट्ठा होने/करने की हालत का नाम गांठ या ग्रह कहलाता है या दूसरे लफ्जों में बृहस्पत (हवा) बुध (आकाश) को इकट्ठे बांध देने वाली चीज की ताक़त या बच्चे

की क़िस्मत की उलझन पैदा करने वाली चीज ग्रह है। जिसका असर हू ब हू "रस्सी जल गई - मगर बट्ट न गया " की मिसाल से जाहिर है। रस्सी को मोङ तोङ कर इधर उधर पक्के तौर पर किये रखने वाली चीज का नाम ग्रह है। जो "रस्सी का बट्ट" है। उम्र ख़त्म हुइ मगर क़िस्मत का ताल्लुक चलता रहा।

अरमान नंबर 9

अंग्रेजी हिसाब में रात के 12 बजे के बाद दूसरा दिन शुरू होता है। मगर इल्म सामुद्रिक में सूरज निकलने से नया दिन शुरू होता है। यानि रात को गुजरे हुए दिन का हिस्सा लेकर नये सूरज से दूसरा दिन शुरू गिनेंगे।

हफ्ते में ग्रह का दिन	एक दिन में ग्रह का वक़्त
बृहस्पत.........वीरवार	सूरज निकलने से दिन का पहला हिस्सा
सूरज..............इतवार	दिन के पहले हिस्से के बाद मगर पक्की दोपहर से पहले।
चंदर.........सोमवार	चांदनी रात
शुक्र..........शुक्रवार	अंधेर पक्ष और चानन पक्ष की दरम्यानी या अमावस की रात।
मंगल(दोनों)...मंगलवार	पूरी दोपहर का हिस्सा।
बुध.................बुधवार	दोपहर के बाद मगर पूरी शाम से पहले।
सनीचर..........सनीवार	काली रात या घनघोर काले बादल का दिन
राहु वीरवार की शाम पक्की	पूरी शाम मगर रात से पहले।
केतु..इतवार की सुबह सादिक	सुबह सादिक मगर सूरज निकलने से पहले।

एक दिन में हर ग्रह का पक्के तौर पर मुकर्रर वक़्त की युनिट के लिये फ़ि यूनिट का वक़्त 40 मिनट वगैरह लाल किताब 117 सफ़ा पर दर्ज है।

नर ग्रहों (बृहस्पत, सूरज, मंगल) का राज दिन- स्त्री ग्रहों (चंदर शुक्र) का राज रात और मखन्नस (बुध मय पापी ग्रह) ग्रहों का राज दिन रात दोनों के मिलने का वक़्त या सुबह शाम होगा।

जनम दिन और वक़्त जनम का जब एक ही ग्रह हो जावे (मसलन मंगलवार का दिन और मंगलवार की पक्की दोपहर के वक़्त की पैदाइश) तो ऐसा ग्रह कुण्डली वाले का कभी बुरा न करेगा।

और न ही कभी धोका देगा। बल्कि मौत भी उसी दिन और उसी दिन के उसी वक़्त न होगी। बेशक़ चंद्रमा के हिसाब से (लाल किताब सफ़ा 320 जुज 9) मौत का वो दिन आवे। बशर्तेकि कुण्डली में भी वो ग्रह (वही मिसाल मंगल जो ऊपर कहा वगैरह) कायम होवे। कायम की तारीफ़ जुदी जगह लिखी है।) बाकी हालतों में जबकि जनम दिन तो किसी ग्रह का हो और जनम वक़्त किसी और ही ग्रह का हो तो ऐसी हालत में जनम दिन और जनम वक़्त के ग्रहों की सब हालतें ग्रहफल राशिफल बराबर के ग्रह या बाहमी दोस्ती दुश्मनी के नतीजे का असर होगा।

1. जनम वक़्त को गिनते हैं.......क़िस्मत का ग्रह और ग्रहफल का।
2. जनम दिन को गिनते हैं.........क़िस्मत के ग्रह को जगाने वाले ग्रह का पक्का घर

मसलन पैदाइश हो सोमवार ब-वक्त पक्की शाम। अब राहु (जनम वक़्त का ग्रह) होगा चंदर (जनम दिन) के पक्के घर नंबर 4 में। यानि कुण्डली वाले के लिये जब कभी और जो भी ख़ाना नंबर 4 का असर होगा राशिफल का होगा। जिसका चंदर के उपाय से नेक असर होगा या राहु इस शख़्स के ख़ाना नंबर 4 की चीजों पर बुरा असर करने के वक़्त राशि फल का होगा। ख़्वाह वो ग्रह (जनम वक़्त का) अरमान नंबर 6 के मुताबिक राशिफल का न भी हो। लेकिन अगर जनम वक़्त का ग्रह (पैंदाइश के हिसाब से जो भी होवे) ऊपर की मिसाल के मुताबिक अरमान नंबर 6 में हर ग्रह के ख़ास ख़ास घर राशिफल वालों में आ जावे तो अरमान नंबर 6 में दिया हुआ उपाय मददगार होगा। जिसके लिये बदला जाने वाला या उपाय के काबिल जनम दिन का ग्रह लेंगे जनम वक़्त का नही।

मसलन किसी की मंगलवार सुबह के बाद दिन का पहला हिस्सा (बवकत बृहस्पत) पैदाइश है। अब जनम वक़्त बृहस्पत का ग्रह मंगल के पक्के घर ख़ाना नंबर 3 में होगा। फरजन अब बृहस्पत का ग्रह ख़ाना नंबर 3 का होता हुआ (लाल किताब सफ़ा 180 पहली सतर ऊपर से) बीमारी ही बीमारी खड़ी करता जावे तो मंगल का ग्रह राशिफल का होगा। जो जनम दिन का ग्रह गिना था। अब अरमान नंबर 6 में देखा तो मालुम हुआ कि मंगल सिर्फ़ ख़ाना नंबर 4 और 6 में ही राशिफल का लिखा है। मगर ऊपर की मिसाल में **मंगल** ही उपाय के काबिल है। बृहस्पत का उपाय तो कर ही नहीं सकते यानि जायज़ नहीं। ऐसी हालत में मंगल का आम उपाय ब-मूजब लाल किताब सफ़ा 118 जुज 5 करना मददगार होगा।

अरमान नंबर 10

क़िस्मत:- हरइक क़िस्मत के ग्रह को (अरमान नंबर 122 से मुतल्लका) क़िस्मत रेखा कहते हैं। जिसके जागने का वक़्त क़िस्मत के असर का वक़्त होगा। क़िस्मत के ग्रह कई एक हों तो वा सब बाहम पूरे मददगार होंगे। सबसे अच्छी क़िस्मत बृहस्पत का क़िस्मत का ग्रह होता है।

"क़िस्मत का ग्रह":- सबसे उत्तम दर्जा पर वो ग्रह होगा। जो राशि का ऊंच फल देने का (लाल किताब सफ़ा 114 फ़रमान नंबर 113) मुकर्रर है। जो हर तरह से कायम-साफ और दरुस्त हो और इसमें किसी तरह से भी "साथी ग्रह" होने बामुकाबिल के ग्रह या दुश्मन ग्रह का बुरा असर न मिला हुआ होवे। उसके बाद पक्के घर का ग्रह-घर का मालिक ग्रह -दोस्त ग्रहों का बना हुआ दोस्त ग्रह। क़िस्मत का मालिक ग्रह होगा।

क़िस्मत के ग्रह की तलाश की तरतीब:- सबसे पहले १२ राशियों के ऊंच फल देने वाले ग्रहों की तलाश करें। फिर 9 ग्रहों से जो उमदा हो ले लेवें और बाद में बंद मुट्ठी के खानों (1-7-4-10) के ग्रहों से जो उमदा हो लेंवें। ऊंच फल देने वालों में से जो सबसे तसल्ली बख़्स और ऊंच हो लेंवे। घर के मालिक ग्रहों से सबसे ज्यादा ताक़त (अरमान नंबर 27) वाले को लेंवे। अगर मुट्ठी के चारों खाने ख़ाली (लफज ख़ाली से मुराद है कि वहां भी पूरी तरह का क़िस्मत का ग्रह न होवे) हों तो ख़ाना नंबर 9 के ग्रहों को लेंगे। वो भी ख़ाली तो फ़िर ख़ाना नंबर 3 के ग्रहों को लेंवें। अगर वो भी ख़ाली तो ख़ाना नंबर 11 के ग्रह लेंगें। अगर वो भी ख़ाली तो ख़ाना नंबर 5 को लेगें। वो भी ख़ाली हो तो दूसरा दरवाजा ख़ाना या नंबर 2 को लेंगे। अगर वो भी ख़ाली तो ख़ाना नंबर 6 देखेंगे। वो भी ख़ाली तो ख़ाना नंबर 12 में तलाश करेंगें और अगर वो भी ख़ाली हो तो ख़ाना नंबर 8 में बैठकर देखेंगे कि आया क़िस्मत का ग्रह जिसमें ऊपर की तमाम शर्तें न हों मर तो नही गया। (मुफसल जुदी जगह) ये तलाश जनम लगन की कूण्डली और चंदर कुण्डली दोनों से होगी। हस्त रेखा में दायां और बायां हाथ दोनों और हस्त रेखा के तमाम हिस्से शामिल होंगे।

आगाज़

क़िस्मत के ग्रह को जगाने वाला ग्रहः- जब पहले घरों में कोई ग्रह न हो तो बाद के घरों के ग्रह सोये हुए माने जाते हैं। ऐसी हालत में क़िस्मत के ग्रह को जगाने वाले ग्रह की तलाश की जरूरत होगी और अगर बाद के घर ख़ाली हों तो ख़ाना नंबर को जगाने वाले ग्रह के उपाओ की जरूरत होगी जो कि ख़ाली है। (ग्रह का जागना और ख़ाना नंबर का जागना दो जुदी जुदी बातें हैं)।

अगर किसी पितरी रिन (खानदानी पाप जिसका जुदा ज़िकर है) महादशा या दूसरे सबब से क़िस्मत का ग्रह सो जावे नष्ट बरबाद या गुम ही हो जावे तो सब से पहले ऊपर क़िस्मत के ग्रह की तलाश की तरतीब से ख़ाली खानों के घर के मालिक ग्रह को जगा दें। यानि इसका उपाय करें। बशर्तेकि वो क़िस्मत के ग्रह के बराबर का ग्रह होवे। या दोस्त होवे। इस के बाद महा दशा के वक़्त में काम देने वाले ग्रह लेंवे। बाद अजां दुश्मन ग्रहों की दुश्मनी हटादें या राशिफल की हालत का फायदा उठावें। अगर ये भी काम न दे सके तो सूरज को कायम करें। अगर ये भी मदद न देवे तो पापी ग्रहों और सबसे आख़िर पर बुध का उपाय करें।

ख़ाना नंबर को जगाने वाले ग्रह

ख़ाना नंबर को जगाने वाले ग्रह	मंगल	चंद्र	बुध	चंद्र	सूरज	राहु	शुक्र	चंद्र	बृहस्पत	शनीचर	बृहस्पत	केतु
ख़ाना नंबर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

क़िस्मत का असरः- अरमान नंबर 114 देखें।

क़िस्मत का फ़ैसलाः- उम्र के लिहाज़ से धोके के ग्रह व वर्षफल और राशि नंबर के बोलने वाले ग्रहों का मुश्तरका नतीजा क़िस्मत का फ़ैसला करेगा।

मियाद उपाय - रियायती चालीस दिनः- चूंकि गिनती के लंबे हिसाब को इस इल्म में उड़ाने के लिये 28 नछतर और 12 राशि को बाद में छोड़ ही दिया जाता है। इसलिये दोनों की जमा (28+12) कुल 40 दिन रियायती तक कम अज कम या ज्यादा से ज्यादा 43 दिन तक उपाय का असर पूरा होगा। जिसकी निशानी वक़्त से पहले ही नेक ग्रह का असर हो जाने के वक़्त दोस्त ग्रह की चीजों की कुदरती निशानीयां और बुरे ग्रह की मियाद

40 दिन बाद तक रहने वाली हालत में पापी ग्रहों की निशानीयां हुआ करती हैं। दौरान उपाय 40 दिन की नसफ या चौथाई मियाद में भी नसफ या चौथाई असर मालूम होने लग जाया करता है।

अरमान नंबर 11

किसी ताक़त के ग्रह की पहचान (i) (बरूये हस्त रेखा)

जिस किसी शख़्स में जिस ग्रह की ताक़त ज्यादा होगी वो शख़्स ज्यादा ताक़त वाले ग्रह की चीज का ज्यादा इस्तैमाल करने का आदी न होगा। मसलन सूरज को नमक माना है और मंगल को मीठा। अब सूरज वाले की आम आदत होगी कि वो ज़्यादा नमक इस्तेमाल करने का आदी न होगा और अपनी कमी पूरी करने के लिये मीठा ज्यादा इस्तेमाल करने का आदी होगा। इसी तरह मंगल कायम वाला मीठा ज्यादा इस्तेमाल न करेगा। नमक का ज्यादा आदी या नमक ज्यादा मिकदार में खाने वाला होगा।

(ii) बरूये कुण्डली:- बंद मुट्ठी के खानों (1-7-4-10) के ग्रह ख़्वाह भले हों ख़्वाह बुरे कुण्डली वाले की तबीयत और क़िस्मत के बुनयादी पत्थर होंगे।

अरमान नंबर 12

बड़ी रेखा:- हर ग्रह की मुकर्रर रेख या पक्का ग्रह।

शाख़ें:- हर ग्रह की मुकर्रर रेखा की शाख़ या ग्रह मशनोई हालत का।

पक्के ग्रह का असर अपनी मुतल्लका चीजों का जरूर होगा। मशनोई ग्रह अपने पक्के ग्रह की मुतल्लका चीजों का असर देगा। लेकिन वक़्त मशनोई ग्रह के हर दो जुज व अपने मशनोई हालत के दोनों जुजों के ग्रहों की मुतल्लका चीजों का असर भी दे जाता है। मसलन सूरज पक्का ग्रह है और शुक्र बुध मशनोई सूरज। अब सूरज हंमेशा अपना असर सूरज रेखा या सूरज की सेहत या तरक्क़ी रेखा ख़ाना नंबर 1-5 असर देगा। लेकिन शुक्र बुध मुश्तरका मशनोई हालत में सूरज का असर या शुक्र की आम या शुक्र की शादी रेखा और बुध सिर की रेखा का भी हर दो ग्रह ख़ाना नंबर 7 का असर दे जायेगा। लेकिन वो भी उम्र के हर सातवें या हर आठवें साल (अल्प आयु)।

हस्त रेखा में 21 साला उम्र से रेखा बालिग़ और 12 साला उम्र तक नाबालिग़ गिनते हैं।मगर कुण्डली में वर्षफल के हिसाब से उम्र में जिस दिन से (सबसे पहली दफा)सूरज का राज या दौरा शुरू हो जावे। उस दिन से तमाम ग्रह बालिग़ गिने जाते हैं। ख़्वाह उम्र 21 साल से कितनी ही कम या ज्यादा होवे।

(ii) सूरज अगर कुण्डली के ख़ाना नंबर 1-5-11 (जनम लगन को ख़ाना नंबर एक रखते हुए) में ख़्वाह अकेला ख़्वाह और ग्रहों के साथ होवे तो जनम दिन से ही तमाम ग्रह बालिग़ गिने जाएंगे।

(iii) सूरज का दौरा शुरू होने से पहले इन्सान पर इसके अपने पिछले कर्मों का फ़ैसला (अमुमन 7 या 8 साला उम्र या हर सातवें या आठवें साल) असर किया करता है। जो तबदीली का जमाना हुआ करता है।

अरमान नंबर 13

नाबालिग़ बच्चा (12 साल उम्र तक) की रेखा का कोई इतबार नही होता। मुमकिन है कि ऐसी उम्र तक वो पक्के असर की रेखा होंवे या तबदील हो जाने वाली हों।

इल्म ज्योतिष में :- बच्चे की बंद मुट्ठी या कुण्डली के ख़ाना नंबर 1-7-4-10 ख़ाली हों या उन खानों में सिर्फ़ पापी ग्रह या बुध अकेला (पापी ग्रह और बुध दोनों में से सिर्फ़ एक) हो तो इस की क़िस्मत का हाल 12 साल उम्र तक शक़्की होगा। ऐसी हालत में बच्चा (नाबालिग़) की क़िस्मत (जबकि सूरज का ताल्लुक अरमान नंबर 12 न हुआ हो) पर मुंदरजा जैल असर होगाः-

उम्र के हिसाब से असर का ख़ाना नंबर देखते जावें। अगर कोई ख़ाना नंबर ख़ाली ही आ जावें तो इस ख़ाली ख़ाना नंबर की राशि के मालिक ग्रह (घर का मालिक) जिस खाने में होवे वह ख़ाना लेवें।

उम्र का साल	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
किस खाने के ग्रहों का असर लेंगे	7	4	9	10	11	3	2	5	6	12	1	8
12 साला धोके का ग्रह	सूरज	चंद्र	शुक्र	मंगल	बुध	शनीचर	राहु	केतु	पितृ ग्रह	बृहस्पत	शुक्र	राशि ख़त्म

नाबालिग़ ग्रहों का बाकी आम उसूल होगा।

इस बात का वहम न करें कि एक ही ख़ाना नंबर के ग्रह कई बार क्यूं बोले। ऐसी हालत में ख़ास वक़्त पैदाइश के हिसाब का ग्रह तख़त का मालिक ग्रह लेंगे। (अरमान नंबर 9 की मदद लेंवे)। लेकिन अगर जनम वक़्त जनम दिन दोनों ही मालूम न हों। तो किसी ख़ास वाक्या से लिया हुआ वर्षफल बनायेंगे।

नाबालिग़ हालत में "12 साला धोके का चक्कर" का ख़याल जरूरी रखें (जिसका मुफ़्फ़सल ज़िकर अरमान नंबर 113 A में हुआ है) 12 साला धोके के चक्कर का ग्रह (साल नंबर के हिसाब से) तख़्त का मालिक ग्रह होगा और ग्रह फल का और ख़ाना नंबर के ग्रह राशिफल के होंगे।

अरमान नंबर 14-15

मर्द-औरत, मां-बाप, बहिन-भाई, बड़ा-छोटा, दायां-बायां, बाप-बेटा, मां-धी, रात-दिन, जनम-मरण, शुरू व आख़िर, आकाश व हवा, नर ग्रह व स्त्री ग्रह, नेकी-बदी सब को गांठ लगाने वाला बच्चा और इसकी लगायी हुइ गांठ ग्रह शक़, अदल व रहम से इन्साफ, राहु केतु मुश्तरका शुक्र तमाम गृहस्थ की शादी ग़मी, हस्त रेखा व ज्योतिष के सामुद्रिक के फ़रमान व अरमान, जनम कुण्डली व चंदर कुण्डली के दोनों जहानों के मालिक बृहस्पत की हवा के आने जाने के रास्ते, बुध के ख़ाली खलाव के आकाश की अकल, सूरज की रोशनी व सनीचर के अंधेरे की मुश्तरका जगह मौत नमानी या उम्र का आख़िरी वक़्त सबसे पहले देखा जावे। मगर किसी दूसरे को जाहिर न किया जावे। ये भेद की ताक़त असल ताक़त होगी। जो ख़ाना नंबर 6 (पाताल-रहम) 8 (मौत-अदल) और 12 (आसमान-इन्साफ) का नतीजा होगी। खलासतन ये तीनों खाने सबसे पहले पूरे तौर पर पहले देख लिये जावे। वर्ना तमाम कहानी बेमायने होगी।

अरमान नंबर 16 व
नंबर 55 इकट्ठा पढ़ें

रेखा का ऊपर नीचे को झुकाव कुण्डली में ग्रहों की बाहम द्रष्टि से मुराद होगा। रेखा का ऊपर को उठाव या झुकाव से मुराद होगी कि इसमें इस ग्रह का असर आकर मिल रहा है। जिस ग्रह के बुर्ज की तरफ के वह रेखा उठ रही है। कुण्डली में पहले घरों के ग्रह अपने से बाद के घरों में अपना असर मिलाया करते हैं। सिवाय ख़ाना नंबर 8 जिसके ग्रह पीछे को देखते या अपने से पहले घरों में अपना असर मिला देतें हैं। इस तरह जब तक पहले घरो का बुरा असर ख़त्म न हो। बाद के घरों के ग्रहों का नेक असर न होगा। ख़ाना नंबर की तासीर उल्ट गिनी है। (आगे देखेंगें अरमान नंबर 55 में)

हस्त रेखा व ज्योतिष का ताल्लुक

अरमान नंबर	
17	सब ही ग्रह नीच फल की राशि के (लाल किताब सफ़ा 114 फ़रमान नंबर 113 हों)
18	एक ही घर में बहुत ज्यादा ग्रह मगर नाकस या नीच ग्रह हों।
19	चौड़ी रेखा-कई तरफ की द्रष्टि से टकराये हुए दुश्मन ग्रह।
20	मद्धम रेखा - बहुत दुश्मन ग्रह बामुकाबल
21	साफ रेखा - पक्के घरों के ग्रह - या घर के ग्रह मगर कायम गहरी रेखा-ऊंच घरों के ग्रह। (ऊंचफल की राशि के ग्रह - लाल किताब सफ़ा 114)
22	सनीचर के बामुकाबिल इसके दुश्मन ग्रह (सूरज चंदर मंगल - लाल किताब सफ़ा 105) लफ्ज बामुकाबल असतलाहत (लफजों की तारीफ़) में खोलकर लिखा है।
23	अपने से सातवें घर को देखने वाले खानों के ग्रह यानि ख़ाना नंबर 3-6 के ग्रह (तीसरा 9वें को देखता है मगर 9वां तीसरे को नहीं देखता। इसी तरह छटा बारवें को देखता है मगर 12वां छटे में अपना असर नहीं डाल सकता। सिवाय ख़ाना नंबर 12 के बुध के क्योंकि बुध को आकाश माना है और ख़ाना नंबर 6 पाताल और ख़ाना नंबर 12 आसमान में भी ख़ाली आकाश होता है) हर सातवें साल तबदीली हालात कर सकते हैं। ख़ाना नंबर 8 मौत पीछे को देखने वाले घर के ग्रह हर आठवें साल तबदीली हालात दे सकते हैं।
24	ग्रहों का अपने दुश्मन ग्रहों की मुकर्रा राशियों में होना या उन को दुश्मन ग्रहों का देखना उन के असर में ख़राबी का सबब होगा। इसके बरअक़्स ग्रहों का अपने दोस्त ग्रहों की राशियों में जाना या उन को दोस्त ग्रहों का देंखना या उनका अपने दोस्त ग्रहों का साथी ग्रह हो जाना। इन असर को मुबारिक करेगा।
25	राहु या केतु के साथ दोनों में से किसी एक के साथ बुध का हो जाना उन ग्रहों (राहु या केतु) के दौरा के वक़्त अचानक आफ़त या मौत की निशानी होगी।
26	सिर्फ़ राशिफल या महादशा में ग्रह के नेक नजारा (जो चंदर कुण्डली वगैरह का नतीजा हो सकता है) पर इतबार कर लेना वहम और धोके में रख लेने वाला असर हुआ करता है।

अरमान नंबर

27 दौरा वाला ग्रह अपने दौरा के वक़्त सबसे पहले उस घर पर अपना असर जाहिर करेगा जहां की वो कुण्डली में बैठा होवे। इसके बाद अपने दुश्मन ग्रहों पर (ख़्वाह वो दुश्मन ग्रह उस घर में हों जहां कि वो ख़ुद बैठा था)। बाद अजां दोस्तों पर और फ़िर अपने बराबर के ग्रहों पर। अगर किसी घर में एक से ज्यादा ग्रह बैठे हों तो वो दौरा वाला ग्रह हर इक ग्रह से ऊपर की तरतीब से बारी बारी टकरायेगा। (दुश्मनों से) और दोस्ताना बरताव करेगा। (दोस्तों से)। अगर एक ही घर में दौरा वाले ग्रह के कई दोस्त ही या कई दुश्मन ग्रह ही बैठे हों तो ग्रहचाल की तरतीब से (बृहस्पत के बाद सूरज के बाद चंदर वगैरह) असर करेगा। अगर कुण्डली के खानों में दोस्त ग्रह जुदा और दुश्मन ग्रह जुदे घरों में ही होंवे तो खानों की तरतीब से (नंबर 1 के बाद नंबर 2 के बाद नंबर 3 वगैरह) बरताव करेगा।

टकराव या बरताव पर पैमाना ताक़त :- जब दौरा या तख़्त का मालिक ग्रह और राशि नंबर के ग्रह बाहम टकराव पर हो जावे (टकराव दुश्मनी की हालत में होता है मिलाव या बरताव दोस्ती की हालत में)

सूरज	चंदर	शुक्र	बृहस्पत	मंगल	बुध	सनी	राहु	केतु
9/9	8/9	7/9	6/9	5/9	4/9	3/9	2/9	1/9

दौरा के वक़्त ग्रहों के बाहमी टकराव से उनके बाहमी असर में कमी बेशी होने के इलावा किसी ग्रह के उपाय के लिये दूसरे ग्रह का उपाय करते वक़्त भी ये ताक़त का पैमाना मददगार होगा।

विसर्ग : चंदर सनीचर मुश्तरका (हथियार तेज)

28 मसनुई ग्रह हैवानात पर

नर ग्रह नरों परः-

बृहस्पत .... रूह के तालूकदारों पर असर देगा।

सूरज .... जिस्म के तालूकदारों पर असर देगा।

मंगल .... ख़ून के तालूकदारों पर असर देगा।

स्त्री ग्रह मादीनों परः-

चंदर ....माता की हैसीयत वाली पर असर देगा।

शुक्र ....औरत की हैसीयत वालीयों पर असर देगा।

(बुध शुक्र का शादी के हाल में जुदा दर्ज है)

अरमान नंबर बेजानों पर 29

मखन्स ग्रह :- सनीचर धाती जमादात पर - बुध बनातात पर - राहु हरकात दिमाग़ पर - केतु हरकात पांव पर

साथी ग्रहः- जब कोई ग्रह आपस में अपनी अपनी मुकर्रर राशि। ऊंच नीच घर की राशि या अपने अपने पक्के घरों में अदल बदल कर बैठ जावें या अपनी जड़ों के लिहाज़ से इकट्ठे हो जावें तो साथी गह कहलाते हैं। मसलन सूरज का पक्का घर ख़ाना नंबर 5 है और सनीचर का पक्का घर ख़ाना नंबर 10 है। अब अगर सनीचर हो ख़ाना नंबर 5 में और सूरज होवे ख़ाना नंबर 10 में तो दोनों बाहम साथी ग्रह होंगे।

बामुकाबिलः- जो ग्रह आपस में दोस्त हों और ऐसी हालत में बैठे हों कि ख़ुद तो वो दोस्त ग्रह ही रहें। मगर उनमें से हरइक या किसी एक की जड़ पर आगे दुश्मन ग्रह हो जावें। ख़्वाह वो ख़ुद दोस्त ही हैं। लफ्ज बामुकाबिल से याद होंगे। क्योंकि अब उन में किसी न किसी तरह से दुश्मनी भाव हो गया है।

दोस्ती/दुश्मनी करता है/देखता हैः- द्रष्टि के वक़्त कुण्डली के खानों में एक दो तीन वगैरह की तरतीब से पहले घरों का ग्रह अपने बाद के घरों से /को दोस्ती दुश्मनी करता/देखता हुआ कहलाता है। सिवाये ख़ाना नंबर 8 के जो ख़ाना नंबर 2 को (पीछे की तरफ) देखता है।

कुण्डली में पहले घरों के या बाद के घरो के ग्रह :-

द्रष्टि और एक दो तीन हद बारह की तरतीब से जो घर या खाने पहले आ जावें। उन में बैठे हुए ग्रह पहले घरों के होंगे। यानि जो ग्रह दूसरे ग्रहों को देखते हों और हों भी गिनती की तरतीब से पहले नंबरों के। मसलन ग्रह वाक्या हों

ख़ाना	1	7	4	10	2	6	8	12	3	9	11	5
ग्रह	सूरज	सनीचर	बृहस्पत	मंगल	चंद्र	बुध	-	शुक्र	राहु	केतु	-	-

अब सूरज को कहेंगें कि वो सनीचर से पहले घरों का है। बृहस्पत को मंगल से पहले घरों का कहेंगें। अब मंगल से सूरज ,बृहस्पत,शनीचर हर एक या तीनों ही गिनती पर तो जरूर पहले नंबरों पर हैं। मगर मंगल से पहले घरों के ग्रह

से मुराद सिर्फ़ बृहस्पत से होगी या मंगल अब बृहस्पत के बाद के घरों का ग्रह है। एक ही घर का ग्रह जब दों और घरों को देखें मसलन ख़ाना नंबर ३ देखता है। ख़ाना नंबर ९ और ख़ाना नंबर ११ को। अब ख़ाना नंबर ९-११ दोनों ही घरों के ग्रह ख़ाना नंबर ३ में बैठे हुए ग्रह से बाद के घरों के ग्रह होंगे।

(बे) पहले घरों वाले ग्रह अपने बाद के घरों में अपना फल मिलाया करते हैं। जब बोलें कि चंदर दुश्मनी करता है शुक्र से तो मुराद होगी कि चंदर है पहले घरों में शुक्र से।

क़ायम ग्रह

जो ग्रह हर तरह से दुरुस्त और अपना असर बग़ैर किसी दुश्मन ग्रह की मिलावट के साफ साफ और कायम रख रहा हो। यानि राशि नंबर-पक्के घर या द्रष्टि वगैरह किसी तरह से भी उसमें दुश्मन का असर न हो और न ही वो किसी दुश्मन ग्रह का साथी ग्रह बन रहा हो।

ग्रह का घरः- ग्रह की अपनी मुकर्रर राशि (लाल किताब सफ़ा 114 घर का मालिक होने की ऊंच या नीच फल की राशि) इस ग्रह के लिये इस ग्रह का घर कहलाता है। मसलन ख़ाना नंबर 3-6 बुध के लिये।

घर का ग्रहः- ग्रह का पक्का घर (लाल किताब सफ़ा नंबर 97 फ़रमान नंबर 103) इस ग्रह का घर कहलायेगा। मसलन ख़ाना नंबर 7 बुध के लिये।

दोस्त ग्रह/दुश्मन ग्रहः- लाल किताब सफ़ा 105 किसी ग्रह के सामने ख़ाना दोस्त-दुश्मन में लिखे हुए ग्रह उसके दोस्त/दुश्मन ग्रह कहलायेंगे। किसी दूसरे की मारफत दोस्त दुश्मन न गिनेंगे।

पापी ग्रहः- हंमेशा राहु केतु और सनीचर से ही मुराद होगी।

ऊंच/नीच ग्रहः- जब कोई ग्रह ऐसी राशि में हों जो उसके लिये ऊंच फल/नीच फल की मुकर्रर की हैं। (लाल किताब सफ़ा 114)

बराबर के ग्रहः- लाल किताब सफ़ा नंबर 105 के ख़ाना वासते "बराबर की ताक़त के" में लिखे हुए ग्रह। मसलन नंबर 1 बृहस्पत के ग्रह की बराबर की ताक़त के।

पापी ग्रहः- सनीचर ,राहु, केतु तीनों मुश्तरका (पापी ग्रह) लिखे जाते हैं। वो बृहस्पत के बराबर के ग्रह कहलायेंगे। सिर्फ़ राहु केतु मुश्तरका (पाप) के लिखे जाते हैं। वो शुक्र के बराबर के ग्रह कहलायेंगे। अरमान नंबर 113 A में मशनोई ग्रह के हाल में मुफ़स्सल पापीयों का हाल दर्ज है।

अरमान नंबर	
30	रेखा की दुरुस्त हालत के असर से मुराद ग्रह के क़ायम होने की हालत का असर और टूटी फूटी रेखा के असर से मुराद ग्रह के कायम न होने यानि दुश्मनी भाव वाली हालत या मंदी हालत का होने की हालत से मुराद होगी। दुरुस्त हालत में ग्रह की ऊंच हालत और टूटी फूटी की हालत में ग्रह की नीच हालत भी शामिल होगी।आगे दिये हुए अरमान नंबर 31 ता 56 में द्रष्टि के सब घर ख़ाली माने गये हैं।
31	बृहस्पत होवे अपने पक्के घर ख़ाना नंबर 2 में और ख़ाना नंबर 6 में हो सनीचर या सूरज या चंदर।
	(32-33 काम देव से दूर रहने वाला)
32	सूरज होवे अपने पक्के घर ख़ाना नंबर 1 में और ख़ाना नंबर 7 में हो बुध।
33	चंदर होवे अपने पक्के घर ख़ाना नंबर 4 में और ख़ाना नंबर 7 में हो शुक्र। चंदर शुक्र मुशतरका अपने पक्के घर ख़ाना नंबर 4 या ख़ाना नंबर 7 में और द्रष्टि के नंबर 10 व 1 खाने ख़ाली हों।
34	चंदर शुक्र मुश्तरका पक्के घर ख़ाना नंबर 4 में और ख़ाना नंबर 10 में सनीचर मां का नेक असर मिला होगा। चंदर शुक्र मुश्तरका पक्के घर ख़ाना नंबर 7 में और ख़ाना नंबर 1 में सूरज। बाप का नेक असर मिला होगा।
35	चंदर और बुध - बुध पहले घरों में चंदर बाद के घरों की द्रष्टि के हिसाब से या दोनों बुध के किसी एक ही घर में इकट्ठे हों जावें तो मंदे नतीजे होंगे। चंदर बृहस्पत मय बुध :- इकट्ठे हो जांवे तो बृहस्पत और चंदर दोनों मिलकर बुध को दबा लेंगे और कोई बुरा असर न होगा। अकेले चंदर या अकेले बृहस्पत को बुध मार लेता है और बुरा असर कर देता है।
36	चंदर बृहस्पतः- दोनों इकट्ठे होंवे तो दोनों का मिला हुआ असर निहायत उत्तम होगा।
37	चंदर के साथी/बामुकाबिल पापी ग्रहः- हो जावें तो चंदर का अपना फल तो कुण्डली वाले के लिये उत्तम ही रहेगा। मगर वो दूसरो की मुसीबत पर मुसीबत देखता हुआ बेचैन ही रहतारहेगा।
38	चंदर व चंदर का पक्का घर - अगर चंदर ख़ुद तो अपने घर से बाहर किसी और जगह जाकर ख़राब नीच या नष्ट हो जावे। लेकिन चंदर के पक्के घर (ख़ाना नंबर 4) में कोई भी ग्रह सिर्फ़ अकेला ही ख़्वाह वो चंदर का दोस्त हो या दुश्मन आ बैठे
अरमान नंबर 138 से मुतल्लका	

तो चंदर का घर ही इस ख़ाना नंबर 4 में आ बैठने वाले ग्रह को नेक फल का कर देगा। ख़्वाह चंदर इस ग्रह का साथी ग्रह हो या न हो। लेकिन अगर चंदर अपने घर से बाहर मगर कायम या दरुस्त होवे। मगर इस ग्रह का साथी ग्रह न होवे तो वो दोस्ती या दुश्मनी का अपना असर जैसा भी कि इसका अपने घर से बाहर के घर में हो कायम रखेगा ख़ाना नंबर 4 ख़ाली और इधर उधर हर तरह से ख़ाली तो तमाम ही ग्रह रद्दी होते हुए भी अकेला चंदर का घर ही (चंदर की भी परवाह नहीं कि ख़्वाह कैसा ही मंदा होवे मगर होवे ख़ाना नंबर 4-10 से बाहर) मुकाबला करेगा और उत्तम फल देगा। अगर चंदर के घर बैठने वाला ग्रह चंदर का साथी ग्रह बन रहा हो तो चंदर हंमेशा नेक फल देगा। ख़्वाह वो ग्रह चंदर का दुश्मन ही हो। चंदर से कोई दुश्मनी नहीं करता। चंदर ख़ुद ही अपना फल बंद कर दिया करता है। लेकिन ऐसी हालत में चंदर अपना नेक फल देना बदस्तूर कायम रखेगा।

39 चंदर बुधः- 1) चंदर पहले घरों में और बुध बाद के घरों की द्रष्टि के हिसाब से या दोनों चंदर के घर (ख़ाना नंबर 4) में इकट्ठे हो जावें तो ग़ैबी हाल अच्छा मगर दुन्यावी हालत में दोनों ग्रहों का मंदा फल होगा। अगर पापी ग्रह या दोनों में से किसी एक या दोनों के दुश्मन ग्रह का ताल्लुक हो जावे तो दोनों ग्रहों का अंदरूनी ग़ैबी और जाहिरा दुन्यावी दोनों ही तरह का फल मंदा होगा।
2) दोनों ही जुदा जुदा होने की हालत में दोनों में से कोई भी जब दूसरे के घर हर तरह से अकेला हो नेक फल देगा। मगर जब दोनों मुश्तरका हों तो दोनों किसी एक के घर भी होने पर नेक फल न देंगे।

40 चंदर मंगल दोनों ग्रह इकट्ठे साथी ग्रह की हैसीयत के या दोनों ही
धन रेखा इकट्ठे दोनो में से किसी एक के पक्के घर में
41 या बैठ जावें और हर हालत में द्रष्टि के घर ख़ाली हों
धन श्रेष्ठ रेखा तो मंगल बद को भी मंगल नेक कर लेंगे या मंगल बद का तुख़्म बद भी उड़ा देंगे और जंग व जदल- दुन्यावी गृहस्त (चंदर मंगल के ताल्लुक) में हर तरह का नेक फल होगा।

42 चंदर शनीचर :- अगर दोनों मुश्तरका चंदर के घर ख़ाना नंबर 4 में या दोनों

या साथी ग्रह हो जावें। पितृ रेखा का असर होगा। सनीचर ऐसी हालत में कुण्डली वाले के लिये इच्छाधारी मददगार सांप मगर गैरों के लिये ख़ूनी सांप होगा। चंदर खुनी कुआ होगा। दूसरो के लिये। कुण्डली वाले के लिये मानसरोवर इज्जत वाला होगा।

43 शुक्र शनीचरः- 1) शुक्र पहले घरों में होता हुआ सनीचर को देखता होवे तो सनीचर की तरह इसके दूसरे साथी इसका धन खाते जावें या वो दूसरों को खिलावे।

2) दोनों ही शुक्र के पक्के घर मुश्तरका हों। निहायत करीबी रिश्तेदार इसका धन खा जाने वाले होंगे।

3) दोनों ही सनीचर के पक्के और सनीचर के जाती घर ख़ाना नंबर 10 में। सनीचर के काले कीडे के भौन की तरह बेशुमार गृहस्ती इसके साथी होंगे खाने वाले और खिलाने वालों की क़िस्मत का धन खाने पीने के लिये हर तरह से काफी होगा। मकानात बहुत बनेंगे। ख़्वाह अपने ख़्वाह दुसरों को बना देवें।

4) दोनों मुश्तरका सनीचर के घर ख़ाना नंबर 10 में और मुकाबला में सूरज ख़ाना नंबर 4 पर तो सनीचर का बुरा असर होगा। मगर उम्र लंबी होगी।

5) दोनों मुश्तरका चंदर के घर ख़ाना नंबर 4 में और सूरज मुकाबला पर। सनीचर के अपने घर ख़ाना नंबर 10 में। निहायत पुरदर्द मौत होगी।

44 शुक्र सूरजः- दोनों मुश्तरका बाद के घरों में और बृहस्पत इन से पहले घरों में देखता हो। शुक्र दोनों ही सूरज बृहस्पत के उत्तम असर का होगा। हालांकि वो दोनों अकेले अकेले का दुश्मन है।

45 शुक्र देखता हो सूरज को ख़ास कर जब शुक्र हो नंबर 1 में सूरज नंबर 7 हो तो निहायत बुरा असर मुतल्लका सेहत व जिस्म होगा तपेदिक वगैरह।

46 शुक्र बुधः- दोनों ग्रह मुश्तरका या बाहम इकट्ठे हो रहे हों बलिहाजा द्रष्टि मगर सूरज का ताल्लुक न हो तो दोनों का उत्तम असर ख़ास कर बुध का निहायत उत्त्म या मशनोई सूरज होगा।

47 शुक्र मगंलः- दोनो मुश्तरका बृहस्पत के पक्के घर (ख़ाना नंबर 2) में तो ससुराल खानदान से मीठी खांड की तरह का उमदा असर व दौलत का फ़ायदा होवे।

48 बुध अकेलाः- बृहस्पत के पक्के घर नंबर 2 में या अपनी ऊंची राशि के फल के ख़ाना नंबर 6 में अकेला मगर हर दो हालत में द्रष्टि के सब घर ख़ाली और बुध हर तरह से अकेला ही हो तो बुध का अपना असर उत्तम और "राज योग" होगा।

49 बुध सूरजः- 1) बुध जब सूरज को या सूरज बुध को देखता हो या दोनो बुध के पक्के घर (ख़ाना नंबर 7) या दोनों साथी ग्रह या दोनो सूरज के ऊंच घर (ख़ाना नंबर 1) में हों तो उमदा असर होगा।

2) दोनों बृहस्पत के पक्के घर (ख़ाना नंबर 2) में मुश्तरका या इकट्ठे हो रहे हों यानि सूरज नंबर 8 और बुध नंबर 2 में तो असर जिस्मानी दिमाग़ी उमदा मगर माली हल्का।

बुध शनीचरः- (1) दोनो मुश्तरका या दोनों बाहम द्रष्टि से मिल रहे हों या साथी ग्रह हो जावें तो परिंदा होता हुआ उडऩे वाले बाज की नजर व ताक़त का और सांप होता हुआ उडऩे वाला सांप। हर दो हालत में कुण्डली वाले के लिये उमदा असर के।

(2) दोनों मुश्तरका या ऊपर की हालत में होने पर चंदर का साथ हो जावे या दोनों मुश्तरका ख़ाना नंबर 4 चंदर के पक्के घर में ही हो जावें तो दोनों दूसरों के लिये ख़ूनी होंगे और साथ ही कुण्डली वाले के लिये चंदर का फल मंदा होगा।

50 (3) ऊपर की शर्त मजकूरा नंबर 2 यानि चंदर का साथ या चंदर का असर बजरिया द्रष्टि साथ होते हुए दोनों बुध के पक्के घर सूरज की ऊंच फल की राशि या पक्का घर (ख़ाना नंबर 1) या सनीचर के पक्के घर (ख़ाना नंबर 10) या बृहस्पत के पक्के घर (ख़ाना नंबर 2) में हों तो दोनों का नेक असर होगा। अपने पक्के घर का बुध (ख़ाना नंबर 7 का) कभी भी किसी दूसरे साथी ग्रह-द्रष्टि के असर से मिलने वाले का या मुश्तरका ही साथ होने वाले का ख़्वाह दोस्त हो ख़्वाह दुश्मन बुरा असर न होने देगा।

51 **मंगल नेक बृहस्पतः-** दोनों किसी तरह भी बृहस्पत के पक्के घर ख़ाना नंबर 2 में इकट्ठे हो रहे हों तो औरत खानदान या ससुराल का ताल्लुक होगा। लेकिन ख़ाना नंबर 8 में उन दोनों के इकट्ठे होने से (द्रुष्टी वगैरह या मुश्तरका ही) कुण्डली वाले के अपने ही खानदान वालों के हालात पर असर होगा।

52 **मंगल बद व सूरजः-** अकेले मंगल को सूरज का ताल्लुक मंगल नेक करता है। लेकिन मंगल बद (मुफ़्फ़सल जुदी जगह लिखा है कि किन किन हालतों में मंगल को मंगल बद लेंगे) को सूरज की मदद या मंगल बद से सूरज का ताल्लुक मंदे हाल और करीबी रिश्तेदारों की मौतें वगैरह होगा।

53 **दो ग्रह मुश्तरका ख़्वाह बाहम दोस्त हों या दुश्मनः-**
बंद मुट्ठी के अंदर के ग्रह हवाला अरमान नंबर 1(सूरज -बृहस्पत-मंगल-शनीचर) मय बुध अपने पक्के घर का। हवाला अरमान नंबर 50 में से कोई ख़ाना नंबर 1-7-4-10 (बंद मुट्ठी के खाने) और ख़ाना नंबर 2 (गुरूदवारा धर्म मंदिर के अंदर) जानों पर (यानि मुतल्लका उम्र) कभी बुरा असर न देंगे। जब तक जब तक कि स्त्री ग्रहों (चंदर शुक्र) का ताल्लुक या साथ न हो जावे। स्त्री ग्रहों के साथ या ताल्लुक हो जाने पर सनीचर का असर (अगर सनीचर शामिल हो) अपने ऐजंट राहू केतु का बुरा असर देगा। क्योंकि राहु केतु को सनीचर की बुनियाद गिना जाता है।

54 **तीसरे घर का असर-** कुण्डली के खानों में पहले व तीसरे या हर तीसरे घर (दोनों के दरम्यान सिर्फ़ एक ख़ाना छोड़कर मसलन 1-3-5-7 में पहला तीसरा , तीसरा व पांचवां, पांचवा व सातवां) का असर कभी पहले घर में नहीं आ सकता। पहले व तीसरे को इस तीसरे घर की शर्त में लेंगे। पहले व पांचवे को इस तीसरे घर की शर्त में न लेंगे। लेकिन अगर बुघ की नाली के वक़्त (जिस का मुफ़्फ़सल ज़िकर बुध में है) तीसरे घर का असर पहले घर में आ जावे तो ऐसी हालत में पहला घर ख़राब असर का या गला सड़ा हुआ या पहले घर के ग्रहों का असर बुरा ही लेंगे। ख़्वाह वो सब मिलने वाले ग्रह बाहम या बुध या शुक्र या दोनों के दोस्त या दुश्मन ही हों। बुध की नाली के वक़्त

पहले घर के ग्रहों का असर तीसरे घर के ग्रहों में भी मिल सकता है। ऐसी हालत में तीसरे घर में इकट्ठे होने वाले ग्रहों का मंदा हीअसर न लेंगे। हो सकता है कि वो मौका के मुताबिक नेक फल के हों। तीसरा रलिया ते घर गलिया (तीसरा घर मिला तो पहला बरबाद या ख़राब हुआ) मगर पहला रलिया ते तीसरा गलिया न लेंगे।

55 जो पहले घरों का असर बाद के घरों में मिलने का नतीजा ये होगा कि जब तक नंबर 16 से पीछे से बाद के घरों में किसी ग्रह का बुरा असर आना बंद न हो जावे या पहले मिला है घरों के बुरे ग्रह की म्याद तक बाद के घरों के ग्रहों का नेक असर न होगा। यही असूल ख़ाना नंबर 8 के ग्रहों का नंबर 2 के ग्रहों के लिये होगा। लेकिन अगर ख़ाना नंबर 8 में सूरज बृहस्पत या चंदर में से कोई भी अकेला अकेला या कोई दो या तीनों ही मुश्तरका बैठ जावें तो ख़ाना नंबर 8 न आगे को ख़ाना नंबर 12 को और न ही पीछे को ख़ाना नंबर 2 को देखेगा। बल्कि ख़ाना नंबर 8 का ऐसा असर सिर्फ़ ख़ाना नंबर 8 में ही बंद हुआ गिना जायेगा। गोया मौत के घर को (सूरज बृहस्पत चंदर मुश्तरका) योगी जंगी जीत लेगा।

56 दो से ज्यादा ग्रह मुश्तरका- (लाल किताब सफ़ा 266 नोट के नीचे जुज 9 से मुतल्लका अरमान नंबर 151 का नोट):-

जब दो से ज्यादा ग्रह एक ही घर में (द्रुष्टी से मिले हुए दो से ज्यादा से मुराद नहीं बल्कि एक ही घर में मुश्तरका और दो से ज्यादा) बैठ जावें तो वो अपनी द्रुष्टी के जरिये अपना असर अपने बैठे हुए घर के बाहर किसी दूसरे घर पर नहीं कर सकते। जब तक कि उस घर में जहां की उनकी द्रुष्टी हो सकती है कोई और ग्रह न बैठा होवे। अगर इनकी द्रुष्टी पहुंचने के घर का ग्रह (अगर बहुत ग्रह हों तो हरइक को अलैहदा अलैहदा गिन कर देखेंगे।) उन ग्रहों का दोस्त ग्रह हो (किसी एक का या सब का ही) तो बाद के घर का ग्रह जो इन का दोस्त है ख़ुद ख़राब न होगा। यानि इसका असर अपना ख़राब न होगा। बल्कि बाद के घर की चीजों पर उनका पहले घर के मिले हुए ग्रहों का असर उस बाद के घरों में अच्छा या बुरा जैसा भी होगा। यानि वो ग्रह उन ग्रहों की रोशनी को नाली की तरह उस घर में आ जाने देगा।

लेकिन अगर वो ग्रह उन का दुश्मन हो तो वो ख़ुद ही बरबाद होगा और उन ग्रहों के असर को अपने बैठने वाले घर की चीजों पर न फैलने देगा। (दो से ज्यादा ग्रहों का उस घर के अंदर अंदर का बाहमी ताल्लुक दूसरी जगह दर्ज है। (अरमान नंबर 151 के आख़िरी नोट में)

57 बाप बेटे की मुश्तरका क़िस्मत- दोनों की क़िस्मत का जुदा जुदा असर 100 फ़ीसदी की द्रुष्टी से मिला हुआ असर गिना जाता है। दोनों के वर्षफल के हिसाब से तख़्त के मालिक ग्रहों से जो ग्रह (बृहस्पत के बाद सूरज के बाद चंदर के बाद शुक्र के बाद मंगल वगैरह) असर की तरतीब से पहली तरफ का हो वो दोनों की मुशतरका क़िस्मत का असर लेने के वक़्त अब तख़्त का मालिक ग्रह और ग्रह फल का होगा। दोनों की जुदी जुदी उम्र के सालों के हिसाब से राशि नंबर के बोलने के ग्रहों को जुदा जुदा दोनों के लिये राशिफल के लेंगे। यानि दोनों की मुश्तरका क़िस्मत का हाल देखने के लिये तख़्त का मालिक ग्रह तो दोनों के लिये एक ही ऊपर के ढंग से लिया हुआ होगा। मगर उम्र के लिहाज़ से राशि नंबर के बोलने वाले ग्रह दोनों के अपने अपने और जुदा जुदा होंगे। ऐसी मुश्तरका क़िस्मत की तबदीली का साल जो हर शख़्स के लिये अकेले हाल के लिये गिना जाता है। लाल किताब सफ़ा 25 पर बाप बेटे की औसत क़िस्मत के लिये दिये हुए नक़्शे के मुताबिक होगा। यानि बेटे की एक साला उम्र बाप की 70 साला उम्र पर असर करेगी और बेटे की सात साला उम्र की क़िस्मत का असर बाप की 63 साला उम्र की क़िस्मत पर असर देगा। ऊपर का असर देखने के लिये दोनों के ग्रहों का बालिग़ या नाबालिग़ होने का तरीका जो जुदा जुदा है। भूल न जावें। ऊपर का असूल दोनों के बालिग़ होने की हालत का है। दोनों में से ग्रहचाल में (उम्र के लिहाज़ से नहीं) जो नाबालिग़ हो उसका हाल छोड ही देंगे और बालिग़ ग्रहों वाले का आम अकेले आदमी का हाल देखने के असूल पर देख लें। अब बालिग़ ग्रहों वाले की क़िस्मत का असर नाबालिग़ ग्रहों वाले की क़िस्मत पर प्रबल होगा।

58 (ये अरमान दरअसल अरमान नंबर 97 व 98 का जुज है।)

दरम्यानी गांठ अंगूठे की नाख़ून वाली पोरी केतु का घर ख़ाना नंबर 6
राहु का घर ख़ाना नंबर 12

निचली पोरी राहु केतु मुश्तरका का ख़ाना नंबर 2 दोनों की बैठक

वालदैन से सुख

अंगूठाः- राहु केतु मुश्तरका का मशनोई शुक्र (दुन्यावी मुहब्बत का ताल्लुक) लाल किताब सफ़ा 31 के जुज (अंगूठे की पोरीयां)
अलिफ) नाख़ून वाली पोरी..केतु से मुतल्लका। (बे) (बचपन-फैलना-मरजी)
दरम्यानी पोरी ....राहु से मुतल्लका। जवानी, सिकुड़ना, दलील
निचली पोरी..शुक्र पक्का ग्रहसे मुतल्लका बुढापा, टूट फूट की रेत(बुध का पैदा हो जाना)-इश्क़।
सीन) (मोटा हिस्सा) - केतु होवे दुश्मन ग्रह की राशि में मुफलिसी देगा। गरीब करेगा।
(छोटा हिस्सा)- केतु होवे .....दुश्मनों के साथ या उनके पक्के घरों में :- वहशी, हैवानी ताक़त, कम-दौलत।
बाहर को झुकावः- केतु होवे...ख़ाना नंबर 12 में ....रिश्तेदारों को तारे।
सीधा रहेः- केतु होवे....ख़ाना नंबर 6 में.......अपने दुश्मनों को मारे
केतु होवे........ 9 में.......वालदैन को तारे यानि नेक असर देवे।
अदंर को झुकेः- केतु होवे........3 में............ भाइयों से तंग करावे।
राहुः- राहु का गृहस्त से ताल्लुक नहीं। फर्जी सोच विचार। अपने ही आप पर या दुश्मनों पर छुपा छुपाया असर। रूहानी ख़ासीयतें और उनका या उन पर असर जिस्मानी या बदनी असर न होगा।
जिस कदर ख़ाना नंबर 8 में राहु केतु मुश्तरका के उनके अपने दुश्मन ग्रहों का जोर बढता जावे उसी कदर ही ऐसा शख़्स जन मुरीदी और जादु मंतर की ख़ासीयतों की तरफ बढने वाला होवे।
अंगूठे की पोरीयों पर जौ के निशान को चंदर का निशान माना गया है।
(1) अंगूठे की नाख़ून वाली पोरी की जड़ पर हो जौ के निशान यानि चंदर होवे :- केतु के घर की जड़ पर यानि ख़ाना नंबर 6 को ख़ाना नंबर 2 से देखता हो। (मगर केतु के साथ नहीं अकेला चंदर) तो बचपन का जमाना चंदर की ठंडी और साफ रोशनी की तरह उमदा असर का होगा। जनम भी इसका चानन पक्ष का होगा।
(2) अंगूठे की दरम्यानी पोरी की जड़ पर हो जौ का निशान यानि चंदर होवे राहु के घर ख़ाना नंबर 12 की जड़ या ख़ाना नंबर 6 में (मगर राहु के साथ नहीं सिर्फ़ अकेला ही चंदर वहां हो) तो जवानी का जमाना उमदा असर का होगा। जनम इसका अमावस का होगा।

(iii) अंगूठे की निचली पोरी की जड़ पर हो जौ का निशान चंदर होवे राहु केतु दोनों के मुश्तरका काम करने के मैदान यानि ख़ाना नंबर 8 की जड़ ख़ाना नंबर 4 "नाभी" (अरमान नंबर 59) में (मगर दोनों ग्रहों का साथ न हो वहां ख़ाना नंबर 4 में और सिर्फ़ चंदर अकेला ही ख़ाना नंबर 4 में हो) तो इस शख़्स की उम्र लंबी और बुढापा उमदा असर का होगा और इसका जनम शुकल पक्ष का होगा।

(1) राहु केतु मुश्तरका - हवाई ताक़तों (बेजान चीजों पर) के कारोबार करने के मैदान ख़ाना नंबर 2 को मशनोई शुक्र मानते है। मगर राहु केतु मय सनीचर मुशतरका या तीनों के इकट्ठे सांस (जानदार चीजों पर) के काम करने के मैदान ख़ाना नंबर 8 को मशनोई शुक्र का मैदान नहीं मान लेते। राहू केतु सिर्फ़ दोनों के लिये ख़ाना नंबर 2 अंगूठे की निचली पोरी पर उन का बैठक ख़ाना है।

सनीचर का हैडकवाटर सनीचर के साथ या तीनों का बैठक ख़ाना नंबर 8 माना गया है। ख़ाना नंबर 8 में बृहस्पत सूरज या चंदर की हालत का असर जुदा दर्ज है।

(2) - हरइक पोरी की जड़ पर चंदर का असर सिर्फ़ उम्र के एक ही हिस्सा में ज़िकर किया है। हर पोरी के लिये उम्र के बाकी दो हिस्सों के ऊपर लिखे हुए हाल के लिये सूरज का ताल्लुक देख कर फ़ैसला करे।

अरमान नंबर 59

कुण्डली व दिमाग़ का ताल्लुक:- ग्रह अकेले अकेले या मुश्तरका हो कर जो हाल इन्सान की दिमाग़ी हालत का कर सकते हैं। हू बहू वही हालत इन्सानी क़िस्मत की वो ग्रह कुण्डली में करेंगें या जो हालत ग्रहों के हिसाब से इस की क़िस्मत की होगी। वही हालत इसके दिमाग़ की होगी।

दिमाग़ के खाने

कुण्डली का ख़ाना	दिमाग़ का ख़ाना	ताक़त	कुण्डली का ख़ाना	दिमाग़ का ख़ाना	ताक़त
1	1	शुक्र (गृहस्ती) सनीचर से मुश्तरका -शुक्र का पतंग, इश्क़ (जबानी) 16 से 36 साला उम्र तक।	1	1	सनीचर इश्क़ जवानी शूककर से मुश्तरका। चारों तरफ की ख़ुदगर्जी हमदर्दी।

कुण्डली का ख़ाना	दिमाग़ का ख़ाना	शुक्र जारी
2	2	बृहस्पत से मुश्तरका- शादी की ख़्वाहिश- इश्क़ के बाद का गलबा। बूढी औरत 100 चूहे खाकर बिल्ली हज को जावे। 37 ता70/72साला उम्र तक।
3	3	मंगल से मुश्तरका। इश्क़ से पहली उल्फत। वालदैनी मुहब्बत १ से १५ साला उम्र तक।
4	4	चंदर से मुश्तरका। दोस्ती, मुलाकात, उल्फत, इश्क़ और गलबा इश्क़ का मजमूआ।
5	5	बृहस्पत से मुश्तरका। वतन की मुहब्बत।
6	6	केतु से मुश्तरका दिलचस्पी, पक्की मुहब्बत। औलाद नर का फल नदारद होगा।
7	7	बुध से मुश्तरका। जिंदगी बढने की ताक़त। (अरूज उम्र नहीं)
		मंगल (बुज़ुर्गाना)
1	8	सूरज से मुश्तरका हमला रोकने की हिम्मत।
3	17	बृहस्पत से मुश्तरका अदल मुनसिफ़ मिज़ाजी
8	14	सनीचर से मुश्तरका तकब्बुर या ख़ुदपसंदी
4	4	मंगल बद मंगलिक मुहब्बत के तीनों हिस्सो को तबाह करने वाला गृहस्त ख़राब हर तरह की तबाही।

कुण्डली का ख़ाना	दिमाग़ का ख़ाना	सनीचर जारी
2	7	शुक्र से मुश्तरका। जिंदगी बढने की ख़्वाहिश। (अरूज उम्र नहीं।)
3	10	बुध से मुश्तरका। जायका।
4	4	चंदर से मुश्तरका - दोस्ती - मुलाकात - उल्फत - इश्क़ - और गलबा इश्क़ के मुश्तरका मजमूआ का असर।
5	15	बृहस्पत से मुश्तरका - ख़ुद्दारी
6	16	केतु से मुश्तरका - इस्तकलाल
7	7	शुक्र से मुश्तरका - जिंदगी बढने की ख़्वाहिश। (अरूज-उम्र लंबी नहीं)
8	14	मंगल बद से मुश्तरका तकब्बर या ख़ुदपसंदी
9	9	जाती बदला लेने की ताक़त।
10	13	जाती होशयारी की ताक़त।
11	11	जाती जखीरा जमा करने की ताक़त।
12	12	राहु से मुश्तरका - राजदारी।

		बृहस्पत (शरीफाना)	11	35	बृहस्पत जारी चंदर से मुश्तरका- वाक्यात गुजरते हुए की याद।
2	2	शुक्र से मुश्तरका- शादी की ख़्वाहिश। इश्क़ के बाद का गलबा। गुरू घन्टाल। सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली। 37 से 70/72 साला उम्र तक।	12	12	राहु से मुश्तरका राजदारी
					सूरज (दिमाग़ी)
			5	20	बृहस्पत से मुश्तरका इज्जत बुज़ुर्गी
				22	जाती अक़्ल
			6	23	केतु से मुश्तरका पसंदीदगी
3	17	मंगल से मुश्तरका -अदल या मुन्सिफ मिजाजी।	7	24	बुध से मुश्तरका हौसला।
			8	25	पापी ग्रहों से मुश्तरका नकल करने की ताक़त। बहरूपियापन का सूरज, झगड़ा-फसाद
4	21	चंदर से मुश्तरका-हमदर्दी या रहम मिजाजी।			
5	20	सूरज से मुश्तरका-इज्जत या बुज़ुर्गी। लीद में मानक। पत्थर में मोती की ताक़त।	9	26	बृहस्पत से मुश्तरका मसखरगी। बुध से मुश्तरका-हद से ज्यादा मसखरगी- बेवकूफी बहुत ही भोलापन बुध्धु
6	18	बुध से मुश्तरका -फोकी उम्मीद बायस तबाही- गणेश जी की गरुड़ की सवारी। केतु से मुश्तरका - भरोसा सिर्फ़ फोकी उम्मीद नहीं। कुछ हौसले की उम्मीद या आस होगी। गणेश जी चूहे की सवारी।			चंदर (ग़ैबी या महसूस करने की)
			3	27	मंगल से मुश्तरका- गौर-व-खोज की ताक़त।
			4	28	(जाती)- पुरानी याददास्त
			5	29	सूरज से मुश्तरका- कद व कामत व औसत तनासब की ताक़त। चिड़ीयों से बाज लड़ाने की ताक़त।
			6	30	केतु से मुश्तरका- दबाव बौझ मसावीपन की ताक़त यानि जैसा मुहं वैसी चपेट। अच्छे से अच्छा बुरे से बुरा।
9	19	जाती- मजहब या रूहानी			

		बुध (अंदरूनी अक़्ल)			चंदर जारी
1	37	सनीचर से मुश्तरका - राग	7	31	शुक्र से मुश्तरका-रंग रूप में फर्क दूध से दही और दोनों की शक़्ल और रंग में फर्क का मालिक यानि अगर बुध माता ख़ानदान को उजाड़े तो चंदर पिता के ख़ानदान को मारे।
2	38	बृहस्पत से मुश्तरका- जबानदानी			
3	39	मंगल से मुश्तरका - वजह सबब दरियाफत करने की ताक़त।	8	32	सनीचर से मुश्तरका- सफाई, शास्तगी, ढीलापन, जाहिरा मानसरोवर तो अंदर से कपट की खान।
4	40	चंदर से मुश्तरका- मुकाबला एक चीज का दुसरी से	9	33	बुध से मुश्तरका- इल्म रियाजी के असूल
			10	34	मंगल बद से मुश्तरका - जगह मकाम की याद, पूरा धोकेबाज और तैरते को डुबा लेने वाला।
5	41	सूरज से मुश्तरका - इंसानी खसलत	11	35	बृहस्पत से मुश्तरका- पेशानी, वाक्यात गुजरते हुए की याद।
6	42	जाती - रजामंदी। खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलने वाली हिम्मत।	12	30	राहु से मुश्तरका- वक़्त गुजरे - मर्द पछताये, 1)आता है याद मुझको गुजरा हुआ जमाना 2) कभी हम भी बाइकबाल थे। 3) पिदरम सुल्तान बोद।

राहु केतु को कोई पक्की जगह नहीं दी गई। लहरों के मालिक हैं। एक ने इन्सान को सिर से पकड़ा और दूसरे ने पावों सें तो ख़ुदबख़ुद ही उन को जगह मिल गई।

चंदर का घर व चंदर

नाभीः- दिमाग़ के खानों में राहु या केतु को अलहैदा जगह नहीं मिली। हथेली पर भी ये नहीं गिने थे और बाहर कलाई पर माने थें। कुण्डली में भी जुदी जुदी जगह न पा सके थे। तमाम जिस्म की दरम्यानी जगह नाभी (धुन्नी) को मंगल माना है।

नाभी से ऊपर सिर की तरफ का हिस्सा राहु की राजधानी और नाभी से नीचे पांव की तरफ का हिस्सा केतु की राजधानी माना गया है। लाल किताब सफ़ा 201 दोनों पार्टियां मंगल की "नाभी" मगंल बद की जगह या मंगल का मुंह है। मंगल की दोनो राशियां नंबर 1-8 को मिलाने वाली कुण्डली की नाभी ख़ाना नंबर 4 मुकर्रर है। जो राशियों के हिसाब से और ग्रहों के पक्के घरों के लिहाज़ से सिर्फ़ चंदर को ही दे दिया गया है। चंदर कभी ग्रह फल का नहीं माना गया। हंमेशा ही राशिफल का होता है और ख़ाना नंबर 4 सनीचर के जाती असर के घर ख़ाना नंबर 10 का सेहन या मैदान गिना है। जिसमें सनीचर का फ़ैसला यानि कि वो (सनीचर) कुण्डली में जैसा भी होवे होगा। सबसे आख़िरी फ़ैसला बृहस्पत का होगा। यानि कुंडली में बृहस्पत जिस हैसीयत का होगा। वैसा ही ख़ाना नंबर 4 का आख़री फ़ैसला होगा। इस घर से चंदर का ताल्लुक जुदी जगह लिखा है। (यानि चंदर के ख़राब होने पर इसका अपना घर ही चंदर की दयालुता मेहरबानी की पूरी ताक़त का होता है।) कुण्डली में मौत के खाने नंबर 8 का भेद का रास्ता चंदर की ग़ैबी ताक़त का चश्मा ख़ाना नंबर 4 या कुण्डली की नाभी का ताल्लुक मौत से होने या करने वाले रास्ते में राहु केतु का असर नहीं माना गया। चंदर के पानी की नदीयां कुदरत के अक़्स को दिमाग़ के रास्ते से हाथ की हथेली की रेखायों से राशियों व ग्रहों के जरिये सब की दरम्यानी जगह या जिस्म के दरम्यानी निशान नाभी से जाहिर कर देते हैं। यही नाभी का रास्ता माता के पेट में बच्चे को ख़ुराक देता रहता है या कुण्डली में ख़ाना नंबर 4 सब की मदद और दोनों जहानों के मालिक बृहस्पत को ऊंच करता है। मौत ने सब को मारा मगर चंदर ख़ाना नंबर 8 में मौत को मार लेता है।

आंख:- अगर पेट के दरम्यान से पेट के अन्दर का हाल बताने वाली चीज नाभी को चंदर का घर ख़ाना नंबर 4 माना गया तो चेहरे पर ऐसी ताक़त वाली चीज आंख को भी ख़ाना नंबर 4 माना है। जो ख़ाना नंबर 10 सनीचर के घर को देखता है। सनीचर का ख़ाना नंबर 10 कनपटी (पुड़पुड़ी) माना है। पापी ग्रहों की जगह हल्क का कौआ व तालु है। (मुफ़स्सल अरमान नंबर 180 चार ग्रह मुश्तरका में लिखा है।)

दो लफजों में

ख़ाना नंबर 4 हालात ग़ैबी और ख़ाना नंबर 2 इस दुनिया की बेरूनी हालत को जाहिर कर देते हैं।

अरमान नंबर 60

35 साला चक्कर- ग्रहों की आम मियाद के सालों का मजमूआ 35 साल होता है। ये 35 साला मिआद 35 साला चक्कर कहलाता है। ग्रहों का 35 साला चक्कर और उम्र का 35 साला चक्कर (या इन्सान का 35 साला चक्कर) दो जुदी जुदी बातें हैं। फ़रजन "एक शख़्स के जन्मदिन से ही बृहस्पत का दौरा शुरू हुआ। बाकी ग्रह एक के बाद दूसरा यानि बृहस्पत (6 साल), सूरज (2 साल), चंदर (1 साल), शुक्र (3 साल), मंगल (3 साल), बुध (2 साल), सनीचर (6 साल), राहु (6 साल), केतु(3 साल) कुल 35 साल का दौरा तमाम ग्रहों ने इसकी 35 साला उम्र तक ही पूरा कर दिया लेकिन हो सकता है कि इसका पहला ग्रह बृहस्पत के बजाये सनीचर शुरू होवे और जनम दिन की बजाये सातवें साल से शुरू होवे। अब तमाम ग्रह तो 35 साल में ही दौरा पूरा कर लेंगे। जबकि आख़री ग्रह का आख़री दिन होगा। इस वक़्त इन्सान की उम्र 35 साला ग्रहों का दौरा जमा 6 साल जब अभी सनीचर या उम्र का पहला ग्रह शुरू भी न हुआ था यानि कुल उम्र 41 साल हो चुकी होगी। जो 35 साला चक्कर के हिसाब से इन्सान का दूसरा 35 साला दौरा होगा। अब जिस दिन से ग्रहों का दूसरा दौरा शुरू हुआ। यानि जिस दिन जनम दिन से शुरू होने वाला ग्रह दूसरी दफा शुरू हुआ। उस दिन से जिन ग्रहों ने पहले बुरा असर दिया था वो अब अपनी दूसरी चाल में बुरा असर न देंगें। ये जरूरी नहीं कि कि वो बुरा फल देने वाला अच्छा फल ही देवें। मगर अब बुरा फल न देगा।

तोते की 35 - (बुध के ग्रह का भेद) तोते की 35 के कुण्डली के खानों का गौर से मुलाहजा करें तो.........कुण्डली का ख़ाना नंबर 9 कहीं नहीं मिलेगा। बुध का ये ख़ाना नंबर 9 वो ख़ुद ख़ाना नंबर 9 एक अजब हालत का है। जिसका ज़िकर जुदी जगह दर्ज है। यही ख़ाना नंबर 9 एक चीज है जो इन्सान व हैवान में फर्क कर देता है और तमाम ग्रहों की बुनियाद है या दोनों जहान की हवा बृहस्पत असल है। इस 35 के 11 ख़ाने दरअसल बुध के 12 खानों की हालत बताते हैं। यानि ख़ाना नंबर 10 के बुध को सनीचर, 2 के बुध को बृहस्पत वगैरह जिस तरह कि इस तोते की 35 की कुण्डली में लिखे हैं लेंगे। यानि असर के लिये बुध के अपने असर की बजाये दिये

हुए ग्रहों की हालत का असर लेंगे।

अरमान नंबर 61

सिर - (दिमाग़ी ताक़तें राहु की, ढान्चा बुध का) कुण्डली का ख़ाना नंबर 12

माथा - कुण्डली का ख़ाना नंबर 2 (हवाई ख़यालों में तमाम ताक़तों का राहू केतु की बैठक का मैदान मशनोई शुक्र की जगह)

चेहरा - (आकार बुध का चेहरे की पसंदीदगी खूबसूरती केतु) ख़ाना नंबर 6 यानि चेहरा ख़ाना नंबर 6 और सिर ख़ाना नंबर 12 दोनों का दरमियान माथा ख़ाना नंबर 2 होगा।

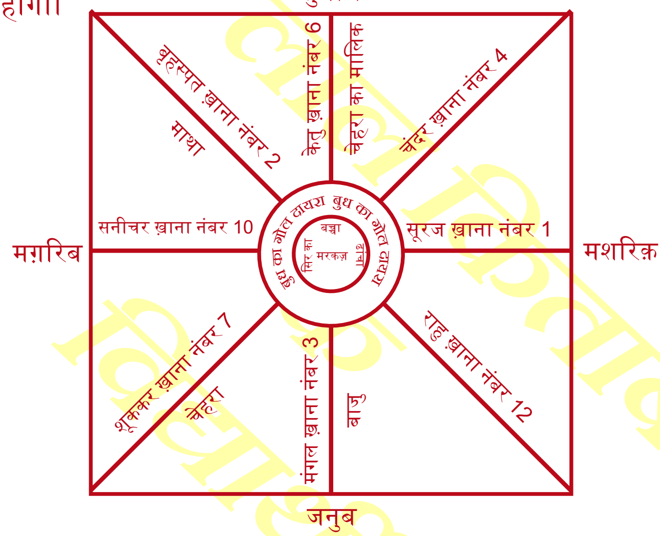

ख़ाना नंबर 5- मुस्तकबिल. ख़ाना नंबर 9 -माजी..नंबर 11- दुनिया का अंदर। नंबर 8 - दुनिया से बाहर।

चौड़ाई - केतु की ताक़त, लंबाई- बृहस्पत की ताक़त। (सूरज सनीचर दोनों का मालिक गुरू)

गोराई - बाहर को उभार - बुलंदी - बुध की ताक़त। पश्ती - गहराई नीचे अंदर को दबना राहू की ताक़त

ऊपर की ताक़तों का घटना बढना ग्रहों की द्रुष्टी के दर्जे की ताक़त के घटने या बढने से मुराद होगी।

100 फ़ीसदी द्रुष्टी की हालत में दो ग्रह एक दूसरे के ज़्यादा नजदीक या एक ही हो जाते या मिल जाते है।

50 फ़ीसदी पर हालत पर उनका दरम्यानी फासला नसफ रह जाता है। या दोनों की ताक़त आधी

आधी बाहम मिल जाती है।

25 फ़ीसदी पर सिर्फ़ एक चौथाई मिलते हैं। यानि तीन चौथाई वो एक दूसरे से दूर रह जाते हैं।

(लाल किताब सफ़ा 43) ख़ाना नंबर 2 को पेशानी माना है। पेशानी पर तिलक लगाने की जगह। (दोनों भवों का दरम्यान व नाक का आख़िरी हिस्सा का मरकज़) असल पेशानी या ख़ाना नंबर 2 की असल जगह है। इस तिलक के निशान की जगह को छोड़कर बाकी तमाम पेशानी की जगह ख़ाना नंबर 2 का बाकी मैदान है। इस बाकी मैदान में राहु केतु की बैठक या ख़ाना नंबर 8 का असर भी आना माना है। ख़ाना नंबर 2 का ये मैदान ख़ाना नंबर 6 को भी देखता है। खुलासतन तिलक की ख़ास जगह (बृहस्पत का ख़ाना नंबर 2) राहु केतु की मुश्तरका की बैठक की जगह (मशनोई शुक्र की राशि भी है) का दरवाजा है। दूसरे लफजों में ख़ाना नंबर 8 को राहु केतु की सनीचर के साथ होने की बैठक गिनें तो इस बैठक या यमों के दीवानखाना का दरवाजा ख़ाना नंबर 2 राहु केतु दोनों की मुश्तरका (मगर सनीचर के बहैसीयत मौत का यम) बैठक होगी। जिसमें सनीचर की मौत का ताल्लुक न होगा। सिर्फ़ राहु केतु की अपनी नेकी बदी का मैदान गुरूदवारा - मस्जिद - मंदिर होगा। इस धर्मस्थान का दरवाजा दोनों भवों की ऐन दरम्यानी जगह होगी। जिस का मालिक बृहस्पत है। जो दोनों जहानो का मालिक है। जिसके रास्तों की लंबाई के दोनों सिरों पर सूरज और सनीचर (दिन रात) गिनते हैं। यानि "दुनिया से बाहर ख़ाना नंबर 8 और दुनिया का अंदर ख़ाना नंबर 11 "के साथ बृहस्पत की दूसरी ताक़त "ख़ाना नंबर 5 मुस्तकबिल और ख़ाना 9 माजी " का दरम्यान जमाना हाल (या बंद मुट्ठी के खाने 1-7-4-10) होगा। थोड़े लफजों में जिस तरह ख़ाना नंबर 4 ने अपनी नेकी न छोड़ी थी। इसी तरह ही ख़ाना नंबर 2 ने कुल दुनिया से ताल्लुक़ न छोड़ा। अगर नाभी तमाम जिस्म का दरम्यान था और बंद मुट्ठी के खानों में ख़ाना नंबर 4 बच्चे के साथ लाये हुए ख़जाने का भेद था तो चेहरा पर तिलक की जगह या दुनिया में बच्चे के लिये बाकी सब तरफों से मिलने मिलाने वाले ख़जाने का भेदी ख़ाना नंबर 2 हुआ। इन दो खानों यानि ख़ाना नंबर 4 और ख़ाना नंबर 2 का मुश्तरका असर क़िस्मत का क़रिश्मा हुआ। जो ग्रह फल व राशिफल दोनों का लब लबाब भी कहा जा सकता है।

ख़ाना नंबर 4 बढाता है चंदर को। ख़ाना नंबर 2 बढाता है बृहस्पत को। दोनों मिले मिलाये (माता पिता) वालदैन या अकेला बृहस्पत जो दोनों जहानों का मालिक है होगा। जो बच्चे को मदद देने के लिये ख़ाना नंबर 5 में सूरज के साथ और ख़ाना नंबर 11 में सनीचर के साथ जा मिलता है। बृहस्पत की इस लंबाई को सब की लंबाई गिनते है। ख़्वाह चेहरे की कहो ख़्वाह पेशानी की।

लाल किताब सफ़ा 43 की जुज नंबर (1) चेहरे की चौड़ाई = ख़ाना नंबर 6 के केतु से या ख़ाना नंबर 6 से जिस कदर बृहस्पत का साथ होवे उसी कदर चेहरा लंबा होगा। जिस कदर कम असर या ताल्लुक बृहस्पत का ख़ाना नंबर 6 से हो उसी कदर चेहरा चौड़ा होगा। जिस कदर चेहरे की लंबाई ज्यादा उसी कदर नेक असर ज्यादा होवे साथ लाई हुई ज़ाती क़िस्मत का।

(सफ़ा 43 की जुज 3) पेशानी की चौड़ाई-ख़ाना नंबर 2 के बृहस्पत से या ख़ाना नंबर 2 से जिस कदर केतु का साथ होवे। इसी कदर पेशानी चौड़ी होगी। जिस कदर कम असर या ताल्लुक केतु का ख़ाना नंबर 2 से होवे। इसी कदर पेशानी लंबी होगी। जिस कदर पेशानी की चौड़ाई बढे। इसी कदर नेक असर ज्यादा होवे। तमाम मुतल्लका दुनिया का।

मुखतसरन केतु जब बृहस्पत के साथ या बृहस्पत के घरों में हो तो पेशानी कुशादा होगी।

बृहस्पत जब केतु के साथ हो या केतु के घरों मे हो तो चेहरा लंबा होगा। जब इकट्ठे ही दोनों (बृहस्पत व केतु) ख़ाना नंबर 2 में हों लंबा चेहरा कुशादा पेशनी (हमदर्द व बुलंद मरतबा) होगा। बशर्तेकि ख़ाना नंबर 8 ख़ाली हो। लेकिन अगर दोनों ख़ाना नंबर 6 में इकट्ठे हों और ख़ाना नंबर 2 ख़ाली हो तो लंबा चेहरा होगा।

लाल किताब सफ़ा 43 जुज नंबर (3) :- ख़ाना नंबर 2 का असर ख़ाना नंबर 6 के रास्ता ख़ाना नंबर 12 में जाने से पेशानी का ऊपर का हिस्सा मुराद होगी।

जुज नंबर (4) :- ख़ाना नंबर 8 का असर ख़ाना नंबर 2 में जावे।

जुज नंबर (5)- ख़ाना नंबर 8 का असर ख़ाना नंबर 2 की मारफत ख़ाना नंबर 6 में जावे।

जुज नंबर (6) - तिलक की जगह छोड़ कर पेशानी पर निशान जब ख़ाना नंबर 2 हर तरह से और हर तरफ से (ख़ाना नंबर 8 की द्रष्टि वगैरह) ख़ाली हो तो ख़ाना नंबर 2 को तिलक

की जगह गिनते हैं।

ख़ाना नंबर 2 में ग्रहों का असर मय ख़ाना नंबर 8 के

जुज नंबर (7):-पेशानी पर कव्वे के पांव का निशान। ख़ाना नंबर 8 के मंदे ग्रहों का असर मंगल बद वगैरह का।

जुज नंबर 8():- पेशानी पर टूटी फूटी लकीरें। ख़ाना नंबर 2 मे बृहस्पत या केतु के दुश्मन ग्रह।

लाल किताब सफ़ा 43 के जुज नंबर (9) :-खानानंबर 2 व ख़ाना नंबर 6 का फ़ैसला ख़ाना नंबर 8 को साथ लेकर होगा।

जुज नंबर (10):- पेशानी पर तिलक की जगह केतु का निशान ख़ाना नंबर 2 में हर तरह से अकेला केतु।

जुज नंबर (11):-चौडे़ चेहरे में :- बृहस्पत की बजाये राहू के साथ - सनीचर की ख़ुदगर्जाना ताक़तें (लाल किताब सफ़ा 35 - दिमाग़ के खाने नंबर 7 से 12) होंगी।

लंबा चेहराः- बृहस्पत के साथ व ताल्लुक से केतु में सनीचर की हमदर्दाना ताक़तें (लाल किताब सफ़ा 36 दिमाग़ के खाने 13 से 16) होंगी।

जुज नंबर 12 से 15:- मर्द के लिये पेशानी व चेहरा जिन जिन हालतों में अच्छे गिने गये हैं वही हालतें औरत के हाल के लिये उलट मायनों की होंगी।

जुज नंबर (16) माथे पर सुर्ख रगायें:- ख़ाना नंबर 2 में मगंल बुध या सूरज बुध हों।

माथे पर सब्ज रंग रगायें :- ख़ाना नंबर 2 में अकेला बुध या राहु बृहस्पत मुशतरका हों।

चेहरे पर तमाम ग्रहः-

बृहस्पत-नाक व माथा बुध- दांत. नाक का अगला सिरा गांठ

सूरज-दायीं आंख का डेला सनीचर-बाल(भवों व पलकों के ख़ासकर)

चंदर- बायीं आंख का डेला राहु- ठोडी

शुक्र- रूख़सारा केतु- कान

मंगल दोनों होंठ ऊपर का मंगल नेक और नीचे का मंगल बद

अरमान नंबर 62/94 बजज 92

दरुस्ती किताब में दर्ज किया गया है और इल्म कयाफा के ख़ास ख़ास जुज दूसरे हिस्सों में मिलाये गये है।

हर इन्सान किस ग्रह का है (बरूये क़्याफा)

बृहस्पत के ग्रह के प्रबल होने का-इस शख़्स का माथा चूहे के माथे की तरह तंग सा न होगा। न ही वो दमा की बीमारी वाला या नाक कटा हुआ का होगा। इसका बोलना चलना बैठना वगैरह गुरू की तरह शाहाना गंभीर और नेक होगा। हाथ की पहली या तर्जनी अंगुली लंबी होगी। मगर कटी हुइ या रद्दी हो चुकी न होगी। तबीयत में सुथरे (लापरवाह जिस में किसी से भी मुहब्बत की बू न हो) की तरह का रुख़ापन न होगा और न ही जानवरों को जिबह करने वाले कसाई की तबीयत का होगा। रंग जिस्म व चेहरे का सोने की तरह दमकने वाला होगा। मगर धक्के या धड्क्के की मरज वाले की तरह जर्द रंग हो चुका न होगा। आंखे मस्त शेर की तरह रोशन मगर डरावनी न होंगी। मुंदरजा जैल में से बृहस्पत की उत्तम निशानीयां साथ होंगी।

रूहानी हाथ..लाल किताब सफ़ा 47 फ़रमान नंबर 67 जुज नंबर 4

नाक....................लाल किताब सफ़ा 112A व 112B

कद......................लाल किताब सफ़ा 69 फ़रमान नंबर 78

सूरज के प्रबल ग्रह वाला अंगहीन (जिस्म का कोई अजूं या हिस्सा कटे होने वाला) न होगा। इसका रंग गंदमी। आंखें शेर नर की तरह रोशन मगर डरावनी न होंगी। कद इसका लंबा जिस्म पतला (इकहरे जिस्म वाला मगर दुबला सा मरियल नहीं) हर तरह की मुसीबत बरदाश्त करने वाला और मजबूत तबे होगा। लंबा चेहरा कशादा पेशानी वाला होगा। रफ़्तार गुफ़्तार में दायां हिस्सा जिस्म का पहले चलाने वाला होगा। शक़्ल व शबाहत में जाहिरा तो भोला भाला सा होगा। मगर अंदर से दबी हुइ आग की तरह गर्म होगा। चाल चलन (कामदेव) का पूरा नेक होगा। शराब से दूर रहने वाला और शरारत का माकूल जवाब देने वाला होगा। हर बात में पहला हिस्सा लेने वाला होगा। मुंदरजा जैल बातों का साथ होगा।

सपाट हाथ.....लाल किताब सफ़ा नंबर 47 फ़रमान नंबर 67 जुज नंबर 1

चंदर प्रबल वाला सफ़ेद रंग (दूध की झलक वाला दहीं के रंग की

सफ़ेदी नहीं) शांति स्वभाव। चौड़ाई वाला चेहरा। चकोर या घोड़े की आंखो की तरह की आंखो वाला। दूसरे की बात में हां से हां मिलाकर फिर उस दूसरे को नर्म सा जवाब देकर और उसके दिल को मना कर अपनी तरफ कर लेने वाला। लिबास में सफ़ेदी पसंद। जिस्म का निचला हिस्सा (नाभी या नाफ से नीचे या पांव की तरफ का हिस्सा पले हुए हाथी की तरह भारी भद्दा सा और बेडौल न होगा। मुंदरजा जैल बातों का साथ होगा।

मुतफ़रक हाथ... लाल किताब सफ़ा 48 फ़रमान नंबर 67 जुज नंबर 6

ख़ुददस्ती तहरीर.....लाल किताब सफ़ा 71 फरमान नंबर 83

अंग फड़कना............लाल किताब सफ़ा 74 फ़रमान नंबर 89

शुक्र के प्रबल ग्रह वाला रंग में सफ़ेद (दहीं के सफ़ेद रंग की झलक दूध के सफ़ेद रंग की नही) चेहरा गोल मोल सा खूबसूरत। आंखे बैल की आंखो की तरह की मगर मस्ताना और आशकाना ढंग की। रूख़सारे बुलंद व पुरगोश्त व गोल। तबीयत में ऐश पसंद (कोई रोये कोई हंसे मगर वो ख़ुद अपने आप में ख़ुश) और हरदम अपने आप को औरतो की तरह संवारता रहे। मुंदरजा जैल बातों का साथ होगा।

मशलशी हाथ.....लालकिताब सफ़ा 47 फ़रमान नंबर 67 जुज नंबर 3

मंगल नेक के प्रबल ग्रह वाला एक तरफा तबीयत। दहाना (मुंह का) कशादा। दोनों होंठ यकसां वे सुर्ख रंग। आंखे सुर्ख और शेर की तरह डरावनी और खुंखार सी। बृहस्पत व चंदर सूरज की निशानीयां भी साथ मिलती सी मालूम होंगी। गुंबन्द (मीनार) की तरह ऊपर से उभरा हुआ और भारी मगर नीचे पांव की तरफ से हलका होगा। मुंदरजा जैल का साथ होगा।

मुरब्बा हाथ...... लाल किताब सफ़ा 47 फ़रमान नंबर 67 जुज नंबर 2

मुंह का दहाना......... लाल किताब सफ़ा 68 फ़रमान नंबर 73

बाजू लंबे..................लाल किताब सफ़ा 70 फ़रमान नंबर 79

मंगल बद जल्लाद कसाई और हाथ पर आग और छुरी साथ लिये फिरता सा मैदाने

जंग का मितलाशी (ढूंढ कर पाने वाला ख़ुद कोशिष करके लङ पङने वाला) आंखे खुंखारी में शेर की तरह और सुर्ख़ मगर हिरण की तरह की भी। यानि दोनों हालतों में से पता न चले कि किस से मिलती हैं। कद काठ का उमदा लंबी उम्र वाला। ख़ुद न जले मगर "हरजां कि रोद कदम शरीफाना - न फसल रब्बी शुद न खरीफाना" की तासीर वाला। आवाज में दहाङने की गूंज व भारीपन और अपने आप में ही मौत का यम हो कर चलने वाला होगा। मुंदरजा जैल बातों का साथ होगा।

पेट पर सिकन या बल....लालकिताब सफ़ा नंबर 45 फ़रमान नंबर 65

छाती....................... लालकिताब सफ़ा नंबर 70 फ़रमान नंबर 80

बुध के ग्रह के प्रबल वाला कबूतर की आंखो से मिलती हुइ आंखों वाला मगर डरपोक। चाल में मसकीन बिल्ली की तरह का। जबान मासूम लङकियों की तरह की मगर जादु की ताक़त की। दांत शानदार। बहरूपियापन (नकल करने या संवाग उतारने की ताक़त) दर्जा कमाल। जबान को होठों पर फेरने की आम आदत। गुफ्तगू में तेज रव्वानी। बातों बातों में फर्जी व कियासी महल बना देवे मगर बकवासी व गप्पी न होगा। हरइक को अपना क़ायल और साथी बना लेगा। मगर ख़ुद रहनुमा बनने वाला न होगा। जबान का चस्का ज्यादा मगर ख़ुराक कम। खूबसूरती पसंद मगर ज्यादा चीजों की परवाह नहीं। मुंदरजा जैल बातों का साथ होगा।

दांत............................लाल किताब सफ़ा 46 फ़रमान नंबर 66A

रगायें (नाङें)..................लाल किताब सफ़ा 69 फ़रमान नंबर 76

नाक की गांठ (अगला हिस्सा)...लाल किताब सफ़ा 112B

मनतकी हाथ............लाल किताब सफ़ा 48 फ़रमान नंबर 68 जुज 5

सिर का ढांचा.................लाल किताब सफ़ा 44 फ़रमान नंबर 62

सनीचर के प्रबल ग्रह वाला सांप सुभाओ। आंखे सांप की आंखों से मिलती हुइ गहरी व गोल। रंगत में सफ़ेद व सुर्ख़ न होगा। बल्कि स्याही पर या स्याह रंग ही होगा। भंवे लेटी लकीर की तरह सीधी या भंवों पर बाल कम। आवाज़ में सांप की तरह की टिक टिक करने वाला। आंखे बहुत देर बाद झपकने

वाला होगा। बात में पता न लगने देगा कि उसका असली मतलब क्या है। दोनों पहलू चारों तरफ़ घूम जाने वाला होगा। अगर मदद पर हुआ तो दूसरे की मदद को पूरा करने के लिये अपना सब कुछ कुरबान कर देगा। पक्का हठधर्म होगा। अगर बरख़िलाफ़ी पर हो तो मुकाबिल वाले का सब कुछ बरबाद व ज़हरीला कर देगा और सिर्फ़ दुन्यावी तमाशा दिखला देगा। ख़्वाह दुश्मन का और अपना दोनों का ही कुछ न रहे। सुनने की बजाये आंखों से ही काम लेगा। दूसरों पर सांप आ निकलने की तरह का डर पैदा कर देगा। कान छोटे। अलहैदा बैठने का आदी होगा। मुंदरजा जैल का साथ होगा।

जिस्म पर बाल................. लाल किताब सफ़ा 45 फ़रमान नंबर 66

अबरू........................... लाल किताब सफ़ा 68 फ़रमान नंबर 74

हाथों की रहनुमायी........... लाल किताब सफ़ा 49 फ़रमान नंबर 68

छिंक........................... लाल किताब सफ़ा 74 फ़रमान नंबर 88

तालु (हलक़ का कोआ)..लाल किताब सफ़ा 72(10) फ़रमान नंबर 84

पापी ग्रह मुशतरका - हल्क का कौआ ख़ाना नंबर 8 जिसमें दांयी तरफ राहु और बायीं तरफ केतु और दरम्यान में सनीचर होगा।

राहु के प्रबल ग्रह वाला बुलंद ठोडी। रंग पूरा स्याह (अगर राहु ऊंच हो तो रंग स्याह न होगा मगर बाकी सब राहु में इस जगह लिखी हुइ बातें जरूर होंगी) अमूमन काला। आंख से काना या औलाद की तरफ से लावल्द होगा। टेढा चलने वाला। हाथी का जिस्म रंग व हाथी की ही आंखो से मिलती हुइ आंखे होंगी। तबीयत में कच्चे धुयें की तरह की बेआरामी सी होगी। जिस तरफ मिल गया वही तरफ दूसरी तरफ का नाश करने वाली हो गई। दिमाग़ी ताक़त हंमेशा शरारत और बरबादी का ढंग खड़ा कर देगी। ख़ुराक ज्यादा मगर चस्का कम। चीजों की ज्यादती का शौकीन मगर उनकी ख़ूबसूरती की परवाह नहीं। मसकीन बिल्ली की तरह अगर उसे उड़ने के पर मिल जावें चिड़ीयों का बीज नाश करना शुरू कर देगा। बिल्ली की तरह उसे मकान से मुहब्बत होगी। मालिक की जान से मुहब्बत न होगी। मुंदरजा जैल का साथ होगा।

सीने की हड्डीयां.............लाल किताब सफ़ा 44 फ़रमान नंबर 63

लाल किताब ज्योतिष

झगड़ालु हाथ... लालकिताब सफ़ा 48 फ़रमान नंबर 67 जुज नंबर 8

ख़्वाब........................ लालकिताब सफ़ा 75 फ़रमान नंबर 91

हाथ के नाख़ून.......... लालकिताब सफ़ा 68 फ़रमान नंबर 72

छींक .... लालकिताब सफ़ा 74 फ़रमान नंबर 88

हथेली की गहराई ...... लालकिताब सफ़ा 49 फ़रमान नंबर 68

केतु प्रबल वाले के कान बड़े बड़े। भंवो का दरम्यानी हिस्सा बुलंद बल्कि ऊपर बाहर को उभरा हुआ सा। जिस्म खूब मजबूत ख़ास कर टांगो का हिस्सा भारी। गाजर की तरह उसका जिस्म नीचे से मोटा और ऊपर सिर की तरफ से हलका। तबीयत नेक दरवेश (कुत्ता-सूअर या साधु) की होगी। मुंदरजा जैल का साथ होगा।

गरदन पर सिकन या बल.......लालकिताब सफ़ा 45 फ़रमान नंबर 64

अंगूठा व अगुंलियां (छोटे छोटे).. लालकिताब सफ़ा 48 फ़रमान नंबर 67 जुज 8

उंगलीयां लंबी...............लालकिताब सफ़ा 49 फ़रमान नंबर 68 जुज 10

कान.................................लालकिताब सफ़ा 68 फ़रमान नंबर 75

पीठ.................................. लालकिताब सफ़ा 70 फ़रमान नंबर 81

पांव के नाख़ून.................... लालकिताब सफ़ा 68 फ़रमान नंबर 72

हाथ का अंगूठा............. लालकिताब सफ़ा 27 ता 33 फ़रमान नंबर 58

मुंदरजा बाला 9 ग्रहों का असर - जब किसी का बृहस्पत प्रबल मालूम हो तो जिस घर में बृहस्पत बैठा हुआ होवे तो इस शख़्स के इस ख़ाना नंबर के तालुकदार जिसमें कि बृहस्पत हो। बृहस्पत की ऊपर लिखी हुइ सिफ़्त के होंगे। अगर बृहस्पत हो ही अपने घरों में या घर का तो इसके बाबे या बाप की वही हालत होगी। जो ऊपर बृहस्पत की कही गयी है। इसी तरह ही और ग्रह लेंगे। मसलन ऊपर के सबूत से किसी का सूरज प्रबल साबत होगा। मगर सूरज पड़ा है कुंडली में केतु के घर ख़ाना नंबर 6 में तो उस शख़्स का लड़का (केतु) सूरज की ऊपर लिखी सिफ़्तों का होगा। 2) अगर केतु पड़ा होवे मंगल के पक्के घर ख़ाना नंबर 3 में तो उस के भाई में केतु की ऊपर लिखी बातें पायी जाएंगी।

इन्सान जिस ग्रह का साबत हो वो ग्रह उसे ख़ाना नंबर 9 का काम देगा। बेशक़ वो कुण्डली में कहीं ही हो।

इन्सान का कोई ग्रह ख़तम हो गया नष्ट हो गया या मर ही तो नहीं गया

बृहस्पत - सिर पर चोटी या बोदी की जगह के बाल ख़ुद-ब-ख़ुद ही (किसी बीमारी या टटरी से नहीं) ख़तम हो जावें यानि उड़ जावें और जिल्द सिर की नंगी सी रह जावे या वो अपने गले में हरदम माला या तस्बीह (पूजा पाठ के लिये गांठे दे देकर या मनके वगैरह इकट्ठे करके कंठी सी बना लेते हैं) डाले रखने का आदी हो जावे तो समझ लो कि इसका बृहस्पत (ख़ुद इसकी जाती क़िस्मत इस दुनिया के ताल्लुक के लिये) ख़तम हुआ।

सूरज - अजायें जिस्मानी (जिस्म के अंग या हिस्से) को हरकत करने या कराने की ताक़त (खींचना या फैला देना) जाती रहे या इसके मुहं से हरदम थूक जारी होता रहे तो सूरज ख़तम की निशानी होगी।

चंदर - महसूस करने की ताक़त ख़तम (पता न लगे कि इसके जिस्म से कोई चीज छू गयी या लग गयी है) तो चंदर ख़तम गिनेंगे।

शुक्र - अंगूठा ख़राब, ख़तम या नाकारा और निकम्मा हो जावे। (बीमारी से या कट कर नहीं) तो शुक्र बरबाद हुआ।

मंगल - जिस्म के जोड़ चलने से रह जावें। जिस्म के ख़ून का रंग जिल्द को देखने से मर गया मालूम होवे यानि इसके ख़ून का रंग बरबाद हो जावे कुव्वत ए बाह तो हो मगर बच्चा पैदा करने की ताक़त क़ायम न रहे। (ये दो जुदा जुदा चीजें हैं) तो मंगल ख़त्म लेंगे।

बुध- ऊपर के जबाड़े के सामने के और पहले ही तीन दांत ख़तम। ख़ुशबू बदबू का फर्क ख़त्म। कुव्वत ए बाह ख़त्म। तो बुध मर गया ही गिना जावेगा।

सनीचर- जिस्म पर से बाल उड़ जावें खासकर पलकों और भवों कें (बीमारी का ताल्लुक न लेंगें) तो सनीचर बरबाद कहेंगे।

राहु - हाथ के नाख़ून झड़ जावें। दिमाग़ी ख़राबियां।
दुश्मन के ताल्लुक के दुख।
केतु- पावों के नाख़ून झड़ जावें पेशाब की बीमारियां या
औलाद के दुख। मंदे असर का।

} ग्रह ख़तम हो गया।

नष्ट ग्रह वाले की मदद

ऊंच घर के ग्रह अपना नेक फल देंगे और नेक फल छोड़ेंगे। मगर दुश्मन ग्रह के साथ वो नेकी न छोड़ देंगे मगर बदी न करेंगें।

बृहस्पत ख़राब शुदा वाले को माथे/पगड़ी पर बृहस्पत के जरद रगं का तिलक। नाक का पानी खुश्क़ करने के बाद यानि नाक सफ़ा करने के बाद काम शुरू करना मददगार। अगर उम्र छोटी में ही बृहस्पत ख़त्म का पता लग जावे तो जिस दिन से नाक का पानी ख़ुद-ब-ख़ुद बंद हो जावे बृहस्पत कायम होगा या नाक का पानी खुश्क़ रहने की उम्र तक ऊपर का ज़िकर मददगार होगा।

सूरज की मदद के लिये मुंह में मीठा डाल कर पानी के चंद घूंट पीकर काम शुरू करना मुबारिक होगा। अगर बचपन से ही पता चल जावे तो शुरू उम्र से ही ये बात मदद देगी।

चंदर की मदद के लिए दूसरों की आशीर्वाद बज़रिआ पैरी पौना वग़ैरह कह कह कर काम करें। खबर पहले ही मिलने पर बुढ़ापे तक ये बात काम देगी।

शुक्र नष्ट वाले को पोशाक का ख़याल रखना बाल कायम रहने तक मददगार होगा।

मंगल बरबाद वाले को सुरमा सफ़ेद का इस्तेमाल ऐन शबाब तक मददगार होगा।

बुध बरबाद वाले को नाक छेद देना या सुराख़ कर देना। दांत सफ़ा रखना ढलती जवानी तक मददगार होगा।

सनीचर बरबाद वाले को मसवाक या दातुन का इस्तेमाल आंखो का पानी खुश्क़ होने तक या बालों के सफ़ेद होने तक मददगार होगा।

राहु बरबाद वाले को सिर पर चोटी या बोदी का कायम करना। खानदान से अलहैदा होकर

ख़ुद मुखतयारी न करना या सुसराल से ताल्लुक न तोड़ना मुबारिक होगा।

केतु बरबाद वाले को कान में सुराख़ करना। उम्र औलाद व सफर में मदद देगा।

अरमान नंबर 92

1- पानी से भरा हुआ घड़ा -शनीचर ख़ाना नंबर 11 में द्रुष्टी ख़ाली

दूध .... चंदर ख़ाना नंबर 4 में द्रुष्टी ख़ाली

कन्या, लड़की, फूल .... बुध ख़ाना नंबर 6 में द्रुष्टी ख़ाली

ब्याह शादी-.................... शुक्र ख़ाना नंबर 7 में द्रुष्टी ख़ाली

2. लकड़ी .... सनीचर ख़ाना नंबर 3 में

हथियार या औजार - सनीचर चंदर मुश्तरका } 3. कुत्ता - केतु } बुलंद आवाज

आगे से उल्ट छींक- राहु नीच असर का } बिल्ली - राहु } बुध का साथ

जानवर मंडराने लगें। खासकर बुध होवे ख़ाना नंबर 12 का। (यानि राहु केतु का भी साथ ख़ाना नंबर 12/6 में होवे)।

4. नेक जानवर - काला कुत्ता (पूरा काला) ऊंच राहु। गाय - शुक्र ख़ाना नंबर 12। हिरण - मंगल ख़ाना नंबर 10 में।

अरमान नंबर 95

हर मकान किस ग्रह का है (अरमान नंबर 5 से मुतल्लका)

हवा के रास्तों से मुतल्लका होगा

बृहस्पत- सेहन मकान का मकान के किसी एक सिरे पर होगा ख़्वाह मकान के शुरू में ही हो ख़्वाह बिल्कुल आख़िर पर ख़्वाह दायीं बायीं तरफ मकान के एक तरफ मगर दरम्यान में न होगा। मकान का दरवाजा शुमालन जनुबन न होगा। हो सकता है कि पीपल का दरखत या कोई धर्मस्थान मंदिर मस्जिद गुरूदवारा वगैरह मकान में या मकान के बिल्कुल साथ ही होवे। सूरज- मकान का दरवाजा निकलते सूरज मशरिक़ की तरफ होगा और सेहन मकान के दरम्यान में होगा। आग का ताल्लुक सेहन में

रोशनी के रास्ते बतायेगा

होगा और हो सकता है कि पानी का तालूक भी निकलते वकत (मकान से बाहर निकलते हुए) दायें हाथ पर सेहन में ही हो। इधर उधर किसी और जगह न होगा। औलाद का फल उत्तम और क़िस्मत ख़ुद अपनी का असर चढते सूरज की तरह उमदा होगा।

है जमीन और धन दौलत का मालिक है।

चंदर - ये ग्रह सूरज से मिलता है। मकान के अव्वल तो अंदर ही वर्ना मकान के बाहर की चार दीवारी के ऐन साथ लगा या लगता हुआ और आखिर अगर दूर भी कहो तो कुण्डली वाले की अपनी 24 कदम तक उस मकान से और उस मकान के बड़े दरवाजे के ऐन सामने कुआं या हैण्ड पम्प वगैरह चलता हुआ पानी जरूर होगा। जमीन के अंदर से कुदरती पानी को चंदर लेंगे। मशनुई नल का चंदर न होगा। आबशार चश्मा वगैरह चंदर गिने जाते हैं।

सफेदी पलस्तर

शक्र - ये सूरज के बरखिलाफ होगा। डियोढी का शहतीर शुमालन जनूबन होगा।

मकान में कच्चा हिस्सा जरूर होगा। दरवाजा मकान भी शुमालन जनूबन होगा।

मर्द औरत जानदारों की आमदो रफत

मंगल नेक - ये ग्रह बृहस्पत सूरज और चंदर के साथ चलता है। मगर उन के दायें या बायें मानिंद चौकीदार (पहरेदार) होगा। मकान का दरवाजा शुमालन जनूबन होगा। कच्चे या पक्के होने की कोई खास शर्त नहीं।

मंगल बद- मकान का दरवाजा सिर्फ़ जनूब में होगा। मकान के साथ या ऊपर मकान के दरखत का साया आग हलवाई की हट्टी का साथ होगा। मकान में या मकान के साथ कब्रिस्तान या शमसान भूमि होगी। लावल्द का साथ होगा और हो सकता है कि ख़ुद वा इन्सान भी काला काना या लावल्द होवे। अगर क़िस्मत भली होगी तो उसे इस में रहने का इतफाक ही नहीं होगा।

इर्द गिर्द के हम-साये बतायेगा

बुध - मकान चारों तरफ दायरा में हर तरह से खाली या खुला हुआ होगा या अकेला ही मकान होवे। मकान के साथ चौडे पत्तों के

दरखत का साथ होगा। (पीपल का दरखत बृहस्पत, बड़ चंदर, शहतूत या लसूहड़ा बुध होता है। इसलिये बृहस्पत या चंदर के दरखत का साथ न होगा और अगर होगा तो वो घर बुध की दुश्मनी का पूरा सबूत देगा)

चार दीवारी मे मुतलका होगा

सनीचर - ये ग्रह सूरज के उल्ट चलता है। मकान का शारेआम का बड़ा दरवाजा (अंदर के दरवाजे किसी भी ग्रह में नहीं माने गये) मगरब में होगा। मकान की सबसे आखरी कोठड़ी जो बाहर से मकान के अंदर दाखिल होते वकत दायें हाथ की तरफ की होगी। पूरी अंधेर कोठड़ी होगी। जिस दिन तक उस में रोशनी का बंदोबस्त ना होगा। सनीचर का उत्तम फल होगा। जिस दिन जरा भी रोशनी या सूरज के आने का बंदोबस्त हुआ। सूरज सनीचर का झगड़ा या वो घर बरबाद हालत का हो जायेगा। मकान में पत्थर गढा हुआ होगा। मकान के सबसे पहले दरवाजे की दहलीज पुरानी लकड़ी की (शीशम या कीकर या बेरी फलाही वगैरह की होगी। हर हालत में नये जमाना की लकड़ी दयार चीड़ वगैरह न होगी) होगी। छत पर भी पुरानी लकड़ी का साथ आम होगा। हो सकता है कि इस मकान में स्तून-मीनार या थम्म का साथ होवे।

वालिदों मे मुतलका बीमारी झगड़े राहु छत बदलायें बद

राहु - बाहर से अंदर जाते वकत इस मकान में दायें हाथ पर कोई गुमनाम गढा बना होगा। बड़े दरवाजे की दहलीज के ऐन नीचे से मकान का पानी बाहर निकलता होगा। मकान के सामने का हमसाया लावल्द होगा या गैर आबाद ही होगा। हो सकता है कि मकान की दीवारें तो तबदील न होवें मगर छत कई बार बदली जावे। मकान के साथ लगती हुइ भड़भूंजे की भट्टी कोई कच्चा धुआं गर्की (गंदे पानी को जमा करने का गढा) वगैरह का साथ होगा।

बच्चों मे मुतलका

केतु- कोने का मकान होगा। तीन तरफ मकान एक तरफ खुला। या तीन तरफ खुला और एक तरफ कोई साथी मकान। या ख़ुद इस मकान की तीन तरफें खुली होगी। केतु के मकान में नर औलाद ख़्वाह लड़के ख़्वाह

केतु खिड़कियां दरवाज़े बतायेगा हवाये बंद अचानक धोके	पोते तीन से ज्याद न होंगे। अगर एक ही लड़का तो 3 पोते। अगर तीन लड़के तो एक पोता। या एक ही लड़का एक ही पोता कायम होगा। इस मकान के दो तरफ काटता हुआ रास्ता होगा। साथ का हमसाया मकान कोई न कोई जरूर गिरा हुआ बरबाद या कुत्तों के आने जाने का खाली मैदान बरबाद सा होगा।

मकान की शक्ल जिस ग्रह की मुकर्रर शक्ल
(लाल किताब सफ़ा 124 अरमान नंबर 117)
से मिलती होवे वो मकान उस ग्रह का होगा।

मकान में हर गोशे के दिये हुए ग्रह अपने अपने मकान में अपना अपना असर जाहिर कर दिया करते हैं जैसा कि वो कुण्डली में बैठे हों।

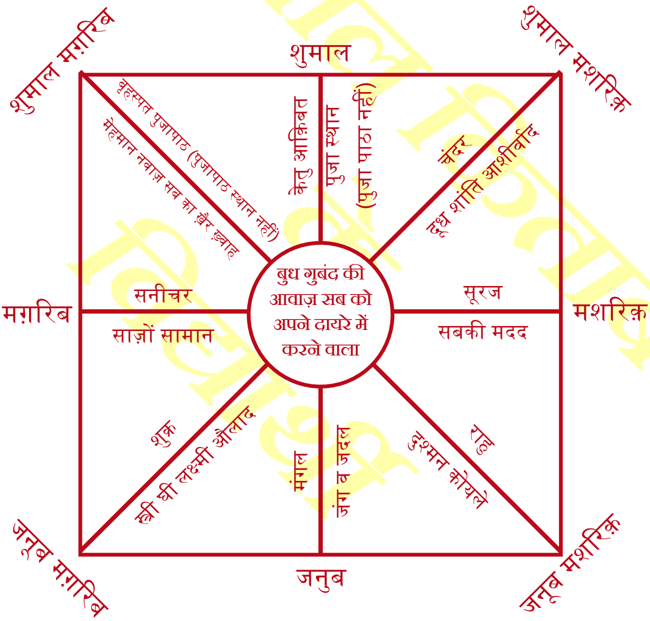

एक मकान में हर ग्रह की पक्की जगह ऊपर दी हुइ जगह होगी।

मकान के गोशे

आठ कोना- सनीचर ख़ाना नंबर 8 का असर देगा। यानि मातम के वाकयात या बीमारी आम होगी।

अठाराह कोना- बृहस्पत (सोना चांदी) का फल खराब होगा।

तेरह कोना- मंगल बद का असर यानि भाई बंदो की आफतों में तबाह होगा।

मौते और आग के नुक़सान बहुत होंगे। फांसी का वाकया भी हो सकता है।

बच्चों चुक- (दरम्यान से बाहर को मछली के पेट की तरह उठा हुआ)। काग रेखा का असर देगा। ख़ानदानी नसल घटती जावे। आख़िर पर ख़ुद भी लावलद होगा। यानि अगर बाबे तीन भाई हों तो बाप दो भाई और आख़िर पर ख़ुद अकेला और आइंदा लावल्द होगा।

भुजा बल हीन- (बाज़ू के बगैर या बाज़ू कटे हुए मर्द की शक़्ल का) मौतें ही मौतें। मुर्दा पर मुर्दा दिखलावे। अगर कोई शादी भी इस मकान में होवे तो शादी वाला मर्द या औरत जिसकी वहां शादी हुई हो रंडवा और बेवाह होवे।

पांच कोना- पांच गोशे वाला। औलाद का दुख और उन की बरबादी की कारवाईयां व दिखलावे।

मुंदरजा बाला गोशे मकान की दीवारें बनने से पहले काबिले गौर होंगे।

ग्रह कुण्डली की मकान के हिसाब से दरुस्ती की जांच

कुण्डली के ख़ाना नंबर 9 वाले ग्रह का मुतल्लका मकान इस कुण्डली वाले का जद्दी मकान होगा और ख़ाना नंबर 1 के ग्रह की ऊपर की लिखी तमाम शर्तें इसके अपने बनाये हुए मकान में मौजूद होगीं। अगर ये खाने खाली हों तो दूसरे मकान से ग्रह कुण्डली की दरुस्ती देखेंगे।

कुण्डली के ख़ाना नंबर 1 से चलकर अगर नौवें को जायें या मकान से बाहर को निकलें तो जिस तरफ दायां हाथ होगा। उस तरफ मकान के तमाम ग्रह जो ख़ाना नंबर 1 से 8 तक हों अपना सबूत देंगे। इसी तरह अगर 12 नंबर खाने से अपने आप को ख़ाना नंबर 9 की तरफ आते हुए गिने या मकान में बाहर से आकर दाखिल होने लगें तो ख़ाना नंबर 12 से 12-11-10 के घरों के ग्रह दायीं तरफ मकान के सबूत देंगे।

क़िस्मत का ग्रह जिस घर में मिले। उसी ख़ाना नंबर के मुतल्लका मकान से तमाम कुण्डली की ग्रह की दरुस्ती मालूम होगी।

कुण्डली का ख़ाना नंबर	किस मकान को जाहिर करेगा

कुंडली का ख़ाना नंबर	किस मकान को जाहिर करेगा	कुंडली का ख़ाना नंबर	किस मकान को जाहिर करेगा
1	ख़ुद साखता। अपना बनाया हुआ मकान।	7	स्त्री घर व लड़कियों की तरफ के रिश्तेदारों के घर के मकान
2	ससुराल का मकान	8	उस शख़्स के जद्दी घर का मुतल्लका कब्रस्तान या शमसान भूमि की जगह।
3	भाई का घर। ताये चाचे का मकान।		
4	माता खानदान। मासी-फूफी का मकान।	9	जद्दी मकान। बजुरगों के बनाये हुए।
5	औलाद के बनाये हुए मकान।	10	वो मकान जिसमें कि कम अज कम ३ साला लगातार रहा हो।
6	नानका घर। नानी नाने का मकान।	11	खरीद करदा मगर ख़ुद न बनायेंहों।
		12	हमसायों के मकानात।

मकान से ग्रह दरुस्ती देखते वकत जिस तरह से क़िस्मत का ग्रह ढूंढते हैं। उसी तरह ही तरतीब वार हर खाने में से ग्रह ढूंढेंगे। मकान की शक़्ल जिस ग्रह से मिल जावे। वो ग्रह कुण्डली में जिस जगह हो वो दरुस्त गिना जायेगा। जिस ग्रह का असर इसके मुतल्लका मकान में देखना हो। उसे बुध की खाली जगह (मकान के दरम्यान खाली जगह समझकर) रख कर इस ग्रह के दांये बायें की चीजों का असर देखेंगे।

मकान की हैसीयत - लाल किताब सफ़ा 80 पर दिये हुए क़ायदे से जवाब में अगर बाकी बचता होवेः-

एक बाकी - बृहस्पत सूरज होगा ख़ाना नंबर 1 का
दो बाकी - बृहस्पत शुक्र मुश्तरका ख़ाना नंबर 2 में
तीन बाकी - बृहस्पत मंगल ख़ाना नंबर 3 के
चार बाकी - सनीचर चंदर मुश्तरका ख़ाना नंबर 4 में
पांच बाकी - सूरज बृहस्पत ख़ाना नंबर 5 में
छ बाकी - सूरज सनीचर मुश्तरका ख़ाना नंबर 6 में
सात बाकी - चंदर शुक्र मुश्तरका ख़ाना नंबर 7 में
आठ बाकी - मंगल सनीचर मुश्तरका ख़ाना नंबर 8 में होंगे

अरमान नंबर 96

ख़ुशी :- बंद मुट्ठी में साथ लाये हुए ख़ज़ाने के ग्रह यानि ख़ाना नंबर 1-7-4-10 के ग्रह ख़ुशी का सबब होंगे। यानि जो ग्रह इन चारों खानों में हों वो हंमेशा ख़ुशी दिखलाते रहेंगे।

गमी :- ऊपर कहे हुए चारों खानों को छोड़कर कुण्डली के बाकी खानों के ग्रह यानि

ख़ाना नंबर 2-3-5-6-8-9-11-12 गमी का सबब करने वाले हो सकते हैं। सूरज दिन का मालिक तो सनीचर रात का। अगर दिन का मालिक सूरज हुआ तो रात का मालिक चंदर भी है। गोया राहत व आराम में चंदर व सनीचर का झगड़ा हुआ। सूरज

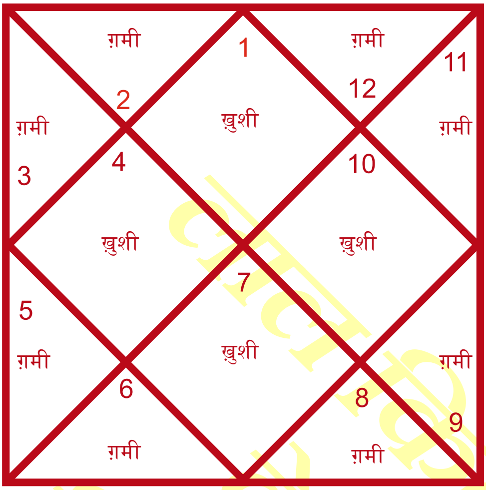

जाहिरा तो चंदर गैबी ताकत का मालिक है। सूरज जाहिरा मदद करता है और सनीचर नीचे से अंदर अंदर मदद देता है। मगर बुरा करने के वकत दोनों का असूल उल्ट है। गर्जेकि चंदर व सनीचर दोनों में से जो दोनों ही पोशीदा चलते हैं मदद देते है। चंदर ख़ाना नंबर 4 का मालिक है। खुशी का और सनीचर ख़ाना नंबर 10 का मालिक है गमी का। ज़ाती खुशी का ख़ाना नंबर 4 और गमी का ख़ाना नंबर 10 मुतल्लका होगा। मुठी का अंदर और बाहर तमाम मुतल्लका दुनिया से इन्सान का तालूक होगा। ख़ाना नंबर 10 सनीचर का है। जो चारों तरफ ही चलता है। इस खाने से ज़ाती मगर पिता के तालूक की खुशी। जब ये ख़ाना मुट्ठी के अंदर का हुआ और जब गमी में लिया तो दूसरे दुनियादारो से मुतल्लका होगा। इसलिये अंगुली की पोरीयों पर की लकीरों चंदर के निशान 32 ख़ुशी के होंगे। जिन के मुकाबला पर सनीचर भी इसी ताकत का होगा। यानि कुल जितने निशान हों (सिर्फ एक ही हाथ पर) उन से 12 का हिंदसा (चंदर की 12 राशियों की ख़ुशी) तफ़रीक करें तो। बाकी के हिंदसे वाले राशि के घर का सनीचर का असर होगा। सिफ़र बाकी बचने की हालत में सनीचर अपने पक्के घर ख़ाना नंबर 10 का ही होगा। मसलन

ख़ाना नंबर जिसका सनीचर फल देगा	10	1	2	3	4	5	6	7	8	9	आगे कोई फकीर साधू	10	11	12
निशान हों तादाद में	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	हो तो	22	23	24

अरमान नंबर 97

लाल किताब के फरमान नंबर 58 सफ़ा 32 जुज 3 और फरमान नंबर 97 को इकट्ठा ही देखें तो एक ही मालूम होंगे। फ़र्क सिर्फ ये है कि सफ़ा 32 जुज 3 पर जौ के निशान के लिये लिखा है कि "पोरी की जड़" पर हो और फरमान नंबर 97 में लिखा है कि "हिस्सा पर" निशान होवे। पोरी की जड़ पर निशान से मुराद है कि उस पोरी के लिये जो घर कुण्डली में मुकर्रर किया है। चंदर उस घर को देखता है। मसलन नाख़ून वाली पोरी को केतु का घर ख़ाना नंबर 6 माना है। अब चंदर इसे देखता है से मुराद होगी कि चंदर ख़ाना नंबर 2 में है। पोरी पर निशान से मुराद ये है कि चंदर है ही इस घर में जो घर कि इस पोरी के लिये मुकर्रर है।

जायदादी सुख (वालदैनी सुख सागर का तालुक नहीं)

(ये अरमान नंबर 58 व 98 का हिस्सा है।)

किस हिस्सा पर जौ का निशान हो या किस ख़ाना नंबर में चंदर होवे	निशान दरुस्त हो या चंदर कायम हो	निशान टूटा फूटा हुआ या चंदर दुश्मनों से खराब हो रहा हो
नाख़ून वाले हिस्सा पर निशान हो ख़ाना नंबर 6 में चंदर हो	सारी उम्र आराम या दौलतमंद हो	चंदर की जायदाद का सिर्फ बुढापे में सुख नसीब होगा
दरम्यानी हिस्सा पर निशान हो ख़ाना नंबर 12 में चंदर हो	चंदर के वक़्त से जायदाद का फल मद्धम बाकी हालत उमदा	चंदर की जायदाद का सिर्फ बचपन उमदा होगा
निचली पोरी पर निशान हो ख़ाना नंबर 2 में चंदर हो	हर तरह से उमदा	चंदर की जायदाद का बचपन व जवानी उमदा

पोरी की जड़ और पोरी पर - निशान की पहचान :- ये निशान चंदर के आधे आकार के दो निशानों से मिल कर बनता है। जिस तरफ का हिस्सा बड़ा होवे। वो तरफ चंदर के ख़तम होने की होगी। यानि इस बड़े निशान की हद के बाद चंदर न होगा या चंदर इस बड़े निशान की हदबंदी से पहली पोरी में (इस पोरी की पहली पोरी जिसमें कि या जिस के सिरे पर कि वो बड़ा निशान होवे) होगा।

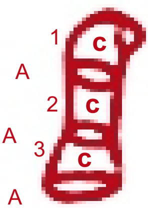

ख़त A - A फरजन बड़ा खत है और लकीर A - C - A छोटी लकीर। अब हिस्सा नंबर A1 में (नाखुन वाले हिस्सा पर) लकीर A - A बड़ी है। या दूसरी लकीर A - C - A नाखुन वाले हिस्सा में ही रह गयी है। इस हालत में जौ का निशान नाखुन वाली पोरी में गिना जायेगा। और नाखुन वाली पोरी की जड़ पर न होगा।

अरमान नंबर 98

जाती गृहस्ती सुख (वालदैनी सुख सागर व जायदाद के सुख के इलावा)

ये अरमान नंबर 97 व 58 का हिस्सा है

अंगुलियों की जड़ों में सुराख न होने से मुराद ग्रहों के बाहम अपनी अपनी नेक हालत, दोस्त हालत या साथी ग्रह हो जाने से है। सुराख़ होने से मुराद ये है कि अंगुली के मुतल्लका ग्रह बुरे या पापी फल के हैं।

कौन कौन ग्रह साथी ग्रह हों।	कौन कौन सी अंगुली की जड़ मिली हुइ गिनी जाएगी।	दोनों अंगुलियों के मुतल्लका ग्रह बुरे फल के होंगे
बृहस्पत सनीचर	तरजनी व मध्यमा	बुढापे में तकलीफ़ हो
सनीचर व सूरज	मध्यमा व अनामिका	जवानी में तकलीफ हो
सूरज व बुध	अनामिका व कनिष्का	बचपन में तकलीफ हो
शुक्र व बृहस्पत	तरजनी व अंगूठा	जनम लेते वक़्त

अरमान नंबर 99

आम बरताव मुतल्लका दुनिया व ख़ुद साहुकारा कुण्डली के ख़ाना नंबर ६ से देखा जायेगा। ख़ाना नंबर ६ के मालिक ग्रहों का इस बात से कोई तालुक नहीं। इस घर में दोस्त ग्रह कुण्डली वाले के मददगार और दुश्मन ग्रह इसके बरखिलाफ होंगे।

अरमान नंबर 100

ख़र्च बचत- चंदर धन सनीचर खजानची होता है। दोनों की हालत जेब की हालत बतायेगी।

आमदन का हाल देखा जायेगा ...ख़ाना नंबर ....11 से

ख़र्च का हाल देखा जायेगा...........ख़ाना नंबर......................12 से

बचत का हाल देखा जायेगा ख़ाना नंबर....... 9 से (बजुरगों की तरफ का तााल्लुक)

बचत अज जाती कमाई देखा जायेगा ख़ाना नंबर.........................2 से

बचत अज औलाद कमाई देखा जायेगा ख़ाना नंबर .... 5 से

खर्चे पर काबू पाना

1) बृहस्पत सूरज मुश्तरका मगर नेक घर के। या दोनों साथी ग्रह या दोनों जुदा जुदा क़ायम या दोनों जुदा जुदा अपने अपने दोस्तो के साथ हों। 2) ऐसे ही सूरज बुध 3) बृहस्पत सनीचर 4) बुध सनीचर	बचत ख़ुद ब ख़ुद होती चली जावे। या जरूर होवे।
1. बुध बृहस्पत 2. शुक्र बृहस्पत 3. सनीचर सुरज मुश्तरका हों। मगर साथी वगैरह न हों।	खर्च ख़्वाहमखाह होता जावे आमदन ख़्वाह हो या ना हो।
अगर बृहस्पत का साथ सूरज या सनीचर में से किसी को भी न मिले यानि सूरज या सनीचर दोनों में से कोई एक भी बृहस्पत की राशि या दोस्ती वगैरह के तालूक में न होवे।	खर्च व आमदन महदूद होंगे। अगर खर्च घटावे तो आमदन ख़ुदबख़ुद घटे। बाकी बचत वही रहे। जो मुकर्रर है।

सनीचर और मंगल जायदाद के मालिक हैं। चंदर बृहस्पत सोने चांदी की दौलत के मालिक हैं।

अरमान नंबर 100 B

कर्जा व जायदाद जद्दी में इज़ाफ़ा - औसत जिंदगी

ख़ाना नंबर 11 व 12 की तफ़रीक़ का नतीजा होगा। कुंडली में 9 ग्रहों से जीतने ग्रह उम्दा (क़ायम या दोस्त वगैरह) हों इतने हिस्से नेक और जीतने ग्रह मंदे उतना हिस्सा बुरा होगा। दोनों की तफ़रीक़ व आख़री औसत का नतीजा फ़ैसला होगा। मसलन 9 ग्रहों से 5 अच्छे और 4 मंदे हो तो आमदन ख़र्च के लिहाज़ से एक बाकी दे जाएगा।

9 जमा 5 अच्छे ग्रह = 14 } 14 जमा 5 तक़सीम 2 वास्ते औसत दो की
9 मनफी 4 बुरे ग्रह = 5 } 19/2 की 9 ½ ख़ुद

बचत आख़री 12 राशि की औसत के लिए 19/2 को 12 पर तक़सीम किया तो .... 19/2 X 1/12 = 19/24

जायदाद जद्दी का नतीजा उम्र के हर 35 साला चक्कर में कर देगा। यानि 24 के लिए 19 पैदा करके 5 की कमी या बेशी कर देगा। अगर किसी भी पितृ ऋण को अदा न करे। पितृ ऋण बजाते ख़ुद राहु केतु की मंदी हालत या ख़ाना नंबर 6 केतु, 12 राहु, ख़ाना नंबर 2, दोनों की बैठक और 8 पापी ग्रहों की बैठक में कोई भी मददगार ग्रह न हो तो पितृ ऋण का बोझ होगा। लेकिन अगर कोई पितृ ऋण उसके जिम्मे न हो तो यही 5 की बचत उम्र के हर 35 साला चक्कर में कर जाएगा। यह औसत ज़िंदगी होगी। माहवारी आमदन न होगी (पितृ ऋण से मुराद महादशा का ग्रह भी होता है। यानी कोई ग्रह महादशा का हो जावे तो कमी होगी वरना बचत होगी। अगर महादशा के मुक़ाबले में कोई भी बन्द मुट्ठी के अंदर के खानों में ग्रह या मुट्ठी से बाहर कोई भी ऊंच घर का ग्रह मिल जावे या सिर्फ ख़ाना नंबर 4 या चन्द्र अकेला ही अच्छे हों तो महादशा की शर्त मन्सूख़ हो जाएगी।

नेकी बदी की औसत	ख़ाना-नंबर 9 के ग्रह "तोहफ़ा" जो दूसरों के लिए जन्म पर साथ लाएगा और ख़ाना नंबर 2 के ग्रह "तोशा "जो आखरी दम अपने साथ ले जाएगा।

औसत आमदन माहवार (ख़ुद जाती)

ऊंच घर के ग्रह-कायम ग्रह या क़िस्मत के ग्रह के हिसाब से यानि जो भी सबसे प्रबल होवे। इसके लिहाज सेः-

नाम ग्रह	रूपये	कैफ़ियत
बृहस्पत	11	अगर कोई दो ग्रह इकट्ठे हों और उम्दा तो उन इकट्ठे शुदा की
सूरज	10	रकम का मजमुआ होगा। मसलन सूरज बृहस्पत मुश्तरका 21 रूपये।
चंदर	9	मंगल सनीचर मुश्तरका = 18 रूपये
शुक्र	6	बृहस्पत सनीचर मुश्तरका = 21.5 रूपये
मंगल	7.5	बृहस्पत चंदर मुश्तरका = 21 रूपये
बुध	3	चंदर सूरज मुश्तरका = 20 रूपये
सनीचर	10.5	बुध सूरज मुश्तरका = 13 रूपये
राहु	8	मंगल चंदर मुश्तरका = 16.5 रूपये
केतु	5	शुक्र बुध मुश्तरका = 9 रूपये
कुल	70	राहु केतु और शुक्र सनीचर मुश्तरका नहीं गिनते। क्यूंकि शुक्र सनीचर ऐयाशी।

और राहु केतु खाली शुक्र मशनुई शुक्र या हवाई बृहस्पत या सिर्फ़ कागजी हिसाब किताब जिसकी वसूली न होवे होगा। बुध मंगल को मगंल बद लेंगे। और बुध सनीचर जायदाद में गिने जाते हैं।

तरीका- जिस दिन से कोई आदमी जाती कमाई (ख़ुद अपनी रोटी कमाना) शुरू करे। इस दिन से जितने साल के बाद इसकी औसत आमदन माहवार देखनी हो। ऊपर के रूपये के हिंदसे को कमाते हुए अरसा के सालों से जरब दें। जवाब का हिंदसा माहवारी औसत आमदन होगा। फ़रजन किसी के मंगल सनीचर मुश्तरका हैं और उसने 19 साल कमाई करते हुए होने के बाद देखना चाहा। तो 18X19 = 262 रूपये माहवार 19 साल पूरे करने पर होगी।

ऊपर लिखी हुइ आमदन व ख़र्च जाती कमाई से होगी। या कर्जा लाकर या किसी और ढंग से रूपया लेकर इस कर्जे से खर्च करके बाकी कुछ बचा जायेगा।

बंद मुट्ठी के अंदर के खानों के ग्रहों वाला या ख़ाना नंबर 11 में कोई भी नर ग्रह वाला अपनी जाती कमाई से सब कुछ आमदन खर्च व बचत करेगा। बाकीयों के लिये ये शर्त न होगी। आरजी उधार को कर्जा नहीं गिनते। कर्जा वो होगा। जो बाबे ने लिया पोते तक मार करता चला जावे। मंगल सनीचर डाकु हैं। जब इकट्ठे हों और सिर्फ दोनों ही हों। जब इनके साथ साधु ग्रह बृहस्पत का साथ हो जावे। सिवाये ख़ाना नंबर 2 के बृहस्पत के तो "माकूल आमदन होते हुए भी कर्जाई" होगा। खासकर बाप की तमाम जद्दी चीजों के खतम होने तक।

मंगल सनीचर के ख़ाना नंबर 10 में राजा होगा। जब तक कोई और ग्रह साथी न हो। मगर सनीचर मंगल के पक्के घर ख़ाना नंबर 3 में निर्धन कंगाल होगा। जायदाद हो सकती है मगर नकद माल न होगा।

धन दौलत के नामः- (लाल किताब सफ़ा 298/5 ता 304/20)

1) चंदर मंगल मुश्तरका श्रेष्ठ धन होगा। (खासकर ख़ाना नंबर 3 का) और दान कल्याण से बढने वाला धन होगा। अगर ये दोनों ग्रह ख़ाना नंबर 10-11 में या सनीचर के तालुक में हो जावें तो लालची होगा।

2) चंदर बृहस्पत दबा हुआ धन जो फिर चल पडे और काम आवे। सोना चांदी छतरधारी बड के दरख़्त का साया का दूसरों को भी बडा भारी सहारा।

3) चंदर सनीचर बृहस्पत के घरों में और बृहस्पत के साथ से उमदा वर्ना स्याह मुहं माया। ख़ुद स्याह मुहं बंदर की तरह छलांग लगा कर चली जाने वाली और मुहं काला बनाने वाली।

4) मंगल शुक्रः स्त्री धन जो माया कि स्त्री की तरफ़ (सुसराल) और स्त्री की क़िस्मत पर चले।

5) सनीचर बृहस्पत: फ़कीरी व तालीमी ताल्लुक की माया। सन्यासी का धन शादी के दिन से बढेगा।

6) मंगल बृहस्पत: श्रेष्ठ गृहस्ती धन अपने मर्द के कबीला से मुतल्लका।

7) मंगल शनीचरः डाकू का धन दौलत।

8) मंगल सूरजः जागीरदारी हकूमत का धन। तालीमी रूहानी ताल्लुक।

9) शुक्र बृहस्पतः बूर के लड्डू। झाग के पतासे।

10) सूरज बृहस्पतः सब

से ऊपर शाही धन।

हर इक धन रेखा का मुफसिल हाल जुदी जगह लिखा है। ख़ाना नंबर 3 के दुश्मन ग्रह या दुश्मन ग्रहों का तखत की मालकीयत का जमाना धन हानि, चोरी, बिलावजह फ़ालतू खर्चा और नुकसान का सबब होता है और ख़ाना नंबर 11 धन रेखा की आमदन का होगा या धन रेखा ख़ाना नंबर 11 के रास्ते आती है और ख़ाना नंबर 3 के रास्ते चली जाती है या तीसरी पुश्त पर धन रेखा का रास्ता बदला हुआ होता है।

माया तेरे तीन नाम - परसू परसा परसराम

ख़ाना नंबर 3 मे धन रेखा का नाम होगा = परसू

ख़ाना नंबर 11 मे धन रेखा का नाम होगा = परसा

ख़ाना नंबर 1 (ख़ुद) 9 (बुजुर्ग) 5 (औलाद) में धन रेखा का नाम होगा = परस राम

खुलास्तन बंद मुट्ठी के अंदर के घरों में कोई ग्रह न हो तो अपने साथ कुछ न लाया। सब ही ग्रह बंद मुट्ठी के अंदर ही सब ग्रह होंवें तो मर्द की माया दरखत का साया इस के साथ ही उठ गया।

अरमान नंबर 101 से 108

ग्रहों व राशियों का बाहमी तालूक

नंबर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
राशि का	मेख	बिरख	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	बृच्छक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
मालिक	मंगल नेक	शुक्र	बुध	चंदर	सूर्य	बुध केतू	शुक्र	मंगल बद	बृहस्पत	सनी	सनी	बृहस्पत राहु
ऊंच	सूर्य	चंदर	राहु	बृह स्पत		बुध राहु	सनी		केतु	मंगल		शुक्र केतु
नीच	सनी		केतु	मंगल		केतु	सूरज	चंदर	राहु	बृह-स्पत		बुध राहु
पक्का घर	सूरज	बृहस्पत	मंगल	चंद्र	बृहस्पत	केतु	शुक्र बुध	सनी मंगल बद	बृहस्पत	सनी	बृहस्पत	राहु
क़िस्मत को जगाने वाला	मंगल	चंदर	बुध	चंदर	सूरज	राहु	शुक्र	चंदर	बृहस्पत	सनी	बृहस्पत	केतु
ग्रहफल का	मंगल नेक	राहु केतू	सनी	चंदर	सूरज बृहस्पत	बुध या केतू	शुक्र	मंगलबद	बृहस्पत	सनी	सनी	बृह स्पत राहु
राशि फल	राहू		सनी	शुक्र मंगल केतू		सूरज बृहस्पत मंगल सनी	सूरज बृहस्पत राहू		सनी	बुध केतू		बुध

ख़ाना नंबर 2 का नीच नहीं होता और ये ख़ाना राहु केतु (सिर्फ दोनों) की मुश्तरका बैठक है। जिस के राशिफल का ग्रह नहीं है। यानी कि इस ख़ाना के ग्रह अपना अपना या अपने अपने कर्मों (पुन पाप का बजाते ख़ुद अपनी जान से मुतल्लका) के करने कराने का ख़ुद अखतियारी है।

ख़ाना नंबर 5 का ऊंच नीच दोनों ही हिस्से नही होते। अपनी ख़ुद जाती जिस्मानी/औलाद ख़ुद की क़िस्मत का ग्रह है।

ख़ाना नंबर 11 का ऊंच नीच दोनों हिस्से नही होते। ये आम दुनिया मुतल्लका से क़िस्मत का लेन देन है।

ख़ाना नंबर 8 का ऊंच नहीं होता। कोई मौत को नहीं मार सकता। सिवाय चंदर के जो दिल की शांति व गैबी मदद वगैरह है। (दुनिया को माता तो इन्सान को बच्चा। माता के पेट में बच्चे की तरह रहने वाला)।

ख़ाना नंबर 3 का सनीचर ग्रहफल में माया धन दौलत नकद से दूर होगा। मगर जायदाद के लिये मंदा न होगा। अगर जायदाद के लिये मंदा हो भी तो काबिले उपाय है।

अरमान नंबर 108

ग्रहों की बाहम द्रुष्टी व राशियों (कुण्डली के खानों) से तालूक

बात को समझने के लिये राशि को स्त्री और ग्रह को मर्द कहें। दोनों का मिलाप ग्रह व राशि या मर्द औरत का जोङा मिथुन राशि बुध के खाली आकाश में शुक्र की गृहस्ती मुहब्बत (हकीकी व गैर हकीकी में कुल सृष्टि दुनिया) की त्रिलोकी (तीनों जमाने या ख़ाना नंबर 3 में मंगल के पक्के घर भाईबंदी से चल रहा है। इस जोङे की नीयत तीन हिस्सों में बटी हुइ समझें:-

1- घर की मालकीयत या साधारण जैसी कि हर मर्द औरत की गिनी जा सकती है।

2- ऊंच हालत की यानि जो हरइक या बाहम एक के लिये दूसरे की नेक हो सकती है।

3- नीच या मंदी या दुश्मनी भरी बुरी या एक के हाथों दूसरे का बुरा करने वाली होगी।

हर इक राशि के असर के लिये इसके घर का मालिक ग्रह साधारण या आम हालत का (न भला न बुरा) ऊंच फल की राशि से मुराद नेक फल देने का तालूक ख़्वाह राशि को ग्रह

के लिये या ग्रह को राशि के लिये मानों और ये नीच फल की राशि का ग्रह बुरे असर से मुतल्लका होगा। या जिस की (ख़्वाह राशि की उस मुतल्लका ग्रह के लिये कहो ख़्वाह ग्रह के लिये उस राशि के ताल्लुक से समझो) नीयत बद गिनी जायेगी। हर इक राशि के किसी खास ग्रह के लिये खास खास ताल्लुक (बुरा या भला) की और हरइक ग्रह किसी खास राशि के लिये खास खास ताल्लुक का मुकरर किया गया है। इस तरह पर मुकर्रर किये हुए जोडे में से जब कोई ग्रह अपनी मुकर्रर राशि की बजाये किसी और ग्रह की ताल्लुकदार राशि में जा बैठे तो वा ग्रह जो चल कर दूसरी जगह जा बैठा है। कुण्डली वाले की क़िस्मत पर वैसा ही असर करेगा। जैसा कि वो दूसरी जगह जाकर हो गया है।

ग्रह की द्रुष्टी 1- हस्त रेखा में रेखा की शाखों या रेखा के उतार झुकाव को इल्म ज्योतिष में ग्रह द्रुष्टी गिनते हैं।

2- कुण्डली के बारह खानो को एक बडे मकान की बारह कोठडियां फर्ज़ करें। हर इक ख़ाना की लकीर को उस कोठडी की दीवार समझें तो खयाल आयेगा कि कुण्डली के अंदर के चार खाने चार चार दीवारों वाले चार खाने हैं। जिस में साथ लाया हुआ खज़ाना गिना गया है। बाकी 8 खाने सिर्फ तीन तीन दीवारों से बने हुए आधे आधे मकानों की तरह की 8 मशलशे हैं। जिनमें कुण्डली वाले का आधा आधा हिस्सा गिन कर कुल आठ से आधा या चार पूरे घर और हैं। गोया बच्चे के कुल आठ घर हो गये। या पहला घर अपना जनम का जिस्म और आठवां ख़ाना मौत है। ग्रहों को लैम्प मानियें। सब कोठडियो के दरवाजे किसी न किसी तरफ खुलते हुए माने गये है या एक घर में चमकते या जलते हुए लैम्प की रोशनी इस के दरवाजे से दूसरे के अंदर जाती हुइ मानी गयी है। रोशनी के इस तरह दूसरे के घर पहुच जाने के ढंग को ग्रह की द्रुष्टी (देखना) कहलाती है। लालकिताब सफ़ा 103 की सबसे पहली और ऊपर की सतर कि हरइक ग्रह अपने से सातवें (इसी तरह फलाने घर के ग्रह फलाने घर को 100 फीसदी, 50 फीसदी या 25 फीसदी की नजर से) देखता है से मुराद है कि वो अपने उस घर से अपने से बाद के घर को देखता है या उस का अपने बैठे हुए घर का असर वो अपने बाद वाले में भी पहुंचा रहा है।

मगर ये मतलब नहीं है कि वो अपने से बाद वाले सातवें घर के ग्रह के असर को अपनी तरफ अपने बैठे हुए ख़ाना नंबर में खींच कर ला रहा है। ख़ाना नंबर 8 मौत का घर उल्टा देखता है। यानि कि वो अपना असर ख़ाना नंबर 2 की तरफ भेजता है। ये ख़ाना नंबर 2 गो सब के लिये राहु केतु की मुश्तरका बैठक के असर (पाप पुन का मक़ाम) का मुकर्रर है। मगर इस नंबर 2 में ख़ाना नंबर 8 से आने वाले असर में तमाम पापी ग्रहों (राहु केतु के इलावा सनीचर) का जुज भी शामिल है।

राशियों के बगैर सिर्फ ग्रहों से ही हर खाने का असर देखने का ढंग

देख लो कि हर एक ग्रह कैसा है। ख़्वाह वो कुण्डली के किसी भी खाने में हो। जैसा उस बैठे हुए ग्रह का कुण्डली के हिसाब से होगा। वैसा ही उस का असर (इस जगह दिये हुए ख़ाना नंबर पर होगा) फरजन बृहस्पत शुक्र कुण्डली में रद्दी हैं तो इस नक़्शे के मुताबिक ख़ाना नंबर 2 पर भी इन का रद्दी असर होगा।

नंबर1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कैफ़ियत
बुध सूरज मंगल सनीचर	बृहस्पत शुक्र	बुध सनीचर मंगल	बृहस्पत सूरज का चंदर से ताल्लुक	बृहस्पत सूरज राहु व केतु का ताल्लुक	बुध केतु शुक्र	शुक्र बुध	मंगल सनीचर चंदर का ताल्लुक	बृहस्पत बजाते खुद	सनीचर का राहु केतु के दायें बायें से ताल्लुक	सनीचर बृहस्पत का साथ	राहु बृहस्पत का सनीचर से ताल्लुक	हर ख़ाना नंबर में इस जगह दिये हुए ग्रहों का जुदा जुदा असर देखेंगे। जैसा भी वो असर होवे वैसा ही इस ग्रह का दिये हुए खाने पर का होगा।

इधर उधर राशियों व ग्रहों के मुश्तरका हिसाब से लिखे हुए असूलों के मुताबिक लिया हुआ असर उस ग्रह का अपना और उस घर पर जहां वो बैठा हो होगा। मगर ऊपर लिखे हुए ढंग का असर उस ग्रह का अपने बैठे हुए घर के इलावा ऊपर लिखे मुतल्लका ख़ाना नंबर पर होगा। द्रुष्टी - लाल किताब सफ़ा 103 पर 100 फीसदी, 50 फीसदी, 25 फीसदी के घर तो लिखे हैं मगर अपने से बाद के सातवें को देखने वाले घर दर्ज

नही है। वो ये हैं।

देखता है ख़ाना नंबर 3-9 को
देखता है ख़ाना नंबर 6-12 को
देखता है ख़ाना नंबर 8-2 को

बुध के ग्रह की अलैहदा ही कहानी है जो जुदी लिखी है। खुलासतन नंबर 3 से नंबर 9 को देखता हुआ बुध या नंबर 9 में बैठा हुआ बुध। नंबर 12 से नंबर 6 को देखता हुआ बुध। सब ही ग्रह का फल बेमायनी कर देता है। ख़्वाह वो तमाम एक तरफ और बुध अकेला ही मुकाबला पर ख़्वाह वो इसके दोस्त हों या दुश्मन। ख़्वाह वो इस के साथ ही हों या उस से अलैहदा मुकाबला पर।

ख़ाना नंबर 8 पीछे को देखता है। इसी असूल पर नंबर 8 ने नंबर 2 को देखा और नंबर 2 ने नंबर 6 को तो नंबर 8 का असर नंबर 6 में 25 फीसदी होगा और नंबर 6 ने नंबर 12 को देखा तो नंबर 8 का असर नंबर 12 में चला गया या नंबर 8 अपना असर नंबर 12 में 25 फीसदी डालता है। अब नंबर 2 में 100 फीसदी नंबर 8 का असर मिला है और नंबर 12 में 2-6 की मारफत 25 फीसदी नंबर 8 का असर मिला होता है। गोया नंबर 2 देखता है 25 फीसदी नंबर 12 को।

100 फीसदी और अपने से बाद के सातवें को देखने का फर्क

100 फीसदी वाला ख़ाना अपने से बाद के खाने में दुध में खांड की तरह अपना असर ऐसे का वैसा ही मिला देता है। मगर अपने से सातवें वाला अपने से बाद के घर के असर को उल्टा देता है। गोया दुध का बरतन ही जहरीला कर देता है। दोनों हालतों में द्रुष्टी का असर तो 100 फीसदी ही होता है। फर्क थोड़ा सा ये है कि-

1- 100 फीसदी के असर के खाने सिर्फ बंद मुट्ठी के अंदर अंदर के मुकर्रर हैं। (यानि 1-7-4-10) मगर अपने से बाद के खाने बाहर की तिकोनों के घरों से मुकर्रर है। मुट्ठी के अंदर अपने से सातवें का असूल न होगा। और न ही बाहर वालों पर 100 फीसदी का असूल चल सकेगा।

2- जब कोई ग्रह अपने से बाद के घर को 100 फीसदी नजर से देखता है तो वो देखने वाला ग्रह अपने बाद के घर के ग्रह में (बाद के घर में नहीं) अपना असर ऐसा मिला देता है कि पहले का असर दूसरे में मिला हुआ मालूम ही न होगा। जैसे दुध में

खांड (ऐसी मिलावट को बुध की मिलावट कहते हैं) और इस पहले घर वाले ग्रह का वही असर रहेगा। जैसा कि वो पहले घर में था। मगर जब कोई ग्रह अपने से बाद के सातवें को देखे तो न सिर्फ देखने वाले ग्रह का असर उस घर में (ग्रह में नहीं) ऐसे मिला हुआ होगां जैसे एक टांग कटे आदमी को दूसरी टांग लगा दी गयी। (दो चीजों का इकट्ठे होकर काम करना। मगर अपने अपने वजूद को न छोड़ना ये मिलावट मंगल की कहलाती है) बल्कि इस पहले घर वाले ग्रह का असर बाद वाले के लिये बिल्कुल उल्ट होगा। यानि अगर पहले घर वाले का पहले घर में नेक असर था तो बाद के घर में मिलने के वकत वो पहला असर अगर नेक था तो बाद वाले के लिये बुरा ही होगा। मगर पहले का ख़ुद अपने लिये जैसा कि वो होवे वैसा ही रहेगा।

"ग्रह का असर ग्रह में" और "ग्रह का असर दुसरे ग्रह के घर में" और इन का फर्क:-

1) पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर के ग्रह में मिल जाने से मतलब ये होगा कि पहले घर के व बाद के घर के ग्रहों का असर एक ही हो गया या बाद के घर के ग्रह में पहले घर के ग्रह का असर ऐसा मिला कि जुदा न गिना गया। लेकिन इस मिलावट ने बाद के घर में यानि बाद के ख़ाना नंबर में अपना कोई असर न डाला हो सकता हैं कि उस बाद के घर में कई ही ग्रह हों। पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर के सब ग्रहों (जितने भी हों) में जब मिला तो हो सकता है कि वो पहले सबके सब जो बाद के घर में थे दोस्त हों तो जब (अलिफ़) उनमें पहले घर के ग्रह की जहर मिली तो वो सब के सब या उन में से चंद बाहम या चंद दूसरों के दुश्मन हो जावें। (बे) उन में दोस्ती पैदा कर देने की ताकत का असर मिल जावे तो जो पहले दुश्मन भाव के थे अब बाहम या चंद दूसरों से दोस्ती का ताल्लुक कर लेवें।

2) पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर में मिल जाने (ग्रह में नहीं) से मुराद होगी कि बाद के घर के ग्रह अलैहदा अलैहदा ही लेंगे। मगर वो मगंल की बनाई हुइ मिलावट की तरह अलग अलग होते हुए भी इस आ मिलने वाले ग्रह के असर का सबूत देंगे। क्योंकि उस घर का ही असर आ मिलने वाले ग्रह के असर ने सब के

लिये बदल दिया या बाद के घर के ग्रहों के लिये वो ख़ाना नंबर ही किसी और असर का हो गया। यानि उन ग्रहों ने अपना अपना पहला असर इस घर की तमाम चीजों पर बदल कर दिया। जब ग्रह से ग्रह मिला था तो अमली तौर पर ये फर्क हुआ था कि पहले घर के ग्रह ने बाद के घर के ग्रह के असर को बदला था। यानि बाद के घर का असर जिस में कि वो ग्रह जिसका असर कि बदला गया बैठा था। सिर्फ अपना ही बदला हुआ असर इस ख़ाना की सिर्फ उन चीजों पर किया जो चीजें कि उस असर बदला जाने वाले ग्रह की और उस घर की जिस में बैठा हुआ......कि वो असर में बदला जाने वाला ग्रह था थीं। अगर बहुत ग्रह हों तो उन ग्रहों ने जिन का असर बदला गया अपने बदले हुए असर का सबूत सिर्फ उन ही चीजों पर दिया जो चीजें कि उस खाने की उन ग्रहों से मुतलका हों। मसलन बुध व शुक्र दोनों ही का पक्का घर ख़ाना नंबर 7 है। जिसमें ऊपर से ख़ाना नंबर 1 का असर मिल सकता है। फर्ज करें कि ख़ाना नंबर 1 में है सूरज और नंबर 7 में हों शुक्र बुध। अब सूरज का असर दोनों में मिल गया। यानि शुंक्र व बुध दोनों ही सूरज की तरह चमकने लगे और सूरज का असर नंबर 7 वालों के लिये अपना पहले घर में ऊंच हालत का होने की बजाये उल्ट बुरा न होगा और वो असर दोनो ग्रहों में दूध में खांड की तरह मिल जायेगा। ये है हालत 100 फीसदी की। दूसरी मिसाल फरजन शुक्र हो ख़ाना नंबर 6 में और मंगल हो ख़ाना नंबर 12 में। द्रुष्टी में 6-12 अपने से सातवें है। यानि शुक्र नंबर 6 का जो असर है ख़ाना नंबर 6 में। इसका उल्ट होगा ख़ाना नंबर 12 में उस ग्रह के लिये जो ख़ाना नंबर 12 में है वो है मंगल। गोया अब मंगल के लिये वो ख़ाना नंबर 12 सब ही चीजों के असर के लिये जो ख़ाना नंबर 12 की हैं। मुबारिक होगा। क्योंकि नंबर 6 का शुक्र नीच है। जब इस का असर नंबर 12 में गया तो वो नंबर 12 के लिये तमाम चीजों के लिये ऊंच फल की होगीं। मगर ये ऊंच फल किस के लिये होगा? मंगल के लिये जो ख़ाना नंबर 12 का है। यानि कुण्डली वाले के भाई (मंगल) का गृहस्त का सुख उस भाई के लिये उमदा होगा। मगर कुण्डली वाले के शुक्र (औरत) का फल वैसे का वैसा ही मंदा और नीच होगा। खुलासतन 100 फीसदी की मिलावट की हालत में कुण्डली वाले को जाती अच्छा बुरा असर मिलेगा। मगर अपने से

सातवें की द्रुष्टी असर करेगी बाद के घर पर जिस की वजह से उस घर का जो ग्रह उस कुण्डली वाले का जैसा भी ताल्लुकदार होवे । उस पर असर देगा। मगर कुण्डली वाले पर सीधा असर न होगा। मसलन बाद के घरों में सातवें मिलावट की हालत में शुक्र है तो असर होगा बाद के घरों का शुक्र पर उल्ट कर या औरत जात के ताल्लुकदार या कुण्डली वाले के ससुराल वगैरह पर अपने असर का उल्टा असर.....होता होगा। अगर पहले घर का कुण्डली वाले को मंदा फल मिल रहा है तो उस मंदे फल का उल्ट अच्छा फल मिलता जायेगा। कुण्डली वाले के उस ग्रह के मुतल्लका रिश्तेदार को जो बाद के घरो के ग्रह से कुण्डली वाले के साथ संबंध हो। यानि मंगल हो तो भाई बुध हो तो बहिन वगैरह।

राहु केतु बाहम बराबर भी हैं दोस्त भी है और एक दुसरे के सातवें रहने के असूल पर दूसरे का असर उल्टाते भी है। वो कब कबः-

ख़ाना नंबर की चीजों पर राहु का असर	कुंडली के ख़ाना नंबर का	सूरज या चंदर के साथ राहु होवे				कुंडली के ख़ाना नंबर का	सूरज या चंदर के साथ तो केतु होगा				ख़ाना नंबर की चीजों पर केतु का असर
		केतु से बाहमी ताल्लुक	असर	ख़ुद सूरज का असर	ख़ुद चंद्र का असर		राहु से बाहमी ताल्लुक	असर	ख़ुद सूरज का असर	ख़ुद चंद्र का असर	
ख़ाना नंबर की चीजों का ख़ुद राहु का मुकम्मलअसर फरमान नंबर 177 में लिखा है	1	दोस्त	राशि फल	नेक	नेक	7	दोस्त	-	मद्धम	प्रबल	ख़ाना नंबर की चीजों का ख़ुद केतु का मुकम्मलअसर फरमान नंबर 179 में लिखा है
	2	बराबर	बैठक हर दो राहु-केतु	निस्फ़	नेक	8	बराबर	बैठक ३ पापी ग्रह	निस्फ़	नेक उम्र निस्फ़ सुख	
	3	उंच	-	नेक	नेक	9	उंच	-	नेक	नेक	
	4	दोस्त	-	नेक	निस्फ़	10	दोस्त	राशि फल	मद्धम	निस्फ़	
	5	बराबर	-	नेक	नेक	11	बराबर	-	निस्फ़	निस्फ़	
	6	उंच	-	नेक	नेक	12	उंच	-	नेक	मद्धम	
	7	दोस्त	राशि फल	निस्फ़	प्रबल	1	दोस्त	-	नेक	नेक	
	8	बराबर	बैठक तीनों पापी ग्रह	नेक	नेक उम्र निस्फ़ सुख	2	बराबर	बैठक राहु-केतु	निस्फ़	नेक	
	9	नीच	-	ग्रहण	ग्रहण	3	नीच	-	निस्फ़	निस्फ़	
	10	दोस्त	-	मद्धम	निस्फ़	4	दोस्त	राशि फल	नेक	निस्फ़	
	11	बराबर	-	नेक	निस्फ़	5	बराबर	-	नेक	नेक	
	12	नीच	-	ग्रहण	निस्फ़	6	नीच	-	निस्फ़	ग्रहण	
		घरका	-	प्रबल	मद्धम		घर का	-	प्रबल	प्रबल	

राहु केतु के अपने से सातवें के ताल्लुक के लिये अरमान नंबर 176 भी देंखें।

सूरज/चंदर ग्रहण राहु केतु की नीच हालतों में (जब दोनों ही नीच) ग्रहण होता है और ग्रहण की म्याद (ग्रहण का सा अंधेरा) राहु की 2 साल केतु की 1 साल दोनों इकट्ठे हों तो 3 साल ज्यादा से ज्यादा होगी।

क्योंकि हो सकता है कि सूरज हो ख़ाना नंबर 12 में } चंदर हो ख़ाना नंबर 6 में }
और राहू भी हो ख़ाना नंबर 12 में } और केतु भी हो ख़ाना नंबर 6 में }

मंगल बदः- मुफसिल जुदी जगह लिखा है। ये ग्रह हर तरह से जालिम और क्रूर होता है। (वासते जान व उम्र और दौलत व धन सब के लिये मंदा)।

मंगलीकः- सिर्फ ख़ाना नंबर 4 का मंगल मंगलीक होगा। मां, नानी, सास, जनानी औरत की उम्र पर हमला करता है। मगर धन दौलत पर हमला नहीं करता। मंगल बद की तरह।

मुश्तरका असर की मिकदार

अरमान नंबर 109

कायम ग्रह / दृष्टा ग्रह	हर-देखा जानेवाला या दूसरे हमसाया(मुश्तरका होने वाले)ग्रहकी ताकत होगी							
	बृहस्पत	सूरज	चन्द्र	शुक्र	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	केतु
बृहस्पत		2	1/2	3-3/4	2/1	2/1	3/4	2/1	5/6
सूरज	2/3		3/4	3/4	2/1	1/2	दौलत 2/3 वालिद 1/2 सुख 1/3	ग्रहण	1/2
चन्द्र	2/1	2/1		2/1	2/2	2/1	1/3	1/2	ग्रहण
शुक्र	1/2	3/4	1/2		4/3	2/2	1/3	2/1	2/1
मंगल	2/	2	2/1	1/3	मंगल बद 1/3	2/1	4/3	0/1	1/2
बुध	1/2	2/1	1/2	2/2	2/2		5/4	2/1	1/4
सनीचर	5/4	दौलत 2/3 वालिद 1/2 सुख 1/3	1/3	4/3	1/3	4/5		2/1	1/2
राहु	0/1	ग्रहण	1/2	1/2	2/2	2/1	2/1		2/2
केतु	2/1	1/2	ग्रहण	2/1	1/2	3/4	2/1	2/2	

दोस्ती दुश्मनी का भाव नेक व बुरे हिस्से की मिक़दार होगी

औसत तनासूब के हिंदसों में हिंदसा का ऊपर का जुज़ देखा जाने वाले ग्रह के असर की

मिकदार और नीचे का जुज देखने वाले ग्रह की ताकत से मुराद होगी।

ग्रह की मिसाल तरबूज में (इसी तरह नारियल, खरबूजा, अनार, बेर वगैरह में मिलावट का ताल्लुक)

बृहस्पत -डन्डी, सूरज-वजन	बुध- गोलाई, आकार, जायका
चंदर - तरबूज के अंदर पानी	सनीचर- बीज या तरबूज की छाल छिलका
शुक्र - बीज का गुद्दा(मगज)	राहु- जायका, कच्चा पक्कापन
मंगल-बीजों के बगैर तरबूज का गूदा	केतु- धारियां रंग बिरंग

अरमान नंबर 110

खास खास मुश्तरका ग्रहों का इकट्ठा असर अरमान नंबर 180 में लिखा है।

अरमान नंबर 111

हाथ से बनाई हुइ और टेवे की जनम कुण्डली व चंदर कुण्डली का अरमान नंबर 181 में जिकर है।

अरमान नंबर 112

लाल किताब सफ़ा 113 पर उम्र के हर हिस्सा पर हर इक ग्रह के असर के साल वगैरह सिर्फ उस शख़्स की उम्र के हिसाब से दियें हैं। जो शख़्स कि लाल किताब में हरग्रह की ऐन मुकर्रर म्याद के अंदर अंदर ही पैदा हुआ होवे या दिया हुआ नक़्शा दिखलाता है कि इल्म सामुद्रिक के हिसाब से जो उम्रें कि हर ग्रह की मुकर्रर है। वो हर ग्रह की कब जाहिर होंगी। हर इक आम दुन्यावी इन्सान पर हर ग्रह का दौरा इस के जन्म के साल से और होगा। जो अरमान नंबर 113A में "वर्षफल" के ब्यान में दर्ज है। दुनिया के आगाज में या बुध के आकार में सबसे पहले अंधेरा (सनीचर का) मान कर इस में सूरज की रौशनी मानी गयी है। बृहस्पत जो दोनों जहानों का मालिक है। सूरज - सनीचर दोनों के साथ होता हुआ माना है। यानि हवा अंधेरे में भी

होती है और रोशनी में भी हुआ करती है। मसलन शीशे का एक बक्स हो तो इस के अंदर खाली जगह में भी हवा होगी और बाहर उस बकसे के भी हवा होगी। बुध का शीशा अंधेरे को भी और रोशनी को भी दोनों तरफ अंदर बाहर होने दे देगा। मगर वो शीशा या बुध कभी हवा को अंदर से बाहर या बाहर से अंदर न जाने देगा। यही दुश्मनी बुध की होगी बृहस्पत से या बुध के आकाश की खाली जगह में क़िस्मत को जाहिर करने वाला बच्चा सूरज या सनीचर को जुदा जुदा और इकट्ठे ही होने हवाने की इजाजत बुध की ताकत से दे देगा या बुध का शीशा ही बृहस्पत के दोनों जहानों में गांठ लगा देगा और ये गांठ ही ग्रह है या ये आकाश ही सब के लिये इकट्ठा गांठा हुआ मैदान है या यही अक़्ल और बुध सब तरफ गांठे लगा रही है।

अरमान नंबर 113

लालकिताब सफ़ा 114 पर दी हुइ फ़ेहरिस्त के नंबर 8-9 पर राहु केतु का जिकर है और नंबर 6 पर बुध का। गौर से देखें तो मालूम होगा कि राहु ख़ाना नंबर 12 में घर का मालिक ग्रह भी लिखा है और ख़ाना नंबर 12 में ये नीच भी लिखा है। इसी तरह केतु ख़ाना नंबर 6 में घर का मालिक ग्रह भी लिखा है और इसकी नीचफल की राशि भी इसके लिये ख़ाना नंबर 6 ही लिखी है।

राहु- जब बृहस्पत के घर ख़ाना नंबर सिर्फ़ 12 में हो तो नीच होगा। हालांकि बृहस्पत व राहु बाहम दुश्मन नहीं बराबर के हैं। राहू के वकत (या जब राहु बृहस्पत इकट्ठे हों) बृहस्पत चुप ही हो जाता है। राहु को आसमान (ख़ाना नंबर 12) नीला रंग माना है। बृहस्पत की हवा को जब आसमान का साथ मिले या ज्युं ज्युं हवा आसमान की तरफ ऊंची होती जाये हल्की होती जायेगी और दुनियादारों के सांस लेने के काम घटती जायेगी। लेकिन जब यही बृहस्पत की हवा नीचे की तरफ होती आयेगी तो केतु का साथ होता जायेगा (ख़ाना नंबर 6) तो हर इक की मददगार होगी। इसी असूल पर राहू के साथ जब बृहस्पत हो तो न सिर्फ़ बृहस्पत का असर चुपचाप बंद हालत का होगा। बल्कि राहु का अपना असर बुरा होगा या दम (सांस बृहस्पत की ताक़त) घुटने पर

या दम घुटजाने या घट जाने पर नतीजा मंदा होगा। इसके बरखिलाफ अगर राहु को बुध के खाली आकाश में खुला ही मैदान मिलता जावे मगर वो ख़ाना नंबर 12 के माने हुए आकाश की बजाये बुध के खाली आकाश में ही हो तो राहु का फल उसका अच्छा बल्कि उमदा असर देगा या राहु को बुध का घर ख़ाना नंबर 6 या बुध का साथ मिले तो नेक असर देगा। राहु है भी बुध का दोस्त। इसलिये दोनों के बाहम साथ से दोनों का फल उमदा होगा या दोनों ही ख़ाना नंबर 6 में ऊंच फल के और दोनों में से हर इक या दोनों ही ख़ाना नंबर 12 मे मंदे फल के होंगे। राहु को फर्जी तौर पर अगर आसमान माने तो ये फर्जी दीवार बृहस्पत को साफ कह देगी कि ऐ बृहस्पत तू मेरे ऊपर गैबी जगह (दूसरी दुनिया) या मेरे नीचे इधर इन्सानी दुनिया में एक ही तरफ रहो। गोया राहु ने बृहस्पत को दो जहानों में से सिर्फ एक ही तरफ कर दिया या राहु के साथ पर बृहस्पत दोनों जहानों में से एक तरफ के लिये वो (बृहस्पत) चुप ही गिना जायेगा।

केतु - जब बुध के साथ हो तो या वो बुध के घर ख़ाना नंबर 6 में हो तो नीच होगा। लेकिन जब केतु को बृहस्पत का साथ मिल जावे तो केतु ऊंचफल का होगा। केतु बृहस्पत बराबर का फल देंगे।

राहु केतु चूंकि अपने से सातवें देखने के असूल पर के ग्रह हैं। इसलिये राहु अगर 3-6 (बुध के घर) में ऊंच हुआ तो केतु वहां ख़ाना नंबर 3-6 में नीच होगा। यही हाल है केतु का अगर केतु ख़ाना नंबर 9-12 (बृहस्पत के घर) में ऊंच हुआ तो राहु उन घरों में नीच होगा।

बुध - जब बुध होवे राहु के घर ख़ाना नंबर 12 में तो नीच होगा। क्योंकि ख़ाना नंबर 12 इसके दुश्मन ग्रह बृहस्पत का है और जब बुध होवे केतु के घर ख़ाना नंबर 6 में तो ऊंच होगा। क्योंकि ये राशि नंबर 6 बुध की अपनी ही राशि है और बुध व केतु दोनों ही आपस में "बराबर के" ग्रह हैं और दोनों ही शुक्र के दोस्त हुए हैं। बुध पर कोई असर न होगा। मगर केतु (शुक्र) दोनों ख़ाना नंबर 6 में नीच ही होंगे।

ख़ाना नंबर 8 में मंगल सनीचर की बुरी नजर को ख़ाना नंबर 2 का मालिक बृहस्पत देख कर ही पहचान लेगा। मगर बोलेगा नही। इस बुरे नजर के असर को बृहस्पत जब ख़ाना नंबर 2 से ख़ाना नंबर 6 के मालिक केतु के हां भेजेगा तो वहां बुध भी होने से केतु बोल कर (बुध की ताकत) बता देगा। (कुत्ते को मौत के यम नजर आ जाने पर कुत्ता पहले ही बोल कर बता देगा) हाथी राहु का जिस्म है तो इस का सूंड बुध है। शुक्र अगर केतु का जिस्म है तो बुध इसकी टेढी दुम है।

राहु जब बृहस्पत के घरों या बृहस्पत के साथ हो तो नीच फल का होगा। केतु जब बुध के साथ या बुध के घर हो तो मंदे फल का होगा।

बुध जिसे कुत्ते की दुम माना है। जब केतु से अलैहदा ख़ाना नंबर 12 में हो तो वो ख़ाना नंबर 6 के सब ही ग्रहों को रद्दी कर देगा। ख़्वाह वो बुध के दोस्त हों ख़्वाह वो बुध के दुश्मन।

ग्रह की अपनी राशि - हर ग्रह अपनी मुकर्रर राशि में नेक फल देगा बेशक इसकी वो राशि किसी दुसरे ग्रह का पक्का घर मुकर्रर हो चुका है। मसलन-

राशि नंबर	किस ग्रह की राशि है	कौन से ग्रह का पक्का घर मुकर्रर हो चुका है	इस राशि नंबर में किस ग्रह का फल नेक होगा।
3	बुध	मंगल	बुध का नेक फल बशर्ते कि मंगल नेक होवे
2	शुक्र	बृहस्पत	शुक्र का नेक
5	सूरज	बृहस्पत सूरज मुश्तरका	सूरज का
6	बुध केतु	केतु	बुध का उत्तम। केतु का ख़ुद केतु की चीजों पर मंदा मगर दूसरों पर अच्छा।
7	शुक्र	शुक्र बुध	अगर बुध भी साथ हो तो........केतु दूसरों का मंदा। बुध का अच्छा होगा बुध की चीजों पर। शुक्र का
8	मंगल	मंगल सनीचर चंदर	अगर तीनों में से हर इक अकेला अकेला होवे तो अच्छा फल वर्ना मंदा।

हर ग्रह की अपने असर ज़ाहिर करने की निशानी के लिए खानावार चीजें

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बृहस्पत	पेशानी जर्द रंग शेर नर	चने की दाल	तालीम	बारिश सोना	नाक केसर	मुर्ग गरुड	किताबें दुमें की मर्ज मेढ़क	अफ़वाह नकारा खल्क	मंदिर मस्जिद गुरु-द्वारा जद्दी मकान	सूखा पीपल नुक़सान जर तालीम ख़त्म	गिल्ट मुलम्मा	सांस आम हवा पीतल पीपल का दरख़्त
सूरज	दिन का वक़्त दायां हिस्सा	गंदुम	दिन की औलाद	दायीं आंख का डेला	इकलौता लड़का बंदर लाल मुंह का	गंदुमी रंग पांव की खराबियाँ	लाल गाय रूहानी नुक़्स	रथ गाड़ी	भूरा रींछ	नेवला भूरी भेंस	सुर्ख़ तांबा	भूरी कीड़ी दिमाग़ी ख़राबी मसनुई सूरज
चंदर	दिल बाग़ बायां हिस्सा बायीं आंख का डेला	माता दूध चावल रूहानी ताक़त	घोड़ा	तालाब कुवा	चकोर	ख़रगोश सफ़र	खेती की ज़मीन	समंदर मिर्गी की बीमारी गैबी मदद या आमदन	जायदाद शांति	पानी तह ज़मीन रात का वक़्त	चांदी मोती सफ़ेद खूनी कुवा	सफ़ेद बिल्ली ख़ुशामद
शुक्र	रुख़्सारा ,पराई मिट्टी का शौक़	घी, काफ़ुर	शादी	दहीं चौपाया चरिंद	फ़ल	चिड़िया लड़की	औरत हरदो मुहब्बत गाय सफ़ेद	राग आलू	दहीं का सफ़ेद रंग	मिट्टी	मोती दहीं रंग सफ़ेद	चौपाये का सुख लक्ष्मी का सुख
मंगल नेक	३२ दांत बाज़ू	हिरण चीता	पेट होंठ छाती	तलवार ड़ेक का दरख़्त	भाई नीम का दरख़्त	नाभि धुन्नी	दाल मसूर पहला लड़का	बच्चे का जनम लेना बाज़ू के बग़ैर जिस्म	सुर्ख़ रंग	शहद मीठा भोजन	सिंदूर लाल	बुलंद आवाज़
मंगल बद	शतुर	बेमुहार ऊंट		हर तरह से सब्ज़ कदमा नज़र बद वाला					ऊंट	कीना साज़	काला काना	लावल्द
बुध	ज़बान सिर	मूंग सालम	चौड़े पत्ते का दरख़्त	तोता कलाई चमगादड़	फ़क़ीर की आवाज़ आशीर्वाद	फूल फूलबहरी अंडा मैना लड़की	बकरी घास हरी भोड़ी गाय	फूल टूटा हुआ दीमक	चमगादड़ सब्ज़ रंग, थुथला, गूंगा	दांत घास ख़ुश्क शराबी कबाबी	सीप हीरा फटकड़ी	भेड़

हर ग्रह की अपने असर ज़ाहिर करने की निशानी के लिए खानावार चीजें

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सनीचर	आग से जलना गंदा कपड़ा हलक़ का कौआ	माश सालम	कीकर बेरी भंवे	मकान काले कीड़े	बुद्धू लड़का सुरमा	कौआ	बिनाई स्याह रंग गाय चरिंद	बिच्छू मौत तालु कनपटी पुड़पुड़ी	टाहली लकड़ी स्याह रंग	मगरमच्छ सांप	लोहा	मछली तख़्त पोश मसनुई तांबा बादाम
राहु	ठोड़ी नाना नानी	सरसों ससुराल कच्चा धुआं	तेंदुवा ज़बान का रिश्तेदार स्याह रंग	ख़्वाब	औलाद का सुख बज़रिआ दौलत छत	पूरा स्याह कुत्ता	सट्टे का ब्योपार	मालिखौलिया झोला	नीला रंग दहलीज़	गंदी नाली गर्की	नीलम	हाथी तेंदुवा समंदर का खोपड़ी
केतु	टांग नानका घर	इमली तिल	रीढ़ की हड्डी केला फोड़े	सुनना	पेशाब गाह	चिड़ा परदेश	गधा सूअर दूसरा लड़का	कान	दो रंगा कुत्ता	चूहा	क़ीमती दो रंगा पत्थर	छिपकली मुतबन्ना

पहला लड़का:- औलाद में सबसे पहला ही लड़का इकलौता लड़का कहलाता है। मगर औलाद में लड़की के बाद का लड़का मगर लड़को मे पहला लड़का होगा पहला लड़का।

ग्रह की निशानी - हर ग्रह अपना असर अपनी मुतलका चीजों से अपना असर जाहिर कर देगा। नर ग्रह नरों पर और स्त्री ग्रह स्त्री जात पर असर करेंगे। स्त्री ग्रह (चंद्र शुक्कर) मय बुध के साथ जब नर ग्रह होंवें नेक फल होगा।

इन्सान की उम्र और ख़ाना नंबरो की उम्र का 100 साला चक्कर का फर्क

इनसान की उम्र खतम हो या न हो मगर ख़ाना नंबर की उम्र खास वकत तक मुकर्रर हैं। जो मुकर्रर वकत पर खतम गिनी जायेगी। इन्सानी उम्र के लिये सनीचर के हाल में लाल किताब सफ़ा 316 ता 321 मुफसिल लिखा है और ख़ाना नंबर की उम्र लाल किताब सफ़ा 321 के हाथ के खाका के हासिया में दी हुइ है। यानि-

खाने की उम्र	100	75	90	85	औलाद	80	85	मौत	बुज़ुर्गी	90	धर्म अस्थान	90
ख़ाना नंबर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

फर्क ये है कि किसी शख़्स की 120 साला उम्र ही हो जाये या हो जाने वाली मालूम होती होवे तो इस के लिये हरएक ख़ाना की चीजों का ज्यादा से ज्यादा अरसा सिर्फ इस नक्शा में दिये हुए सालों तक असर माना जा सकता है। जब ख़ाना की उम्र खतम हो गई। मगर इस शख़्स की उम्र अभी चलती ही होवे तो इस खतम वकत वाले खाने की चीजों पर इस की क़िस्मत का ताल्लुक न होगा। हर खाने की उम्र का शुरू इन्सान के अपने जनम दिन से शुरू गिनेगें। 100 साल के बाद फिर वही दौरा शुरू होगा। जो जनम दिन में था। दांत वगैरह नये आयेंगे। अब जिन घरों ने पहले 100 साला चक्कर में बुरा फल दिया। पहला दिया हुआ फल न देंगे।

अरमान नंबर 113 A

ग्रहों की मियादें

ग्रह की उम्र का अरसा - जब कोई ग्रह हर तरह से क़ायम अपने वजूद में ख़ुद अपनी ही मुकम्मल ताकत का (ख़्वाह ऊंच ख़्वाह नीच या घर का मालिक मगर किसी दूसरे का इस पर या इसमें कोई असर न हो रहा हो) तो वह अपनी कुल उम्र तक असर देता रहेगा या इस की उम्र होगी ख़ाना नंबर 5 लाल किताब सफ़ा 116 पर दी हुइ यानि बृहस्पत 16 साल, सूरज 22 साल, चंदर 24 साल वगैरह। (कुल ग्रहो की 120 साला मजमुआ से अपना अपना हिस्सा)।

ग्रह के असर का आम अरसा- अपनी हालत से बाहर जब कोई ग्रह ऊपर की शर्त (ग्रह की उम्र का अरसा) से बाहर दोस्तों या दुश्मनों के बरताव में हो जावे। तो उसके असर के लिये लाल किताब सफ़ा 116 ख़ाना नंबर 3 में दिये हुए साल लेंगे। यानि बृहस्पत 6 साल, सूरज 2 साल और चंदर एक साल वगैरह।

अपनी मियाद के शुरू दरमियान या आख़िर पर हर ग्रह असर करता है। इस लिए खाली हिस्से की आम मियाद में हर ग्रह के साथ कौन से ग्रह का असर शामिल होगा।

दौरा ग्रह का	असर का वक़्त	शुरू	दरमियान	आख़िर	ग्रह का दौरा	असर का वक़्त	शुरू	दरमियान	आख़िर
बृहस्पत6	दरम्यान	केतु	बृहस्पत	सूरज	बुध 2	यकसां	चंदर	मंगल	बृहस्पत
सूरज 2	शुरू	सूरज	चंदर	मंगल	सनी 6	आखिर	राहू	बुध	सनीचर
चंदर 1	आखिर	बृहस्पत	सूरज	चंदर	राहु 6	आखिर	मंगल	केतु	राहु
शुक्र 3	दरम्यान	मंगल	शुक्र	बुध	केतु 3	आखिर	सनीचर	राहु	केतु
मंगल 6	शुरू	मंगल	सनीचर	शुक्र					

ग्रह की महादशा - किसी ग्रह के बुरे और लगातार ही बुरे असर देने की म्याद इस के महादशा में हो जाना कहलाता है। महादशा के लिये लाल किताब सफ़ा 116 ख़ाना नंबर 4 में दिये हुए साल लेंगे। यानि बृहस्पत 16 साल सूरज 6 साल चंदर 10 साल वगैरह।

उम्र के एक 35 साला चक्कर में महादशा का सिर्फ एक ही ग्रह हो सकता है। और सारी उम्र में ख़्वाह एक ही ग्रह की लगातार ख़्वाह किसी दो की एक के बाद दूसरे की साथ ही लगती हुइ ख़्वाह एक के बाद दूसरी या दूसरे की कुछ फर्क देकर हो। ज्यादा से ज्यादा सिर्फ दो दफा ही महादशा आ सकती है। अगर किसी पितरी ऋण या बजुरगों के पापों के सबब से एक महादशा का ग्रह अपनी म्याद उम्र के 35 साला चक्कर के आखरी 35 वें साल खतम हो और इतफाकन दूसरा महादशा का ग्रह उम्र के दूसरे 35 साला चक्कर के शुरू साल से ही जारी हो जावे तो पहली महादशा का आखरी साल और दूसरी महादशा का पहला साल या दोनों का दरम्यानी साल दो दफा गिना जायेगा यानि महादशा का कुल अरसा दोनों महादशा के मजमुआ से न सिर्फ एक साल कम होगा बल्कि पहली का आखरी साल और दूसरी का शुरू वाला साल या दरम्यानी साल ख़्वाह वो दोनो महादशायें लगातार हों ख़्वाह दरम्यान में कुछ फर्क देकर होंवे। साफ साल होगा या दरम्यानी साल महादशा का तो न होगा। मगर म्याद में सिर्फ़ गिना जायेगा या वर्षफल के हिसाब और राशि नंबर के ग्रह बोलने के हिसाब से कोई ऐसा ग्रह आ जावे जो महादशा वाले का दुश्मन ग्रह हो तो पहली महादशा का आखिरी साल भी साफ साल होगा। मसलन शुक्र की महादशा होती है 20 साल। जब ऐसी

हालत वाली दोनों ही शुक्र की महादशा आ जावे तो दो दफा की 20 साल के हिसाब से कुल 40 साल के अरसे से एक साल कम या 39 साल का कुल जमाना दोनों महादशाओं का होगा और दरम्यानी 20 वां साल साफ साल होगा। सबसे लंबी महादशा है भी शुक्र की ही। इसलिये माना है कि सारी उम्र में किसी शख़्स का बुरे से बुरा जमाना 39 साल ही जयादा से जयादा हो सकता है। जिसके दरम्यानी साल को महादशा का साल न गिनेगें। कुण्डली में महादशा वाले ग्रह की **दो हालतें-** 1) जब किसी ग्रह के "बराबर के" ग्रह रद्दी हों। मगर वो ख़ुद रद्दी न हो। लेकिन वर्षफल के हिसाब से वो जिस साल तखत का मालिक बने और उम्र के सालों के हिसाब से राशि नंबर के ग्रह बोलने पर वो ख़ुद भी रद्दी हो जाये तो जिस दिन से वो कुण्डली के राशि नंबर के ग्रह बोलने के टकराव पर ख़ुद रद्दी हुआ। उस दिन से वो महादशा में हो गया माना जायेगा। बेशक वो तखत पर पहले ही आ चुका हो।

2) जब कोई ग्रह कुण्डली में ख़ुद भी रद्दी होवे और उस के बराबर के ग्रह भी रद्दी हों तो जिस दिन से वो ग्रह तखत का मालिक हुआ महादशा में हो गया गिना जायेगा। ख़्वाह राशि नंबर के हिसाब से बोलने वाले ग्रहों के टकराव का साल कब ही जारी हुआ हो या जारी होवे। लेकिन अगर ऐसी महादशा के वकत कुण्डली के ख़ाना नंबर के हिसाब से उम्र की गिनती पर बोलने वाले ग्रह उस महादशा वाले ग्रह के दोस्त ग्रह ही बोल पडें तो वो बोलने वाले दोस्त ग्रह अपने महादशा वाले दोस्त ग्रह के महादशा में हो जाने के मातम में उस ग्रह को (महादशा वाले) कोई नेक फल पैदा करने में मदद न देंगे और न ही इसमें वो ग्रह कोई और बुरा फल पैदा करेंगे। सिर्फ दुनियादारों की तरह आम साधारण मातम परस्ती कर के चले जायेंगे।

जिस ग्रह की महादशा हो वो अपनी महादशा के जमाना में उस महादशा के नीचे दिये हुए सालों में (इन्सान की उम्र या ग्रह की उम्र के हिसाब से नहीं। बल्कि सिर्फ महादशा के अरसा की म्याद के सालों में कोई खास खास साल) अपना

आम असर जैसा भी कि उस का कुण्डली में मौका के मुताबिक इस खास खास साल में होवे। कायम रखा करता है यानि ये जरूरी नहीं कि वो उस खास खास साल में मंदा ही होवे क्योंकि महादशा में है या किसी और तरह से रद्दी है।

महादशा वाले ग्रह के जाती असर का साल

ग्रह	महादशा के कुल साल	जाती असर कायम रखने का साल	कैफीयत
बृहस्पत	16	10 वां	ये 10 वां साल बृहस्पत की गुरू पदवी और रियायती साल के इलावा होगा।
सूरज	6	ताक या टांक	जो साल कि 2 पर पूरा तकसीम ना होवे। 1-3-5 वां
चंदर	10	जुफत या जोङा	जो साल कि 2 पर पूरा तकसीम हो जावे। 2-4-6वां
शुक्कर	20	11 वां	इस ग्रह के आम दौरा के 3 साला अरसा का पहला साल
मंगल	7	चौथा	शुक्र में मगंल के ग्रह के असर प्रबल होने का होता है।
बुध	17	5 वां	महादशा का धोका लंबे अरसे वाली अकेली और दो छोटे छोटे अरसा वाली मुश्तरका महादशा में 12 साल का धोका सा लगा रहता है कि शायद मौत ही आने लगे। मगर वो सिर्फ धोका ही होता है और बेमायनी। महादशा का जो साल होवे (उम्र का नहीं) इस अरसा के सालों से एक दो वगैरह ता 12 साल में हर साल के मुतलका ग्रह कुण्डली के मुताबिक अपने असर में धोका दिया करते हैं। ख़्वाह उन 12 सालों में धोका देने वाले ग्रह महादशा में हों या न हों।
सनीचर	19	6 छटा	
राहु	18	7 वां	
केतु	7	तीसरा	
इन्सानी उम्र	औसत 120	साल	

महादशा का :- ग्रह	सूरज	चंदर	केतु	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	मौत	मिला ग्रह	बृहस्पत	शुक्र	राशि ख़त्म
साल	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

(7-8: आम तबदीली हालत)

महादशा के वकत न सिर्फ़ महादशा वाले ग्रह का मंदा फल होगा। बल्कि उस महादशा वाले ग्रह के "बराबर के ग्रह" भी (लाल किताब सफ़ा 105 फरमान नंबर 109) ख़्वाह वो

कुण्डली में अपनी अपनी जगह ऊंच फल के ही या उस महादशा वाले के "साथी ग्रह" या उनके साथ ही एक ही ख़ाना में कयूं न हों सो जाया करते हैं। यही हाल दोस्त ग्रहों का होगा। जो सिर्फ मातम पुरस्ती करके चले जाया करते हैं। लेकिन ख़ुद बुरा नहीं करते और न ही महादशा वाले का मंदा फल अच्छा करते हैं। महादशा वाले के लिये इसके महादशा के जमाने में जखम पर नमक डालने का असर करते हैं।

महादशा के असर के वकत महादशा वाले ग्रह का कुण्डली के सिर्फ उस ख़ाना नंबर का जिसमें कि वो ग्रह बैठा हो और इन्हीं चीजों पर जो चीजें कि उस ग्रह (महादशा वाले) की उस बैठे हुए ख़ाना की मुतलका हों पर मंदा असर होता है। "बराबर के" ग्रहों का जो महादशा वाले के महादशा शुरू होने के वकत उस महादशा वाले के लिंये सो जाते हैं। सोया हुआ असर भी सिर्फ उन ही चीजों से मुतलका होगा जो कि वो बराबर के ग्रह उसे दे सकते थे उस खाने/उन खानों के हिसाब से जिस में कि वो महादशा वाला ग्रह और वो बराबर वाले कुण्डली में बैठे हों। यानि कि अगर महादशा न होती तो जो असर उनका हो सकता था। वो अब महादशा में सोया हुआ होगा। यही असूल दोस्त ग्रहों की मातम परस्ती और दुश्मन ग्रहों का जखम पर नमक मलने की तरह का होगा। बरअकस इसके महादशा वाले ग्रह का ख़ुद अपना असर दूसरों के लिये ख़्वाह वो "बराबर के" दोस्त या दुश्मन हों। महादशा का कोई असर न होगा। वो असर वैसा ही होगा। जैसा कि महादशा के बगैर होता था। याद रहे कि धोके के 12 साला चक्कर में हर सातवें (राहु का) या आठवें (ख़ुद मौत नमानी का) साल तबदीली हालत का हुआ करता है। ख़्वाह महादशा ही क्यूं न हो। इस तबदीली हालत के लिये लाल किताब सफ़ा 10 फरमान नंबर 23 की हिदायत मददगार होगी।

धोके का 12 साला चक्कर

महादशा के इलावा तमाम उम्र पर भी अपना असर किया करता है। इस चक्कर के 12 सालों में हर साल के सामने लिखे हुए ग्रह अगर दुरस्त और कायम या अपनी बुनियाद पर कुण्डली में खडे न हों। (यानि बुध वगैरह से बुनियाद खोखली या दुश्मन ग्रहों से खराब और नष्ट वगैरह) तो नाबालिग (ख़्वाह बच्चा ख़्वाह मर्द जैसा कि बालिग नाबालिग होने की शर्त अरमान नंबर 12-13

में लिखी गयी है) की क़िस्मत बल्कि उम्र तक बेमायनी होगी और बालिग के लिये ये धोका इस ग्रह का जो उम्र के हिसाब से मालूम होता होवे राशिफल का होगा। यानि शक का फायदा उठाया जा सकता है।

धोके के ग्रह का धक्का

जिस तरह से उम्र का पहला 35 साला चक्कर जब दुबारा आता है तो अपने पहले दौरा के बुरे ग्रहों के असर में तबदीली कर दिया करता है। उसी तरह ही ये 12 साला धोके का चक्कर महादशा के जमाना में और उम्र आम के जमाना में (हर ग्रह की महादशा के सालों के अरसा का उम्र से टुकङा) जब दूसरी दफा (एक ही ग्रह का दूसरी दफा धोके का साल) आवे तो सोये हुए ग्रहों के असर को जगा दिया करता है और तबदीली हालात किया करता है। ख़्वाह भली तरफ हो ख़्वाह बुरी तरफ। जिस का उपाय फरमान नंबर 23 लाल किताब सफ़ा नंबर 10 पर लिखा ही हुआ है।

धोके का 12 साला चक्कर

सूरज	चंदर	केतु	मंगल	बुध	शनीचर	राहु	मौत	पितरी ग्रह	बृहस्पत	शुक्कर	राशि खत्म
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120

तरीका इस्तमाल जुदा लिखा है।

ऊपर लिखा हुआ चक्कर देखने का ढंग

महादशा के वकत ख़्वाह किसी भी ग्रह की हो। ज्यादा से ज्यादा 1 से 40 तक हिंदसे उसी तरतीब से लिख लेंगे। जिस तरह कि ऊपर की फ़ेहरिस्त में दिखलाये है। गोया 12 खानों में हिंदसे लिखे मौजूद है। मगर ऊपर इन खानों की पेशानी पर ग्रहों के नाम न लिखें। अब जिस ग्रह की महादशा शुरू होवे। पहली दफा या पहली ही महादशा वाले ग्रह का नाम एक के हिंदसा वाले ख़ाना के ऊपर लिख दें और बाकी ग्रहों को नक़्शा में दी हुइ तरतीब से यानि सूरज के बाद के खाने में चंदर के बाद के खाने में केतु वगैरह। अब जिस हिंदसे की पेशानी पर कोई ग्रह लिखा हुआ होगा वो साल उस धोके वाले ग्रह के असर का महादशा के महादशा के सालों में तबदीली हालात का होगा। महादशा में पड़ा हुआ ख़्वाह कोई भी ग्रह हो। लेकिन अगर दो महादशा लगातार एक के बाद दूसरी शुरू हो जावें तो दोनों के दरम्यान के साल वाले हिंदसा के ग्रह का असर बिल्कुल न होगा। लेकिन बाकीयों का बदस्तूर होगा। यानि कि महादशा गिनी तो पूरे साल ही जायेगी। मगर दरम्यानी साल महादशा के बुरे ही असर का जरूरी न होगा। मसलन शुक्र की दोनों ही 35 साला चक्करों में दो लगातार महादशा आती मान लें तो महादशा के सालों के ग्रह मंदरजा जैल होंगे।

शुक्र	राशि खतम	सूर्य	चंदर	केतु	मंगल	बुध	शनी	राहु	मौत	पितरी	बृहस्पत
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40								

इन्हीं चालीस मंदे सालों के धोके को खोलने के लिये चालीस दिन रियायती या चालीस दिन तक हर उपाय की म्याद मुकर्रर की है।

ऊपर दिये हुए हिंदसे दरअसल महादशा के अरसा या महादशा की म्याद का हर साल नंबर है। उम्र का साल नहीं। अगर उम्र का कौन सा साल महादशा

में किस किस ग्रह के धोके का साल है मालूम करना है तो जिस जगह अब हिंदसा नंबर 1 लिखा है। वहां उम्र का वो साल नंबर लिख देवें। जिस साल कि महादशा शुरू हुइ और महादशा मजकूरा की म्याद के बराबर हिंदसे उम्र के सालों के तरतीबवार लिख कर उम्र के सालों का साल नंबर देख लें। इस दिये हुए नक़्शे में तो महादशा की म्याद के साल नंबर है यानि हिंदसा नंबर 1 से मुराद है कि महादशा का पहला साल। हिंदसा नंबर 2 से मुराद है महादशा का दूसरा साल। फरजन किसी की 23 साला उम्र में शुक्र की महादशा शुरू हुई तो जहां अब नंबर 1 का हिंदसा लिखा है वहां 23 का हिंदसा लिखा तो नंबर 2 की जगह 24 वां हिंदसा उम्र के सालों का हो जायेगा या इस तरह हिंदसे लिख लेने पर उम्र के सालों में महादशा की म्याद का हर इक साल नंबर मालूम हो जायेगा।

पहली महादशा शुक्र के 20 वें साल खतम हुइ और दूसरी भी 20 वें साल शुरू हुइ। गोया 20 वां साल दोनों महादशायों का दरम्यानी साल हुआ। ये दरम्यानी 20 वां साल। असर देखने के लिये मिटा ही दिया। यानि इस 20 वें साल न शुक्र ही महादशा में गिनेगें न ही सनीचर को जो 20 वें साल की पेशानी पर लिखा गया है। अब कुण्डली के हिसाब से जहां जहां कि शुक्र और सनीचर हों और मौका के मुताबिक जैसा जैसा उनका असर हो गिना जायेगा। बाकी सालों में हर ग्रह जो कि ऊपर के नक्शा की पेशानी पर लिखा है। महादशा के सालों में धोका देगा और तबदीली हालात पैदा करेगा। {एक तरफ तो इस फ़ेहरिस्त के हिसाब से जो ग्रह आवे ले लेंवे। दूसरी तरफ वर्षफल के हिसाब से जिस ग्रह का दौरा हो (उम्र के जिस साल कि देखना हो) वो लेवें। तीसरी तरफ राशि नंबर के ग्रह बोलने के हिसाब का ग्रह (उम्र के जिस साल कि देखना हो) वो ले लेंवें। अब इन तीनों ग्रहों में से एक ही ग्रह दोनों तरफ या दो दफा निकल पडे वो ग्रह धोके का ग्रह होगा। महादशा के जमाना में}। (अच्छी या निहायत बुरी)। क्योंकि शुक्र महादशा में है। दुश्मन ग्रह भी सतायेंगे। मगर वो भी अपने अपने सालों में। यानि एक तरफ तो ऊपर के नक्शा के सालों में सूरज चंदर राहू बुरा फल देंगे। सिर्फ पक्के दुश्मन ही दुश्मन

ग्रह गिने जायेंगे। यानि सिर्फ वही दुश्मन ग्रह जो शुक्र के सामने लाल किताब सफ़ा 105 फरमान नंबर 119 की फ़ेहरिस्त में दुश्मन के खाने में लिखे है। बाकी जो ग्रह रह गये वो बृहस्पत व मंगल हैं जो शुक्र के बराबर के हैं। वो चुप या सो गये गिने जायेंगे और सनीचर बुध केतु तीनों शुक्र के दोस्त हैं। वो सिर्फ मातम पुरस्ती करके चले जाएंगे।

दूसरी तरफ तखत का मालिक ग्रह व राशि नंबर बोलने वाले ग्रहों का मुश्तरका असर भी साथ होगा। महादशा का 11 वां साल शुक्र के लिये महादशा के जमाना में रियायती साल होगा। ऊपर की नक़्शा की पेशानी के खाने राशि खतम- मौत-पितरी ग्रह का मतलब ये होगा। किः-

1) मौत - इस शख़्स के ख़ाना नंबर 8 में जो ग्रह हैं वो गिने जायेंगे। उन सालों की हिंदसा की पेशानी पर जहां की लफ़्ज़ मौत लिखा है। अगर ख़ाना नंबर 8 इस शख़्स की कुण्डली का खाली हो तो लफ़्ज़ मौत के खाने के नीचे लिखे हुए हिंदसों वाले साल धोके के साल न होंगे और अगर ख़ाना नंबर 8 (बमूजब जनम कुण्डली) कोई ग्रह या कई ग्रह हों तो वो ख़ाना नंबर 8 वाले ग्रह दो दफा (अगर एक ही ग्रह हो तो वो अकेला अगर कई हों तो हर इक अपने अपने साल जहां की हर इक या वो अकेला ऊपर दिये धोके वाले नक्शा में हो) धोका देंगे। इसी तरह ही-

पितरी ग्रह - से मुराद ख़ाना नंबर 9 (जनम कुण्डली कें चंदर कुण्डली के नहीं) से होगी और राशि खतम से मुराद ख़ाना नंबर 12 के ग्रहों से होगी।

महादशा के बगैर बाकी उम्र के सालों में ऊपर का असूल बदस्तूर होगा। सिर्फ पेशानी भरने का ढंग जरा फर्क पर होगा।

आम उम्र में धोके का 12 साला चक्कर- एक से लेकर 120 साल तक जो औसत उम्र माना गया है। ऊपर दी हुइ तरतीब से तमाम हिंदसे लिख देवें। कुण्डली वाले के वर्षफल के हिसाब से जिस साल सूरज का दौरा पहली दफा शुरू होता होवे। उस साल के हिंदसा वाले खाने की पेशानी पर लफज सूरज लिख दें और ऊपर दी हुइ तरतीब से पेशानी के बाकी खानों में बाकी तमाम ग्रह लिख दें और सालों के सब खाने आगे पीछे के पूरे कर लेवें और ऊपर के ढंग पर धोके का साल देख लेवें।

फरजन उम्र जारी के साल धोके की फ़ेहरिस्त में है बुध। उधर वर्षफल के हिसाब से उम्र के जारी साल का ग्रह या राशि नंबर के हिसाब से जारी उम्र का ग्रह भी बुध ही आ जावे तो बुध धोके का ग्रह होगा। यानि अगर एक ही साल में वर्षफल का ग्रह या राशि नंबर बोलने का ग्रह और धोके की फ़ेहरिस्त का ग्रह एक ही हो जावें तो वो ग्रह आम उम्र के लिहाज से धोके का ग्रह होगा।

(1) और अगर आम उम्र में धोके का ग्रह और महादशा की फ़ेहरिस्त का धोके का ग्रह एक ही हो जावे तो वो ग्रह मौत तक की नौबत के लिये धोका दे देगा।

(2) धोके के ग्रह का जरूरी नहीं कि नीच ग्रह ही होवे। सबसे ऊंच होता हुआ भी हर इक ग्रह धोके का ग्रह गिना जाता है। ख़्वाह वो लाख ऊंच हालत का ही क्यूं न हो।

नाबालिग की हालत में या नाबालिग रहने के दिन तक ये धोका ग्रहफल का या पक्का धोका होगा और उम्र ही खतम कर देने तक हो सकता है। मगर बालिग की हालत या बालिग होने के दिन से ये धोका राशि फल का (यानि काबिल उपाय) होगा। मगर हर दो हालत में धोका होगा जरूर। वो किस बात में? हर इक ग्रह के धोके का साल आम उम्र और महादशा के जमाना के सालों में तो मालूम हो गया और ग्रह का नाम भी पता लग गया। अब धोका देने वाला ग्रह जनम कुण्डली में जिस ख़ाना नंबर का होवे। उस ग्रह का उस बैठे हुए होने के खाने के मुताबिक जिन जिन चीजों का ताल्लुक हो उन में वो ग्रह उस साल धोका देगा। जिस तरह महादशा के जमाना में हर ग्रह को अपना जाती फल (बमुजब जनम कुण्डली) देने का रियायती साल मिल गया गिना जाता है। इसी तरह ही इन्सान की उम्र के हर सातवें (आम हालत) और हर आठवें (अल्प आयू वाले) तबदीली हालात होगी। उस सातवें खतम या आठवें शुरू के दरम्यानी अरसा में तबदीली हालत जरूर होगी। ख़्वाह कोई ग्रह 12 साला धोके के नक़्शा के हिसाब से या वर्षफल वगैरह के हिसाब से प्रबल हो रहा हो।

ऊपर का तमाम हिसाब अगर सालों में लिख कर देखा तो साल के 12 महीनों में भी वही असर जाहिर होगा। यानि नक्शा में सालों की जगह लफ़्ज़ महीना समझें और महीनों

के वकत ख़ाना नंबर 1 से मुराद बैसाख का महीना लेंगे। जिसके बाद देसी नामों के बारह महीने होंगे। यानि नंबर 1 बैसाख 2 ज्येष्ठ 3 आषाढ़ 4 सावन 5 भादों 6 अस्सूज 7 कार्तिक 8 मग्धर 9 पोह 10 माघ 11 फाल्गुन 12 चेत तरतीब वार होंगे। फिर देसी महीनों के मुताबिक अंग्रेजी तारीख भी देखी जा सकती है। साल और महीने के बाद खास दिन के लिये इसी नक़्शा में सिर्फ़ 1-32 तक हिंदसे लिख कर नंबर 1 के हिंदसा वाले खाने पर जनम दिन अरमान नंबर 9 का ग्रह लिख कर तमाम ग्रह पूरे कर लें।

धोके के चक्कर की म्याद एक साल होती है। मगर इस एक साल में से भी आगे पूरा वकत देखने के लिये हर इक ग्रह के तखत के मालकीयत के जमाने के दौरा में इस के शुरू दरम्यान व आखिर पर के दूसरे साथियों का ताल्लुक भी देख लें। जो कि अरमान नंबर 113A में दर्ज है।

महादशा दरअसल किसी ग्रह के किसी एक खास हिस्सा की ताकत के सो जाने से मुराद होती है। जिस तरह कि तमाम जिस्म से कोई अंग नाकारा हो जावे। किसी ग्रह का कुण्डली के 12 ही खानों के असर का सो जाना ग्रह के नष्ट हो जाने से मुराद होती है।

महादशा के जमाना में महादशा वाले ग्रह पर इसके दुश्मन ग्रहों का असर इस ग्रह की अपनी मुतलका रेखा का यकायक टूट जाना या मौत की निशानी होती है। महादशा के जमाना में महादशा वाले ग्रह से इस के दोस्त ग्रहों का मातम पुरस्ती के लिये ही आ मिलना इस ग्रह का अपनी मुतलका रेखा खतम होने से पहले ही दूसरी रेखा का शुरू हो जाना होगा। यानि वो मौत की निशानी होते हुए भी उम्र व जिंदगी का मालिक होगा। बल्कि तबदीली हालात की निशानी होगी।

दो ग्रहों की महादशा - अगर किसी वकत दो ग्रह महादशा के मालूम होते हों तो जो उन दोनों में से रद्दी हो जाएगा वो महादशा का होगा।

मशनुई ग्रहों और असल ग्रहों के टोले में से मशनुई हालत

लाल किताब हिन्दी

वालों से जो रद्दी होगा वो महादशा का होगा। मसलन सूरज और मशनुई सूरज (शुक्र बुध) दोनों ही टोले शक्की हो जावें तो मशनुई हिस्से का जुज ज्यादा रद्दी होवे तो वो महादशा का होगा।

कायम ग्रह या दुरसत और नेक बुनियाद का ग्रह - कभी महादशा का न होगा और हर ग्रह जहां कि वो राशिफल का है। (अरमान नंबर 6 नीच कहलायेगा। मगर महादशा का न होगा। क्योंकि काबिल उपाय ही हो चुका है।)

महादशा में कौन कौन से ग्रह कितने कितने साल सोये हुए होंगे।

महादशा का ग्रह	बृहस्पत	सूरज	चंदर	शुक्र	मंगल	बुध	सनी	राहु	केतु
ग्रह जो सो जायेंगे	सनीचर 6 राहु 6 केतु 3	मंगल बद 6	बृहस्पत 2 मंगल 6 सनीचर 2	बृहस्पत 6 मंगल 6 बुध 2 सनीचर 6	शुक्र 1 सनीचर 6 राहु	बृहस्पत 6 मंगल 6 सनीचर 5 केतू	बृहस्पत 16 केतु 3	बृहस्पत 8 सूरज चंदर 1 शुक्र 3 मंगल 6	बृहस्पत 6 सूरज बुध सनी 1
कुल साल	15	6	10	20	7	17	19	18	7

ऊपर की फ़ेहरिस्त में जिस तरतीब से "बराबर के ग्रह" लिखे हैं। वो उसी तरतीब से एक के बाद दूसरा सोते हुए होते चले जायेंगे। जिन ग्रहों के सामने कोई हिंदसा नहीं लिखा गया वो ग्रह निरपक्ष गिने जायेंगे।

बृहस्पत- की कुल महादशा 16 साल होती है। मगर इसकी महादशा के जमाना में सो जाने वाले ग्रहों के मिजान कुल 15 साल है। ये एक साल का फर्क बृहस्पत अपनी महादशा के वकत बहैसीयत गुरू अपना जाती असर के लिये रखा करता है। जो इसकी महादशा का शुरू होने का ही साल होता है। या यूं कहो कि बृहस्पत की महादशा के कुल 15 साल मंदे और 16 साल

कुल में से महादशा का पहला ही साल बृहस्पत की अपनी मर्जी का होता है। इसी तरह ही बृहस्पत हर एक सोने वाले ग्रह का पहला साल भी दूसरे ग्रहों की तरफ से ख़ुद बृहस्पत की गुरूयायी के लिये रख लेता है। जिसमें भी बृहस्पत का अपनी मर्जी का फल होगा। इस तरह पर 16 साला महादशा के अरसा के सालों में बृहस्पत का ख़ुद अपना अखत्यार किस किस साल हुआ।

बृहस्पत की महादशा के वकत सो जाने वाले ग्रह सनीचर 6 साल राहु 6 साल और केतु 3 साल यानि बृहस्पत की महादशा के वकत तमाम पापी ग्रह 15 साल की म्याद के होते है। बृहस्पत की महादशा शुरू होवे तो उस महादशा का :-

साल नंबर 1 पहला- बृहस्पत ख़ुद अपनी गुरूयायी का ले गया।

सनीचर के 6 सालों में से (2-3-4-5-6-7) } सनीचर का पहला मगर बृहस्पत का दूसरा साल बृहस्पत सनीचर से गुरू दान का ले गया।

राहु के 6 सालों (8-9-10-11-12-13) में से अपना बतौर गुरु } ये आठवां साल है बृहस्पत की महादशा का मगर राहु का होगा पहला साल। बृहस्पत राहु से गुरूदान का ले गया।

केतु के 3 सालों (14-15-16) में से } ये केतु का पहला मगर बृहस्पत का 14 वां साल है। जो बृहस्पत केतु से गुरूदान का ले गया।

खुलासतन बृहस्पत अपनी महादशा के वकत का पहला दूसरा आठवां साल व चौदहवां कुल 5 साल तो इस तरह ले गया और अपने दूसरे असूल के मुताबिक कि अपनी उम्र का पहला हिस्सा यानि 8 साल कभी बुरा फल न देगा। भला असर ख़्वाह दे ख़्वाह न देवे। यानि बृहस्पत की महादशा दरअसल 9 वें ही साल से शुरू होगी और 8 साल बाकी में से भी 14वां और 10 वां दो साल और अपनी मर्जी के रख लेगा।

धोके के ग्रह के मायने:- लफज धोका दरअसल गुमराही का नाम है। धोके का ग्रह अगर तारने वाला हुआ तो तारेगा दोगुना। अगर मारेगा तो भी दो गुना। गर्जे कि धोके के चक्कर से जाहिर होने वाला ग्रह होता है दो गुना ताकत का। ख़्वाह भला करे ख़्वाह बुरा करे।

महादशा के वकत में किन किन ग्रहों पर महादशा का असर न मानेंगे।

महादशा में होवे	तो कौन कौन से ग्रह बदस्तूर होंगे।
बृहस्पत	सिवाये पापी ग्रहों के सब और ग्रह बदस्तूर होंगे।
सूरज	सिवाये मंगल बद के बाकी और सब ग्रह बदस्तूर होंगे।।
चंदर	बुध शुक्र सूरज राहू केतु
शुक्र	सूरज चंदर राहु केतु
मंगल	सूरज चंदर बृहस्पत केतु बुध राहु नदारद
बुध	सूरज चंदर शुक्र राहु केतु नदारद
सनीचर	सूरज चंदर मंगल बुध शुक्र राहु।
राहु	सनीचर बुध केतु सूरज नदारद।
केतु	चंदर शुक्र मंगल राहु सूरज नदारद व बुध नदारद

महादशा का असर ग्रह मुतलका की चीजों के असर के जरिया भी जाहिर और सबूत दे देता है।

नष्ट ग्रह के वकत इस ग्रह का मशनुई हालत का ग्रह काम देता है।

दो पक्के ग्रहों से मशनुई ग्रह कौन कौन सा बन जाता है

पक्का ग्रह	बृहस्पत	सूरज	चंदर	शुक्र	मंगल	बुध	सनीचर	राहू	केतु
मशनुई ग्रह	सूरज शुक्र खाली हवाई	बुध शुक्र	सूरज बृहस्पत	राहू केतु	सूरज बुध मंगल नेक सूरज सनीचर मंगल बद	बृहस्पत राहु	शुक्र बृहस्पत केतु सुभाओ मंगल बुध राहु सुभाओ	मंगल बुध (ऊंच) सूरज सनीचर (नीच)	शुक्र सनीचर (ऊंच) चंदर सनीचर (नीच)

मशनुई ग्रह - मौत दरअसल पापी ग्रहों के पाप का नतीजा है और पापी ग्रह तीन है।

पाप } राहुः- परसा चलाने वाला परसू मगर परसे कुल्हाड़े का साथ न होगा।
केतुः- सिर्फ खाली परसा या परसा कुल्हाड़ा। कुल्हाड़े वाले का साथ न होगा।

पापी } सनीचर:- परशराम। परसू परसा दोनों की जमा यानि कुल्हाड़ा व कुल्हाड़े वाला दोनों ही इकट्ठे।

मंगल के दो हिस्से नेक व बद } सूरज बुध (नेक) केतु, सूरज सनीचर (बद) राहु, } शुक्र होता है।

सूरज सनीचर (रात दिन इकट्ठे ही) खाली बुध होते है। अगर बुरी खासीयत में हों तो राहु नीच या मंगल बद होगा।

असरः- मशनुई बनावट के ग्रहों का असर खास खास बातों का होगा।

मशनुई बृहस्पत	औलाद की पैदाइश का मालिक होगा।
मशनुई सूरज	सेहत का मालिक होगा।
मशनुई चंदर	वालदैनी ख़ून (नतफा) का ताल्लुक
मशनुई शुक्र	दुन्यावी सुख बजज औलाद
मशनुई मंगल	औलाद जिंदा रखने का मालिक (बेल-सब्जी का मालिक है)।
मशनुई बुध	इज्जत - शोहरत
मशनुई सनीचर	सख़्त बीमारी
मशनुई राहु	झगड़े फसाद
मशनुई केतु	ऐश का मालिक होगा

मशनुई हालत की बनावट के ग्रह की हालत में उसके हर दो ग्रहों का असर जुदा जुदा कर लेना या दो का मुश्तरका कर लेना हो सकता है। यानि राशिफल का होगा।

वर्षफलः- क़िस्मत का सालावार हाल देखने के लिये ये जरूरी जुज है और सामुद्रिक में **वाक्या** की बुनियाद पर बनाया हुआ वर्षफल ज्यादा तसल्ली बख़्श होगा। वाकयात से मुराद खुशी या गमी के पक्के वाकया से होती है। मसलन शादी का दिन, महीना और साल किसी हकीकी खून के ताल्लुकदार की पैदाइश या मौत। नरग्रहों - स्त्रीग्रहों या मख्खनस ग्रहों के मुतलका असर में से किसी एक चीज का पक्का वाक्या। जनमदिन (तारीख पैदाइश नही इतवार सोमवार वगैरह), इन्सान किस ग्रह का है वाला ग्रह या इसका जद्दी या ख़ुद साखता मकान किस ग्रह का है वाला ग्रह। जनम कुण्डली में लगन के ख़ाना का ग्रह और अगर लगन का ख़ाना खाली हो तो जनम राशि के घर का मालिक ग्रह। गर्जेकि जो भी सही सही और दुरसत व पक्का वाक्या

मिल सके ले लेंवें। फरजन किसी शख़्स की शादी का वाकया पक्का मिल गया है। पहली शादी का (अगर कई दफा शादी हो तो पहली शादी का दिन ही गिनने के काबिल होगा)। जो इसकी 17 साला उम्र में उम्र में हुइ। यानि 17 साल उम्र से शुक्र शुरू हो गया। अगर शादी का साल महीना दिन मालूम न हो और पहली शादी की औरत का मौत का दिन महीना या साल ही मालुम होवे तो औरत के गुजर जाने या शुक्र के खतम होने का साल होगा। लाल किताब सफ़ा 116 ख़ाना नंबर 3 में हर ग्रह की दी हुइ आम मियाद में शुक्र का अरसा 3 साल दिया है। 17 साल उम्र में शादी हुइ तो इसका शुक्र का ग्रह 17 से शुरू हो गया मान कर 3 साल यानि 19 साल उम्र के आखिर तक रहा। अगर 17 साल उम्र में औरत मर गई तो 17 वें साल या औरत के मरने के दिन शुक्र खतम हुआ या औरत की मौत के दिन से 3 साल पहले से चल कर मरने के दिन तक शुक्र का दौरा था।

वर्षफल बनाने के लिये ग्रहों का दौरा यानि कौन ग्रह किस ग्रह के पहले या बाद अपना असर देगा। लाल किताब सफ़ा नंबर 7 पर तरतीब वार दिया है। यानि सबसे पहले बृहस्पत के बाद सूरज के बाद चंदर वगैरह आखरी 9 वां नंबर केतु का है। ग्रहों की आम म्याद के सालों की तादाद और तरतीब भी लाल किताब सफ़ा 116 ख़ाना नंबर 3 पर दर्ज है। सारे ही ग्रहों की कुल म्याद का मजमूआं 35 साल उम्र का एक चक्कर होगा।

मिसाल - किसी शख़्स का शुक्र शुरू हुआ 17 साल उम्र में तो वर्षफल होगाः-

6 साल बृहस्पत	2साल सूरज	1साल चंदर	3साल शुक्र	6साल मंगल	2साल बुध	6साल सनी	6साल राहू	3साल केतु
							1 ता 4	5 ता 7
8 - 13	14 - 15	16	17-19	20-25	26-27	28-33	34-39	40-42
43-48	49-50	51	52-54	55-60	61-62	63-68	69-74	75-77
78-83	84-85	86	87-89	90-95	96-97	98-103	104-109	110-112
113-118	119-120							

जितने साल तक उम्र चलती या हो जाने वाली होवे लिख लेवें।(दोनों हिंदसे शामिल गिनकर हरग्रह की मयाद होगी।)

पहचान:- कि वर्षफल दुरसत है या गलत। उम्र के शुरू होने का पहला साल या हिंदसा नंबर 1 जिस ख़ाना में हो। वहां देखों कि पेशानी पर कौनसे ग्रह का नाम लिखा है। दुरस्त हालत में हिंदसा नंबर 1 के खाने वाला ग्रह इसकी कुण्डली के ख़ाना नंबर 9 या ख़ाना नंबर 1 में होगा या उस शख़्स का जद्दी मकान हिंदसा नंबर 1 के ख़ाना के ग्रह से मिलता या वो शख़्स ख़ुद उस ग्रह का होगा। जनम के दिन का ग्रह (इतवार के लिये सूरज, सोमवार के लिये चंदर वगैरह) भी हिंदसा नंबर 1 के ग्रह का हो सकता है। इस जांच के लिये मंगल और सनीचर या सूरज और बुध या सूरज और चंदर एक ही गिने जायेंगे। वरना लालकिताब सफ़ा 113 पर दिया हुआ वर्षफल इस्तेमाल करें। अगर ऊपर जिकर करदा बातों से कोई भी दुरसत मालूम न होवे यानि हिंदसा नंबर 1 से न मिलें तो कोई और वाकया लेकर वर्षफल बनावें।

उम्र के कौन से साल में किस राशि नंबर (ख़ाना नंबर) के ग्रह असर देंगे

हर खाने में उम्र के 3 साल होंगे

ख़ाना नंबर	उम्र के साल				
1	मेख़	1 ता 3	37 ता 39	73 ता 75	109 ता 111
2	बृख	4 ता 6	40 ता 42	76 ता 78	112 ता 114
3	मिथुन	7 ता 9	43 ता 45	79 ता 81	115 ता 117
4	कर्क	19 ता 21	55 ता 57	91 ता 93	
5	सिंह	22 ता 24	58 ता 60	94 ता 96	
6	कन्या	25 ता 27	61 ता 63	97 ता 99	
7	तुला	28 ता 30	64 ता 66	100 ता 102	
8	बृच्छक	31 ता 33	67 ता 69	103 ता 105	
9	धन	34 ता 36	70 ता 72	106 ता 108	118 ता 120
10	मकर	10 ता 12	46 ता 48	82 ता 84	
11	कुंभ	13 ता 15	49 ता 51	85 ता 87	
12	मीन	16 ता 18	52 ता 54	88 ता 90	

उम्र के हिसाब से असर का ख़ाना नंबर देखते जावें। अगर कोई ख़ाना नंबर खाली ही आ जावे तो इस खाली ख़ाना नंबर की राशि के मालिक ग्रह (घर का मालिक) जिस खाने में हो वो ख़ाना लेंवे। मगर ये वहम न करें कि एक ही ख़ाना नंबर के ग्रह कई बार क्यूं बोले।

एक दिन का हाल

i) हर इक शख़्स की क़िस्मत का आगाज इसके जनम वकत के ग्रह (अरमान नंबर 9)के शुरू होने से गिना जाता है। यानि इस की क़िस्मत का दिन जनम वकत से शुरू करके 24 घंटे बाद तक मुकम्मल होगा।

ii) ज्योतिष की बनाई हुइ कुण्डली (जनम कुण्डली हो या चंदर कुण्डली) जो लाल किताब के इल्म सामुद्रिक के मुताबक ख़ाना नंबर 1 देकर तैयार कर ली हो (अरमान नंबर 181) या ख़ाना नंबर एक से ही शुरू होने वाली इल्म सामुद्रिक की कुण्डली बात की बुनियाद होगी।

नाबालिग कुण्डली (अरमान नंबर 12)

पहले हफते में - (जनम वकत से शुरू करके उम्र के पहले सात दिन का अरसा) ख़ाना नंबर 1 दी हुइ वाली कुण्डली मौजूद है। क़िस्मत का असर देखने के लिये।

(अलफ) **तख़्त के मालिक ग्रहों** के लिये (यानि वर्षफल वाली फ़ेहरिस्त) जनम वकत का ग्रह सबसे पहले दर्जा पर शुरू होने वाले गिनेंगे। उसके बाद लाल किताब सफ़ा 7 पर की दी हुइ तरतीब से बाकी ग्रहों को लिखेंगे। मगर म्याद हर इक ग्रह की तखत की मलकीयत के 35 साला चक्कर सालों की बजाये अब सिर्फ़ 40 मिनट फी यूनिट के हिसाब की जो लाल किताब सफ़ा 117 पर दर्ज है होगी यानि आम वर्षफल में जहां 35 साला चक्कर में बृहस्पत को 6 साल तख़्त का मालिक गिना है वहां अब उम्र कें पहले हफते के वर्षफल के लिये बृहस्पत की तख़्त की मालकीयत का जमाना सिर्फ चार घंटे (सफ़ा 117 लाल किताब) होगा। इसी तरह ही बाकी सब ग्रहों की म्याद होगी।

(बे) **राशि नंबर के ग्रहों** के लिये तमाम खानों के ग्रह उस तरतीब से बोलेंगे। जो तरतीब कि अरमान नंबर 13 में लिखी है। मगर वो सालों की म्याद की बजाये अब सिर्फ दो घंटे फी ख़ाना की म्याद पर एक के बाद दीगरे गिने जाएंगे।

(जीम) **धोके के ग्रह** - का साथ अरमान नंबर 113 A "आम उम्र

लाल किताब हिन्दी

वाले हिसाब का" होगा। जो कि 32 दिन की तरतीब का है। 32 दिन (एक महीना) के बाद धोके के ग्रह का "12 महीने के हिसाब वाला" चक्कर लिया जाएगा। फिर एक साल की उम्र के बाद "120 साल में हर साल के असर का" धोके का ग्रह साथ देखेंगे। हर हालत में धोके के ग्रह का धक्का न भूल जाएगें।

ii) **दूसरे हफते से 12 हफते तक** - तखत के मालिक ग्रह, राशि नंबर के बोलने वाले ग्रह, धोके के ग्रह का चक्कर वगैरह सब के सब पहले हफते की उम्र वाले होंगे। सिर्फ कुण्डली में थोड़ा सा फर्क होगा वो ये कि जिस खाने को पहले नंबर 1 का हिंदसा दिया था दूसरे हफते के शुरू होने के वकत से अब हिंदसा नंबर 2 देकर बाकी सब खाने बातरतीब मुकम्मल कर करेंगे। तीसरे हफते के शुरू वकत से उसी एक नंबर का हिंदसा दिया जाने वाले खाने को नंबर 3 का हिंदसा देकर बाकी खानों के नंबर बातरतीब कर लेंगे। गर्जेकि 12 हफते तक इसी तरह ही हिंदसा नंबर 12 तक चलाया जाएगा। 12 हफतो की उम्र हो चुकने पर (जबकि 9 ग्रह 12 खानों में घूम गये गिने जाएंगे या 9X12=108 की माला का चक्कर पूरा हो जायेगा) कुल उम्र के लिये ही ख़्वाह उम्र का 85वां दिन ही हो 10000 वां दिन हो। कुल गुजरी हुइ उम्र के दिन बना लेंगे और कुल दिनों की तादाद को सात पर तकसीम करके हफते बना लेंगे और बाकी बचे हुए दिन छोड़ देंगे। ख़्वाह वो छः दिन तक ही क्यूं न हों। अब जिस कदर पूरे पूरे हफते बने हों उन पूरे पूरे हफतों की तादाद को 12 पर तकसीम करेंगे। जो हिंदसा बाकी बचे वो हिंदसा नंबर उस खाने को देवें। जिस खाने को कि नंबर 1 का हिंदसा देते थे यानि अगर एक बाकी बचा था तो नंबर 1 का हिंदसा दिया। दो बचे तो दो का हिंदसा दे दिया। इसी तरह 11 तक का हिंदसा हो सकता है। अगर बाकी सिफर हो तो 12 का हिंदसा देंगे। तख़्त के मालिक ग्रह, राशि नंबर के बोलने वाले ग्रह और धोके के ग्रह का चक्कर वगैरह सब पहले ही असूल वाले बदस्तूर होंगे।

बालिग कुण्डली - जनम वकत का ग्रह शुरू नंबर पर रख कर वर्षफल (तखत के मालिक ग्रहों की फ़ेहरिस्त) बना लेंगे। जिसके मुकम्मल करने के लिये सिर्फ 40 मिंट वाली यूनिट का हिसाब होगा। राशि नंबर के हिसाब से बोलने वाले ग्रह उसी तरतीब

से लेंगे जो 3-3 साल के फर्क पर (अरमान नंबर 113A) बोलते हैं मगर एक दिन में असर के लिये हर इक खाने के ग्रहों की म्याद फी ख़ाना सिर्फ़ दो घंटे होगी। एक दिन के बाद एक महीना तक असर के लिये ग्रहों के 35 साला चक्कर के हर ग्रह के हिंदसों को दिनों में लेंगे। एक महीने के बाद एक साल तक इन्हीं हिंदसों की लाल किताब सफ़ा 123 ख़ाना नंबर "मियाद दिन" की यूनिट लेंगे। धोके के ग्रह का दौरा भी "आम उम्र के सालों" वाला होगा। जिसका दौरा एक महीना तक 32 दिन वाला, एक साल की उम्र तक "12 महीने के चक्कर वाला" और 120 साल की उम्र तक "एक साल वाला चक्कर" होगा। लेकिन :-

i) अगर जनम वकत (पैदाइश का खास वकत) मालुम न हो मगर जनम दिन मालुम हो तो उम्र गुजरी हुइ के कुल दिन लेंगे और सात बारह की तकसीम वाला ऊपर लिखा असूल इस्तेमाल करेंगे।

ii) अगर जनम वकत और जनम दिन दोनों ही मालूम न हों तो किसी खास वाक्या को लेकर बनाये हुए वर्षफल की मदद लेंगे।

iii) (अलफ) - नाबालिग हालत में अगर जनम वकत व जनमदिन मालूम न हों लेकिन साल महीना मालूम हो तो किसी खास वाक्या से लिया हुआ वर्षफल लेंगे और राशि नंबर के ग्रह अरमान नंबर 13 की तरतीब से होंगे। धोके का चक्कर आम उम्र का ही होगा।

(बे) - बालिग हालत में भी अगर जनम वकत व जनम दिन मालूम न हों लेकिन साल महीना मालूम हो तो वर्षफल किसी खास वाक्या से लेंगे। राशि नंबर के ग्रह 3-3 साल के फर्क वाले हिसाब के होंगे। धोके का चक्कर बदस्तूर आम उम्र के हिसाब का होगा।

वर्षफल व राशि नंबर के ग्रहों का बाहमी ताल्लुक

वर्षफल में उम्र के साल का ग्रह जो भी कोई मुकर्रर होवे वो क़िस्मत के मैदान में ग्रहफल का, कुण्डली के ख़ाना में ख़ाना नंबर 1 का दुनिया में तख़्त का मालिक और हुकमरान राजा होगा। राशि नंबर के ग्रह उस साल के जिस साल का कि वर्षफल वाला ग्रह होवे। राशिफल के या उस राजा के साथी वजीर होंगे।

वर्षफल में तमाम ग्रहों की आम म्याद के एक चक्कर में 35 साल होते हैं।

और राशि नंबर के तमाम खानों की म्याद के एक चक्कर में 36 साल गिने हैं। क़िस्मत का हाल देखने के लिये वर्षफल वाले ग्रह को राजा और राशि नंबर वजीर की जोड़ी 35 और 36 साला जुदी म्याद होने के सबब इकट्ठी न चल सकी। इस एक साल के फर्क में चलने वाला "धोके का ग्रह" का जुदा चक्कर होता है। वर्षफल के दो चक्कर 35X2=70 साल और राशि नंबर के दो चक्कर 36X2=72 साल या इन्सान 70-72 का जब हो जावे तो बाप बेटे की क़िस्मत एक जगह इकट्ठी मानी है। यानि बाप काबिले इतबार (बलिहाजा क़िस्मत ख़ुद बाप की अपनी क़िस्मत) न रहा। 70 और 72 के फर्क का सिर्फ एक 71 वां साल "धोके के ग्रह" का अरसा माना है। जिसमें महादशा के जमाने के अरसा के 40 साल के धोके वाले असर के लिये 40 दिन का आम उपाय या 40 रियायती दिन का अरसा माना है।

अरमान नंबर 114
ग्रह का उपाय

(अलफ) रूह बुत के झगड़े की तरह ग्रह को रूह और राशि को बुत माने तो ग्रहफल के उपाय की इस इल्म में गुंजाइश नहीं मानी गयी। राशि या ग्रह या राशिफल व ग्रहफल के शक का इलाज और ग्रहों से "धोके के ग्रह" के धोके के धक्के से बच कर चलना इन्सानी ताकत में माना गया है। बुध के ग्रह का हीरा (सब्ज रंग पत्थर कीमती) सब को काटता और मारता है। मगर वो ख़ुद उसी बुध की दूसरी निहायत नरम चीज कलई (टांके लगाने वाली धात) उस हीरे में सुराख़ डाल देती है। इसी तरह ही पापी ग्रह सब ग्रहों पर अपना धक्का लगाते है। मगर उन को (पापी ग्रहों को) मारने के लिये ख़ुद अपना ही पाप (लफ़्ज़ पाप से मुराद राहु केतु हैं। पापी से मुराद सनीचर राहु केतु तीनों ही हैं। यानि राहु के मंदे असर को केतु का उपाय दुरस्त करेगा और केतु के मंदे असर को राहु का उपाय नेक करेगा) महाबली होगा और पाप की बेड़ी भर कर डूबेगी। मुख़्तसर तौर पर पापी ग्रहों का उपाय तो उन ग्रहों की मुतलका चीजों की पालना करनी होगी या उन की मुतलका चीजों से उन की आशीर्वाद या मुआफी ले लेना कारामद होगा। मसलन शुक्र की मुतलका चीज गाय और

आम इन्सानी खुराक या सब अनाज मिले मिलाये मुकर्रर हैं। शुक्र की मदद के लिये गाय को अपनी खुराक का हिस्सा देवें। काग रेखा और धन दौलत की हानी सनीचर की मंदी निशानी कौवे को रोटी का हिस्सा देवें या औलाद के लिये दुनिया के दरवेश कुत्ते को अपनी खुराक का टुकड़ा बख़्शे।

(बे) हर ग्रह की मशनुई हालत में दो ग्रह होते हैं। जब कोई ग्रह मंदा हो जावे। तो उसकी मशनोई हालत मे दिये हुए दो ग्रहों में से उसी एक ग्रह को हटाने के लिये जिसके हट जाने से नतीजा नेक हो जावे। कोई और ग्रह कायम करे। जो बुरे फल के हिस्से के देने वाले ग्रह को गुम ही या नेक कर देवे। मसलन सनीचर मंदा होवे.......तो उस के मशनुई हालत के जुज "शुक्र - बृहस्पत" में से बृहस्पत के हटाने के लिये अगर बुध कायम करें तो शुक्र बाकी रह जाएगा। अब शुक्र के साथ बुध मिलने पर सनीचर नेक होगा।

ii) लाल किताब में लिखे हुए उपायों के इलावा हर इक पक्के ग्रह का उपाय तो लाल किताब के मुताबिक ही लेंगे।

iii) हर इक ग्रह की मशनुईं हालत में दो ग्रह इकट्ठे माने गये हैं। पक्के ग्रह का जिस चीज का असर या जो असर मंदा होवे उस असर के देने वाले ग्रह को उसकी मशनुई जुज से हटाने की कोशिष करें। मसलन शुक्र जब खराब करे या खराब होवे। तो शुक्र के मशनुई जुज राहू केतु में से राहु को हटावें तो बाकी केतु होगा। यानि शुक्र के नेक करने को राहु को नेक कर लेना मदद देगा।

ii) मंगल बुध = मंगल बद व सनीचर के सांप की जहर या मंगल बुध सनीचर मुश्तरका को मृगशाला (हिरण की खाल) पहाड़ी जुबान में मृग को चीता कहते हैं। चीते की खाल नहीं माना है। जिस पर जहरीला सांप न आयेगा। मंगल बद के बुरे असर से मृगशाला बचा देगी और बुध शुक्र सनीचर की मुश्तरका चीज गऊग्रास अपनी खुराक से तीन टुकड़े रोटी के गां(गाय) कां(कौआ) और कुत्ते को देना मुबारिक फल देगा। वासते इज्जत मान धन दौलत और औलाद के नेक व उमदा होने के वगैरह वगैरह। मतलब ये कि मंदे फल वाले ग्रह के लिये मंदा करने वाली चीज को दूर करें।

iii) **पितरी रिन** या कुण्डली वाले के बजुरगों का पाप। बाप के बिलावजह कुत्ते को

मार देने के पाप में इसका लड़का दुख भोगने का सबब होगा। यानि कुण्डली वाले पर इस के बाप के पाप का बोझ भी हो सकता है। जिस वकत तक केतु व बृहस्पत का उपाय न करें पितरी रिन का बोझ लड़के की 16 ता 24 साला उम्र तक दूर न होगा। इसी तरह ही सब ग्रहों का हाल हो सकता है। ख़्वाह ऐसे शख़्स के (कुण्डली वाले के) अपने ग्रह लाख राज योग ही क्यूं न हों। बुरा असर दो ग्रहों का होगा और उपाय भी दो ग्रहों का करना होगा।

पितृ ऋण:- से मुराद खुफिया असर होता है और धोके के ग्रह या उसके धक्के से जाहिर हो जायेगा। गुनाह तो कोई करे मगर सजा इसकी कोई और भुगते। मगर भुगतेगा इस गुनाह करने वाले का असल करीबी ताल्लुकदार।

ख़ाना नंबर 9 के ग्रहों से मुराद होती है। जब इस घर में या इस घर के मालिक ग्रह यानि बृहस्पत की किसी दूसरे घर में कोई और ग्रह (एक या एक से ज्यादा) जो या तो बाहम दुश्मनी पर हों या वो दोनों या हर इक बृहस्पत की ताकत को खराब करते या बृहस्पत के असर में जहर मिलाते हों तो पितृ ऋण होगा।

राहू को बृहस्पत के चुप करवाने वाला गिना है। वो अगर बृहस्पत का मुंह बंद करके ख़ुद मंदी हालत का असर बृहस्पत के ताल्लुक से (यानि या तो वो बृहस्पत के घरों में हो या बृहस्पत के पक्के घर में) देवे तो पितृ ऋण का बोझ होगा। इसी तरह ही और ग्रह भी चंदर की खराबी में माता तरफ के मातृ ऋण हो सकते हैं।

फरजन कुण्डली वाले के बाप ने कुत्ते मारे तो कुण्डली वाले पर वो बृहस्पत व केतु का पितृ ऋण हुआ। जो कुण्डली वाले पर बालिग होने की (कुण्डली) उम्र से 16 ता 24 साल रह सकता है। कुण्डली वाले के रिश्ते के ताल्लुक और पाप की किसम से ऋण का नाम मुकर्रर होगा।

ऋणों की किसमें:- जैसी करनी वैसी भरनी, नही कीती तो कर के वेख।

किस का पाप होवे	पिता का पाप	माता का पाप	अपना ही पाप	कुटुंबी पाप	हक़ीक़ी रिश्तेदारों का पाप	धी बहन का पाप	जानवरों का पाप	ससुराल का पाप	फ़क़ीर कुत्ता का पाप
तो ऋण होगा	पितृ ऋण	मातृ ऋण	ज़ाती ऋण	स्त्री ऋण	भाई का ऋण	बहन ऋण	जालिमाना ऋण	अनजन्मे का ऋण	दरगाही ऋण
ग्रह मुत्तल्लका	बृहस्पत	चन्द्र	सूरज	शुक्र	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	केतु
कैफ़ियत	सराप	नियत बद	आक़बत ख़राब	पेट मार	मित्र मार	ज़ुबानी धोका	जीव हत्या	दगा बेईमानी	बद -चलनी
बालगी दिन से	16 साल	24 साल	22 साल	25 साल	28 साल	34 साल	36 साल	42 साल	48 साल

4) धोके के ग्रह का जो छुपा छुपाया होता है। इलाज भी देख लेना जरूरी होगा।

5) अगर लड़का लड़की बाप के लिये दोनों ही मंदे फल वाले पैदा हो जावें तो सूरज लड़का बुध लड़की या लड़की के गले में तांबे का टुकडा मुबारिक होगा। जो बुध को दबा लेगा।

6) पापी ग्रहों के साथ जब वह अकेले अकेले की बजाये कोई दो इकट्ठे हों तो मंगल को कायम करना मुबारिक होगा। बशर्तेकि उस कुण्डली वाले का अपनी कुण्डली के हिसाब से मंगल राशि फल का हो। यानि अगर मंगल ख़ाना नंबर 1 या 3 या 8 में होवे तो मंगल का उपाय न होगा। बुध काम देगा।

इसी तरह ही स्त्री ग्रहों (चंद्र शुक्र) में बुध की ताकत मदद देगी। बशर्तेकि बुध ख़ाना नंबर 3-6-7 या 9 का न हो। ऐसी हालत में बृहस्पत काम देगा।

सूरज सनीचर के झगड़े में बृहस्पत मददगार होगा। बशर्ते कि वो ख़ाना नंबर 2 का न हो। ऐसी हालत में मंगल मददगार होगा।

खुलास्तन:- उपाय के वकत देख लें कि जिस ग्रह के जरिये मदद लेने को हैं वह ख़ुद कहीं ग्रहफल का ही तो नहीं है।

म्याद उपाय:- हर इक उपाय की म्याद कम अज कम 40 दिन और ज्यादा से ज्यादा 43 दिन होगी। जो अपनी नसफ और चौथाई हिस्सा म्याद में भी अपना असर जाहिर कर देगा।

खानदानी उपाय पितृ ऋण मातृ ऋण वगैरह या कुल मुतलकीन की मदद के लिये उपाय की म्याद होगी तो वही 40 हद 43 मगर हर रोज लगातार की बजाये हफ़्तेवार लगातार होगी यानि हर आठवें दिन जो 40-43 हफते होंगे। उपाय के वकत ख़्वाह आखरी दिन 39 वें 40 वें ही भूल जावें या बंद कर बैठें तो सब किया कराया निष्फ़ल होगा और नये सिरे से फिर दोबारा शुरू करके पूरी म्याद तक करने के बाद फल देगा।

अरमान नंबर 115

खास खास मुश्तरका ग्रहों की म्यादें

(सालों के हिंदसों में)

ग्रह व राशियाँ

	बृहस्पत	सूरज	चंदर	शुक्र	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	केतु
बृहस्पत	उम्र 75	मामू को तकलीफ 7 दोनों का जुदा जुदा और उत्तम	तालीम 24 तीर्थ 20 दोनों मुश्तरका उत्तम चंदर 1/2	सुख 4 दौलत 2 आमदन 60 मुहब्बत 20	(बद) बीमारी 31 औलाद 8 नुक़सान 5	दुश्मनी 40 सुख 4 वालिद दुखिया 29 दौलत रद्दी 17	ग़म 14 दौलत 12 हानि 15	नुक़सान 5 पिता रद्दी 10 ½ औलाद 21 उम्र 90	दुश्मन 40
सूरज	मामू को तकलीफ 7	सनीचर बुरा 9	मंगल बद 15 सफ़र फ़ज़ूल 9	नुक़सान 17 दौलत 5 शुक्कर रद्दी 25	सेहत उम्दा 6	शुक्कर रद्दी 25	दुश्मनाना ख़राब	औलाद रद्दी 21	बृहस्पत के बामुक़ाबिल तो दुश्मनाना वरना नेक
चंदर	तालीम 24 तीर्थ 20	मंगल बद 15 सफ़र फ़ज़ूल 9	औलाद 12 जब मारग स्थान में तकलीफ़ 6 साल	आराम 4 बीमारी 15 दौलत 12 वरना 27	सुख 3 औलाद का सुख 27 मुसीबत 2	लड़कियां 6 बीमारी 15 दौलत 22	राज दरबार 12 दौलत अज़ सनीचर 42	पानी का खौफ़ नस्फ़ उम्र 45	लड़कियां 6 साल
शुक्र	आमदन 60 सुख 4 बचत 20 राज दरबार 27 दौलत 2	नुक़सान 17 दौलत 5 शूक्कर रद्दी 25	बीमारी 15 दौलत 27 आराम 4	औरत का सुख 37	आग का खौफ़ 17 तीर्थ 20 सुख 7 बीमारी 9	सूरज 22 औरत 37 दौलत 36 दुश्मन 40	दौलत 12	दुश्मनाना व ख़राब शूक्कर पर	दुश्मनी 4 साल
मंगल	औलाद 8 बीमारी 31	सेहत 6 साल	सुख औलाद 27 आम सुख 3 मुसीबत 2	बीमारी 9 सुख औलाद 7 तीर्थ 20 आग का डर 17	मुलाज़मत 28 बीमारी 15 मौतें 22	आग का डर 17 फ़ोकी इज्जत 11 वालिद 12 लड़के 24	बीमारी 5 बीमारी15 दौलत 24 तकलीफ़ 24	नुक़सान 5 साल	फ़ोका ऐश 3 लड़के 24
बुध	वालिद दुखीया 29 नुक़सान 17 दुश्मन 40 सुख 4	शूक्कर रद्दी 25	दौलत 22 लड़कियां 6 बीमारी 15	औरत 37 दौलत 27 दुश्मन 40 सूरज 22	आग का डर 17 फ़ोकी इज्जत 11 वालिद 12 लड़के 24	औरत 37 मौत के खाना में 14	दौलत 45 तकलीफ 10 लड़के 24 दुश्मन 42	दोनों का उत्तम	दुश्मन 37 दुश्मन 40
सनीचर	हानी 15 ग़म 14 दौलत 12 आमदन 60	दुश्मनाना ख़राब	दौलत अज़ सनीचर 42 राज दरबार 12	दौलत 12 साल	बीमारी 5 (बद) 15 दौलत 24 तकलीफ 10	तकलीफ 10 लड़के 24 दुश्मन 42 दौलत 45	दौलत 24 हथियार का खौफ़ 27	हंमेशा शक्की हानी 15	लड़के 24 सनीचर की नसफ़ मियाद पर फैसला होगा
राहु	उम्र 90 पिता चुप 10 ½ औलाद रद्दी 21 नुक़सान 5	औलाद रद्दी 21	नसफ़ उम्र पानी का खौफ़ 45	दुश्मनाना ख़राब	(बद) नुक़सान 5	दोनों का उत्तम	हंमेशा शक्की हानी 15	मौत के खाने में 5	अपनी मुकर्ररा राशि और पक्के घर से बाहर दोनों रद्दी
केतु	दुश्मन 40	सूरज मद्धम	लड़कियां ६ साल	दुश्मनी 40	फ़ोका ऐश 3 लड़के 24	दुश्मनी 37 40	लड़के 24 सनीचर की नसफ़ मियाद पर फैसला होगा	अपनी अपनी मुकर्ररा राशि व पक्के घर से बाहर	छलावा

अरमान नंबर 116-117

लाल किताब सफ़ा 123 - 124 में अस्तलाही बातें हैं जो हस्त रेखा और इल्म ज्योतिष को बाहम मिलाकर इल्म सामुद्रिक की बुनियाद हैं।

अरमान नंबर 118 (बारह^{12} खानों की चीजें)

i) **ख़ाना नंबर 1**- ख़ुद जाती - अपना जिस्म - साथ लाया हुआ - वकत जवानी - दिमागी ताकत - ख़ुद साखता मकान - रूह - गुस्सा - तमाम अजूं - नमक सफैद - अपना तखत - चार दीवारी मय तै जमीन के गोशे - दुनिया में नाम किस हैसीयत का होगा। मर्दों का ताल्लुक - हाथ पर खास निशान। (1) इस घर में सूरज उन ग्रहों को जो सूरज के दोस्त/दुश्मन हों मदद दिया करता है। (2) राहु राशिफल का होगा। लाल किताब सफ़ा 126 जुज नंबर 1, 199/200 ख़ाना नंबर (1) जुज नंबर (1-2)।

ख़ाना नंबर 2 ख़ुद जाती क़िस्मत का - रिश्तेदारो से पायी हुइ चीजें (मारफत स्त्री) - इज्जत (शरीफाना) - दौलत (शरीफाना) बुढापे तक - इश्क़ (जबानी हवाई) - ससुराल खानदान व ससुराल के अपने घर का हाल। बचत अज जाती कमाई। स्त्री धन (दहेज वगैरह औरत का लाया हुआ धन) - खट्टा मीठा - अर्क - मोह माया - ससुराल का मकान - सुभाव (नेकी) - भूक - मकान का वासता (गुरूदवारा, मंदिर, जिबहखाना) - स्त्रीयों का ताल्लुक माता भुआ फूफी मासी वगैरह - तिलक की जगह (पेशानी पर) - अंगुलियां (लंबाई छोटाई सीधी टेढी)। लाल किताब सफ़ा 128 जुज नंबर 2 लाल किताब (बृहस्पत का असर) सफ़ा 144 जुज नंबर (1), 171/172 फरमान नंबर 124 ख़ाना नंबर 2 का जुज (1 ता 4) इस घर के ग्रह आखिरी उम्र में नेक फल देंगे।

ख़ाना नंबर 3 हकीकी रिश्तेदार - नजर का असर (पत्थर फाड़े या तारे) - भाई बहन - भाई बंद - चोरी, यारी, अय्यारी - नुकसान - जंग व जदल - भाई का घर - ताये चाचे का मकान - नेकी - इन्साफ - मुन्सफी व मुन्जबी - बजुरगाना ताल्लुक - बच्चा पैदा करने की ताकत - परिवार कबीला का बढना व बढाना - खांड - मीठा - उठती जवानी

का हाल - दूसरों की मदद से पैदा करदा हालतें- आकाश - जिगर - खून - मकान के साजो सामान वासते आरायश - आम खुशी गमी की औसत हालत - खुशी गमी की रेखा - ठग्गी। इस घर में i) चंद्र हंमेशा राशिफल का होगा। ii) सनीचर राशिफल का होगा। लालकिताब सफ़ा 128 जुज (3) सफ़ा 260/261 ख़ाना नंबर 3।

ख़ाना नंबर 4 माता का ताल्लुक - समुंदर पार सफर - समुंदर का सफर - खुशी - साथ लायी हुइ - चंद्र की चीजें - माता खानदान - मासी फूफी का मकान - मोती अनबिध बगैर सुराख दूध रंग सफेद - बृहस्पत का धन, बवकत जवानी - शुमाल मशरक - खाली तै जमीन - दिल - दूध - धन दौलत - कुदरती तौर पर तबीयत का झुकाव क्या होगा। चक्कर- शंख - सदफ - अंगुलियों पर जौ का निशान।

इस घर में 1) शुक्कर राशिफल का होगा। 2) मंगल बद (मंगलीक) राशिफल का होगा। 3) केतू राशिफल का होगा। लाल किताब सफ़ा 128 जुज नंबर (4) सफ़ा 226 ख़ाना नंबर 4 जुज (1-4)

ख़ाना नंबर 5 औलाद का ताल्लुक - औलाद नरैना - शोहरत - औलाद का धन दौलत व क़िस्मत - औलाद को सुख - औलाद के जनम दिन से अपने बुढापे तक दूसरों की मदद से पैदा करदा - मशरिक - रोशनी-हवा - औलाद के बनाये हुए मकान। बचत अज तरफ औलाद - हवास खेमा - 5 इंद्रियां - हाजमा - औलाद व अपने खून का ताल्लुक - नेकी की मशहूरी - रफतार गुफतार - तहरीर - अंगुलियो के दरम्यान खाली जगह। लाल किताब सफ़ा 129 जुज (5)

ख़ाना नंबर 6 माता पिता के या औलाद के ताल्लुक के जरिये बन जाने वाले रिश्तेदार। जिन का रिश्तेदारी का ताल्लुक ख़ुद कुण्डली वाले के ताल्लुक के बगैर ही हावे। इन्सान ख़ुद किस ग्रह का है। चेहरा व पेशानी की हालत। दुसरों से पायी हुइ चीजें (माता पिता के रिश्तेदारों)

बुध की चीजें। हमदर्दी (फोकी), मामू- फूल की खुशबू बदबू- फोका पानी- नानका घर (नाने नानी का) आम बरताव - साहुकारा। मरने के बाद बाकी रहे हुओ की हालत - शुमाल - हमसाये - मकान के इर्द गिर्द की चीजें। पठ्ठे नाड़ें -जायका - साग सब्जी - फूल पत्र ।

इस घर में 1) बृहस्पत राशिफल का होगा। 2) सूरज के ख़ुद अपने बुरे असर के लिये बुध का उपाय मददगार होगा।

3) मंगल इस घर में राशिफल का होगा। 4) सनीचर राशिफल का होगा।

केतू की चीजें - औलाद का सुख। हमदर्दी (सच्ची) खालिस खटाई - सफर आम - मरने के बाद बाकी रहने वालों की हालत - पाताल - जाती खासीयतें (रूहानी, जिस्मानी, दिमागी) - नाखून हाथ के - वालदैन की तरफ से रिश्तेदार नानके वगैरह - कद व कामत - हथेली व अंगुलियों की तनासब का असर। लालकिताब सफ़ा 129 जुज 6 केतु ख़ाना नंबर 6 अरमान नंबर 178

ख़ाना नंबर 7 जनम अस्थान - कहां का बासी।

शुक्कर की चीजें साथ लायी हुइ - स्त्री घर - लड़कियों के रिश्तेदारों के घर - मिट्टी के जर्रे - घी जर्द - शादी - मकानात वगैरह (जायदाद) - वकत जवानी - जनूब मगरब - जाहिरदारी - बेरूनी तै जिस्म (जिल्द) - पलस्तर सफेदी मकान - कबीला की पैदाइश और परवरिश - मकानात का बनना - पराई दौलत का मिलना (बजरिया बुध की नाली) - जिस्म के बाल - हथेली की हर हालत का हाल। लाल किताब सफ़ा 244/245 ख़ाना नंबर 7 जुज (1-5)

बुध की चीजें साथ लायी हुइ - कौतबाह - अंदरूनी अकल - बहिन - पोते, चेहरा।

इस घर में 1) बृहस्पत राशिफल का होगा। 2) अगर सूरज इस घर में हो और सनीचर का टकराव आ जावे तो चंद्र नष्ट करने से सूरज की मदद होगी। यानि म्याद उपाय के दिनों तक जली हुइ आग को पानी की बजाये दूध वगैरह से बुझाते जाना वगैरह। 3) चंद्र इस घर में हंमेशा राशिफल का होगा। 4) राहू राशिफल का होगा। लालकिताब सफ़ा 129/130 जुज 7 व 278 फरमान 162-288 ख़ाना नंबर 7 जुज 1-3

ख़ाना नंबर 8 ख़ुद करतूत (मंदी हालत) **सनीचर की बुराई** - ताये चाचे - मौत - अपने बजुरगों से मुतलका कब्रिस्तान श्मसान भूमि की जगह - कोयले - चीजों का जलना - मंदी हालतें - जनूब - छत मकान - पित्त - इस घर में चंद्र हंमेशा राशिफल का होगा। (लालकिताब सफ़ा 130 जुज 8)

मंगल बद की बुराई - बीमारी - इन्सान का जलना - मंदी हालतें - बदहजमी। कड़वाहट। (लाल किताब सफ़ा 261 ख़ाना नंबर 8)

जगह जगह लफ़्ज़ ख़ाना नंबर से मुराद हस्त रेखा की कुण्डली का पक्का ख़ाना नंबर मुराद होगी। राशि नंबर न होगी।

ख़ाना नंबर 9 जद्दी बजुरगाना - बचत अज बजुरगां - कर्म धर्म - जद्दी मकान बजुरगों के बनाये हुए। सांस - परोपकार - बजुरगों (बाप दादा) की उम्र - बजुरगों का नेक ताल्लुक (कुण्डली वाले से) - कुण्डली क़िस्मत (ख़ुद अपनी) की बुनियाद - बचपन का जमाना ख़ुद जाती - बचपन का जमाना वालदैन की हालत - दूसरों की मदद से पैदा करदा हालतें - गैबी दुनिया - मूल जङ - कच्चा पक्का मकान - हर हिस्से की अंदरूनी पैमाइश - आराम या हरामखोरी - अंगुलियों पर सीधे या लेटे खत।

इस घर में 1) बुध सबसे मंदा ग्रह होगा। जिस के लिये अरमान नंबर 178 (लाल गोली) नाक छेदना (अरमान नंबर 62/94 - बुध नाकस का उपाय) 2) सनीचर राशिफल का होता है। (लाल किताब सफ़ा 130 जुज 9) इस घर के ग्रह शुरू उम्र में और हर इक ग्रह अपने शुरू होने के दिन से अपनी पूरी उम्र (ग्रह की) तक फल देंगे।

ख़ाना नंबर 10 जाती सनीचर का (विरासत) साथ लायी हुइ चीजें पिता का सुख - तीन साल लगातार रिहायश का मकान - मक्कारी होशियारी - मकान जायदाद (सनीचर की चीजें) मारफत बजुरगां - गमी जहमत - दुख अज ताल्लुक दीगरां गैर हकीकी - नमक स्याह - तेल - वकत शादी - सामान खुराक - बवक्त जवानी - मगरब - लोहा लकङी मकान ईंट पत्थर - बाल - कांटे - बाङ -सेहत व आम बरताव - बङी तिकोन व बङी मुस्ततील।

इस घर में 1) बुध राशिफल का होगा। 2) केतू राशिफल का होगा। लालकिताब सफ़ा 131 जुज 10, सफ़ा 294 जुज 1-2, सफ़ा 323 ख़ाना नंबर 10 तमाम जुज।

ख़ाना नंबर 11 मैदान क़िस्मत - वकत जनम - क़िस्मत का मैदान - वकत जनम पर वालदैन की हालत (बलिहाजा आमदन) - लालच - आमदन जाती - खरीद करदा मकान जो ख़ुद न बनाये हुए हो - औलाद की तादाद- औलाद की उम्र - जनम - शान व शौकत - पोस्त खाल - छिलका - आमदन, आयी चलायी का जरिया - हाथ की किसमें - हर अजू मय नाखून का हाल - रंग और वो किस किस तरह के है - पेशानी (सिवाये तिलक की खास जगह) का हाल। (लाल किताब सफ़ा 131 जुज 11)

ख़ाना नंबर 12 अज स्त्री ताल्लुक - लक्ष्मी - दूसरों से पायी हुइ चीजें - स्त्री सुख, लक्ष्मी सुख (बवकत पैदाइश वालदैन का सुख)

ससुराल का सुख - हमसायों के मकान - खर्चा जाती - दिमागी हरकत - ख़ुदगर्जी - कर्जा - ससुराल बजाते ख़ुद - शुमाल मगरब(बृहस्पत) - जनूब मशरक(राहु) - आसमान (राहु बृहस्पत) - हड्डी - आबाद या वीराना - खटाई - स्त्री ताल्लुक (जोड़े का साथ) - स्त्री ताल्लुक बेवाह औरतें माशुका वगैरह - हथेली - अंगुलियां मय अंगुठा का अंदर या बाहर को झुकाव - हथेली पर बृहस्पत के सीधे खत - अंगुलियों पर बृहस्पत के चक्कर शंख सदफ - नाखून पावों के - चालाकी या बदनामी की शोहरत की चमक -हथेली पर बृहस्पत के ख़त - अंगुलियों पर बृहस्पत के निशान ख़ाना नंबर 4 पर लिखे हुए के इलावा - इस घर में बुध सबसे बुरा है। जो राशिफल का होगा बजरिया केतू का उपाय। (लालकिताब सफ़ा 131/132 जुज 12 राहु ख़ाना नंबर 12 अरमान नंबर 176)

ii) **बारह खाने** अगर कुण्डली में हर इक खाने को एक घर मांन लिया जावे तो इसकी द्रष्टि से ताल्लुक रखने वाला ख़ाना उस मकान का सेहन होगा। घर वालें ग्रह का अपने मकान के सेहन पर अपना हक होगा। बेशक ग्रह का घर कुण्डली के बाद के नंबर का ही क्यूं न हो। सेहन माने हुए खाने के ग्रहों के असर का आखरी फैसला करना मालिक मकान के अखतियार में होगा।

iii) **बारह खाने** - लाल किताब सफ़ा 127 पर 12 खानों की पक्की जगह दिखलायी गयी है। इन खास जगहों के इलावा-

हर ग्रह की रेखा भी कुण्डली का ख़ाना नंबर हुआ करती है।

मसलन चंद्र की दिल रेखा जब बृहस्पत के बुरज को जा निकले। मगर बृहस्पत के बुरज के अंदर तक पूरी न हो तो सनीचर और बृहस्पत की अंगुलियों की दरम्यानी जगह को ख़ाना नंबर 11 लेंगे। सनीचर का हैड कवाटर ख़ाना नंबर 8 होगा। अंगूठा ख़ाना नंबर 2 होगा। दिल रेखा ख़ाना नंबर 4 होगा। सिर रेखा ख़ाना नंबर 7 होगा।

iv) रेखा का शुरू व आखिर व हर ख़ाना नंबर की हदबंदी की ख़ास ख़ास जगह और ऊपर नीचे को उठाव या दबाव या किसी हद के ऐन ऊपर ही किसी ग्रह का निशान भी धोके का सबब हो जाता है। जिसके लिये हालात गुजस्ता पर नजरसानी करना मददगार हुआ करता है।

कुण्डली के खानों में मकान व सेहन का ताल्लुक

अगर घर होवे ख़ाना नंबर	तो सेहन होगा ख़ाना नंबर	कौन सेहन का मुन्सिफ ग्रह होगा	अगर घर होवे ख़ाना नंबर	तो सेहन होगा ख़ाना नंबर	कौन सेहन का मुन्सिफ ग्रह होगा
1	7	मंगल	7	1	शुक्र
2	8	चंद्र (उम्र)	8	2	मंगल बद
3	11	सूरज बृहस्पत	9	5	सूरज
4	10	चंद्र	10	4	सनीचर
5	9	बृहस्पत	11	3	बुध
6	12	केतू	12	6	राहु

अरमान नंबर 119 - राहु केतू के हाल में लिखा है।

अरमान नंबर 119 के जुज - रेखाओं के कई मुश्तरका ग्रहों से कुण्डली का बनाना जुदी जगह लिखा है।

अरमान नंबर 120
"बृहस्पत"

केतू व बृहस्पत दोनों दरवेश (बृहस्पत दरगाही- केतू दुन्यावी) और दोनों ही बाहम बराबर के ग्रह हैं। फर्क ये है कि बृहस्पत की हवा बेकैद और खुली हुआ करती है। मगर केतू जो सांप के फर्राटे की हवा है। दुन्यावी धंधों से बंधी हुइ किसी मतलब या जहर को साथ लेकर चलती है। बृहस्पत किसी बुराई भलाई का ख़्वाहिशमंद न होगा। केतू किसी के भले या बुरे के लिये अपना छलावापन दिखला देगा। बृहस्पत पूजा पाठ और केतू पूजापाठ करने की जगह या बृहस्पत के बैठने का तख़्त है। सनीचर मौत का यम तो राहु उसकी सवारी का हाथी है।

ख़ुद बृहस्पत - जब क़िस्मत का ग्रह हो। लेकिन अपनी जड़, मुकर्रर राशि, पक्के

लाल किताब हिन्दी

घर की अदली बदली- बैठा होने की राशि या द्रष्टि के ताल्लुक में कुण्डली के किसी भी खाने में (सिवाये ख़ाना नंबर 10 के जहां की वो सनीचर की मदद का उम्मीदवार होता है) हर तरह से कुल अकेला ही होवे। कुण्डली वाले पर कभी बुरा असर न देगा। ऐसा शख़्स बेशक किसी दूसरे की मदद न पायेगा और न ही वो ख़ुद किसी दूसरे की मदद करने के ऐसा काबिल होगा। बल्कि वो अकेले डंडे की तरह के दरख़्त की मानिंद (बांस पहाड़ी इलाका-शनीचर की हकूमत, खजूर-चंद्र के वीरान खुले मैदान या सरू बाग बगीचे चंद्र की राजधानी) होता हुआ भी तमाम दुनिया के बरखिलाफ़ अपनी क़िस्मत को ख़ुद ज़ाती मेहनत और कोशिष से कामयाब बना लेगा।

अगर किसी पितृऋण (पितृऋण या फराइज जरूरी। बजुरगों के करजे यानि बजुरगों ने जनम दिया तो ख़ुद औलाद बनानी, इन्होंने पाला पोषा तो बच्चों को हर तरह से काबिल बनाना, खैरात ली तो दान देना वगैरह वगैरह बच्चे पर बाप के करजे हैं।) या अपने बजुरगों के पापों के सबब ऐसा बृहस्पत अपने पहले दौरे या कुण्डली वाले की उम्र के पहले 35 साला चक्कर में नाकारा साबित होवे तो किसी खास उपाय की जरूरत न होगी। बृहस्पत अपने दूसरे दौरे या उम्र के दूसरे 35 साला चक्कर में अपनी पहली कमी भी पूरी कर देगा।

निशानी - ख़ुद वो शख़्स बृहस्पत के ग्रह का आदमी और उसका मकान जद्दी - ख़ुद साखता बृहस्पत के ग्रह का होगा।

बृहस्पत व सनीचर का बाहमी ताल्लुक

(अरमान नंबर 180 बृहस्पत सनीचर मुश्तरका देखें)

हिस्सा अव्वल- जब दोनों ग्रह अपनी अपनी हालत में जड़ राशि व द्रुष्टी वगैरह के ताल्लुक में हर तरह से अकेले अकेले हों (न तो ख़ुद बाहम साथी ग्रह हों और न ही उन दोनों में से कोई एक ग्रह किसी और ग्रह का साथी ग्रह बन रहा हो):-

वर्षफल के हिसाब से उम्र के जिस साल में सनीचर या बृहस्पत का दौरा हो और साथ ही दोनों में से कोई एक राशि नंबर के हिसाब से बोलने वाले ग्रहों में बोल रहा हो तो बृहस्पत सनीचर की धन रेखा (अरमान नंबर 100B) का असर पैदा होगा। बशर्तेकि दानों में से कोई भी नीचफल की राशि का न हो। (सनीचर ख़ाना नंबर 1 में नीच और बृहस्पत

ख़ाना नंबर 10 में नीच होता है)। फकीर के डंडे में दुश्मनों पर (इन्सानी दुश्मन या इन दो को छोड़कर बाकी सात ग्रहों से कोई ग्रह जो दुश्मन हो कर इस कुण्डली में वाक्या हों) जबरदस्त डंडे की तरह के सांप का असर देगा। हवाई ताकत और आंख की चालाकी की रहनुमाई के साथ से पत्थर पर आवाज ही से पक्की लकीर और फर्जी स्याह निशान (दिल चंद्रमा) से नाकारा स्याह पत्थर के पहाड़ को दमकते हुए जर्द सोने की हैसीयत का कर देगी। बशर्तेकि सनीचर और बृहस्पत दोनों का ही असर कायम हो। यानि ऐसा शख़्स शराबखोरी (शनीचर जायल) या खैरात का माल लेकर खाने वाला। दूसरों के मुफ़्त माल पर नजर रखने वाला (बृहस्पत बरबाद) न हो। बल्कि वो सबके मालिक से सिर्फ अपनी क़िस्मत का हिस्सा मांगने वाला साबर व शाकर होवे तो सनीचर की माया दोनों जहानों के मालिक बृहस्पत गुरू के पावों की गुलाम होगी।

हिस्सा दोयम - बृहस्पत सनीचर दोनों ग्रह हर तरह से अकेलेः-

(अलफ) जब दोनों ही ग्रह ऐसी हालत के और दोनों ही नीच घरों के(सनीचर नीच नंबर 1 में और बृहस्पत नीच नंबर 10 में) होते हुए वर्षफल के साल का ग्रह और राशि नंबर के ग्रह बोलने के हिसाब से उम्र के साल पर इकट्ठे हो जावें तो रल मिल के बैठेंगे दीवाने दो। हमयारां दोजख हमयारां बहशत का जमाना पैदा होगा। जिस में अगर दोनों का ही फल रद्दी होवे तो अंधा बगैर टांगों के और टांगो से आरी और मगर आंखे कायम वाले एक दूसरे पर सवार होकर बाहम रास्ता बना कर अपने दौरा की मुसाफित का मंदा सफर बाआसानी तै कर लेंगे। गोया दोनो का मिलना "रब्ब बनाई जोड़ी एक अंधा एक कोहड़ी" होते हुए भी इत्तफाक की बरकत के उमदा नतीजे का फल देगा।

(बे) अगर सनीचर व बृहस्पत दोनों में से कोई एक भी रद्दी हालत का होवे तो रद्दी हालत वाले के मंदे फल को दूसरा उमदा बना देगा यानि i) अगर बृहस्पत रद्दी हालत का हो और सनीचर कायम तो लोहे की तलवार तमाम दुनिया की रद्दी हवा को काटती हुइ चलती जाएगी। लेकिन ii) अगर बृहस्पत उमदा और सनीचर रद्दी हालत का हो तो इस की क़िस्मत दूसरों को लोहे के लिये पारस का काम देगी।

मगर ख़ुद उस के अपने लिए बीमारियां व ख़्वाहिशात बद की निशानियां होगी।

हिस्सा सोयम - जब सनीचर और बृहस्पत दोनो बाहम साथी ग्रह हो जावें और सूरज का राज या तख़्त की मालकीयत के जमाना का दौरा आ जावे- (अलफ) जब सनीचर व बृहस्पत दोनों उमदा हालत के हों तो सूरज अपना पुरजोर असर देगा। अब चूंकि बृहस्पत और सनीचर दोनों उमदा हालत के है इसलिये ऊत्तम फल और नेक नतीजे होंगे।

(बे) बृहस्पत व सनीचर हों तो साथी ग्रह मगर दोनों ही नीच हालत या नीच घरों के तो सूरज के राज के वक्त या तख़्त की मालकीयत के जमाना में जब तक राज दरबार के ताल्लुक से कमाया हुआ या पाया हुआ धन दौलत बरबाद और ख़ुद उस शख़्स का कोई अंग (जिस्म का हिस्सा) खराब न हो जावे। सूरज और सनीचर का दुश्मनाना और पुरजोर बुरा असर खत्म न होगा।

(जीम) अगर बृहस्पत व सनीचर के बाहम साथी ग्रह होने पर दोनों में से

(i) सनीचर तो उमदा हालत का मगर बृहस्पत होवे रददी हालत का तो सूरज के राज या तख़्त की मालकीयत के वक्त मुक़दमा जहमत बीमारी के जरिये इस शख़्स के राजदरबार से कमाये हुए या पाये हुए धन दौलत का सोना खतम हो जाने तक सूरज व सनीचर का दुश्मनाना और पुरजोर बुरा असर न जाएगा। ऐसी हालत में इस शख़्स के अंग (अजू - जिस्म का हिस्सा) खराब होने की शर्त न होगी।

(ii) सनीचर रद्दी हालत का हो मगर बृहस्पत उमदा हो तो उसके अंग (अजू -जिस्म का हिस्सा) खराब हो जाने पर सनीचर व सूरज का दुश्मनाना व पुरजोर बुरा असर खतम होगा। धन दौलत के खतम होने की शर्त न होगी।

उपायः- ऊपर लिखे हुए हिस्सा अव्वल, हिस्सा दोयम, हिस्सा सोयम तीनों मे ही बुरे असर से बचाव का ढंग और मदद:- चूंकि तखत के मालिक ग्रह का दौरा ग्रहफल का होता है और राशि नंबर के हिसाब से बोलने वाले ग्रह का असर राशिफल का होता है इसलिये बुरे असर से बचाव और मदद के लिये राशिफल वाले ग्रह का (जो भी ऊपर लिखी हालत में हो) उपाय करें। लालकिताब फरमान नंबर 120 सफ़ा नंबर 144 चर्बी से मंगल का बुरज ख़ाना नंबर 3 नष्ट होने पर बृहस्पत या शुक्कर जिस तरफ

के बुरज का हिस्सा ज्यादा भारी मालूम होवे। वही तरफ प्रबल गिनी जाएगी। यानि अगर बृहस्पत की तरफ का हिस्सा भारी हो जावे। बहुत बड़ा बृहस्पत या नर्म हाथ का बृहस्पत होगा और दोनों ग्रह बृहस्पत और शुक्कर ख़ाना नंबर 2 में व मंगल नष्ट गिना जाएगा। शुक्कर की तरफ का हिस्सा भारी हो जावे निहायत बड़ा शुक्कर होगा। दोनों ग्रह बृहस्पत शुक्कर ख़ाना नंबर 7 में और मंगल नष्ट लेंगे।

अरमान नंबर 121

(में बृहस्पत का चंद्र या शुक्कर या दोनों से ताल्लुक लिखा है)

अरमान नंबर 122

बृहस्पत दोनों जहानों या अंदर बाहर दोनों तरफों का मालिक गिना गया है। उसकी अंदरूनी ताकत ख़ुदी (जिस्म इन्सान, ख़ुद अपना वजूद या ख़ुद अपने वजूद में या अपने लिये। अपने आप से मुतलका या बंद मुट्ठी में साथ लायी हुइ चीजें- ख़ाना नंबर 4 ऊंच बृहस्पत), हवा - मुहब्बत,(हर दो हकीकी व गैर हकीकी) मोह या मेर (मेरा अपना आप) कहलाती है और बेरूनी चाल (दूसरों से मुतलका- दूसरे जहान में साथ ले जाने के लिये चीज दुनिया से बेरूनी बरताव वगैरह।) क़िस्मत या करिश्मा कुदरत कहलाती है।

क़िस्मत रेखा - अरमान नंबर 10 में मुफसिल लिखा है।

कोहसार और समंदर : (लाल किताब सफ़ा 157 जुज 2 फारसी लफज कोह पहाड़ का सिलसिला और समुंद्र) बृहस्पत के ताल्लुक में हाथ का खाका देखने से मालुम होगा कि कुण्डली के ख़ाना नंबर 9 को ऐसी जगह माना है। जिस के एक तरफ शुक्कर का बुर्ज ख़ाना नंबर 7 और दूसरी तरफ चंद्र का बुर्ज ख़ाना नंबर 4 वाक्या हैं। लाल किताब सफ़ा 40 पर तोते की 35 को देखने से मालूम होगा कि बृहस्पत को गंगा (हिंदोस्तान का एक बड़ा और मतबरक दरिया) और आम इसतलाह में दोनों जहानों की हवा भी माना है। गोया पानी और हवा का बाहमी ताल्लुक रखने वाली चीज गिनी गयी है। पानी की खासीयत है कि वो हंमेशा नीचे की तरफ बहता है। ताकि इसकी सतह हमवार हो जावे और सब की कमी बेशी बराबर हो जावे। (सनीचर को पत्थर पहाड़ माना है और

पानी चंद्र है।) हवा की खासीयत है कि गर्मी से फैलती और ऊपर को उठती है। अब बृहस्पत के दोनों जहानों ख़ाना नंबर 2 (राहु केतू की मुश्तरका बैठक) और ख़ाना नंबर 9 बच्चे की पैदाइश की जगह का ताल्लुक साफ करने के लिये मालूम हुआ कि ख़ाना नंबर 7 शुक्र की ख़ुश्की का ब्रह्मांड और चंद्र के समुंद्र की गैबी दुनिया के दरम्यान में बैठने वाला बृहस्पत या ख़ुश्की और पानी दोनों पर ही रहने वाली हवा जब ख़ाना नंबर 9 से चलती है और जब बच्चा ख़ाना नंबर 9 में आ जाने के बाद इस दुनिया में आगे चलता है तो पहला ही मकाम या पड़ाव सनीचर का हैडकवाटर या ख़ाना नंबर 8 आ निकलता है। जो मौत का घर है और मंगल व सनीचर की मुश्तरका मालकीयत है। (लाल किताब सफ़ा 97) गोया ख़ाना नंबर 9 से चले हुए बच्चे या बृहस्पत की हवा के साथ शुक्कर चंद्र तो पहले ही थे। मंगल सनीचर और आ मिले। अगर मंगल नेक के बुर्ज ख़ाना नंबर 3 की हद और सनीचर की उम्र रेखा एक तरफ हुए तो सूरज की सेहत या तरक्की रेखा ख़ाना नंबर 5 और मंगल बद ख़ाना नंबर 8 की हदबंदी भी इस जगह सनीचर के हैडकवाटर के साथ आ लगी। सनीचर ख़ुद पहाड़ है मगर पहाड़ बृहस्पत की हवा को रोक नहीं सकता। हां अगर पानी से लदी हुइ हवा के रास्ते में ऐसे ढंग पर आ जावे कि हवा पहाड़ से टकरा जावे तो हवा से पानी उतार लेगा। बारिश होगी मगर हवा खाली होकर फिर आगे बढेगी या हट कर वापिस आयेगी। मगर सनीचर के ख़ाना नंबर 10 के मकाम को अगर बृहस्पत के ख़ाना नंबर 9 से मिलाने के लिये खत खींचें या उम्र रेखा का रूख देखें जो सनीचर के कोहसार की चीज है तो मालूम होगा कि ख़ाना नंबर 8 सनीचर का पहाड़ का रूख हवा को रोक नहीं सकता। देखता ही रह जाता है। (सांप आज तक टकटकी लगाये देखता चला आता है और बृहस्पत के इन्तजार में बैठा है।) ये हवा आगे बढी तो ख़ाना नंबर 11 आमदन बृहस्पत का घर मगर सनीचर की कुंभ राशि पानी से भरा हुआ घड़ा (वही पानी जो अभी ऊपर सनीचर ने बृहस्पत की हवा से निकाल लिया था) जिस के साथ ही ख़ाना नंबर 12 खर्च सनीचर की दूसरी राशि **"मीन"** मछली तड़प रही है। ये ख़ाना नंबर 12 राहू के हाथी का भी है यानि बृहस्पत गुरू के लिये हाथी भी आ गया। ब्रह्म का खयाल छोड़ हाथी की सवारी चुपचाप हो कर ली। बृहस्पत जर्द और राहू नीला मिले तो सब्ज रंग हुआ। बुध ख़ुद आ निकला। गोया बृहस्पत के जर्द रंग का पता ही न चला कि कहां चला गया है। नीले रंग राहू से दोस्ती करके

बुध ने अपनी सिर रेखा खड़ी कर दी। अब बृहस्पत ने राहु के हाथी से बचना है या राहु का जाल काटना है। अपने दोस्त केतू को याद करता है। ये केतू चूहा भी बनता है कुत्ता भी होगा गधा भी है कान भी होगा और छलावा भी माना है। (लालकिताब सफ़ा 115) गऊ माता भी होता है। (लाल किताब सफ़ा 118 जुज 9) और गऊ माता शुक्कर भी है। (लाल किताब सफ़ा 115) शुक्र में केतू जरूर माना हैं और बुध भी शुक्कर का जुज है। इसलिये जब शुक्कर बन गया तो बुध और केतू दोनों ही शुक्कर के अंदर ही लपेटे गये। केतू तो बृहस्पत के बराबर का है। ये छलावा बना गुरू को हिम्मत दी। चूहे ने राहू का जाल काटा। गधे को अपने मतलब के लिये बाप कहा। बुध की सिर रेखा की दीवार की रूकावट से आगे बढा तो केतू के घर ख़ाना नंबर 6 में जा निकला। मगर वहा भी बुध मौजूद है। इसलिये वहा गऊमाता बना और भाग कर ख़ाना नंबर 2 में जा पहुंचा। क्योंकि ख़ाना नंबर 6 और ख़ाना नंबर 2 के दरम्यान कोई रूकावट की दीवार नही और द्रुष्टी में भी ख़ाना नंबर 2 देखता है ख़ाना नंबर 6 को और ये ख़ाना नंबर 2 तो है ही गाय का अस्थान या शुक्कर की अपनी राशि बिरख जो बृहस्पत का पक्का घर मुकर्रर है। ये ख़ाना नंबर 2 ही एक घर है। जहां गाये पक्के तौर पर खड़ी है गृहस्त है। राहु केतू की मुश्तरका बैठक है। जिस में ख़ाना नंबर 8 के असर का सनीचर का वही ताल्लुक आ जाता है या मशनोई शुक्कर खाली बृहस्पत हवाई ताकत का गुरू और दुनयावी गाय गुरुद्वारा सब बृहस्पत के पहलू हैं। गोया बृहस्पत की हवा अब सनीचर के पहाड़ के सिलसिले की दीवारों से टकराकर ख़ाना नंबर 2 में वही समुन्दर ले जाती हैं। जो बृहस्पत के साथ ख़ाना नंबर 9 से लगा हुआ चंद्र के समुद्रं ख़ाना नंबर 4 में मौजुद था। इस तरह पर ख़ाना नंबर 9 व ख़ाना नंबर 2 जब बाहम मिले तो **ख़ाना नंबर 2** कर्मी धर्मी कोहसार कहलाया। **ख़ाना नंबर 9** कर्म धर्म समुंद्र या दरियाये गंगा हुआ। जिस में हवाई ताकत का साथ हुआ या ख़ाना नंबर 2 में बृहस्पत की असल ताकत पायी गयी या ख़ाना नंबर 9 को निधि सिद्धी का मालिक सुधामा (सुध साधू बृहस्पत गुरू, मां माता मान इज्जत) तो ख़ाना नंबर 2 को धन्ना भगत (पत्थर से बृहस्पत दोनों जहानों का मालिक) मुराद होगी। जिसकी गायें राम चरावे यानि ख़ाना नंबर 2 में।

सनीचर बृहस्पत शुक्कर और राहु केतू 5 की पंचायत मानी गयी है या जिस वकत भी ये सब ग्रह यानि बृहस्पत मय शुक्कर और पापी ग्रह बाहम मुश्तरका हों या द्रुष्टी से बाहम मिल रहे हों। बृहस्पत की ऊत्तम हालत (मुतलका दुन्यावी गृहस्त) होगी। क्योंकि ख़ाना नंबर 2 (हथेली पर) के गुरू के सामनेः-

सनीचर का बुर्ज है - ख़ाना नंबर 10 सांप कान बंद किये मगर टकटकी लगाये चुपचाप।

सूरज का बुर्ज है ख़ाना नंबर 1 बंदर बना बैठा जो फूंक नहीं मार सकता। बृहस्पत की ताकत हवा को ढूंढता है।

केतू का बुर्ज है ख़ाना नंबर 6 कुत्ता दरवेश गाय।

ख़ाना नंबर 2 के बृहस्पत के सामने राहु हाथी ख़ाना नंबर 12 में बंधा हुआ होगा। राहु अपने कान लंबे कर के केतू के ख़ाना नंबर 6 के साथ नंबर 12 को मिलाकर गुरू के ख़ाना नंबर 2 की जड़ में उपदेश की खातिर ख़ुद चुप होगा मगर बृहस्पत चुप न होगा।

बुध शुक्कर का बुर्ज है ख़ाना नंबर 7 शादी रेखा, बुध ख़ुद - सिर रेखा बुध की।

मंगल का बुर्ज है ख़ाना नंबर 3 और राशि नंबर 3 मिथुन, तर्जनी की जड़ बुध की राशि।

राहु केतू तो शुक्कर में शामिल है। गोया सब ही ग्रह गुरू का उपदेश सुन रहे हैं या ख़ाना नंबर 9 में उपदेश था सिर्फ ज्ञान तो ख़ाना नंबर 2 में ज्ञान का दाता बृहस्पत ख़ुद मौजूद हुआ।

अरमान नंबर 123
औलाद

पैदाइश का वक्त - मंगल या शुक्कर या बुध में से किसी भी एक दो या तीनों ही मुश्तरका से सनीचर की दोस्ती (वर्षफल और राशि नंबर के ग्रह बोलने के हिसाब से उम्र के किसी साल में सनीचर का भी आ शामिल होना) औलाद की पैदाइश का वकत होगा।

ग्रहों का औलाद से ताल्लुक

बृहस्पत :- जिस्म में रूह के आने जाने का ताल्लुक या पैदाइश औलाद। मगर औलाद की जिंदगी कायम रहने या मौत हो जाने का कोई बंधन नहीं।

सूरज :- माता के पेट के अंधेरे में रौशनी दे देना या पैदा होने के बाद दुनिया में उनकी या उन से वालदैन की क़िस्मत को रोशन करना खास कर बजरिया नर औलाद। अंधेरे घरों में चिराग रोशन करने की ताकत।

चंद्र :- उम्र, धन, दौलत और वालदैनी नेक ताल्लुक (नर मादा हर दो औलाद का)

शुक्कर :- जिस्म या बुत की मिट्टी। गृहस्ती सुख। औलाद की पैदाइश में मदद या खराबी।

मंगल :- जिस्म में खून कायम रहने तक जिंदगी का नाम और दुनिया में औलाद और उन के आगे औलाद दर औलाद कायम रख कर बेलों (पौदे) की तरह बढाना और उन का नाम या उन के नाम से सब का नाम बढाना या दुनिया में नाम बाकी या पैदा कर देना। ख़ुद कुण्डली वाले में कौतबाह से अलहैदा बच्चा पैदा करने की ताकत। जिस्म में जोर, रूह बुत को इकट्ठा पकड़े रखने की हिम्मत।

बुध :- औलाद का रिश्तेदारों से ताल्लुक। (लड़कियां-लड़कियों की नसलों का बढ़ाना।) ख़ुद कुण्डली वाले में कौतबाह खाली विषय की ताकत। कुण्डली वाले और औलाद के लिये दूसरों से मिलने मिलाने के लिये मैदान खुला करना या खाली आकाश की तरह इन सब के लिये हर तरफ जगह खाली करके मैदान बढा देना।

सनीचर :- औलाद की पैदाइश के शुरू होने का वकत। जायदादी ताल्लुक। मौत के बहाने।

राहु :- बृहस्पत के असर के बरखिलाफ होना या बृहस्पत को चुप कराना। रूह का आना जाना बंद करना या मौतें या बहुत देर तक पैदाइश औलाद को रोक देना या दीगर गैबी और छिपी छिपाई खराबियां या पांव तले भूचाल पेदा करना मगर लड़कियों की मदद करता है।

केतू :- औलाद की खुशहाली, फलना फूलना मगर औलाद की तादाद में कमी का हिंदसा रखना (मौतें करके औलाद घटाने से मुराद नहीं। वैसे ही औलाद गिनती की ही होगी या बहुत देर बाद होगी। लेकिन जो होगी या जब होगी उमदा और मुकमल होगी।)

ख़ुद कुण्डली वाले में बुध की कौतबाह और मंगल के खून से बच्चा पैदा करने की ताकत और बृहस्पत की औलाद पैदाइश तीनों को इकट्ठा करके रखने वाली ताकत नतफा या वीरज या नतफा की बुनियाद को नर मादा में मिलाने वाली तूफानी हवा या खाली नाली होगी। यही तीन ग्रह केतू की तीन टांगे हैं। जिसकी वजह से ये शुक्कर का बीज कहलाता है।

कुण्डली वाले का जो ग्रह रद्दी हालत या उमदा हालत का होगा वही हालत रद्दी या उमदा हालत होगी।

साहबे औलाद (कौन बाल बच्चों व कबीला और परिवार वाला होगा)

कुण्डली वाले के लिये-

1) बृहस्पत सूरज शुक्कर बुध सनीचर सब कायम या
2) सिर्फ बृहस्पत या सूरज कायम या दोनों ही कायम या
3) मंगल होवे शुक्कर या बुध के पक्के घर या उन की राशियों में और द्रुष्टी के सब खाने खाली हों। या
4) मंगल हर तरह से कायम और नेक होवे। या
5) मंगल हो सनीचर के दोस्तों (लाल किताब सफ़ा 105 पर ख़ाना दोस्त में लिखे) के साथ उनके पक्के घर या उन की राशियों में। (बुध शुक्कर राहु) और सनीचर हों मंगल के दोस्तों (लाल किताब सफ़ा 105 पर ख़ाना दोस्त में लिखे) के साथ उनके पक्के घर या उन की राशियों में (सूरज चंद्र बृहस्पत)

} साहिबे औलाद दर औलाद होगा

मंगल सनीचर मुश्तरका हों। ख़ुद अपनी औलाद तो उमदा माकूल तादाद और नेक होवे। मगर पोते देर बाद या तादाद में कम हों। पोतीयां (लड़को की लड़कियों) की शर्त नहीं।

बृहस्पत कायम तो सब औलाद (नर मादा)...... कायम।

केतू कायम तो सब लड़के ....कायम।

राहु कायम तो सब लड़कियां ...... कायम

मंगल बुध साथी ग्रह - ख़्वाह दोनों ख़ुद बाहम साथी ग्रह हों या दोनों ही एक दूसरे के दोस्तों के घर या राशि में बैठ जावें या दोनों बाहम मुशतरका ही हो जावें। मगर बामुकाबिल न हों तो लावल्द न होगा।

चंद्र नष्ट तो औलाद जरूर नष्ट होगी (नर मादा बच्चों की तमीज नहीं) मगर लावल्द होने की शर्त न होगी।

चंद्र हो ख़ाना नंबर 1 में सनीचर नंबर 7 - सूरज नंबर 4 - शुक्कर नंबर 5 तो नामर्द होगा।

शुक्कर हो ख़ाना नंबर 2-6 में द्रुष्टी या साथी वगैरह हो जाने के सब ही घर खाली हों यानि ख़ाना नंबर 2 या 6 का शुक्कर हर तरह से अकेला हो } औरत बांझ या नाकाबिले औलाद होगी।

चंद्र कुण्डली का औलाद के बारे में कोई ताल्लुक न होगा।

शुक्र केतू मुश्तरका ख़ाना नंबर 1 में और बुध नष्ट हो (सामने के दांत खतम)
या चंद्र शुक्र बाहम बामुकाबिल हो और पापी ग्रह या दुश्मन घरों का साथ हो जावे। } लावल्द होगा

(ख़ाना नंबर 5 व 9 का खास फर्क सफ़ा 120 अरमान नंबर 124 से पहले लिखा है)

ख़ाना नंबर 5 या 9 में या नंबर 3 या 9 में पापी ग्रह हों या
ख़ाना नंबर 5 या 9 में या नंबर 3 या 9 में बृहस्पत या सूरज के दुश्मन ग्रह
हों या मंगल ख़ाना नंबर 4 या पापी ग्रह नंबर 9 में या राहु बुध नंबर 1 या
केतू शुक्र नंबर 1 या राहु अकेला ख़ाना नंबर 9 } औलाद के बिघ्न (मोतें) बीमारियां होंगी।

शुक्र केतू ख़ाना नंबर 1 में मंगल ख़ाना नंबर 4 में ....औलाद के बिघ्न।

पापी ग्रह तीनों या कोई एक नंबर 5 या 9 में मंगल ख़ाना नंबर 4 में........औलाद के बिघ्न।

बुध व शुक्र का ख़ाना नंबर 5 में औलाद पर कोई बुरा असर न होगा।

सूरज हो ख़ाना नंबर 6 में
और सनीचर हो ख़ाना नंबर 12 में तो } औरत पर औरत मरती जावे या मां बच्चों का ताल्लुक ही न देखे या सुख से पहले चलती जावे।

बुध मारता होवे बृहस्पत को या बुध होवे बृहस्पत
के घरों में या बृहस्पत के साथ ही } बच्चें पिता पर भारी (दुख या मौत का सबब) होंगे।

सूरज हो ख़ाना नंबर 6 में और मंगल हो ख़ाना नंबर 10 या 11 में तो लड़के पर लड़का मरता जावे।

मंगल शुक्र या बुध के दुश्मन ग्रह औलाद की उम्र कम या औलाद को नष्ट करते है।

i) शुक्र बुध मंगल तीनों ख़ाना नंबर 3 दृष्टी खाली हो ख़ाना नंबर1या
ii) शुक्र बुध मय राहु या केतू ख़ाना नंबर 7 } शादी और औलाद में गड़बड़।

मंगल शुक्र या बुध के दोस्त ग्रह औलाद की उम्र लंबी या औलाद को आबाद वे कायम करते है।

शुक्र कें दोस्त ग्रह (ख़ुद शुक्र नहीं) लड़के पैदा करते है।

बुध या बुध के दोस्त ग्रह लड़कियां पैदा करते है।

ख़ाना नंबर 3-5-11 में अगर बुध हो तो लड़कियां पहले और जरूर कायम होंगी नर औलाद की शर्त नहीं।

ख़ाना नंबर 3-5-11 में शुक्र के दोस्त ग्रह (खुद शुक्र नहीं) हों तो लड़के जरूर कायम होंगे लड़कियों की शर्त नही।

चंद्र ख़ाना नंबर 6में हो तो लड़कियां ही लड़कियां होंगी।
केतू ख़ाना नंबर 4में हो तो लड़के ही लड़के ही पैदा होंगे। } मगर आपस में साथी ग्रह न बन रहे हों (लालकिताब सफ़ा 326 सनीचर चंद्र का ताल्लुक।)

तादाद औलाद शुक्र बुध या दोनों मुश्तरका से जितने दूर बृहस्पत हो या जितने

दरम्यानी घर हों। कायम रहने वाली तादाद औलाद उतनी होगी। कम अज कम - जिसमें से नर मादा ऊपर जिकर किए ढंग पर देंख लेंगें।

औलाद का वालदैन को सुखः- ख़ाना नंबर 1-3-5 के ग्रहों की अच्छी या मंदी हालत से जाहिर हो जायेगा।

वालदैन व औलाद का बाहमी ताल्लुक एक दो तीन चार हद 12 की तरतीब से अगर कुण्डली में हों

पहले घरों में	दरम्यानी घरों में	आखरी या बाद के घरों में	तो असर क्या होगा।
बृहस्पत बुध		बुध बृहस्पत	पैदाइश औलाद जरूर होगी बुध के वक्त से वालिद दुखिया बरबाद या खत्म ही होगा। | बुध बृहस्पत बाहम बामुकाबिल हो जावें तो लङकियां जरूर कायम होगी लङको की शर्त नहीं होगी।
मंगल	बृहस्पत	बुध	औलाद (नर) कायम
मंगल	बुध	बृहस्पत	औलाद (नर) कायम
बृहस्पत	मंगल	बुध	औलाद (नर) कायम
बृहस्पत	बुध	मंगल	औलाद (मादा) कायम
बुध	बृहस्पत	मंगल	औलाद (मादा) कायम
मंगल / बृहस्पत		बुध	मुश्तरका औलाद (लङके लङकीयां) कायम और सब सुखी होंगे।
मंगल / बुध		बृहस्पत	लङकी कायम वालिद दुखी
बृहस्पत		मंगल बुध	लङकी कायम वालिद दुखी
बुध		मंगल बृहस्पत	औलाद व बाप दोनों ही दुखिया
मंगल		बुध बृहस्पत	औलाद कायम मगर बाप की हालत रद्दी

नोट :- इस तमाम अरमान में जहां कहीं भी मंदे ग्रहों का जिकर है। उनके मंदे फल सिर्फ इसी दिन से या दिन तक गिने जायेंगे। जिस दिन से कि वो मंदे ग्रह वर्षफल के हिसाब से शुरू या खत्म होवें। सारी उम्र के लिये ही मंदे नहीं। ज्यादा से ज्यादा हर ग्रह अपने पहले दौरा (आम असर की मयाद या ग्रह की अपनी उम्र) या उम्र के पहले 35 साला चक्र तक असर कर सकता है। महादशा वाला ग्रह भी जो जनमदिन से ही शुरू हो जावे और ख़्वाह दो दफा ही

एक के बाद दीगरे दौरा में मंदा हो जावे। 39 साल ज्यादा से ज्यादा मंदा रह सकता है।

ख़ाना नंबर 5 में सूरज या बृहस्पत के दुश्मन ग्रह से औलाद बरबाद होगी। लेकिन ख़ाना नंबर 9 में ऐसे दुश्मन ग्रह का दोस्त/दुश्मन ग्रह अपने दिन की औलाद को जरूर कायम रखेगा। फरजन ख़ाना नंबर 5 में सनीचर और नंबर 9 में मंगल हो तो मंगलवार के दिन वाली औलाद जरूर कायम रहेगी।

अरमान नंबर 124

क़िस्मत का असर

ख़ाना नंबर 9 के ग्रह क़िस्मत के बुनियादी ग्रह होते हैं। इस खाने में ख़ाना नंबर 3 और ख़ाना नंबर 5 के ग्रहों का असर भी आ मिलता है। औलाद की पैदाइश के दिन से ख़ाना नंबर 5 का असर न सिर्फ ख़ाना नंबर 9 में जाने लग जाता है। बल्कि बाप बेटे की मुश्तरका क़िस्मत 70-72 साला सवाल पैदा करने लग जाता है। ख़ाना नंबर 3 का असर कुण्डली वाले के अपने जनम से ही ख़ाना नंबर 9 में मिलता माना है। औलाद की पैदाइश के दिन से पहले ख़ाना नंबर 5 का असर ख़ाना नंबर 9 में गया वो बाप बेटे की मुश्तरका क़िस्मत पर असर नहीं करता। बल्कि ख़ाना नंबर 9 की दूसरी चीजें यानि कर्म धर्म और कुण्डली वाले के अपने बुजुर्गों के ताल्लुक में असर रखता है। औलाद की पैदाइश के दिन से ख़ाना नंबर 5 का असर कुण्डली वाले के बुजुर्गों की बजाये ख़ुद कुण्डली वाले की अपनी क़िस्मत (जो बाप बनता है) पर असर करता है। इसी तरह ही ख़ाना नंबर 3 का असर भाई की पैदाइश के दिन से ख़ाना नंबर 9 में जब जायेगा तो कुण्डली वाले की अपनी जात पर असर करेगा और भाई की पैदाइश से पहले कुण्डली वाले के अपने बुजुर्गों के ताल्लुक में दखल देगा। लेकिन अगर इसका (कुण्डली वाले का) भाई पहले ही मौजुद हो तो बडे भाई की क़िस्मत का असर कुण्डली वाले में आयेगा। ख़ाना नंबर 3 की इस ताकत की वजह से मंगल की राशि नंबर 8 मंगल बद मौत ने भी उल्टा देखा। क्योंकि मंगल नेक व बद दोनों भाई ही हैं। उम्र के पहले 35 साला चक्कर आकर छोटा भाई भी हो और और औलाद भी शुरू हो जावे तो ख़ाना नंबर 5 का असर ख़ाना नंबर 3 के असर पर प्रबल होगा अगर ख़ाना नंबर 3 व 5 दोनों ही खाली हों तो क़िस्मत की बुनियाद पर सिर्फ ख़ाना नंबर 9 के ग्रह माने जायेंगे। अगर ख़ाना नंबर 9 भी खाली हो तो ये शर्त ही उड गयी।

ख़ाना नंबर 5 का असर कुण्डली वाले पर इसके बुढापे में होता है और ख़ाना नंबर 3 का असर बचपन से या यूं कहो कि ख़ाना नंबर 3 का असर उम्र के पहले 35 साला चक्कर में होता है और ख़ाना नंबर 5

का उम्र के दूसरे 35 साला चक्कर पर या क़िस्मत की बुनियाद पर उम्र के पहले 35 साला चक्र में ख़ाना नंबर 3 का असर होगा और दूसरे 35 साला चक्कर में ख़ाना नंबर 5 का असर क़िस्मत की बुनियाद पर होगा। खुलास्तन उम्र के दूसरे 35 साला चक्कर में ख़ाना नंबर 5 का असर ख़ाना नंबर 3 के असर पर प्रबल होता हुआ क़िस्मत की बुनियाद पर होगा। हर हालत में ख़ाना नंबर 5 प्रबल होता है और ख़ाना नंबर 3 नीचे दब जाने वाला। ख़ाना नंबर 9 का अपना असर हर वक्त साथ होगा।

पहले घरों के ग्रह बाद के घरों के ग्रहों को अपनी दृष्टि के वकत जगा दिया करते हैं। अगर बाद के घरों में कोई ग्रह न हो तो वो ख़ाना सोया हुआ गिना जाता है। फरजन ख़ाना नंबर 11 में तो कोई न कोई ग्रह मौजूद हैं। मगर ख़ाना नंबर 3 खाली है तो इस हालत में ख़ाना नंबर 11 के ग्रह सोये हुए माने जाएंगे जिन को जगाने के लिये क़िस्मत को जगाने वाले ग्रह की जरूरत होगी। (अरमान नंबर 10) बाद के घरों के ग्रह जागने के दिन से क़िस्मत का जागना मुराद होगी। इस तरह पर (यानि ख़ाना नंबर 3 या 5 के ग्रह का दौरा आया तो नंबर 9 के ग्रह जारी हो गये।) अगर ख़ाना नंबर 9 के ग्रह मुंदरजा जैल खास खास सालों में जागें तो नीचे दिया हुआ असर पैदा होगा। जिस साल से (वर्षफल के हिसाब) पहले घरों के ग्रहों का पहला दौरा शुरू होवे। उस साल से बाद के घरों के ग्रह जाग पड़ेंगे होंगे और उस साल से पहले वो सोये हुए माने जाएंगे।

बृहस्पत के ख़ाना नंबर 9 में - मुंदरजा जैल खास खास वक्तों में जागे हुए ग्रहों का असर

बुध का इस घर से ताल्लुक जुदी जगह भी दर्ज है।

बृहस्पत:- जब उम्र के 16वें साल शुरू से जारी हो जावे। निहायत मुबारक फल देगा। शुक्कर का साथ यानि ऐसी हालत में शुक्कर बृहस्पत मुश्तरका ख़ाना नंबर 9 में हों तो स्त्री भाग में काग रेखा (मगर तीर्थ यात्रा 20 साल उत्तम) का मंदा फल देगा। चंद्र के साथ से यानि चंद्र बृहस्पत मुश्तरका ख़ाना नंबर 9 में। मातृ हिस्सा की मदद। तीर्थ यात्रा 20 साल और उत्तम। दोनों का साथ यानि चंद्र बृहस्पत शुक्कर मुश्तरका नंबर 9 में। कभी अमीरी के समंदर

की ठाठें। कभी गरीबी में रेत के ज़र्रे की भी चमक न होगी।

सूरजः- जब 22 वें साल उम्र के शुरू हो जावे मुबारिक फल देगा। राजदरबार मुबारिक फल। वालदैन के लिये मुबारक। अपनी उम्र लंबी बाप की उम्र लंबी बाबे की उम्र लंबी होगी। शुक्कर का साथ यानि शुक्कर सूरज मुश्तरका ख़ाना नंबर 9 में। स्त्री भाग में काग रेखा। मगर तीर्थ यात्रा उत्तम 20 साल उत्तम फल देवे।चंद्र का साथ यानि चंद्र सूरज मुश्तरका नंबर 9 में। मातृ हिस्सा की मदद। 20 साल तीर्थ यात्रा उत्तम। दोनों का साथ यानि चंद्र शुक्कर सूरज मुश्तरका नंबर 9 में। कभी अमीरी का समुद्रं ठाठें देवे। कभी गरीबी में रेत के जर्रे की भी चमक न होवे। सूरज जब ख़ाना नंबर 9 में हो तो ख़ाना नंबर 5 भी रोशन और नेक असर देगा।

चंद्र:- जब 24 साला शुरू उम्र में जारी हो तो जो ऊपर चंद्र बृहस्पत, चंद्र सूरज, चंदर बृहस्पत शुक्कर ,चंदर सूरज शुक्कर का ऊपर लिखा है।

चंद्र जब ख़ाना नंबर 9 में हो तो ख़ाना नंबर 5 भी चंद्र का अंदरूनी तौर पर नेक असर देगा। क्योंकि ये घर सूरज का माना है। जिसके सामने चंद्र जुदा और जाहिरा फल न देगा।

शुक्कर:- जब उम्र के 25 वें साल शुरू होवे तो मंगल बद का नीचे लिखा असर देगा।

मंगल (नेक):- जब उम्र के 13 वे साल शुरू होवे तो तबदीली उस की पैदाइश पर उसके वालदैन के पास दौलत का भंडारा कायम होगा। हकूमत का साथ होगा। फिर मंगल के वकत से वही उमदा हालत जो बवकत पैदाइश वालदैन की थी होगी।

मंगल (बद):- जब उम्र के 15 वें साल शुरू होवे तो तबदीली मजहब, पैदाइश में राज़। वालदैन की माली हालत उसके जनम से खराब होकर मंगल बद के जमाना के खतम पर दुरस्त होगी।

बुध:- जब उम्र के 34 वें साल शुरू होवे तो ऊपर लिखा मंगल बद का असर देगा।

पापी ग्रह जब ऐसे ढंग पर शुरू होवें कि उन के असर का दूसरा दौरा उम्र के मुंदरजा

जैल सालों से शुरू होवे तो :-

सनीचर:- 60वें साल मुबारिक अगर शुक्कर का साथ हो यानि शुक्कर सनीचर मुश्तरका ख़ाना नंबर 9 में हों या शुक्कर बृहस्पत दोनों का साथ यानि शुक्कर सनीचर बृहस्पत नंबर 9 में हों तो हर दो हालत में उत्तम फल देगा।

चंद्र का साथ या चंद्र सनीचर ख़ाना नंबर 9 में :- खराब असर। चंद्र का फल मंदा मिला होगा।

बृहस्पत चंद्र दोनों का साथ यानि चंद्र सनीचर बृहस्पत ख़ाना नंबर 9 में खराब असर। चंद्र का फल मंदा मिला होगा। सनीचर के साथ राहु या केतु नंबर 9 में निहायत मुबारक। भारी कबीला और धन दौलत शाहाना होगा।

राहु:- जब उम्र के 42वें साल भी शुरू होता होवे मुबारक। खर्चा बहुत बड़ा मगर कबीले की बेहतरी में होगा। औलाद के लिये गैर मुबारक होगा। भाई बहनों से इतफाक रखने से बरकत होगी। औलाद 21 साल फर्क वाली कायम और मददगार होगी।

केतू:- 48 साल उम्र के शुरू से जारी। ख़ुद अपने लिये मुबारिक। सफर दरपेश रहे। शुक्कर का साथ यानि शुक्कर केतू नंबर 9 में मुश्तरका हों तो मुबारिक। दौलत पर दौलत आवे। चंद्र का ताल्लुक यानि चंद्र केतू मुश्तरका नंबर 9 में माता व माता खानदान पर बुरा असर देवे। खास कर उस वकत जब केतू के दुश्मन ग्रह (मंगल) का दौरा होवे।

ख़ाना नंबर 9 के ग्रह

ऊपर लिखें सालों में वर्षफल के हिसाब से शुरू हों या न हों तो भी ऊपर का फल देंगे। शुरू उम्र की तरफ से अपनी अपनी उम्र पर शुरू होकर (यानि बृहस्पत 16 साल उम्र से, सूरज 22 साला उम्र से, चंद्र 24 साला उम्र से, शुक्कर 25 साला उम्र से, मंगल नेक 13 साला उम्र से, मंगल बद 15 साला उम्र से दोनों मुश्तरका 28 साला उम्र से, बुध 34 साला उम्र से, सनीचर 60 साला उम्र से, राहु 42 साला उम्र से केतू 48 साला उम्र से) अपनी अपनी उम्र के अरसा तक ही यानि बृहस्पत 16 साल से शुरू होकर 16 साल ही यानि 32 साल उम्र तक। सूरज 22 से 22 साल तक कुल 44 साल

उम्र तक। सनीचर 60 से 60 साल कुल 120 साल तक वगैरह वगैरह ऊपर का फल देंगे। वर्षफल के हिसाब से ख़ाना नंबर 9 वाले का असर इसके अपनी आम तौर पर शुरू होने की म्याद की बजाये जनम दिन से ही शुरू होता हो तो वो ग्रह जनम दिन से अपनी उम्र के अरसा तक ही ऊपर का फल देगा यानि बुध 34 साल मंगल 28 साल सनीचर 60 साल वगैरह।

खलासतन ख़ाना नंबर 9 के तमाम ग्रह जब कभी भी शुरू होवें वो अपनी अपनी आम उम्र की म्याद तक फल देंगे। सिवाये सनीचर के जो 60 साल फल देगा और उमदा। इस तरह ख़ाना नंबर 9 में शुक्कर या बुध और मंगल बद सबसे मंदे और सनीचर नंबर 9 में सबसे उत्तम और सबसे लंबा अरसा 60 साल का होगा।

ख़ाना नंबर 2 में :- सब ग्रह ऊपर ख़ाना नंबर 9 के लिए लिखा हुआ तमाम फल उम्र के आखिरी हिस्सा में देंगे। यानि ख़ाना नंबर 9 में अगर सनीचर का फल 60 साल लिखा है तो वो उम्र के शुरू की तरफ से 60 साल बुढापे की तरफ को होगा और यही सनीचर ख़ाना नंबर 2 में 60 साल होगा मगर मौत के दिन की तरफ से पीछे जनमदिन की तरफ को गिन कर। इसी तरह ही सब ग्रह देंगे।

अरमान नंबर 125 से 129

बृहस्पत पापी ग्रहों (सनीचर राहु केतू) मय बुध के साथ पिघले हुए सोने की तरह राशि फल का होता है। जिसमें हर तरह की शक का फायदा उठाया जा सकता है।

बृहस्पत के निशानात

i) बृहस्पत के सीधे खडे खत:- बृहस्पत का राहु के साथ ताल्लुक।

ii) चक्कर के सीधे खडे खत:- बृहस्पत का बुध के साथ होने का ताल्लुक

iii) शंख के सीधे खडे खत:- बृहस्पत का केतू के साथ होने का ताल्लुक

iv) सदफ के सीधे खडे खत:- बृहस्पत का सनीचर के साथ होने का ताल्लुक

अरमान नंबर 130

राशिफल का बृहस्पत या अंगुलियों की पोरीयों पर बृहस्पत के निशानों से लिया हुआ बृहस्पत हो तो चंद्र का काम देगा।

सूरज शुक्कर मुश्तरका हों = हवाई ताकतों का मालिक बृहस्पत होगा। सोना वगैरह ठोस हालत की चीजों का ताल्लुकदार न होगा।

i) कुण्डली में जब शुक्कर नीच हो (शुक्कर नंबर 6 में) तो सूरज मंगल बृहस्पत का फल मंदा होगा और

ii) जब पापी ग्रहों या केतू का फल मंदा होवे तो बृहस्पत का फल भी मंदा होगा।

ii) जब सूरज या चंद्र उमदा न हों (अरमान नंबर 108 फैरिस्त ग्रहण) बृहस्पत की हवा निहायत सर्द बर्फानी तूफान की हवा की तरह क़िस्मत के असर को सुला देगी या क़िस्मत का आम दुनयावी असर मंदा ही होगा या हल्की क़िस्मत होगी।

iv) जब मंगल नष्ट हो (मंगल बद हो) तो बृहस्पत भी नष्ट होगा। यानि आकाश बेल होगी। जो जिस दरख़्त पर चढ जावे उसे तबाह कर देगी।

v) जब बुध का साथ हो तो बुध फौरन बृहस्पत को अपने दायरा में बांध लेगा और बृहस्पत या सनीचर का सांप बनकर या सूरज की किरनें होकर बाहर निकलेगा। यानिः-

1) यानि बृहस्पत अकेला या/अपने दोस्त चंद्र के साथ ही हो बुध की राशि 3-6 या/बुध के पक्के घर 7 में और बुध को देखे बृहस्पत या देखे चंद्र बृहस्पत।

2) ख़्वाह बुध देखे बृहस्पत को/या बृहस्पत चंद्र मुश्तरका को बुध की राशि 3-6 में या पक्का घर 7 में या में से।

यानि 3 में बुध देख सकता है 11-9 को या 11-9 में से 3 को

यानि 6 में बुध देख सकता है 12 को या 2-12 में से 6 को

यानि 1 में बुध देख सकता है 7 को या 7 में से नंबर 1 को

3) ख़्वाह किसी और तरह भी बरूये द्रुष्टी वगैरह बुध की राख - रेत बृहस्पत की गैबी हवा या गृहस्ती ताकत सोने वगैरह में मिल जावे।

लाखों पति होता हुआ भी मुसीबत पर मुसीबत देखता चला जावे मगर अकल की कोई पेश ना जायेगी।

ऐसी हालत में अगर सूरज चंद्र वगैरह उमदा हों (बमूजब अरमान नंबर 108) और सनीचर उमदा (बमूजब अरमान नंबर 168) तो क़िस्मत उमदा होगी। फैसला हक में होवे।

4) लेकिन अगर बृहस्पत अकेला या बृहस्पत चंद्र इकट्ठे या दोनों चंद्र या बृहस्पत में से कोई एक अपने ऊंच घर ख़ाना नंबर 2 या 4 में (या ख़ुद बुध नंबर 2-4 में या दोनों मुश्तरका के साथ

ही मिल बैठें ख़्वाह किसी भी घर) हो जावें तो बुध दुश्मनी की बजाये मदद देगा। चंद्र का पूरा नेक असर होगा।

5) अकेले अकेले चंद्र या बृहस्पत को बुध मार लेगा। दूध में रेत या सोने में राख स्वाह कलई का टांका या कोढ पैदा कर देगा।

6) नेज अरमान नंबर 180 (बृहस्पत बुध मुशतरका वगैरह) देखें।

बृहस्पत जब दो या दो से ज्यादा ग्रहों के साथ हो जावे या उन को देखता हो जो ग्रह कि आपस में दुश्मन हों (बुध या मंगल की वो ताकत जो मंगल या बुध नर ग्रहों या स्त्री ग्रहों या मखनस ग्रहों के दरम्यान होने पर रखते हैं की शर्त न होगी और न ही उन ग्रहों की बृहस्पत से दुश्मनी की शर्त होगी) तो वो उनकी बाहम वाली दुश्मनी हटा देगा। ये मतलब नही है कि दोस्ती ही पैदा करवा देगा। दोस्ती पैदा करवाने वाला चंद्र है।

बृहस्पत व सनीचर का बाहमी ताल्लुक

1) बृहस्पत के घरों में सनीचर बुरा फल न देगा। मगर सनीचर के घर ख़ाना नंबर 10 में बृहस्पत नीच फल का होगा।

2) (बृहस्पत सनीचर मुश्तरका) जुदी जगह लिखा है। बृहस्पत दोनों जहानों की हवा का मालिक है और सिर्फ नेक हिस्सा का यानि जब तक हवा में सर्दी(चंद्र) गर्मी(सूरज) और नेकी की हालत(मंगल नेक) मौजूद हो। बृहस्पत दोनों जहानों के मायनों का होगा। लेकिन जब कोई भी और हालत इस में मिली तो बृहस्पत सिर्फ एक हालत का मालिक होगा।

बृहस्पत का राहु से ताल्लुक

1) राहु के ताल्लुक से बृहस्पत चुप हो जाता है। मगर कायम जरूर होता है। सोना (बृहस्पत) राहु के ताल्लुक में पीतल होगा। बृहस्पत को अगर चंद्र की मदद मिल जावे तो दुश्मनों को मार लेता है। पीतल पर पानी लगे तो नीला रंग राहु अलैहदा होने लगेगा। यही राहू जब सनीचर के लोहे पर लगे (लोहा व नीला थोथा) तो तांबा (सूरज) होगा।

2) राहु हाथी के सिर की लहर तो बृहस्पत इसकी पेशानी होगी। दोनों मुश्तरका होने की वजह से हाथी का सिर दों तरबूजों की शक्ल में बंट गया। हू ब हू दोनों ग्रहों के मुश्तरका होने पर आमदन की नाली दोरंगी होगी।

अरमान नंबर 131

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
बृहस्पत सूरज बुध	कायम	राज योग	बृहस्पत मंगल द्रुष्टी सिवाये	2 2 या बाहम 3-11	मुतलका गृहस्ती इसकी आवाज पर सिर कटा दें और इसके पसीने की जगह खून बहा दें।
बृहस्पत सूरज चंद्र	कायम	इकबालमंद			
बृहस्पत	1	राग रंग का खूब शानदार तूंबा बजने लगा। स्कूलों का आम इल्म पूरा दर्जा।	बृहस्पत बुध	2 8	पिता की उम्र के खतम करने के इलावा ख़ुद अपनी (16 से 19 में)उसका तोशा भी खराब करे। बहन बेवाह मामू तबाह।
बृहस्पत या दोस्त ग्रहो की मदद	1 या 2 या 4	इसका मामूली तांबा भी सोने की क़िस्मत (बृहस्पत) देवे। ला.की. 156/2	बृहस्पत केतू	2 2	हुक्मरान आसूदा हाल
बृहस्पत	2	मिट्टी के कामों से सोना। मगर सोने के कामों से खाक नसीब होवे। दिमागी	बृहस्पत शुक्कर	2 2	नर औलाद के बिघ्न या औलाद की पैदाइश के झगडे होंगे।
ख़ाना नंबर	2	शुक्कर से मुश्तरका इश्क़ के बाद का गलबा। गुरू घण्टाल होवे। सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली। ब्रह्मा जी और लक्ष्मी जी अपने सिहांसन पर की हालत का। साथ होगा ला.की. 144/1, 148/11, 157/2	बृहस्पत शुक्कर मंगल नष्ट	2 2	बहुत बडा बृहस्पत या नर्म हाथ का बृहस्पत। खाली शुक्कर (राहु केतू मुश्तरका) या शुक्कर ख़ाना नंबर 2 का काम देगा। अगर चंद्र भी ख़ाना नंबर 2 में साथ हो जावे तो जिन मुरीदी जनाहकारी। ऐयाश, दूसरों के लिये बेडी डोब मल्लाह मगर अपने इश्क़ में कामयाब होगा।
बृहस्पत या	2	बड के दरखत की तरह छतरधारी।			
चंदर	2	उसकी चांदी सोने का काम देवे।	बृहस्पत	3	दिमागी ख़ाना नंबर 17 मंगल से मुश्तरका। अदल या मुंसिफ़ मिज़ाजी दुर्गा जी

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना	असर नंबर
बृहस्पत	3	शेर की सवारी का साथ	जारी		उम्र के आखिर तक ख़ुद
	जारी	होगा। ला.की.135/3	बृहस्पत	4	अपने लिये उमदा क़िस्मत
बृहस्पत	3	खुशहाल। भागवान।	सनीचर	2	वाला होवे।
चंद्र	3	इकबालमंद। धन रेखा।	बृहस्पत	4	दुन्यावी बुलंदी में अगर
बृहस्पत	3	ऐसा धन भाइयों को तारे।	चंद्र	2	वालदैन से बढ कर न हो तो
शुक्कर	3				कमअजकम उनके बराबर
बृहस्पत	3	उर्ध रेखा। जिसका दोस्त			का तो जरूर होगा। मानिंद
सनीचर	4	उसी को लूट कर अमीर हो			"मां पर धी पिता पर घोड़ा
		जावे। ला.की. 296/4			होगा "। ला.की. 150/14
बृहस्पत	3	उर्ध रेखा दौलत के	बृहस्पत	4	दोनों ग्रहों का जुदा जुदा और
सनीचर	9	ताल्लुक में। ला.की.296/4	सूरज	1	दोनों का उत्तम फल होगा।
बृहस्पत	9	सनीचर की उर्ध रेखा का	बृहस्पत	4	उर्ध रेखा मगर सबसे उत्तम
सनीचर	9	पूरा नेक असर होवे।	सनीचर	9	और सबको तारने वाली हालत
बृहस्पत	4	लाटरी, वजीफा पावे।			का असर देवे। ला. की.296/4
साथ ही	देखें	लावारिस जायदाद मिले या	बृहस्पत	4	राजदरबार से मुतलका
लाल किताब		जुड़ा जुड़ाया धन पावें।	सूरज	10	जरूरी सफरों के नेक नतीजे
सफा 144/1		दुन्यावी बृहस्पत के फल की	चंद्र	कायम	सीप में मोती होंगे।
व 218/3		निस्बत चंद्र गैबी का फल	बृहस्पत	4	34 साल उम्र के बाद अपना
		और भी उमदा होवे। दिमागी	बुध	10	ही बेड़ी डोब मल्लाह होगा।
		ख़ाना नंबर 21 चंद्र से	बृहस्पत	4	हर किसम की सवारी का
		मुश्तरका रहम हमदर्दी।	सनीचर	10	सुख हो।
बृहस्पत	4	मुहं की हवा से ही बात को	चंद्र	1	
सनीचर	2	पहचान लेने वाला।	बृहस्पत	5	सूरज से मुश्तरका (दिमागी
		अपनी ख़ुदमुख्तियारी और			ख़ाना नंबर 20) इज्जत
		नंबरदारी के वकत अपनी			बुजुर्गी। (दिमागी ख़ाना
					नंबर 22) अकल महादशा के
					वकत जब केतू कहीं और हो
					मामू को केतू की महादशा

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
		का अरसा 7 साल तकलीफ			इसका तोशा भी बरबाद करे।
		हो। (सूरज के ताल्लुक से			ला.की. 284/4
		ख़ाना नंबर 5 का असर केतू	बृहस्पत	6	12 पिता की उम्र के इलावा
		पर होगा।) लीद में मानिक	बुध	12	इसका बाकी छोड़ा। तोशा
		पत्थर में मोती की ताकत			तक भी खराब कर देवे।
		होगी।	बृहस्पत	7	सफर से जरूर जिंदा घर
बृहस्पत	5	इल्म से खूब दौलत कमावे।			वापिस आवे। भाइयों से तंग
शुक्कर	5	औलाद की मारफत बढे।			दुखिया। अपने पेट के अनाज
बृहस्पत	5	क़िस्मत का निहायत असर			की मेहनत की जरूरी शर्त।
चंद्र	9	नेक। इसकी पानी की			स्त्री धन से/में बरकत। ख़ुद
		मामुली सी नाव बडे भारी			अपनी कमाई मिट्टी में जावे।
		जहाज का काम देवे।			तराजू की डंडी की बोदी की
बृहस्पत	5	बृहस्पत के वकत से क़िस्मत			तरह सब का बोझ सहारे।
सनीचर	9	का असर होवे। मुफसिल			मिट्टी का माधो। चने की रोटी
		सनीचर बृहस्पत मुशतरका			तवे पर का हाल। दौलत के
		में लिखा है। अब औलाद का			लिये तराजू की बोदी पर सब
		मंदा फल न होगा।			घर का बोझ होगा।लाकी 45/4-5
बृहस्पत	6	इज्जत रेखा। (नीचे दी हुइ	बृहस्पत	2	ला.की. 146/6
		हर दो हालतों में) दिमागी	शुक्कर	2	
		ख़ाना नंबर 18 (i) केतू से	बृहस्पत	7	लाखोंपति होता हुआ भी
		मुशतरका भरोसा मामा मूसे	बुध	7	मुसीबत पर मुसीबत देखता
		गनेश जी चूहे की सवारी। (ii)			चला जावे। अकल की कोई
		बुध से मुशतरका फोकी			पेश न जायेगी।
		उम्मीद गनेश जी गरूड	बृहस्पत	7	आरोध रेखा। डाकू- चोर।
		(परिंद) की सवारी। ला.की.	सनीचर	9	
		165/26, 168 , 167/39,	बृहस्पत	7	बहुत बडा शुक्कर होगा या
		व 219/3	शुक्कर	7	बृहस्पत मंदा होगा। खस्सी
बृहस्पत	6	16 से 19 साला उम्र के	मंगल	नष्ट	सांड की तरह
बुध	2	दरम्यान न सिर्फ़ पिता की			
		उम्र खराब बल्कि			

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
		औलाद से महरूम होगा। अपनी औलाद का सुख न पावे। मतबन्ने वगैरह होवे। और वो (मतबन्ना) तो आराम पावे मगर कुण्डली वाला उस मुतबन्ने से भी कोई फायदा ना पावे। " जोङ भाई जोङ खायेंगे होर" का हिसाब होगा। अगर चंद्र भी ख़ाना नंबर 7 में साथ हो जावे तो शमा के परवाने की तरह इश्क़ की लहर में चलने वाला होगा और अगर सूरज भी नष्ट हो जावे। नाकामयाब आसिक और तबाह होगा।			और हर तरह से जागृत (जागती क़िस्मत का जमाना होगा।)
			बृहस्पत	9	ला. की. सफ़ा 161 जुज 12 और अरमान नंबर 124 में लिखे हुए के इलावा बजुरगों की मारफत बढेगा। दरियाये गंगा को हवा में चलने की ताकत की तरह की क़िस्मत होगी और सब की क़िस्मत इसके दरिया का पत्तन होगी। दिमागी ख़ाना नंबर 19 बृहस्पत का जाती असर मजहब रूहानी। 161/11, 12 व 157/2 ला.की.
बृहस्पत चंद्र	7 7	बचपन में तकलीफ हो।	बृहस्पत चंद्र बुध	9 5 3	मंदा फल होगा। ला.की. 159/5
बृहस्पत	8	ख़ुद अपनी क़िस्मत में हार न होगी। बाबा बेशक उससे पहले मर चुका हो। मगर बाप की और ख़ुद अपनी उम्र लंबी होगी। अब ये ख़ाना नंबर 8 मारगअस्थान न होगा बल्कि बृहस्पत की दौलत सोना और हरदम बढे परिवार तरक्की पर होगा।	बृहस्पत चंद्र बुध	9 3 5	उमदा फल होगा। ला.की. 159/5
			बृहस्पत शुक्कर चंद्र	9 3-5 5-3	मंदा भी और शाहाना भी। ला.की.161/2
			बृहस्पत मंगल	9 3	ससुराल दौलतमंद और दौलत देवें।

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
बृहस्पत सनीचर	9 5	क़िस्मत का नेक और उमदा असर सनीचर के वकत से शुरू। धन दौलत उमदा। मगर औलाद के लिये मंदा ही लेंगे। मुफसिल बृहस्पत सनीचर मुश्तरका में लिखा है।
बृहस्पत मंगल सूरज	9 3 5	तीनों घरों और तीनों ग्रहों से बृहस्पत का ही असर होगा। और उमदा और उत्तम।
बृहस्पत	10	आकबत अंदेश। मगर माया की कल्पना। नीच बृहस्पत। पिता धन दौलत न ही जिंदा होते देवे न ही मरने पर बाकी छोङ कर मरे। (पिता इस के लिये) सनीचर की मदद जो बृहस्पत का साथ 36 का 3/4, 27 साल के बाद 36 तक बहुत मंदा और 28 के बाद लाल किताब सफ़ा 328 ख़ाना नंबर 10 गनेश जी होगा। ला.की. 144/1
बृहस्पत चंद्र	10 4	फकीर को रोटी देकर आशीर्वाद की जगह जहर दे देने का इल्जाम लेगा। नेकी करे तो सजा पावे।

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
बृहस्पत सनीचर	10 9	चिऊंटी के मुहं से आटे का जर्रा तक भी छीन लेने वाला (उर्ध रेखा) होगा। ला.की. 160/9
बृहस्पत सनीचर सूरज	10 9 देखता हो	आग के वाकयात हों। बृहस्पत चंद्र (बृहस्पत की चीजें सोना, हवाई, जर्द रंग, चंद्र की चीजें चांदी, बजाजी के कामों से नफे। मगर सनीचर की मुतलका आशिया सामान व काम मंदा फल देवें।
बृहस्पत चंद्र	10 4	लाल किताब सफ़ा 158/2
बृहस्पत बुध	10 4	मंदा हाल। मर मर बुढिया राग गावे। लोग कहें ब्याह।
बृहस्पत चंद्र कायम या बृहस्पत सूरज	10 10 4	राज दरबार के मुतलका सफरों के नेक नतीजे।
बृहस्पत सूरज	10 5	शादियां एक से ज़्यादा होवे।
बृहस्पत	11	पूरा निरपक्ष। दिमागी ख़ाना नंबर 15 सनीचर से मुश्तरका। ख़ुद्दारी मगर हसद से बरी। दिमागी ख़ाना नंबर 35

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
		चंद्र से मुश्तरका पेशानी	बृहस्पत	12	दिमागी ख़ाना नंबर 12 राहु
		वाक्यात गुजरते हुए की याद			से मुश्तरका। राजदारी। पूरा
बृहस्पत	11	न सिर्फ पिता के सुख से			त्यागी। माया पर पेशाब की
बुध	3	खाली या मुंतजर होगा			धार मारने वाला। राज छोड
		बल्कि गृहस्त रेखा सीधी			फकीर होवे।
		खडी माकूल आमदन फिर	बृहस्पत	12	माया की मुहब्बत से दूर गो
		भी कर्जाई ही होगा। लाभ	सनीचर	9	माया ज्यादा। उर्ध रेखा
		ज्यादा मगर लालच से			की या माया पर पेशाब की
		बरबाद होवे।			धार मारने वाला। ला.की.
बृहस्पत	11	बजाते ख़ुद और अपने			160/8
मंगल	3	ससुराल को मुबारिक (वासते	बृहस्पत	12	में मर्दों का सुख हल्का।
		धन दौलत) मगर अपने	सनीचर	12	बृहस्पत चुप होगा।
		खुशियों (अपने ही खानदान	राहु	12	
		के) की मौतों से दुखिया।	बृहस्पत	12	में स्त्रीयों (माता व औरत
बृहस्पत	11	ला.की. 167/40	चंद्र	12	वगैरह) का सुख हल्का। चंद्र
दोस्त	3		राहु	12	चुप होगा।
ग्रह					

ला.की. 16-10,159-6
ला.की. 166 जुज 29

अरमान नंबर 132-133 A

ला.की. 314 क ला.की.
166 जुज 31 व 32

बृहस्पत की द्रुष्टी व आम ग्रहों से ताल्लुक

बृहस्पत राहु मुश्तरका- बुध होगा। दुनिया तोता सब्ज रंग। खाली बुध। बृहस्पत मंगल- सब का मुन्सिफ। एक को दूसरे पर ज्यादती करते न देखेगा। बृहस्पत सूरज- सब को उपदेश देवे। मगर ख़ुद अपने लिये (जब ख़ुद ही मुसीबत में हो) माडी ढार चमालडी- गरीब ही की सब कुर्बानी देवें का असूल बरतेगा। अपनी जगह कुत्ते (केतू) को मरवा देगा। सूरज की अपनी चीजें औलाद को छोड केतू के ख़ाना नंबर ६

मामू को अपनी बजाये केतू की महादशा का अरसा 7 साल तकलीफ होगी। केतू को कुत्ता भी माना है और गऊ माता भी। इसलिये गाय को (जब बृहस्पत नीच होवे) कुत्ते की गंदगी की खुराक का आदी बना देगा। (लाल किताब सफ़ा 118 ख़ाना नंबर 3 का हिंदसा नंबर 9)।

बृहस्पत बुध /शूककर:- बृहस्पत बुध ला.की. 166/30 बृहस्पत शुक्कर ला.की. 167/33-34 ख़ुद बृहस्पत तो न बोलेगा मगर उसकी मिट्टी बोले सोना न होवे। बेइज्जती और तकलीफ जर व माल की हद से ज्यादती के सबब चोट की जगह बेहिस हो कर सो जावे। फोकी उम्मीद। शेखचिल्ली की कहानियां सुन सुना कर दिन गुजारे। नंगो के घर भूखे मेहमान आये। हंस हंसा कर भूखे सो गये का हाल होवे। (बृहस्पत बुध की बाहम द्रुष्टी 158/3, 159/4)

बृहस्पत चंद्रः- चावल जिस कदर बूढा या बाप दादे के वकत का होता जावे। क़िस्मत बढती जावे। अकल जावे धन और आवे का हाल रहे। लाल किताब 167/35-37

बृहस्पत शनीचरः- श्री गनेशाय नमः सब के पूजने की जगह होगी। लाल किताब 160/10

बृहस्पत केतूः- मामू मरें तो बेशक हमसाये मारे जायें तो दुरसत। मगर बृहस्पत का ख़ुद जाती बुरा फल न होगा।

अरमान नंबर 133

सूरज की लाली :- निकलते सूरज की लाली से मुराद मंगल सूरज मुश्तरका। यानि शुरू उम्र या जनम से अच्छा व उमदा हाल और छुपते या ढलते सूरज की लाली से मुराद बुढापे की तरफ या पिछली अवस्था में मंगल सनीचर की मुश्तरका उत्तम फल की हालत होगी।

सूरज निकलने का वकत

बच्चे के माता के पेट में आने के वकत या दिन से ही शुरू गिन सकते है। लेकिन आम दुनियां में सूरज का इस दुनिया में जाहिर होने का वक्त और बच्चे के पैदा होने या इस दुनिया की हवा में जाहिर होने से लेते हैं। (लाल किताब सफ़ा नंबर 379 फरमान नंबर 113-115 के दरम्यान में)। इस तरह बाज औकात 9 महीने का ही फर्क पङ जाया करता है। जिस की वजह से तमाम ही ग्रह अपने अपने मुकर्रर म्याद पर असर करने में धोका दे जाया करते हैं। असर तो जरूर करते हैं। लेकिन मुकर्ररा वकत या दिन का फर्क हो जाता है। इस बात की

दुरस्ती इसलिये भी जरूरी है कि तमाम ग्रह कब बालिग़ हुए देखना जरूरी होता है। (अरमान नंबर 13)

ख़ाना नंबर 9 सूरज की रोशनी जाहिर होने का असल मुकाम गिना है। इसलिये कुण्डली में जहां सूरज वाकया हो। वहां से ख़ाना नंबर 9 तक जितने घर सूरज पीछे हो या सूरज वाकया होने के घर और ख़ाना नंबर 9 के दरम्यान जितने घर हों देखें कि इन में कौन कौन से ग्रह वाकया हैं। उन घरों के ग्रहों की आम म्याद का मजमूआ सूरज निकलने की म्याद में फर्क का हिंदसा होगा। (आगे पीछे होने के लफ़्ज़ की शक दूर करने के लिये एक दो तीन हद बारह तक की तरतीब से कुण्डली के खाने गिने जाएंगे। ख़ाना नंबर 9 से पहले घरों में यानि 1 से 8 सूरज हो तो कहेंगे कि सूरज ख़ाना नंबर 9 से पीछे है। अगर 10 से 12 में हो तो बोलेगें कि सूरज ख़ाना नंबर 9 के बाद है।)

ग्रहों की म्याद बृहस्पत 6, सूरज 2, चंद्र 1 वगैरह का 35 तक होगी। अगर सूरज ख़ाना नंबर 9 से पीछे ही हो तो दरम्यानी घरों के ग्रहों की म्याद जमा करेंगे। यानि सूरज का असर इतना (जमा किया जाने वाला हिस्सा) अरसा और लेकर अपनी आम म्याद से देरी पर असर करेगा।

अगर सूरज ख़ाना नंबर 9 के बाद के घरों में हो तो 9 और 12 के दरम्यान के घरों में जहां भी सूरज हो उस घर और ख़ाना नंबर 9 के दरम्यानी घरों के ग्रहों की म्याद तफरीक करेंगे। यानि सूरज का असर इस के आम असर (जनम दिन) के वकत से इतना अरसा पहले ही शुरू हो जायेगा।

मिसालः-जनम लगन को ख़ाना नंबर 1 मानकर

(1)

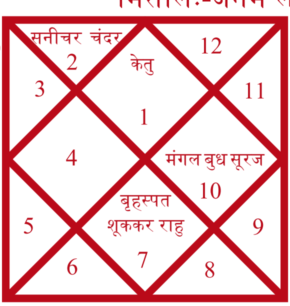

(2)

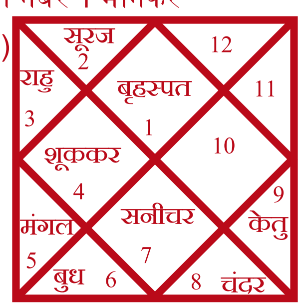

मिसाल नंबर 1 में ख़ाना नंबर 9 के बाद सूरज है ख़ाना नंबर 10 में। जिसमें मंगल बुध और सूरज वाकया हैं। बुध के 2 मंगल 6 कुल 8 का फर्क है। यानि सूरज आठ दिन या/महीने

ज्यादा से ज्याद असर देने लग जायेगा जनम दिन से पहले ही।

मिसाल नंबर 2 में सूरज है ख़ाना नंबर 2 में यानि नंबर 9 और ख़ाना नंबर 2 के दरम्यान राहु 6, शुक्कर 3, मंगल 6, बुध 2, सनीचर 6, चंद्र 1 और केतू 3 यानि कुल 27 दिन या/महीने ज्यादा से ज्याद जनम दिन के बाद सूरज का असर जाहिर होगा। म्याद गिनते वकत सूरज की ख़ुद अपनी म्याद 2 का हिंदसा नहीं गिनते मगर ख़ाना नंबर 9 में जो ग्रह है। उसकी म्याद शामिल कर लेते हैं। जितना अरसा सूरज फर्क देगा। इतना ही अरसा बाकी सब ग्रह फर्क दे कर जनम दिन से पहले या बाद में असर देना शुरू करेंगे।

अरमान नंबर 134

सूरज

सूरज अपने जनम से दूसरों की मदद करने की ताकत का मालिक है और इसे रोशनी माना है। सर्दी (चंद्र) गर्मी (बजाते ख़ुद अपनी सूरज की ताकत) लाली (मंगल) और खाली जगह में हर वकत मौजूद होना (बुध का आकाश) इसके जरूरी पहलू हैं। इसलिये सूरज के बगैर क़िस्मत एक अंधेरी चीज है और हवा (बृहस्पत) के बगैर सूरज की गर्मी से भरी हुइ क़िस्मत ख़ुद कुण्डली वाले और इसके दीगर साथियों का दम घोंटने वाली होगी।

सूरज के साथ बृहस्पत के साथ से क़िस्मत का ताल्लुक गैरों के साथ और रूहानी होगा।

सूरज के साथ चंद्र के साथ से क़िस्मत का ताल्लुक जायदाद जद्दी और शांति से होगा (लाल किताब 220 जुज 5 व 192 जुज 1)

सूरज के साथ बुध के साथ से ख़ुद अपना और दिमागी ताल्लुक का साथ होगा। स्त्री पर पूरा नेक असर होगा। ला.की. 195/9, 192/2, 194/6

सूरज के साथ मंगल के साथ अपनी औलाद और ख़ून के ताल्लुकदारों हकीकी रिश्तेदारों से होगा और बचपन की उम्र से होगा। ला.की. 194/5

सूरज के साथ सनीचर से मुराद बुढापे से मुतलका होगा। ला.की. 194/8

सूरज के साथ अपने दोस्त ग्रहों का ताल्लुक। सूरज का ख़ुद अपना उमदा फल देगा।

सूरज के साथ अपने दुश्मन ग्रहों का साथ और ताल्लुक ख़ुद दुश्मनों के मंदे हाल (ला.की. 198/20) का असर का फल कुण्डली वाले की औलाद पर क़िस्मत में शामिल होगा।

सूरज के साथ राहू के ताल्लुक से इस के असर के सामने दीवारें खडी गिनी जाएंगी।

सूरज के साथ शुक्कर का साथ और ताल्लुक ख़ुद शुक्कर के फल में मंदे फल की जमीन पर बेहद गर्मी का असर होगा यानि रूह जबरदस्त मगर बुत हल्का सूरज बुध इकट्ठे सेहत उमदा। सूरज-शुक्कर मुश्तरका=बृहस्पत, शुक्र-बुध मुश्तरका=मशनोई सूरज, सूरज-सनीचर=मंगल बद या बुध खाली। सूरज प्रबल और सनीचर कमजोर हो तो जिस्मानी सेहत कमजोर होगी।

सनीचर का तालूकः- (सूरज बंदर सनीचर सांप। दोनों की लङाई का हाल दुश्मनी का सबूत ज़हेननशीन करायेगा।) कुण्डली में एक दो तीन की तरतीब से जब सूरज हो सनीचर से पहले घरों में तो सनीचर जो सूरज का लङका गिना गया है। सूरज के फल में कोई बुरा और दुश्मनाना असर न देगा और सूरज का फल उमदा होगा। लेकिन अगर सनीचर पहले घरों में हो और सूरज बाद के घरों में तो सनीचर अपना स्याह असर सूरज की रोशनी में मिलाता और क़िस्मत में धब्बे लगाता रहेगा। चंद्र सर्दी, मंगल लाली, बृहस्पत हवा और बुध खाली जगह का रोशनी पर या सूरज की पैदा करदा क़िस्मत पर कोई बुरा असर न होगा।

2) अलिफ़:- अगर सूरज सनीचर दोनों ही इकट्ठे एक घर में मुश्तरका होवें तो बुध का खाली असर पैदा होगा मंगल बद होगा जिस के मंदे नतीजे होते हैं।

(बे):- अगर सूरज को बाप (कुण्डली वाला शख़्स) मानें तो कुण्डली वाले का हाल जबकि सूरज के साथ ख़ुद सूरज के दोस्त ग्रह हों अपने बाप से उमदा होगा। लेकिन अगर सूरज के साथ दुश्मन ग्रह हों तो ऐसे शख़्स (कुण्डली वाले) की औलाद का मंदा हाल और बाप (कुण्डली वाले) के लिये औलाद की क़िस्मत कोई अच्छे असर की न होगी।

3) मंगल की लाली निकलते और छिपते सूरज के साथ होती है। जिस कदर सूरज की उम्र बढती जावे। मंगल की लाली सूरज की रोशनी में ही छिपती जाया करती है और जुदी नजर नहीं आती। मगर होती है जरूर अंदर ही छिपी हुइ। जिस कदर लाली और रोशनी का मिलाव ज्यादा होगा। उसी कदर सूरज की उमदा क़िस्मत का असर ज्यादा होगा। या लाली के बगैर सूरज की वो शान न होगी। जो लाली का सूरज के अंदर ज्यादा शामिल होने पर। रोशनी के बगैर लाली किसी को नजर न आयेगी या इसमें स्याही का ही असर होगा या

सूरज के बगैर मंगल नेक की जगह मंगल का असर बुरा या मंगल बद (मंगल में सनीचर की बदी का असर) होगा।

4) दुश्मन ग्रहों के इलावा सूरज का ख़ुद अपना मंदा असर निहायत पोशीदा और छिपे ढंग पर या रात में सोये हुए की तरह खवाब में पैदा होने की तरह जाहिर होगा। मगर सनीचर का असर दिन दहाड़े बरसरे बाजार तमाम दुनिया के सामने खड़ा करके कत्ल करने की तरह पर जाहिर होगा।

5) सूरज का शुक्कर से दुश्मनाना है या सूरज के पास मिट्टी होती ही नहीं। चंद्र में सूरज की आधी रोशनी होती है। क्योंकि वो सूरज के दरवाजे का भिखारी है। सूरज किसी सवाली को मिट्टी की खैरात न देगा और अगर देगा तो चांदी और मोती देगा। खैरात न देवे तो बेशक न देवे और अगर देगा तो जिंदगी देगा सनीचर की तरह मौत न देगा। अगर बखशीस न देवे तो सनीचर की तरह फकीर की झोली से उल्टा माल निकाल ही लेने का बरताव न करेगा। किसी का सवाली न होगा। बल्कि अगर हो सके तो किसी के सवाल को पूरा कर देगा। ख़ुद चोटे खायेगा और बढेगा। मगर दूसरों पर चोट मारना जायज न रखेगा।

अरमान नंबर 135-136

सूरज का दूसरे ग्रहों से बाहमी ताल्लुक

1) लालकिताब सफ़ा नंबर 201 पर "जिस्म व ग्रह का ताल्लुक" दो पार्टियों में लिखा है। हरएक ग्रह के बाद लफज "का" लिखें तो मतलब साफ हो जाएगा।

2) सूरज केतू का बाहमी साथः- केतू शुक्कर का असर है और शुक्कर या केतू दोनों ही सूरज के दुश्मन है। अब केतू की औरत या कुण्डली वाले के लड़के की औरत खूब मोटी ताजी मिर्जा हल्का सारंगी भारी होगी। मुंह फाड़ कुत्ते की तरह भौंकने वाली लड़के का गृहस्त बरबाद करने वाली होगी और ख़ुद लड़का कुण्डली वाले को इस की (बाप की) राजदरबार की कमाई में धक्का लगाने वाला या बरबाद करने वाला साबत होगा। कुत्ता सूरज की तरफ मुंह करके रोयेगा। कुत्ते को मौत

के यम नजर आयेंगे। या बुरे वकत की निशानी का सबूत देगा।

सूरज से दुश्मन ग्रहों का ताल्लुक

1) अपने घर की राशि ख़ाना नंबर 5 में दुश्मन ग्रहों को भी कुण्डली वाले की जान की मदद करने की ताकत पैदा कर देगा। मगर कुण्डली वाले की औलाद को दुश्मन ग्रह के बुरे असर से नहीं बचा सकता।

2) ख़ुद सूरज जब दुश्मन ग्रहों की राशि या उनके पक्के घर हुआ तो जिस ख़ाना नंबर में हुआ उस ख़ाना की मुतलका चीजों पर वही असर बुरा कर दिया जो सूरज पर ख़ुद हो जाना था। लेकिन जब दुश्मन ग्रहों के साथ ही किसी घर में हो बैठा तो दुश्मन ग्रह का फल उस खाने की मुतलका चीजों पर बुरा कर दिया जिस खाने में कि सूरज और वो दुश्मन ग्रह बैठे थे। लेकिन अगर इतफाकिया सूरज के साथ सूरज का मददगार और दुश्मन ग्रह भी बैठा होवे तो दुश्मन ग्रह का बुरा असर बजाये इसके कि कुण्डली वाले पर बुरा होवे। इस ग्रह की मुतलका चीजों पर बुरा कर दिया जो चीजें कि उस ग्रह की मुतलका हों जो ग्रह कि सूरज के मददगार की हैं। यानि अपनी बला सूरज ने इस मददगार पर टाल दी।

3) जब दुश्मन ग्रह सूरज से पहले घरों में हों तो सूरज दुश्मन ग्रह के बुरे असर से नहीं बच सकता। यानि दुश्मन ग्रह का असर कुण्डली वाले पर बुरा होगा।

4) जब दुश्मन ग्रह बाद के घरों में हों और सूरज पहले घरों में तो दुश्मन ग्रह का असर बाद के घर की चीजों पर जिस में कि दुश्मन ग्रह है बुरा होगा। मगर कुण्डली वाले पर न होगा।

5) जब ख़ाना नंबर 1-5-11 में (जनम कुण्डली) सूरज होने से (अरमान नंबर 12) तमाम ग्रह बालिग़ गिने जावें तो सूरज की म्याद के बाद सूरज के तमाम दुश्मन ग्रह अपने अपने वकत में टकराव (दुश्मनाना असर) पैदा करेंगे और न सिर्फ सूरज के अपने असर में खराबी देंगे बल्कि वो तमाम दुश्मन ग्रह अपनी अपनी और अपने अपने ख़ाना की नंबर की चीजों का बहिसाब (जिस जिस ख़ाना में कि वो) कुण्डली में बैठे हों बुरा असर देंगे। इसलिये वकत से पहले ही बुरे ग्रह का उपाय कर लेना जरूरी होगा। सूरज का ऐसा टकराव कुल 45 साला उम्र तक हो सकता है। इस जगह सूरज के दुश्मन शुक्कर सनीचर राहु केतू लाल किताब सफ़ा 105 फरमान नंबर 109 से ही मुराद होगी।

अरमान नंबर 137

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
सूरज बृहस्पत ख़ाना बुध	कायम कायमऔर नंबर 9 4	राज योग			मामु वगैरह को सूरज की तरह चमकीली क़िस्मत का मालिक बना दे। ख़ुद चमके सबको चमकावे। मगर दोनों तरफ की स्त्रीयों (शुक्कर) पर मेहरबान न होगा।
सूरज सूरज ग्रह मंगल	1 या मय दोस्त या चंद्र या बृहस्पत	लक्ष्मी ख़ुद पैदा करे, पैदा की कराई मिलने की परवाह न होगी। दुन्यावी कामयाबी व बरकत का मालिक ला.की. 175/10	सूरज मंगल चंद्र	2 1 12	दलिद्री-आलसी-निर्धन हो।
सूरज शुक्कर	1 7	वालिद बचपन में ही मर जावे।	सूरज	4	जरूरी सफरों के नेक नतीजे। ला.की. 218/3
सूरज चंद्र सनीचर	1 2 11	माली मरतबा ओर जायदाद वाला होवे।	सूरज बृहस्पत	4 10	आग के वाकयात हों। जब दोनों ग्रहों का मुश्तरका दौरा हो बृहस्पत (सोना वगैरह), चंद्र (चांदी कपडा वगैरह) के काम या सामान मुबारक फल देंगे। मगर सनीचर (लोहा लकडी वगैरह) के काम या सामान मंदा फल देंगे।
सूरज	2	ससुराल खानदान व अपने गृहस्ती (अपनी औरत के ताल्लुक से बाल बच्चे वगैरह) साथियों के लिये अगर पानी में सीधा अपना अकस देने वाला अपनी तरह सब की क़िस्मत व इज्जत को बढाने वाला हो। तो अपने माता पिता की तरफ के रिश्तेदारों	सूरज बृहस्पत चन्द्र	4 10 क़ायम	राजदरबार से मुतलका सफरों के नेक नतीजे। सीप में मोती हों।

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
सूरज	4	मौत दिन के वकत दरिया	सूरज	5	राहु के वकत तक निर्धन
चंद्र	4	नदी या चलते पानी से	राहू	5	या कम दौलत होवे। सिर्फ
सनीचर	10	होगी।	चंद्र	4	खाली खर्चा ही चलाता
सूरज	4	मुतम्मल मिजाज।			जावे।
मंगल	कायम		सूरज	5	कायम पूरा इकबाल मंद।
सूरज	4		चंद्र	4	
मंगल	10	आंख से काना होवे।	बृहस्पत	9 या	क़ायम
सूरज	4	नामर्द वर्ना बुजदिल।	सूरज	5	राजयोग।
चंद्र	1		बुध	4	
शूक्कर	7		बृहस्पत	9 या	क़ायम
सनीचर			सूरज	5	बृहस्पत का पूरा उत्तम फल
सूरज	4	दुनिया का पूरा आराम	मंगल	3	होगा।
चंद्र	4	होगा। सीप में मोती होंगे	बृहस्पत	9/12	
खाली	10		या तीनों क़ायम		
सूरज	5	दिमागी ख़ाना नंबर 20	सूरज	5	शादियां एक से जयादा हों।
		सूरज का जाती अकल	बृहस्पत	10	
		ख़ाना नंबर 22	सूरज	5	धुआंधार (आतिश खेज)
		(बृहस्पत से मुश्तरका)	सनीचर	3	दुख का रही पहाड़।औलाद
		इज्जत बजुरगी का			पर खराबी का सबब हो
		मालिक होगा। ला.की.			(माली)।
		196/13, 213/11	सूरज	6	दिमागी ख़ाना नंबर 23
सूरज	5				केतू से मुश्तरका
सनीचर	9/11	दूसरों से हमदर्दी।			पसंदीदगी वाला हो।
		वालदैन की बाहमी नेक			ला.की. 219/3
		मुआफकत। अब सूरज			
		और सनीचर का कोई	सूरज	6	राजदरबार की आमदन के
		झगड़ा न होगा।	बुध	12	इलावा राजदरबार का
		(अरमान नंबर 6 जुज			बाकी ताल्लुक भी खराबी
		सूरज iii			का सबब हो।
सूरज	5				
चंद्र	4		सूरज	6	औरत पर औरत मरती
दोनों	कायम	मिसल राजा	सनीचर	12	जावे।
		इकबाल मंद होवे।			

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
सूरज मंगल	6 10	लड़के पर लड़का मरता जावे।			बड़ा भाई जरूर होवे। वर्ना अल्प आयू होगा। गाय की सेवा और शरण हंमेशा नेक फल दिलावे। दिमागी ख़ाना नंबर 25 (पापी ग्रहों से मुशतरका) नकल करने की ताकत बहरूपियापन की तरह के सूरज का मालिक होगा।
सूरज	7	औरत का सुख रद्दी करे। सफर में मौत न हो या सफर से जिंदा वापसी जरूर होगी। दिमागी ख़ाना नंबर 24 (हसद) का मालिक होगा। बेहद तबाहकुन गुस्सा। बदमिजाजी। ख़ुदगर्जी , खुशामद, शोहरत, (दिखलावा) व मशहूरी पसंद। मगर क़िस्मत में अंधेरे की तरह की जिंदगी होगी। दिमागी ख़ाना नंबर 24 बुध से मुशतरका हौसला। ला.की. 142/16	सूरज	9	ला.की. सफ़ा 161 जुज 3 और अरमान नंबर 124 में लिखे के इलावा अपनी उम्र लंबी ,अपने बाप की उम्र लंबी, अपने बाबे की उम्र लंबी , खानदानी नसल लंबी। (लड़का, पोता , पड़पोता) भी लंबी उम्र के। दिमागी ख़ाना नंबर 26 भोलापन बृहस्पत से मुश्तरका। मसखरगी (हद से ज्यादा हो तो बेवकूफी) बुध। ला.की.सफा 128/10, 164/23
सूरज शुक्कर	7 1	औरत की सेहत खराब। दिमागी कमजोरी। दीवानगी।			
सूरज शुक्कर	7 7	औज्जन			
सूरज शुक्कर मय सनीचर या राहु	7 1	क़िस्मत की हार और हर तरह से मार। आग में जिस्म या मकान जलते हुए की तरह के दुख की जलन। तपेदिक वगैरह। गर्जेकि मिट्टी खराब या जल जावे। दुखों का पुतला।	सूरज बुध	9/3 5	जवानी से (३४ साल उम्र के बाद) क़िस्मत जागेगी।
			सूरज बुध सनीचर	9 3 11	दोनों ग्रहों का फल रद्दी। बुध दोनों को ही बेवकूफ बना देवे। बुरी जिंदगी।
सूरज	8	अब ये ख़ाना मारग अस्थान न होगा। उम्र लंबी क़िस्मत नेक।	सूरज चन्द्र	10 क़ायम	राजदरबार के मुतलका जरूरी सफरों के नेक नतीजे।

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
सूरज शुक्कर	10 4	वालदैन बचपन में ही मर जावें।	सूरज	11	उम्र 12 साल होवे।
सूरज चंद्र	10 5	उम्र 12 दिन हो।	चंद्र	5	
सूरज राहू	10 11	उम्र 22 साल होवे।			
सूरज सनीचर या सूरज या सनीचर या हर दो	10 10 सूरज मशनोई शुक्कर बुध मशनोई सनीचर शुक्कर बृहस्पत	दूसरों की मौत में तोहमत या बदनामी से ख़ुद नाहक आ मरे या मारा जावे।	सूरज मंगल	12 कायम	मुतमइल मिजाज। हर तरह से शातिं वाला होवे।

अरमान नंबर 138 से 145

चंदर: - लालकिताब सफ़ा नंबर 208 घोड़े की तसवीर। घोड़ा सिर्फ 3 दफा जागता है। चंद्र हंमेशा राशिफल का होता है और खास कर तीन घरों का तो जरूर ही मालिक की मदद पर होताहै।

ख़ाना नंबर 3 में चंद्रः- मैदाने जंग व जदल के सामानों की कभी कमी न होगी। मंगल बद को भी मंगल नेक करता है। दुनिया के हरएक जंग व जदल में मददगार होता है। (भाई बंद धन दौलत की मदद व चोरी नुकसान से बचाता है।

ख़ाना नंबर 8:- मालिक की मौत न होन देगा। माता का बेशक मददगार न होगा। कुण्डली वाले की अपनी उम्र जरूर लंबी होगी। बेशक ख़ुद चंद्र की बाकी सब चीजें चंद्र के नीच फल की होगीं। उम्र बखशा देगा और खानदानी नसल बंद न होने देगा।

ख़ाना नंबर 7:- खुराक में कंकर। रोड़ा पत्थर या गृहस्त में मशनोई शुक्कर (राहु केतू) के हमले अचानक और जिनकी कभी उम्मीद तक न की जा सकती हो। बलाये बद (राहु दुनियादारों बालिगों से मुतलका) हवाये बद (केतू बच्चों मासूमों पर

दुख मुसीबत गैबी हमले जिन्न भूत तमाम फर्जी और वहम की बुरी हवायें)

चंद्र व चंद्र का घर ख़ाना नंबर 4:- नेकी की खास सिफत (अरमान नंबर 38 देखें। चंद्र (माता) से बढ कर बच्चे का तमाम दुनिया में और कौन मददगार ग्रह होगा। जो सांप की मादा सांपनी से भी उस के बच्चों को छुड़ा लाता है और सांप की नसल बाकी है।

चंद्र:- सूरज जमा बृहस्पत :- रोशनी व हवा का मालिक या हर इक या हर इक के दिल का मालिक चंद्र है। बुध (अकल) कायम हो तो चंद्र का बुरा फल न होगा। चंद्र अगर शांति का मालिक है तो सनीचर के साथ से यानि चंद्र सनीचर मुश्तरका होने पर चंद्र की माया (धन दौलत) सनीचर के स्याह रंग की तरह स्याह मुंह माया होगी। यानि उसका चांदी का रूपिया भी हर तरह से स्याह या खोटा सा मालूम होगा। गो खालिस चांदी का ही (ऊंच चंद्र ख़ाना नंबर 2) क्यूं न होवे। सनीचर का बजाते ख़ुद भी असर जहर भरा या ख़ूनी कुआं या दूध में जहर या ठण्डे मीठे पानी के कुएं में स्याह काली जहर मिली हुइ होगी। सनीचर के मकान आराम देने की बजाये दुख का सबब होंगे। ला.की. 220/4

सनीचर की उदासी वैराग दिल को शांति की जगह दिल की कल्पना में जलाता रहेगा। चंद्र अगर धन दौलत है तो सनीचर खजानची। गोया इसका धन अगर उमदा भी होवे तो इसका खजांची या रूपये रखने का बक्सा ऐसा होगा जो ख़ुद मालिक को ख़ुद इसके अपने आराम के लिये इस बक्से में से रूपया निकालना ऐसा होगा जैसा कि एक जहर मिले सांप के सिर से मनी का छीनने के लिये सांप के पास जाना। सनीचर अगर बृहस्पत का मददगार था तो चंद्र का दुश्मन हुआ। हालांकि चंद्र (जब चंद्र का असर द्रुष्टी के हिसाब से उन ग्रहों में जिन का कि चंद्र लाल किताब सफ़ा 105 पर दुश्मन दिखलाया गया है। (शुक्कर बुध मय तीनों पापी ग्रह) मिल जावे। नेक नतीजा होगा। लेकिन अगर वो ग्रह जिनका कि चंद्र दुश्मन ठहराया गया है। अपना असर चंद्र में मिला दें तो चंद्र ख़ुद अपना नेक फल देना बंद कर लेगा और नतीजा मंदा होगा।) बजाते ख़ुद ऐसी ताकत का मालिक है कि अगर वो (चंद्र) जब बाहम दुश्मनी वाले ग्रहों के दरम्यान हो तो उनकी बाहम वाली दुश्मनी हटा कर उनकी आपस में दोस्ती पैदा करवा देता है। बृहस्पत ने तो सिर्फ दुश्मनी हटायी थी। मगर दोस्ती नहीं पैदा की। बेशक चंद्र अकेला एक तरफ हो और सारी दुनिया (बाकी सब ग्रह) दूसरी तरफ (माता एक तरफ बाकी सब इसके

साथी बाल बच्चे वगैरह दूसरी तरफ) चंद्र मदद ही देगा।

अगर सनीचर बजाते ख़ुद अकेला चंद्र के साथ होने पर जहर पैदा करने वाला हुआ तो इसके ऐजंट राहु व केतू की बुराई चंद्र के साथ ही (ख़ुद चंद्र के घर ख़ाना नंबर 4 में या ऐसे घर जहां कि चंद्र (बैठा हो) न चल सकी। राहु हाथी बन कर चला। लेकिन जब दरिया में पहुंचा (दरिया चंद्र) तो ख़ुद राहु का अपना साया इसके पावों में जाल (राहु-तेंदूआ) की तरह हो बैठा। फिर राहु भूचाल बना तो जिस जगह दरिया नदी या कोई और पानी आया (लालकिताब फरमान नंबर 7 सफ़ा 6) तो लहर आगे न जा सकी। गोया राहु उन घरों पर ही असर के लिये चलता रहा जहां कि चंद्र का पानी न आया। बरअकस इसके यही राहु जब सूरज के घर या सूरज के साथ आया तो और भी गर्मी से पिघल कर सूरज वाकया होने के घर और उस के (सूरज के वाकया होने के) बाद के घरों पर और भी गर्म होकर चलने लगा।

केतू छलावा बन कर बृहस्पत (हवा) को साथ लेकर सनीचर (मकान) की ऐजंसी में होता हुआ चंद्र के सफर के रास्ते आया यानी शरा-ए-आम की हवा मकान में सीधी ही आने लगी। (लालकिताब सफ़ा 82 जुज 20) माता के दिल के टुकड़े या इसके बच्चे हवा-ए-बद का शिकार होने लगे। माता को दुख हुआ। मगर ख़ुद माता पर हमला न हुआ। इस दुख के पैदा करने का सबब भी चंद्र के लिये सिर्फ़ सनीचर ही हुआ। अगर मकान न होता तो ये मौत का बहाना न होता। यही हवा तूफान बनी। चंद्र के समुंद्र के पानी को ऊंचा नीचा किया। मगर चंद्र को समुंद्र से यानि समुंद्र के पानी को समुंद्र की जगह से उठा कर किसी और जगह न ले जा सकी। मिट्टी फैंकी जो चंद्र लेकर शांति से अपनी तै में डालता गया। केतू के कुत्ते ने दरिया अबूर करना चाहा। जब इस के कानों में पानी पड़ा या कुत्ते को इसकी टांगो ने हार दी कुत्ता आगे न जा सका।

केतू के ये कान और दुम क्या हैं? कुण्डली का ख़ाना नंबर 8 केतू के कान हैं। जब चंद्र जो उम्र का मालिक है। ख़ाना नंबर 8 में होवे। वहां राहु न होगा। (जिस जगह राहु हो बृहस्पत चुप होता है। फकीर की कुटिया में हाथी (राहु) फकीर को तंग करता है। मगर कुटिया में कुत्ता आराम देता है। इसलिये बृहस्पत ने राहु को संभालने से इन्कार किया। चुप हो गया। जिस फकीर के पास हाथी होगा। वो गद्दी नशीन साधु हो या इस एक दुनिया का बृहस्पत होगा। दोनों जहानों का मालिक न होगा। राहु (हाथी) का जिस्म ख़ाना नंबर 12 में माना है तो ख़ाना नंबर 6 राहू के लिये सूंड की जगह होगी।)

या जहां राहु न हो बृहस्पत बोल पड्ता है)। जहां पानी हो वहां अकस भी हो सकता है। (साया) या सूरज की रोशनी भी हो सकती है।

राहु गुम हुआ। चंद्र केतू का दुश्मन है और हर इक की नसल बढाना (गो ख़ुद अपनी नहीं। यानि माता की उम्र लंबी नही होती जबकि चंद्र ख़ाना नंबर 8 में हो) चंद्र की बख़्शिश है। चंद्र की दुश्मनी की वजह से कुत्ते के कान इतने लंबे हुए कि वो लटकने लगे। (चंद्र ख़ुद के घोडे के कान लटकते नही। चंद्र के दुश्मन के लटके। अगर बुध की बकरी हुइ तो वा भी कान लंबे करवा गई। सनीचर के सांप के कान तो इतने गुम हुए कि सिर्फ़ निशान ही रह गया)। कान लंबे उम्र लंबी। (लालकिताब सफ़ा 68 फरमान नंबर 75) पागल होकर कुत्ता इतना भागा कि वो दस दिन तक (कुण्डली का ख़ाना नंबर 10) इस का पसीना चंद्र का पानी भी मुंह के रास्ते जबान से कतरा कतरा होकर टपकने लगा। (बुध जबान केतु कुत्ता दोनों ही बुध केतु इकट्ठे होने पर चंद्र का पानी या चंद्रमा का असल असर कतरा कतरा होकर बाहर चला जायेगा)। लेकिन जब तक वो चंद्र के पानी से दूर रहा। इस की मौत न हुइ या पानी से पागल कुत्ता मर जाता है। इसी तरह जब तक केतू चंद्र से दूर रहा लोगों को आराम या पागल होकर (नीच केतु) दुख देता रहा। लेकिन जब चंद्र के साथ ही या चंद्र के घर आ बैठा (ख़ाना नंबर ४) कुत्ता कुएं में गिर गया तो दम तोड्ने लगा। ख़ुद मर गया चंद्र के पानी में अपनी बदबू डाली और चंद्र के उम्र के बढा देने के असूल को बदनाम किया। मतलब ये कि केतू चंद्र के घर के अंदर या चंद्र के साथ ख़ुद मरा मगर चंद्र को(चंद्र माता कुण्डली वाले की माता को मार लेता है। मगर कुण्डली वाले की ख़ुद अपनी उम्र पर हमला नहीं कर सकता। केतू ख़ुद मर जाता है से मुराद है कि लड्के मर जावें तो सही) ये ख़ाना नंबर 8 केतू के कान हैं। जहां कि इसका सिर (बुध) मंदा है। (कुत्ता न मरेगा जब तक इसका सिर अच्छा है या कुत्ते की जान इस के सिर में होती है।)।

अब दुम क्या है ये ख़ाना नंबर 6 है। जिसमें केतू व बुध दोनों को माना है। कुत्ते का सिर व इसके दुम की जगह। अब ख़ाना नव 6 के केतू (कुत्ते) के जिस्म व इसके दुम के हिस्सों (बुध को दुम भी माना है और आवाज भी) में अगर पागलपन हो जावे यानि बुध वहां से निकल कर ख़ाना नंबर 12 में चला जावे। बुध ख़ाना नंबर 6 से सीधा 12वें गया।

दुम सीधी हुइ (12 साल तक कुत्ते की दुम सीधी न हुइ बुध का गोल दायरा ही रही। पागल कुत्ते की दुम सीधी हो गयी।) तो पागल कुत्ते का सिर दुम आवाज दांत (सब बुध के हिस्से है) दुनिया के सब गृहस्तीयों पर बुरा असर करेंगें यानि ख़ाना नंबर 12 का बुध ख़ाना नंबर 6 के सब ग्रहों का फल रद्दी कर देगा। लेकिन अगर केतू के हिस्से जो बुध के माने हैं। इस से अलैहदा ख़ाना नंबर 12 में (ख़ाना नंबर 6 पाताल है और ख़ाना नंबर 12 आसमान यानी कुत्ता इतना बङा पागल हो जावे कि पाताल से लेकर आसमान तक हो जावे। टांगे पाताल में हों ख़ाना नंबर 6 और सिर दांत दुम आवाज आसमान में ख़ाना नंबर 12 में) न हो तो केतू का बुरा असर न होगा। ख़्वाह ये कुत्ता ख़ाना नंबर 6 में बैठकर ख़ाना नंबर 12 को देखे या ख़ाना नंबर 8 का असर बरास्ता ख़ाना नंबर 12 ही ख़ाना नंबर 6 में मिल जावे।

खुलास्तन :- (1) त्रिलोकी का भेद ख़ाना नंबर 3 से ख़ाना नंबर 9 में नौ ही ग्रहों से जाहिर हुआ। जहां की गैबी और जाहिरा दोनों जहानों का मालिक बृहस्पत था। जिसने दुनिया को ये खबर देने के लिये गृहस्तीयों का घर शुक्कर ख़ाना नंबर 2 को पक्का घर बनाया। जिसमें आने के बाद चले जाने का पैगाम या मौत का हुक्म भी (ख़ाना नंबर 8 से) आने लगा। इस गुरू फकीर या बृहस्पत ने ये भेद कुत्ते के जरिये ख़ाना नंबर 6 में भेजा। कुत्ता बोला तो इसकी आवाज फिर वापिस ख़ाना नंबर 12 में जा पहुंची। इस भेद को जो चीज ख़ाना नंबर 3 से 9 में और ख़ाना नंबर 8 से ख़ाना नंबर 2 में ले गयी वो द्रुष्टी "देखना" या मंगल सनीचर की नजर का होना कहलाया। इस नजर को बृहस्पत ने पहचाना और अपने साथी दुनयावी दरवेश कुत्ते की आवाज बुध से जाहिर कर दिया। बृहस्पत ने गैबी बात पहचानी। केतू ने बुध के रास्ते धन दौलत के सुख के खाने में खबर दे दी। दोनों दरवेशो की इस ताकत को बुध ने जाहिर किया। इस लिये बुध का आकाश या आवाज नक्काराऐ खलक को आवाजे ख़ुदा समझा गया या बुध सबका भेद खोल देगा। अगर बुध अच्छा तो चंद्र का बुरा फल न होगा। जब चंद्र अच्छा तो शुक्कर का बुरा फल न होगा। इसलिये बुध अपना फल शुक्कर में पहुंचा देता है यानि बुध के बगैर शुक्कर पागल होगा और शुक्कर के बगैर बुध दीवाना पागल कुत्ता होगा। जो अपने मालिक को छोङकर (दीवाना कुत्ता मालिक को छोङ जाता है) और अगर वो अपने ही घर जहां वो पागल हुआ बंधा होवे (यानि ख़ाना नंबर 12 में) तो मालिक को भी काट देगा। गोया बुध ही

सब ग्रहों का भेदी है और बृहस्पत सबको जानने वाला है। दोनों ही ग्रह राहु केतू के सिर और पांव को पहचान सकते हैं।

(2) राहु केतू दीवारें बन कर सिर्फ़ रास्ता रोक सकते हैं और ये दीवारे हंमेशा चलने वाली हैं। इसलिये इनके दूर होते ही उन ग्रहों का असर वही उमदा होगा। जो हो सकता है। लेकिन जब ये हाथी व कुत्ता घोड़े के साथ ही एक मकान में बंधे हों (ख़ाना नंबर 6 में जब केतु था तो अपने से सातवें या ख़ाना नंबर 12 में राहु था) तो तवेला मवेसियां होगा (लालकिताब सफ़ा 81 जुज 12)। जो बाकी सात या राहु केतू (मुश्तरका मशनोई शुक्कर) का नतीजा शुक्कर गृहस्त का ख़ाना नंबर 7 है (कुण्डली का)। जिसमें शुक्कर के साथ ही बुध को भी माना है। ताकि कुत्ते के टुकड़े ना हो जावें और केतू इस इल्म में लड़का भी माना है। इसलिये ही ख़ाना नंबर 7 शुक्कर बुध मुशतरका होने पर मुबारिक और शुक्कर बुध मुश्तरका से मशनोई सूरज होगा।

ख़ाना नंबर 6 में जब केतू को माना था तो इस का दूसरा साथी राहु ख़ाना नंबर 12 में और बृहस्पत दोनों (राहु केतू) को चलाने वाला ख़ाना नंबर 2 में बैठा है। ख़ाना नंबर 2 में बृहस्पत है और गुरदवारा इसमें ख़ाना नंबर 8 का असर आया। ख़ाना नंबर 8 पापी ग्रहों की (तीनों ही राहु केतू सनीचर की) बैठक है और ख़ाना नंबर 2 सिर्फ़ राहु केतू की बैठक है यानि जब ख़ाना नंबर 8 का असर 2 में जावे तो सनीचर का बुरा असर साथ लेंगे। लेकिन जब ख़ाना नंबर 2 का असर ख़ाना नंबर 6 में जावे तो सिर्फ़ राहु केतू का असर (इसी वजह से ख़ाना नंबर 2 को शुक्कर की राशि माना है। क्योंकि राहु केतू मुश्तरका सिर्फ़ हवाई शुक्कर के घर को ही हवा का मालिक बृहस्पत संभाल सकता है) चला। ख़ाना नंबर 6 से जब ख़ाना नंबर 12 में असर गया तो ख़ाना नंबर 6 से बुध का असर भी मिला हुआ पाया। जो आकाश व गोल दायरा का मालिक है। इस तरह ख़ाना नंबर 2-6-8-12 में हर तरह का झगड़ा हुआ। पाताल और आसमान में हर तरफ बुध व बृहस्पत की चारों तरफ घुम जाने वाली गांठे सनीचर की चारों तरफ मार कर लेने की ताकत खड़ी हो गयी। बुध और बृहस्पत ने भी सूरज और सनीचर दोनो का ही साथ दिया। गो वो दोनों बुध और बृहस्पत बाहम दुश्मन हैं। इन चारों तरफ की ताकत वाला ख़ाना नंबर 4 चंद्र को मिला। (अरमान नंबर 38) जिसमें नेकी की सिफत होगी। मंगल बद

ने ख़ाना नंबर 4 में और सनीचर ने चंद्र से जो ख़ाना नंबर 4 का मालिक है से अपनी दुश्मनी के स्वभाव का सबूत दिया। इस चक्र के बुरे और भले हो जाने के सबब से चंद्र ने सबकी उम्र की ताकत अपने काबू कर ली और सब की उम्र का मालिक हुआ और तमाम ही के सफर में अपना असर डालने की ताकत पकड़ी। ये राहु केतू का कुत्ता हल्क में कौआ बन बैठा। इसी गां (गाय) कां (कव्वा) और कुत्ते की सेवा के लिये (या सनीचर से बचाव के लिये) अपनी रोटी के तीन टुकड़े त्रिलोकी में आराम के वासते गऊ ग्रास के नाम पर अलैहदा रखे। यानि बुध के खाली ढांचे में राहु केतू पकड़े गये। ख़ाना नंबर 9 और 12 के बुध ने सब ग्रहों को मारा तो ख़ाना नंबर 2 के बुध ने सब को तारा भी है। सिर्फ़ ख़ाना नंबर 4 है जहां कि बुध में राहु केतू का ताल्लुक नहीं वो राजयोग है।

चंद्र का दुश्मन ग्रहों से ताल्लुक

(1) जब चंद्र पहले घरों में हो और दुश्मन ग्रह बाद के घरों में तो चंद्र ख़ुद अपना नेक फल उस दुश्मन ग्रह को देना बंद कर देगा।

(2) जब दुश्मन ग्रह और चंद्र इकट्ठे हों तो चंद्र और दुश्मन ग्रह दोनों का ही फल रद्दी होगा।

(3) जब चंद्र बाद के घरों में हो और दुश्मन ग्रह पहले घरों में तो चंद्र का असर बुरा होगा। दुश्मन ग्रह पर कोई असर न होगा।

(4) बृहस्पत के साथ बृहस्पत के घरों में राहु हाथी का तेंदूया होगा। या बृहस्पत के साथ या बृहस्पत के घरों में राहु बुरा फल देगा। और नीच होगा। बुध के साथ या घरों में केतू कुत्ते का सिर पागल या दीवाना नीच फल का होगा। क्योंकि राहु केतू मुश्तरका घर ख़ाना नंबर 6 और 12 भी बुध बृहस्पत के ही हैं। जहां कि उन्हें जगह मिली।

चंद्र का खास ताल्लुक

1) दुश्मन व पापी ग्रहों को अपनी मदद देना बंद कर देता है।

2) सूरज के दरवाजे से (जब चंद्र के घर ख़ाना नंबर 4 या चंद्र के साथ किसी भी नेक घर (यानि चंद्र व सूरज के दुश्मन का घर न हो) सूरज हो मोती दान लेगा। ला.की. 203/ ख़ाना नंबर 4 और जब सूरज या बृहस्पत देखते हों चंद्र को तो चंद्र ख़ुदबख़ुद अपना नेक असर पैदा कर देगा। (ला.की. 220/5 ख़ुश्क कुयें में ख़ुदबख़ुद पानी आ जावे। बच्चे की आवाज से ही माता के पिसतान में दूध आ जायेगा। ख़्वाह वो अंधी ही हो।(चंद्र ख़ुद दुश्मन ग्रहों से मारा हुआ)।

अरमान नंबर १४६

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
चंद्र	कायम	जायदाद गैर माकूला	चंद्र	1	नौह सास का ताल्लुक मां
		जरूर पैदा हो। या मिले।	शुक्कर	7	बेटी की तरह नेक और
		पराई अमानत पास रह			उमदा होगा। मगर शादी
		जावे। और लेने वाला			औलाद में गड़बड़ होवे।
		वापिस न आवे। दिल की	चंद्र	1	हर किसम की सवारी का
		पूरी शांति हो।	बृहस्पत	4	सुख और नफा होवे।
चंद	क़ायम	जरूरी सफर मुतलका	सनीचर	10	
सूरज	4/10	राजदरबार के नेक नतीजे।	चंद्र	2	लाल किताब सफ़ा 151/1
बृहस्पत	10/4	नफे और हर तरह से	चंद्र	2	दोनों ग्रहों का अलहैदा
		फायदा होवे।	बृहस्पत	4	अलैहदा और उत्तम फल
चंद्र	कायम	घर की हालत सोने की			होगा। वालदैन से कम नेक
सूरज	6	जगह मिट्टी के तवे हों। मंदा			न होगा। बल्कि बढेगा।
सनीचर	6	हाल। अगर इसका कोई			शुक्कर की मुहब्बत (हर
		लड़का सेहत का रद्दी			दो मुहब्बत) भी शामिल
		आंख खराब सी वाला हो			होगी। ला.की. 150/14
		तो वो लड़का अपनी 19	चंद्र	2	मातृ रेखा - मातृ भाव नेक
		साला उम्र में गया हुआ	बुध	6	असर मगर नजर कमजोर
		सोना वापिस दिलावे।			होवे।
चंद्र	1/5	अकल कम धन ज्यादा।	चंद्र	2	आली मरतबा। साहबे
बुध	7/11	बजरिया/मुतलका	सूरज	1	जायदाद होवे।
		राजदरबार समुंद्र पार लंबे	सनीचर	11	
		सफरों के नेक नतीजे होंगे।	चंद्र	2	पितृ रेखा - पितृ भाव नेक।
चंद्र	1		सनीचर	4	असर मुतलका जायदाद
सूरज	4				जद्दी। ला.की. 225 जुज 4
शुक्कर	7	नामर्द वर्ना बुजदिल होवे।			अलफ
सनीचर					

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
चंद्र बृहस्पत बुध	3 9 5	उमदा नतीजा होगा।			(बुरी भली) दोनों तरफ की ज्यादा। शरारत का माकूल जवाब देने की ताकत व आदत हो।
चंद्र दृष्टी 11/9	3 ख़ाली	कुण्डली में मंगल बद हरगिज न होगा। मंगल ख़्वाह किसी घर हो नेक होगा। दिमागी ख़ाना नंबर 27 गौर व खोज की ताकत। ला.की. 152/2 मंगल से मुश्तरका। गंदी मुहब्बत से दूर। दुनयावी ताल्लुक में दिल का बहुत छोटा होगा। अगर मंगल बद किसी और तरह से हो रहा हो। तो बुरा नतीजा होवे।	चंद्र	4	दिमागी ख़ाना नंबर 28 शुक्कर से मुश्तरका। पुरानी याद दासत की ताकत। ला.की. 218/1, 220/3 शुक्कर का बुरा फल न होगा। सनीचर का 1/3 अरसा (12 साल) औलाद पैदा होने का वकत होगा।
			चंद्र बृहस्पत	4 10	फकीर को रोटी देकर आशीर्वाद की जगह जहर दिया जाने का इल्जाम वाला असर मिले। नेकी की तो सजा पायी वाला असर हो।
चंद्र बुध	3 11	चंद्र के दौरा के वकत बाकी 3 बचने वाले मकान की तरह जिंदगी। शुरू की बैठक सा हाल रहे।(ला.की. सफ़ा 80 जुज 8)	चंद्र शुक्कर	4 10	माल और औरत दोनों बाहम नेक और उमदा असर।
			चंद्र	4	मां बाप दोनों की तरफ से
चंद्र मंगल	3 10	ला. की. सफ़ा 216/14	सनीचर चंद्र	9/11 4	हर तरह से उमदा क़िस्मत
चंद्र मंगल	3 4	दोनों ग्रह बाहम साथी ग्रह। मंगल पूरा नेक। हौसला व इज्जत ज्यादा दिल की ताकत	सूरज दोनों	5 कायम	मिसल राजा होवे।

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
चद्र	4		चंद्र	5	बजरिया/मुतलका राज-
और	क़ायम		बुध	11	दरबार समुंद्र पार लंबे लंबे
सूरज	5	इकबाल मंद होवे।			सफरों के नेक नतीजे हों।
बृहस्पत	2/9		चद्र	6	दिमागी ख़ाना नंबर 30
और	कायम				दबाव बोझ मसावीपन की
चंद्र	4	समुंद्र पार लंबे लंबे सफरों			ताकत। केतू से मुश्तरका।
बुध	10	के बजरिया/मुतलका			जैसा मुंह वैसी चपेट। अच्छे
		तिजारत (बुध के काम)			से अच्छा बुरे से बुरा। अगर
		नेक नतीजें होंगे।			उजाड़े तो चंद्र पिता
चंद्र	4	राहु का मंदा असर बुध पर			खानदान को तारे।
राहु	10	होगा। यानि सिर फट जावे।	चंद्र	6	माता भाग रही। बाकी 6
चंद्र	4	बारौब मगर गुस्से वाला	बुध	12	बचने वाले मकान की
मंगल	10	होगा। अहले सरकार से			तरह की हालत। तकिया
		फायदा उठाने वाला।			मुसाफिर का सा हाल।
		मंगल नेक का असर बढे।			(ला. की. सफ़ा 81जुज 11)
		(मुतलका धन दौलत)			बुध के दौरा के वकत होवे।
चंद्र	5	दिमागी ख़ाना नंबर 29			ख़ुदकशी बवजह गरीबी
		कद व कामत व औसत			कभी न होगी।
		तनासब की लियाकत।	चंद्र	6	मिसल राजा हो।
		सूरज से मुश्तरका।	बुध		
		चिड़ीयों से बाज लड़ाने की	चन्द्र	6	कुंडली वाले की माता
		ताकत।	मंगल	(बद)4या	उससे पहले मर जावे।
चंद्र	5	उम्र 12 दिन होवे।	मंगल	8	(उसके बचपन में ही)
सूरज	10		बुध	6	ऐसा शख़्स माता से पहले
चंद्र	5	उम्र 12 साल होवे।		या	गुजर जावे।(बचपन में ही)
सूरज	11		बुध	8 ऊपर	की हर दो हालतों में
चंद्र	5	मंदा फल होवे।	मंगल	6/12	अगर दोनों जिंदा हों तो
बृहस्पत	9		चंद्र न	और नहीं	दोनों ही एक दूसरे के
बुध	3		तो साथ	देखता	मंदे बल्कि दोनों ही
			हो।	हो	दुखिया हो।

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
चंद्र दृष्टी	7 ख़ाली	अकल की बारीकी या ख़ुदाई पहुचं दर्जा कमाल। अगर फकीरी भी तो सबसे अव्वल ऊंच दर्जा की और नेक असर की। दिमागी ख़ाना नंबर 31 शुक्कर से मुश्तरका रंग रूप में फर्क वगैरह की ताकत। दुध से दही और दोनों की शकल और रंग में फर्क का मालिक। ला.की. 218/1			सनीचर से मुश्तरका ढीलापन। जाहिरा मानसरोवर मगर अंदर से कपट की खान। ला.की. 215/17
			चंद्र	9	अरमान नंबर 124 ख़ाना नंबर 9 के इलावा। ला.की. 161/12 दिमागी ख़ाना नंबर 33 इल्म रियाजी के
			चंद्र बृहस्पत	9 5	क़िस्मत का निहायत नेक असर। पानी की मामुली सी किश्ती उसे बड़े भारी बहरी जहाजों का काम देवे।
चंद्र बृहस्पत	7 7	बचपन में तकलीफ हो।			
चंद्र सनीचर	7 7	हथियार से मौत होवे।			
चंद्र शुक्कर	7 1	नौह सास का झगड़ा। हर दम कलेश का घर हो जावे।	चंद्र	10	पूरा धोकेबाज। मंगल बद से मुश्तरका। तैरते को डुबा लेने वाला। दिमागी ख़ाना नंबर 34 जगह मुकाम की याद
चंद्र बुध	7 1	नशेबाजों का सरदार होवे।			
चंद्र	8	सिर्फ़ कुण्डली वाले की मौत के यम को मार कर इस की उम्र लंबी करे। बाकी तमाम चंद्र के मुतलका असर चंद्र नीच के होंगे। दिमागी ख़ाना नंबर 32 सफाई शास्तगी। असूलों की ताकत। बुध से मुश्तरका।	चंद्र सनीचर	10 3	धन दौलत सनीचर के ढंग का उर्ध रेखा मंदी हालत। चोर राहजन फिर भी मंदा हाल। पानी से मौत होवे। अपने ही कुयें से।
			चंद्र सनीचर	10 4	पितृ रेखा। वालदैन का उत्तम असर मगर ख़ुद उसे औरतें (ख़्वाह बेवगान हों जो उसके सहारे

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
		चलने वाली हों ख़्वाह धोका देने वाली बाजारी औरत या माशूका) बरबाद करें। (नाजायज खर्चा धन दौलत की बरबादी करेंगी) ला.की. 220/4	चंद्र बुध	11 3	न सिर्फ़ कुण्डली के ख़ाना नंबर 3 भाई बंद का मंदा फल होगा। बल्कि बाकी बचने वाले मकान (ला.की.80/8) का भी नेक असर भी (अगर कोई ऐसा जद्दी हो भी) हर तरह से जायल और खराब होगा।
चंद्र सूरज बृहस्पत	10 4 4	ख़ुश्क कुएं ख़ुदबख़ुद पानी देवें। ला.की. 220/5	चंद्र बुध	11 5	दोनों ग्रहों का अपना अपना असर होगा। और नेक।
			चंद्र	12	जायदाद का फल मध्धम।
चंद्र	11	दीमागी ख़ाना नंबर35 पेशानी वाकयात गुजरे हुए की याद। बृहस्पत से मुश्तरका। ला.की. 214/14			दिमागी ख़ाना नंबर 36 राहु से मुश्तरका। वकत गुजरे मर्द पछताये। "आता है याद मुझको गुजरा हुआ जमाना।" कभी हम भी बाइकबाल थें। "पदम सुलतान बोद"।
चंद्र दोस्त दुश्मन चंद्र को	11 ग्रह 3 ग्रह 3 देखें	ला.की.सफ़ा 212/7	चंद्र सूरज मंगल	12 2 1	दलिद्री। आलसी। निर्धन होवे।
			चंद्र राहु सनीचर	12	स्त्रीयों(माता औरत वगैरह) का सुख हल्का। चंद्र चुप होगा।

अरमान नंबर 147-148

शुक्कर:- शुक्कर हर इक और हर इक के सुख का मालिक ग्रह है। जो राहु केतू के मुश्तरका असर का नतीजा है। और जिस में बुध का असर हमेंश्चा मिला हुआ गिना जाता है। और खुद इस ग्रह का नतीजा केतू है। न इस ग्रह ने किसी को नीच किया (लालकिताब सफ़ा 231 तसवीर औरत व गऊमाता) और न केतू ने किसी को जान से मारा। (लालकिताब सफ़ा 266

नोट के नीचे जुज नंबर ९) इस ग्रह की आम म्याद (तीन साला दौरा) के वकत में पहले साल में मगंल का फल शामिल और मंगल प्रबल होगा। दरम्यानी हिस्सा या साल में इस ग्रह का ख़ुद अपना फल (राहु केतू का मुश्तरका असर) और आखरी साल में खाली बुध का असर होगा।

बुध लड़की (कौतबाह) शुक्कर जिस्म की मिट्टी (बुत) और मंगल खून (मैदाने जंग)। बच्चा पैदा करने की ताकत गिने गये है यानि लड़की के जिस्म में जिस दिन से कौतबाह (माहवारी आयाम का खून) बच्चा पैदा करने की ताकत पैदा होवे। उस दिन से ये ग्रह राहु केतू के मुश्तरका असर का मैदाने जंग शुक्कर के नाम से गिना जायेगा और शुक्कर के नतीजे केतू (लड़के बच्चे) की छलावे की तरह के रंग ढंग पैदा कर देंगे। बुध कुण्डली के किसी भी घर में हो जब शुक्कर से अलैहदा हो और अपना फल वहां से........... जहां की बुध बैठा हो। उठा कर शुक्कर में मिला देगा। (बुध के हाल में मुफसिल लिखा है।) यानि शुक्कर और बुध जब अलैहदा अलैहदा होकर कुण्डली में द्रुष्टी के हिसाब से आमने सामने के घरों में वाक्या हो जावें। तो चकवे चकवी के चंद्र की रात में अकेले अकेले होने का असर (लालकिताब सफ़ा 209 नीचे से सातवीं सतर) मुंदरजा जैल होगा :-

1) अगर कुण्डली में बुध एक दो तीन हद 12 की तरतीब में शुक्कर से पहले घरों में हो (ख़्वाह वो घर अरमान नंबर 108- 25फीसदी, 50 फीसदी या 100 फीसदी के असर के हों) या शुक्कर बुध से बाद के घरों में हो तो शुक्कर और बुध के इस तरह से मिले हुए असर में केतू की नीयत (कुत्ते की नेक नीयत जो अपने मालिक की वफादारी और खैरखवाही की मशहूर है) होगी। और अगर

2) शुक्कर कुण्डली के पहले घरों में हो और बुध इसके बाद के घरों में तो शुक्कर और बुध के इस मिले हुए असर में राहु (जाहिरा मसकीन बिल्ली मगर अंदर से 100 चूहे खाकर हज्ज को जाने वाली गरबां) की नीयत भरी होगी। लेकिन अगर

3) शुक्कर व बुध अकेले अकेले अपने से सातवें हों तो जहां एक का अच्छा है। वहां दूसरे का असर उल्ट होगा का असूल आम ग्रहो की निसबत शुक्कर व बुध के लिये थोड़ा सा फर्क पर होगा :-

(सनीचर जब कभी भी शुक्कर के दोस्त / दुश्मन ग्रहों की द्रुष्टी में या साथ हो तो ऐसे मिलाप में सनीचर का असर अच्छा / बुरा औरत पर होगा।)

शुक्कर होवे ख़ाना नंबर 3 में और बुध होवे ख़ाना नंबर 9 में शुक्कर होवे ख़ाना नंबर 9 में और बुध होवे ख़ाना नंबर 3 में	दोनों का फल रद्दी होगा। हालां कि दोनों दोस्त हैं। वजह ये कि बुध ख़ाना नंबर 9 के तमाम ग्रहों और ख़ाना नंबर 9 के तमााम ताल्लुकदार घरों के ग्रहों के असर की बुनियाद खोखली कर देगा।
शुक्कर होवे ख़ाना नंबर 6 में और बुध होवे ख़ाना नंबर 12 में	दोनों का फल रद्दी क्योंकि ख़ाना नंबर 12 का बुध ख़ाना नंबर 6 के तमाम ग्रहों का फल खराब कर देगा।
शुक्कर होवे ख़ाना नंबर 12 में और बुध हो ख़ाना नंबर 6 में	दोनों का ऊंच फल क्योंकि ख़ाना नंबर 6 का केतू सब को ऊंच करता है।
शुक्कर होवे ख़ाना नंबर 8 में और बुध हो ख़ाना नंबर 2 में	दोनों का फल रद्दी। मौत का ख़ाना पीछे को देखता है। और मारग अस्थान है। शुक्कर
होवे ख़ाना नंबर 2 में और बुध हो ख़ाना नंबर 8 में	बुध बृहस्पत के घर में बृहस्पत की दुश्मनी पर शुक्कर को भी नहीं छोड़ता और मुर्दा शुक्कर नंबर 8 का असर ख़ाना नंबर 2 में जाता है।

4) अगर शुक्कर व बुध दोनों ही मुश्तरका हों तो मशनोई सूरज का असर होगा। नेक मायनों में। (लालकिताब सफ़ा 291 ऊपर से छटी सतर)

शुक्कर का बृहस्पत से ताल्लुक

बृहस्पत के ख़ाना नंबर 9 में शुक्कर हो-औलाद के लिये मंदा-तीर्थयात्रा उमदा।

बृहस्पत के ख़ाना नंबर 12 में शुक्कर हो-धनदौलत ऊंच शुक्कर की मगर औरत की सेहत (कदरे) मंदी।

बृहस्पत के घर ख़ाना नंबर 2 में शुक्कर का उत्तम 60 साल ये 60 साल सनीचर की आमदन होगी। जब सनीचर ख़ाना नंबर 9 में होवे।

शुक्कर के ख़ाना नंबर 7 में बृहस्पत हो बृहस्पत के लिये सोने की जगह मिट्टी होगी। ला.की. 146/6-7

इन दोनों ग्रहों के इकट्ठे होने के वकत शुक्कर का फल पोशीदा (जिस तरह सूरज के लिये बुध का हाल है।) और बृहस्पत का जाहिरा होगा।

शुक्कर का सनीचर से ताल्लुक

अगर शुक्कर से सूरज ने दुश्मनी की और ऊपर से जाहिरा अपनी गर्मी को भेज कर अपनी तपिश से जलाया तो

सनीचर ने नीचे से खुफिया ही आकर शुक्कर को पूरी ही मदद दी। यही सनीचर के सांप को मिट्टी की मदद होगयी। सूरज और सनीचर के दरमयान ये शुक्कर क्या है? सिर्फ़ राहु केतू (जो इस के मशनोई हालत के जुज हैं या इसी ऊपर को उभारने (सनीचर से) और नीचे को दबाने (सूरज से) की वजह से शुक्कर जो टूट फूट में होगा रेत बनेगा और रेत होगी बुध की चीज या बुध ख़ुदबख़ुद पैदा हो गया।) जो सनीचर के ऐजंट हैं। मतलब ये कि जब शुक्कर को सनीचर की मदद मिली या शुक्कर को सनीचर ने मदद दी तो राहू केतू भी शुक्कर के मददगार हो गये। दूसरी हालत में जब सूरज बरखिलाफ होवे शुक्कर के तो मदद देगा शुक्कर को सनीचर। यानि जब औरत की नेकी उसे मदद न देवे। औरत की शैतानी की ताकत ही सब दुश्मनों को मातहत करवा देगी।

शुक्कर का राहु से ताल्लुक:- शुक्कर और राहु मुश्तरका होने पर सिर्फ़ बुध ही रह जायेगा। यानि राहु जब शुक्कर के साथ हों बुध का फूल तो होगा (बुध राहु दोस्त) मगर शुक्कर का फल (केतू) न होगा। (बुध केतू बाहम दुश्मन हैं)। राहू न सिर्फ़ औरत की सेहत और औलाद को बिगाड़ता है। बल्कि शुक्कर की लक्ष्मी भी मंदा फल देगी। मगर बुध की फोकी इज्जत और शोहरत ख़ुद कुण्डली वाले की जरूर बरकरार रहेगी।

शुक्कर का चंद्र से फर्क:- बारीक उड़ने वाली जर्रा जर्रा हुइ हुइ मिट्टी को शुक्कर और तमाम जमकर एक ही तै बनी हुइ मिट्टी को चंद्र की धरती माता कहते हैं। इन दो ग्रहों का मेल दही और दुध का मेल है। गो शुक्कर ने किसी को नीच नहीं किया। मगर मंगल बद ने स्त्री (शुक्कर) को भी नहीं छोड़ा और हर तरह से बल्कि इसकी मौत तक का भी असर दिया है।

अरमान नंबर 149

शादी

दो गृहस्तीयों को अलैहद अलैहदा रखते हुए एक कड़ी से जोड़ने वाली चीज आम दुनियादारों की नजर में शादी और ग्रह चाल में मंगल की ताकत का नाम रखा गया है। यही मंगल के खून की कड़ी लड़की और औरत में फर्क की कड़ी है और इसी वजह से शादी में मंगल गाये जाते हैं। अगर मंगल नेक

हो (मंगल को सूरज या चंद्र की मदद मिली हुइ) तो शादी ख़ाना आबादी करने वाला मंगल होगा। लेकिन अगर मंगल बद (मुफसिल मंगल बद में जिकर है।) तो बंदर किला (सूरज को सनीचर से बंधा हुआ करना या सूरज इस काबल न हो कि मंगल को मदद दे सके। खुच्छक और सीधे मायनों की तरह ऊपर को खडी की हुइ लकडी को सनीचर माना है। इसी असूल पर थम्म। सतून मकान की चारदीवारी छत के बगैर खडी दीवारें सनीचर की चीज मानी हैं।) होगा। जिस से शादी की खुशी की बजाये शुक्कर स्त्री लक्ष्मी का सुख सागर एक गंदा दुख का भंवर होगा। मंगल बद का वीराना होगा। जिसमें सूरज की रौशनी की चमक तक न होगी। दिन की बजाये सनीचर की स्याह रात का साथ होगा। बुध के खाली आकाश में मशनोई शुक्कर के बानी राहु केतू की बैठक ख़ाना नंबर 8 सनीचर का हैडक्काटर होगा।

शादी की दोनों लकीरें- (लालकिताब सफ़ा 238 जुज 6)

शादी की दो लकीरें शुक्कर और बुध माने गये हैं। बुध से ऊपर की लकीर मर्द से मुतलका और शुक्कर से नीचे की लकीर औरत से मुतलका (मिली हुइ) मानी गयी है। शुक्कर और बुध में से अगर एक ही ग्रह कायम हो तो हाथ पर सिर्फ एक ही शादी की लकीर होने का मतलब और असर लिया जायेगा।

ऊपर की लकीरः- बुध कायम से ऊपर की लकीर (मर्द) से मुतलका।

नीचे की लकीरः- शुक्कर कायम से नीचे की लकीर (औरत से वाबस्ता) होगी।

अगर बुध शुक्कर दोनों कायम तो दोनों की लकीरें उमदा और अगर दोनों ही (बुध शुक्कर) रद्दी तो दोनों लकीरें मंदी वाली शादी रेखा से मुराद होगी।

एक ही लकीर वाली शादी रेखा = शुक्कर कायम मगर बुध खराब हालत का।

छोटी लकीर ऊपर और बडी लकीर नीचे वाली शादी रेखा= बुध कायम मगर शुक्कर खराब हालत का।

बुध शुक्कर दोनों ही नेक हालत के और मंगल नेक का साथ (साथी ग्रह) हो :- शादी औलाद का फल नेक व उमदा होगा।

बुध शुक्कर दोनों के साथ या दो में से किसी एक के साथ मंगल बद का साथ (साथी ग्रह) हो जावेः- दो शाखी रेखा वाली शादी रेखा से मुराद होगी।(लाल किताब सफ़ा 237/5)

बुध शुक्कर अगर कुण्डली के पहले घरों में हों और मंगल बद बाद के घरों में वाक्या हो :- दो शाखी का मुंह हथेली के बाहर को रहने वाली शादी की दो शाखी रेखा होगी।

बुध शुक्कर हों बाद के घरो में और मंगल बद होवे पहले घरों में:- दो शाखी का हथेली के अंदर की तरफ मुंह होने वाली शादी रेखा होगी।

मंगल बद ऐसी हर दो हालत में अगर शुक्कर पर बुरा असर दे रहा हो तो औरत बायस खराबी और अगर बुध बुरा असर दे रहा हो तो मर्द बायस खराबी होगा।

और अगर बुध शुक्कर जुद जुदा ही हों और मंगल बद का कुण्डली में ताल्लुक हो जावे। तो कुदरती सबब खराबी का सबब होंगे।

नोटः- स्त्री ग्रह (चंद्र शुक्कर) जब नर ग्रहों (सूरज बृहस्पत मंगल) के साथ मुश्तरका या साथी ग्रह हो जावें तो भी शादी रेखा से मुराद होगी। बशर्तकि ऐसी हालत में सनीचर का ताल्लुक भी (जड़ राशि पक्का घर दृष्टी या साथी ग्र्ह की हालत का हो जाना) हो जावे। ऐसी हालत में ऊपर जिकर की हुइ तमाम शर्तो के लिये स्त्री ग्रहों को शुक्कर या नर ग्रहों को बुध की शादी रेखा गिन कर फैसला होगा। स्त्री व नर ग्रहों का ये बाहमी ताल्लुक सिर्फ शादी रेखा के लिये होगा और ये शर्त भी सिर्फ इस वकत होगी। जब शुक्कर और बुध दोनों नष्ट हो गये हों। (निशानी :- ऐसे शख़्स के जनमदिन से ही उस की ताल्लुकदार स्त्रीयां बहिन, भुआ, फूफी वगैरह ही मरती गयी हों)।

वकत शादी :- सनीचर की दोस्ती व आम दौरा का वकत शादी होने का वकत होगा।

तादाद औलाद :- मंगल का वकत और साथ और ख़ाना नंबर 2 की हालत से औलाद का हाल जाहिर होगा। मुफसिल बृहस्पत के हाल में औलाद के जिकर में लिखा है।

मर्द औरत के जोड़े की उम्र

शुक्कर को देखता हो उस का दोस्त ग्रह तो	औरत की उम्र लंबी होगी।
शुक्कर को देखता हो उस का दुश्मन ग्रह तो	औरत की उम्र छोटी होगी।

बुध को को देखता हो उस का दोस्त ग्रह तो मर्द की उम्र लंबी होगी। बुध को देखता हो उस का दुश्मन ग्रह तो मर्द की उम्र छोटी होगी। शुक्कर बुध मुश्तरका को देखता हो दोनों का मुश्तरका दोस्त ग्रह दोनों की उम्र लंबी होगी।

शुक्कर बुध मुश्तरका को देखता हो दोनों का मुश्तरका दुश्मन ग्रह दोनों की उम्र छोटी होगी।

शुक्कर को देखता होवे उसका दोस्त ग्रह (शनीचर) और बुध को देखता हो उसका दुश्मन ग्रह चंद्र तो औरत की उम्र लंबी और मर्द पहले चल जावे। बुध को देखता हो उसका दोस्त ग्रह (सूरज राहू) और शुक्कर को देखता हो उसका दुश्मन ग्रह (सूरज चंद्र राहू) तो मर्द की उम्र लंबी और औरत पहले चल जावे।

शुक्कर को देखता हो उसका दुश्मन ग्रह (सूरज चंद्र राहु) और बुध को देखता हो उसका दोस्त ग्रह तो मर्द कायम ख़्वाह इसकी औरत कई दफा मरती या हटती जावे।

बुध को देखता हो उसका दुश्मन ग्रह (चंद्र) और शुक्र को देखता हो उसका दुश्मन ग्रह (सूरज चंद्र राहु) तो औरत कायम रहे। ख़्वाह उसके मर्द मरते या हटते जायें।

शुक्कर कायम से सिर्फ एक औरत और आखिर मर्द के दम तक कायम रहे।

सूरज हो ख़ाना नंबर 6 में और सनीचर ख़ाना नंबर 12 में तो औरत पर औरत मरती जावे।

शुक्कर बुध मंगल तीनों ही ख़ाना नंबर 3में दुष्टी का ख़ाना नंबर 11खाली:- शादी और औलाद में गङबङ होवे।

मंगल बद और शुक्कर वाक्या होने के दरम्यान जितने घर खाली होवें उतनी हद तक शादी की औरतें हो सकती हैं = बुध और शुक्कर अलैहदा अलैहदा होने की हालत में बुध की नाली और बुध शुक्कर के पहले या बाद के घरों का खयाल भी साथ ही देखा जावे।

अकेला शुक्कर हो स्त्री ग्रहों के घरों में यानि ख़ाना नंबर 2-4-7 में तो :- शादी वाला मर्द एक होगा और औरतें अनेक (कई) हो सकती हैं और वो सब जिंदा ख़्वाह सब शादी का असल मतलब औलाद वगैरह देवें या न देवें।

अकेला बुध हो नर ग्रहों के घर में (ख़ाना नंबर 1-5-9-12) स्त्री एक ही होगी। मर्द अनेक (कई) होंगे। शादी से ख़्वाह औलाद का मतलब हो या शादी औलाद का

कोई मतलब न देवे।

अगर ऊपर की दोनों हालतों में शुक्कर या बुध उल्ट खानों में बैठे हों तो नतीजा उल्टा हो सकता है।

स्त्री या नर ग्रहों के घरों से मुराद स्त्री या नर ग्रहों का शुक्कर या बुध के साथ ही मुशतरका घर में हो जाने से मुराद न ली जायेगी। बल्कि मुराद ये है कि ऊपर की शर्त (मर्द एक औरत अनेक या उल्टा उल्ट वगैरह) सिर्फ इस वकत होगी जबकि स्त्री ग्रह या नरग्रह अपनी अपनी राशि से बाहर बल्कि वो अपनी अपनी राशि को देखते तक भी न हों या वो शुक्कर या बुध से किसी तरह भी साथी ग्रह न बन रहे हों।

रंग व स्वभाव:-

सूरज बुध का ताल्लुक औरत का रंग व स्वभाव जाहिर करेगा। कुण्डली में अगर सूरज पहले घरों में हो और बुध बाद के घरों में तो औरत का रंग व स्वभाव उमदा होगा। और नेक असर का। बशर्ते कि सनीचर दखल न देवे। अगर बुध पहले घरों मे हो और सूरज बाद के घरों में तो औरत के रंग और स्वभाव में मंदा असर शामिल होगा।

जब सूरज बुध इकट्ठे ही हों और सूरज के नेक घरों में यानि इकट्ठे ही हों और सनीचर या दुश्मन ग्रहों का असर शामिल न होवे।तो सूरज बुध का बाहमी ताल्लुक का असर यानि उमदा हालत होगी। लेकिन जब सनीचर का ताल्लुक या दुश्मन ग्रहों का ताल्लुक हो जावे तो औरत के स्वभाव में कल्पना और सनीचर की तरह द्रौतानी और चंचल होने का साथ होगा।

दीगर बाहमी ताल्लुक -

शुक्कर व बुध का ताल्लुक शादी के दिन से मर्द औरत की क़िस्मत पर भी ताल्लुक होगा।

बृहस्पत का साथ (शुक्र बुध का बृहस्पत से ताल्लुक) इज्जत क़िस्मत की चमक।

सूरज का साथ (शुक्र बुध का सूरज से ताल्लुक) आम बरताव गुजर गुजरान।

चंद्र का साथ (शुक्र बुध का चंद्र से ताल्लुक) धन उम्र और शांति।

मंगल का साथ (शुक्र बुध का मंगल से ताल्लुक) औलाद का कायम रखना।

सनीचर का साथ (शुक्र बुध का सनीचर से ताल्लुक) जायदाद मकान वगैरह।

राहू का साथ (शुक्र बुध का राहु से ताल्लुक)   दुख दलिद्र दुश्मन मौतें गमी।
केतू का साथ (शुक्र बुध का केतू से ताल्लुक) ऐश फलना फूलना खुशी वग़ैरह।

अरमान नंबर 150 ता 153

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
शुक्कर	कायम	सिर की श्रेष्ठ रेखा का	शुक्कर	1	औरत की सेहत खराब।
बुध	3/6	उत्तम फल होगा। चंद्र का	राहु	7	दिमागी कमजोरी।
		बुरा फल न होगा। झगड़ों			दीवानगी वगैरह।
		का फैसला हक में होवे।	शुक्कर	1	औरत की सेहत खराब।
		अगर शुक्कर रद्दी तो चंद्र	सूरज	7	दिमागी कमजोरी।
		का बुरा फल(जबकि चंद्र			दीवानगी वगैरह।
		भी रद्दी हो।) सिर्फ माता की	शुक्कर	1	नौहं सास का हरदम
		जान पर हो सकेगा।	चंद्र	7	झगड़ा। कल्पना।
शुक्कर	1	फटे तरबूज (फूट) की तरह	शूक्कर		क़िस्मत की हर तरह से
		तबीयत का स्वभाव और	मय	1	हार व हानि मंदा हाल।
		गृहस्ती सुख का हाल	सनीचर		जिस्म या मकान आग में
ला.की.		होगा। औरत की सेहत	राहू		जलते हुए की तरह के दुख
सफ़ह		कदरे हल्की मगर ख़ुद	सूरज	7	की जलन। तपेदिक
234/4		अपनी सेहत बुरी न होगी।			वगैरह। गर्जेकि इसकी
		दिमागी ख़ाना नंबर 1			मिट्टी खराब हो या जल
		इश्क़ मजाजी (ला.की.35)		जावे	। दुखों का पुतला
		सनीचर से मुश्तरका 16			होवे।
		से 36 साल उम्र यानि वो	शुक्कर	1	औलाद दर औलाद बढे
		मुहब्बत जिसमें इश्क़ का	मंगल	7	परिवार। दौलत का भण्डार
		जुज भी होवे मगर सिर्फ			और पुरा सुख हो
		जबानी।	शुक्कर	1	औलाद के विघ्न
शुक्कर	1	औरत की सेहत खराब।	केतू	1	
राहु	1	दिमागी कमजोरी।	शुक्कर	1	औलाद के विघ्न
		दीवानगी वगैरह।	केतू	1	खराबियां।
			मंगल	4	मौते वगैरह।

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
शुक्कर द्रुष्टी	ख़ाली	अपने लिये मशनोई शुक्कर (राहु केतू मुशतरका) का नेक मतलब मुहब्बत रेखा का पूरा असर (ला.की. सफ़ा 151 जुज नंबर 1) दिमागी ख़ाना नंबर 2 शादी की ख़्वाहिश इश्क़ के बाद का गलबा। जिसमें अब इश्क का असर न हो। बृहस्पत से मुश्तरका मगर मुहब्बत हकीकी का हिस्सा बेशक शामिल हो। 37 से 70-72 का । औरत का शुक्कर ख़ाना नंबर 2 में बांझ औरत हो। जिसमें मुहब्बत तो हो मगर हवाई बृहस्पत की तरह की।	शुक्कर मंगल बुध	3	शादी और औलाद में गड़बड़।
शुक्कर बृहस्पत मंगल	2 2 नष्ट	बृहस्पत में लिखा देखें।	शुक्कर सनीचर	3 9	ला. की. 295/1
शुक्कर	3	दिमागी ख़ाना नंबर 3 प्यार या वालदैनी मुहब्बत। उल्फत। मंगल से मुश्तरका। 1 से 15 साला उम्र। सिर पर पग़डी बांधे हुए भाईबंद की तरह की मददगार औरत होगी। इस जगह शुक्कर का असर नरों और अपने (मर्द खानदान के) आदमियों पर नेक होगा।	शुक्कर बुध	3 11	औरत खानदान या औरत के मुतलका खाऊ मर्द मुराद होंगे। या इस की औरत ख़ुद अपने (औरत के) लिहाज वालों को फैज पहुंचाती जायेगी। और अपने मर्द का धन दौलत खिलाती जायेगी। या अपने लड़को की निसबत अपनी देती जायेगी।
			शूक्कर द्रुष्टि	4 ख़ाली 10	ख़ाना नंबर 4 का शुक्कर स्त्रीयों पर असर देगा। यानि शुक्कर के इलावा चंद्र माता पर भी। या ख़ाना नंबर 4 का शुक्कर औरत भी होगा और माता भी। या माता का ताल्लुक मासी, फ़ुफ़ी, भुआ वग़ैरह भी होगा दिमाग़ी ख़ाना नंबर 4 दोस्ती या मुलाक़ात की ताक़त एब पर पर्दा डालना ख़ूबी पर नज़र डालना। चन्द्र से मुश्तरका उलफ़त (पहला हिस्सा मुहब्बत का) इश्क़ (दरमियाना हिस्सा कामदेव की मुहब्बत) और गलबा इश्क़ (तीसरा हिस्सा मुहब्बत का जिसमे अब इश्क़ का असर न हो) तीनों ही हालातो के मजमुआ का असर होगा। जो दरअसल चंद्र ही की मुहब्बत लिखा है।

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
शूक्कर द्रुष्टि जारी	4 खाली 10	न सिर्फ राहु या बुध की आखरी उम्र (बुध 34 राहु 42) शुक्कर का औलाद का फल रद्दी होगा। बल्कि भुआ, फूफी, आम गृहस्ती व औलाद के दुख बल्कि दरअसल पानी में कुण्डली वाले की शादी या भूआ वगैरह की शादी से पहले डूब जावें। कुण्डली वाले के घर का कुवा इसके मामू खानदान पर भी उनको खाक स्याह कर देने का बुरा असर करे। शादी के बाद यही कुवा कुण्डली वाले को तारे और नेक फल देवे। ख़ुश्की का सफर अमूमन बल्कि हरदम हो और मुबारिक असर का। औरते दो हों। एक जनानी दूसरी मां की तरह बूढी। जो दोनों जिंदा बशर्तेकि ख़ाना नंबर 4 का शुक्कर किसी और ग्रह का साथी ग्रह न बन रहा हो। औलाद का नेक ताल्लुक सनीचर केतू या मंगल के दूसरे दौरा में ही होगा। नेज शादी रेखा व औलाद रेखा भी देखें। अरमान नंबर 149 व अरमान नंबर 123 देखें।	शुक्कर बुध	4 6	स्त्री व औलाद का फल बहुत देर बाद नेक होगा। खास कर बुध की कुल उम्र 34साल के बाद अच्छा होगा। शुक्कर 5 वतन की मुहब्बत। दिमागी ख़ाना नंबर 25 बृहस्पत से मुश्तरका।
			शुक्कर बृहस्पत	5 5	औलाद की मारफत बढे और बरकत पावे। इल्म से खूब दौलत कमावे।
			शुक्कर द्रुष्टी	6 खाली	दिमागी ख़ाना नंबर 6 दिलचस्पी पक्की मुहब्बत। काम किये बगैर न छोड़ना। औलाद के लिये शुक्कर नीच फल का बाकी खाली शुक्कर का वही असर जो शुक्कर नंबर 2 में लिखा है। फोकी मुहब्बत केतू से मुशतरका या खाली मुहब्बत। औरत बांझ होगी। बृहस्पत सूरज चंद्र तीनों ही का फल मंदा। या तीनों ही ग्रह सोये हुए होंगे। अकल के खिलाफ काम करे। या जो करे मंदा नतीजा हो। ला.की. 233/2
			शुक्कर बुंध	6 6	रेत मिट्टी को सीमेंट बनावे। गो लड़के न होंगे मगर लड़कियां ही मशनोई सूरज की तरह उत्तम फल देंगी।

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
शुक्कर केतू	6 6	कुत्ते को घी हजम न होगा वाला हाल। औरत बांझ होगी।	शुक्कर दृष्टी	8 खाली	अव्वल तो शादी बहुत देर बाद वर्ना औरते मरती जावें। मामू खानदान और ससूराल घर दोनों खानदानों को तबाह करने वाला हो। आतशक सोजाक खरीदने वाला हो। गोबर-दही की मिलावट से बिच्छू पैदा होने की तरह दूसरों के लिये सब्ज कदमा साबित होवे। बाहर खेंचू कुयें में गिरने वाले गधे की तबीयत का होवे। ला.की. सफ़ा 162 जुज 15 अरमान नंबर 124 में लिखे के इलावा। गऊ दान मुबारक होगा।
शुक्कर द्रुष्टि	7 खाली	दिमागी ख़ाना नंबर 7 बुध से मुशतरका। जिंदगी बढने की ताकत(अरूज से मुराद है लंबी उम्र से नहीं।) खरबूज़े को देख कर खरबूज़ा रंग बदले।ला.की. 234/5, 244/८			
शुक्कर चंद्र सूरज सनीचर	7 1 4 7	नामर्द वर्ना बुजदिल होवे।			
शुक्कर चंद्र	7 1	नौह सास का मां बेटी की तरह नेक और उमदा ताल्लुक होगा। मगर शादी और औलाद में गड़बड़ हो।	शुक्कर	9	इसके बजुरगों का हाल अच्छा मगर इसकी औलाद का हाल मंदा होवे। कर्म धर्म (बृहस्पत का हाल) उमदा। गृहस्त मंदा वासते औलाद। यानि धन होवे आदमी न होवे। लाखों पति होता हुआ भी जब तक अपने पेट के अनाज की क़िस्मत के बराबर मेहनत न करे रोटी नसीब न हो। या ख़ुद मेहनती होगा। ला.की. 161/12 व 234/6
शुक्कर बुध मय राहु केतू	7 7 या 7	शादी और औलाद में गड़बड़।			
शुक्कर बृहस्पत मंगल	7 7 7 नष्ट	बृहस्पत के असर में लिखा देखें।			

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
शुक्कर दृष्टी	10 खाली	सेहत उमदा वाला हो। ला.की. 233/3			सिवाये औलाद के मंदे फल के शुक्कर हर तरह से ऊंच फल देगा। तमाम तरफ की माया उसकी औरत के साथ होगी। जहां कोई मददगार न हो उस की औरत की क़िस्मत मदद देगी। मगर औरत की सेहत हल्की होवे। 3) बृहस्पत ,सूरज, चंद्र तीनों ग्रहों का नेक फल साथ होगा। अगर नेक न हो मंदा तो हरगिज न होगा।
शुक्कर बुध	11 3	मर्द खानदान या मर्द के मुतलका खाऊ यार मुराद होंगे। औरत अपने मर्द के खिलाफ न ही अपनी मर्जी वालों को और न ही अपनी लड़कियों को धन दौलत दे सके। बल्कि अपनी लड़कियों वगैरह का धन भी अपने मर्दके(आदमियों) खानदान को खिला देगी। या झगड़े फसादोंमें बरबाद करवा देगी। जाहिरा वही घर की भागवान मालूम होगी। मगर अपने मर्द के घर को बरबाद करेगी।	शुक्कर बुध	12 6	दोनों ग्रह ऊंच फल देंगे। लड़के लड़कियां सब ही मुबारिक और सुखी व सुखी करने वाले होंगे।
शुक्कर बुध चंद्र दोनों	11 11 11 कायम	अपना हर काम खुफिया रख कर करने का आदी और मौका पर फौरन खयालात लट्टू की तरह घुमा लेने वाला होगा मगर दुखिया या धन से खाली न होगा।	शुक्कर केतू	12 12	औरत जात व औलाद बहादुरी में सूअरनी होगी। की तरह मोटे और बहादुर।
			शुक्कर बुध	12 12	गो दोनों गह दोस्त हैं मगर ख़ाना नंबर 12 में बकरी औरत का पेट फाड़ देगी। गृहस्त रद्दी होगा। खांड में रेत मिली वाली हालत होगी।
शुक्कर	12	1) दूसरों की मदद। दूसरों की पालना। और उनके लिये भण्डारे। 2) वही फल जो शुक्कर का ख़ाना नंबर 2 का है।			

165

अरमान नंबर 154 ता 158

मंगल नेक

ये ग्रह बुलंद होने। नेकी करने की जागती हुइ उमंग, रशक, नेक ख़्वाहिश और अपने जिस्म के लिये दूसरों से मदद लेने की ताकत का मालिक है। मंगल का बुध से ताल्लुक दो चीजों को इकट्ठा करके काम का नतीजा नेक कर लेने की खसलत होती है। वो दो चीजें गो जुदा जुदा होंगी मगर बाहम मिल कर काम का नतीजा नेक होगा। बुध (जमाने की अकल) गो इसका दुश्मन है। मगर इसके साथ वो बुरा फल न देगा। मंगल बुध का बाहम मिलाप कोई ऐसा बुरा न होगा। मगर होगा कदरे बुरा ही । मसलन मंगल ने जब चंद्र की मदद पायी तो सब उमदा मंगल नेक होने पर वो चंद्र का दूध और ख़ुद अपना जुज खांड मीठा ले आया। दूध जुदा है। खांड जुदी। बुध शामिल हुआ अकल ने मिलावट की दुध में खांड डाल दी। दूध को खांड में घोल कर ऐसा मिलाया कि वो जुदी मालूम न हुइ। ये मिलावट बुध की ताकत या अकल से हुइ। दूध मीठा होने पर और भी उमदा हुआ। मगर बुध की अकल से वो सिर्फ पीने के काम का ही रह गया। अब अगर चाहें कि दूध को अलैहदा करके खांड से कोई और काम लें तो न हो सका। बुध (कौतबाह) ने उकसाया तो मंगल ने अपने बच्चा पैदा करने की ताकत से खानदानी नसल (बेल बूटा) कायम कर दी। जिसे बहन कह सकता था औरत कहना पड़ा। यानि बुध ने जब मंगल में मिल कर काम किया तो मंगल फिर पीछे ने हट सका। बुध तो ख़ुद अपने गोल दायरे में ही इधर से उधर घूम गया। खाली जगह खाली खलाव या आकाश का नाम बुध है जो मौका के मुताबक (अकल व सुराख) बढता चला जायेगा। मंगल है खाली जगह में चीजों को इधर उधर करके मैदान को खाली व सफ़ा रखने की ताकत या निरपक्ष चीजों की मौजूदगी। मसलन फूल में शहद। खुलासतन अगर बुध (सिर रेखा) दुरसत हो तो मंगल का असर मदा न होगा।

मंगल का चंद्र से ताल्लुक

असल मंगल नेक तब ही है जब मंगल को चंद्र की मदद मिल जावे या चंद्र ख़ाना नंबर 3 में हो और मंगल ख़ुद इस वकत बेशक ख़ाना नंबर 4 में हो।

मंगल का शुक्कर व बृहस्पत से ताल्लुक

(1) मंगल नेक के मुकर्रर हिस्से की चरबी

(हाथ पर ख़ाना नंबर 3 की जगह की चरबी) बहुत बढ कर अंगूठे की चरबी को और बृहस्पत के ख़ाना नंबर 2 को एक ही कर देवे। तो शुक्कर बहुत बङा हुआ। कुण्डली वाला औलाद से महरूम हुआ और बृहस्पत ने अपना काम छोङकर खाली शुक्कर का काम करना शुरू किया। कुण्डली में यही हालत उस वकत होगी जब शुक्कर और बृहस्पत दोनों तो हों आपस में द्रुष्टी पर और मंगल दोनों में से किसी एक तरफ का साथ ले लेवे। यानि इन दोनों में से किसी एक के साथ ही हो बैठे। शुक्कर से मिला तो बहुत बङा शुक्कर और अगर बृहस्पत से मिला तो नर्म हाथ का बृहस्पत या शुक्कर की तासीर वाला बृहस्पत होगा।

(2) इसी तरह मंगल बद ख़ाना नंबर 8 वाले हिस्सा की चरबी अगर बुध व चंद्र के बुरजों को ऐसा यकसां कर के मिला देवे तो मंगल बद का बुध व चंद्र दोनों पर बुरा असर होगा। जिसका जिकर अरमान नंबर 160-161 में हुआ है।

मंगल नेक को बुरे असर की तरफ से रोकने वाला बुध (सिर रेखा) है जो दुरसत हो।

मंगल बद को बुरे असर की तरफ से रोकने वाला चंद्र (दिल रेखां) है जो दुरसत हो।

अकेला ही मंगल (हर तरफ से अकेला) शेर तो होगा मगर जंगल (बुध) के बगैर शेर होगा। या बकरी (बुध) की जगह खांड (मंगल ख़ुद मंगल की चीज) खाने वाला पालतु शेर होगां जिसमें शेर की शेरी या बकरी के खून से पैदा हुइ हुइ खूंखारी न होगी। ऐसे अकेले मंगल की शेरी या बकरी की तासीर का फैसला ख़ाना नंबर 4 के ग्रह करेंगे।

मंगल का सनीचर से ताल्लुक

(1) मंगल सनीचर मुशतरका का खास असर इसी अरमान में आगे दर्ज है।

(2) राहु केतू दोनों ग्रह सनीचर का स्वभाव रखते हैं। या सनीचर में नेक व बद दोनों ही तरफ चल जाने की ताकत होती है। लेकिन मंगल ऐसा नेक और ऐसा साफ है कि इसमें अगर जरा भी बुराई की तरफ चलाने की उकसाहट हो जावे तो फिर पीछे न हटेगा और अगर कोई जरा सी शरारत या बुरा असर करने वाला मंगल का साथी हो जावे। तो मंगल अपना सारा ही जोर उसे दे देगा। यानि अगर मंगल के साथ सनीचर आ मिले तो मंगल ख़ुद तो बुध की तरह खाली ही हो जाएगा। लेकिन सनीचर की ताकत दोगुना कर देगा। सनीचर बीनाई का मालिक है। मगर इस नजर से पहाङ फट जावे की ताकत का मालिक मंगल है। नजर खराब हो गयी सनीचर का असर होगा। नजर लग गयी मंगलबद का असर होगा।

सामने आये हुए को पहचान लेना। लिखे को देख कर पढ लेना ये सनीचर की ताकत है। मगर दिमाग के हाथी राहु की सवारी करके एक जगह बैठे ही सैकड़ों मीलों की खबर को देख..............आना मंगल की ताकत है

मंगल का केतू से ताल्लुक

दो केतू (एक असल केतू दूसरा ऊंच मशनोई केतू यानि शुक्र सनीचर मुश्तरका अरमान नंबर 113A मशनोई ग्रह) इकट्ठे ही मुश्तरका या बाहम द्रुष्टी पर हों तो मंगल दो गुना नेक होगा।

मंगल का राहु से ताल्लुक

राहु तो मंगल का अपना ही हाथी है। जिस का मंगल ख़ुद महावत है। लेकिन अगर राहु (हाथी) मंगल (शाही महावत) से दूर हो जावे तो ये हाथी अपने महावत को उसके बाजू (मंगल) से पकड़ेगा। यानि मंगल और राहु की दुश्मनी का सबूत इन्सान के बाजुयों की तकलीफ या नाभी के दुख पेट की खराबियां पहला सबूत होंगी। मंगल राहु मुशतरका मुकम्मल हाथी की सवारी (लालकिताब सफ़ा 76 जुज 4) होगीं राजा होगा। मगर उल्ट हो जाने पर यही राजा या हाथी अपनी ही फौज को मार देता है। गंदा हाथी होगा।जबकि इसमें मंगल राहु मुशतरका तो हों मगर हों उन घरों में जहां कि मंगल या राहु नीच होवें।

मंगल सनीचर

(दोनों ग्रहों की मुशतरका औसत आमदन 18 रूप्ये माहवार होगी। जब मंगल सनीचर इकट्ठे हों या एक दूसरे को देख रहे हों तो दो जुदे जुदे ग्रहों की बजाये सिर्फ एक ही सनीचर का ग्रह गिना जाएगा। मंगल ख़ुद बुध की तरह अपनी तमाम ताकत सनीचर को देकर ख़ुद सिफर हो जायेगा या ऐसे शख़्स का बड़ा भाई (मंगल) बुध की तरह खाली हो जायेगा या मंगल सनीचर मुश्तरका कुण्डली वाले का भाई इस से हर हालत में कम होगा। कुण्डली वाले के मंगल के दूसरे दौरा में मंगल सनीचर दोनों ग्रह दो डाकू और एक ही असूल के गिने जायेंगे। या ऐसे शख़्स का घर डाका मारने के काबिल (दौलतमंदी में) होगा या हो सकता है कि ऐसे शख़्स के घर पर डाके के वाक्यात हो जावें। डाका जाहिरा के इलावा (सनीचर की पोशीदा ताकत का नतीजा) ऐसे शख़्स को हो सकता है कि साहूकारा या मुतलका दुनिया में सिर्फ ऐतबारी चाल पर लेन देन में बरबाद करें और वो शख़्स अचानक मोटे मोटे नुकसान देखे।

ये दोनों मुशतरका ग्रह मुंदरजा जैल वाकयात के दिन से ऊपर का दिया हुआ असर देना शुरू करेंगे। यानि इनका असर उस खाने का जिसमें कि वो बैठे हुए हों जाहिर होने से पहले अपनी निशानी जरूर देगा। निशानी उस दिन होगी जब मंगल या सनीचर दोनों ही तख़त की मालकीयत के हिसाब या राशि नंबर के ग्रह बोलने के वकत इकट्ठे आ होवें। यानि जब वो इस ढंग पर आकर मिलें तो जिस खाने में वो कुण्डली में लिखे हैं। उस ख़ाना के नीचे दी हुइ चीज का वाक्या होगा। जो उनके असल मिलाव का सबूत देगा।

जनम कुण्डली में हों ख़ाना नंबर	कौन से वाकया से निशानी देंगे	
1	जिस दिन ऐसा शख़्स राजदरबार में कारोबार शुरू करे दोनों ग्रह मिले हुए असर देंगे।	मंगल
5	जिस दिन ऐसे शख़्स के यहां औलाद पैदा हो तो असर शुरू हो जायेगा।	सूरज
2	जिस दिन ऐसे शख़्स का ससुराल का ताल्लुक बन जावे या शादी होवे बृहस्पत से मुश्तरका	शुक्कर
7	स्त्री से स्त्री ताल्लुक (भोग) होवे।	शुक्कर
9	जिस दिन ऐसे शख़्स के गृहस्त में यज्ञ लंबा चौड़ा आडंबर मानिद मेला हो मगर बहैसीयत दान यज्ञ बजुरगों से मुतलका हो।	बृहस्पत
12	जिस दिन ऐसे शख़्स के गृहस्त में यज्ञ लंबा चौड़ा आडंबर मानिद मेला हो मगर बहैसीयत दान यज्ञ ख़ुद जाती मुतलका हो।	बृहस्पत
3	जिस दिन उसकी लड़की की शादी (राहु ससूराल) (ऊंच ख़ाना नंबर 3) या वो लड़की ऋतूवान होवे। (माहवारी)	बुध
6	जिस दिन उसकी लड़की की शादी(बुध लड़की) (ऊंच ख़ाना नंबर 6) (खून में) जवान होवे।	बुध
4	जिस दिन खेती की जमीन आवे या घोड़ी बच्चा (बछेरी मादा बच्चा) देवे। चंद्र मंगल ख़ाना नंबर 10	चंदर
6	जिस दिन छिपकली जिस्म पर पांव की तरफ से (ऊपर सिर की तरफ को चढ जावे) या कुत्ती (कुत्ते की मादा कुतिया) बच्चे देवे। उसके घर में या उसके घर के सामने में।	केतू
10	जिस दिन मकान में दिन के वकत (रात का नहीं) सांप का वाक्या होवे। मगर सापं मार कर मुर्दा न किया जावे। सिर्फ निशानी का होगा डंग नहीं मारा करता।	सनीचर
11	जिस दिन अपने बाप बाबा की तमाम चीजों के ऐवज में ख़ुद साखता हर इक चीज पैदा कर लेवे। इस ख़ाना में दोनो ग्रहों का होना मंदा फल देगा। साधु के घर चोर होंगे। माकूल आमदन फिर भी करजाई। अगर जरद रंग का उपाय करेंगा। केतू का उपाय मुबारिक और राहु का सबसे उत्तम होगा। नीलम/राहू उत्तम फल देगा। हीरा (बुध जो मंगल का दुश्मन) जहमत कर्जा पैदा करेगा। अर्गवानी (सूरज) सब कुछ की तबाही करेगा। सूरज सनीचर का दुश्मन है जायदाद घटावे।	सनीचर

मंगल का सूरज से ताल्लुक

सूरज के बगैर मंगल सिवाये मंगल बद के और कुछ न होगा। जहां सूरज होगा मंगल का असर हंमेशा मंगल नेक का होगा। जब मंगल को सूरज की मदद न मिली। मंगल वही मौत का फरिश्ता ख़ाना नंबर 8 का मालिक होगा। सूरज भी जब मंगल से मिले तो ऊंच फल का होगा। मंगल तमाम मुतलका दुनिया में चमक और रौशनी है। चमक और रौशनी है ही उस वकत जब सूरज निकला हुआ होवे।

मशनोई मंगल नेक = सूरज बुध मुशतरका मंगल सनीचर-सनीचर के घर ख़ाना नंबर 10 में मंगल राजा होगा। जब तक कि कोई और ग्रह मंगल के साथ न हो। या मंगल को न देखता होवे। और न ही किसी दुश्मन ग्रह का ऐसा मंगल साथी ग्रह बन रहा हो। मगर मंगल के घर ख़ाना नंबर 3 में सनीचर निर्धन कंगाल (माल दौलत नकद न होगा मगर जायदाद जरूर होगी या उमदा हो सकती है) होगा।

अरमान नंबर 159

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
मंगल द्रुष्टी	1 खाली	दिमागी ख़ाना नंबर 8 सूरज से मुशतरका। हमला रोकने की ताकत। मतमइल मिजाज होगा।	मंगल बृहस्पत सूरज चंद्र बुध सनीचर दोनों ख़्वाह	1/7 7/1 1/1 1 या 1या 7	आ बैल मुझे मार के कामों के बुरे नतीजे। मगर कुण्डली वाले के अपने खानदान को मदद मिलती रहे। या वो उनको देता रहेगा।
मंगल बुध दोनोंकी	1 3 द्रुष्टी खाली	मंगल व बुध दोनों ही खाली होंगे। यानि दो भाई और दोनों ही कभी शाह कभी तंग हालत के होंगे। मगर उनकी बहन (बुध) लाखोंपति होगी।	मंगल	2	गृहस्थ में दूसरों की परवरिश के लिये (मगर ख़ुद अपने लिये की शर्त नहीं) धन दौलत का जरूर साथ रहे। स्त्री धन (औरत का अपने मां बाप से लाया हुआ)
मगल सूरज चंद्र	1 2 12	दलिद्री- आलसी- निर्धन			

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
मंगल	2	धन दहेज साजो सामान	मंगल	3	आ बैल मुझे मार के कामों
		वगैरह। ला.की. 150/15 व	बृहस्पत	या	के बुरे नतीजे। मगर
		163/20 व 43/10 व	सूरज या	7	कुण्डली वाले के औरत के
		164/25 तरक्की पकड़े	चंद्र		मदद होती रहे। या वो
		या तरक्की देवे। किस्सा	बुध या	3	उनको देता रहेगा।
		कोताह दूसरों की मदद	सनीचर	या	
		करे तो आमदन बढे वर्ना	दोनों	7	
		घटे। मंगल बद ख़ाना नंबर	मंगल	3	आ बैल मुझे मार के कामों
		2 269-3	बुध	9/11	के बुरे नतीजे। औरत
मंगल	3	दिमागी ख़ाना नंबर 17			खानदान को मदद
		अदल या मुनसिफ			मिलती रहे।
		मिजाजी। बृहस्पत से	मंगल	3	शादी और औलाद में
		मुशतरका। किसी पर	शुक्कर	3	गड़बड़ हो।
		ज्यादती होती न देख सके।	बुध	3	
		मंगल बद ख़ाना नंबर 3	मंगल	3	दौलत के रंज व गम बहुत
		ला.की. 268/2 व 280/8	बुध	3	देखे।
मंगल	3	आ बैल मुझे मार के कामों	मंगल	3	ससुराल ख़ुद दौलतमंद हों
बृहस्पत	9/11	के बुरे नतीजे। मगर	बृहस्पत	9/11	और दौलत देवें।
या सूरज		कुण्डली वाले के अपने	मंगल	3	कुदरत की तरफ से
या चंद्र		खानदान को मदद	सनीचर	9/11	सनीचर का बुरा असर मौतें
और बुध	9	मिलती रहे। या वो देता			वगैरह हरगिज न हों।
या		रहेगा उनको।	मंगल	4	मंगल बद नंबर 4
सनीचर	या ख़्वाह				मंगलीक। मां, नानी,
दोनों	11				सास, जनानी की उम्रों पर
.मंगल	3	ख़ुद अपने लिये उत्तम।			हमला करेगा। औलाद में
बृहस्पत	11	मगर रिश्तेदारों की मौतों			गड़बड़ ला.की. 215/17
		से तंग और दुखिया होवे।	मंगल	4	माता बचपन में गुजर जावे।
			बुध	6	वर्ना दोनों दुखिया

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
मंगल	4	औलाद के विघन जरूर	मंगल	7	औलाद दर औलाद गृहस्थ
पापी ग्रह	9	होंगे। मामु व ससुराल को	शुक्कर	1	बढे परिवार। दौलत का
		खा पी कर तबाह करे।			भण्डार और हर तरह से
		मौतों का पलेगी चूहा होगा।			सुख हो।
मंगल	4	हौसला व इज्जत बाकमाल	मंगल	1/7	आ बैल तूं मुझे मार के
चंद्र	3	हो। शरारत का माकूल	बृहस्पत		कामों के बुरे नतीजे। मगर
		जवाब देने वाला होवें।	सूरज या	1/7	कुण्डली वाले के अपने
मंगल	4	दोनों ग्रहों का पूरा मंदा	चंद्र और बुध या		खानदान को मदद होती
बुध	12	फल। मौतों और गरीबी का	सनीचर या ख़्वाह		रहे। या वो देता रहेगा
		मारा हुआ। बेवकूफ सा होवे।	दोनों	7	उनको।
मंगल	4		मंगल	8	सबसे छोटा भाई जब 8 वर्ष
बद मय	चंद्र	ला. की. 270/8			में हो तो फिर कोई और
मंगल	4	माता बचपन में गुजर जावे।			भाई ना हो या ना रहे। तदूंर
चंद्र	6	वर्ना दोनों दुखिया। मंगल			बरबादी की निशानी हो।
		बद नंबर 5 ला.की. 268/1,			दिमागी ख़ाना नंबर 8
		269/3, 281/7			सनीचर से मुशतरका।
मंगल	5	कायम तो मुतमइल			लाख मुसीबत मगर काम
		मिजाज। पूरी शातिं वाला			को न छोडे कामयाबी हो
		होगा। मंगल बद तो नजर			न हो।
		से ही तबाह करे।	मंगल	8	माता बचपन में ही गुजर
मंगल	6	बहिन भाई मौत के यम।	बुध	6	जावे। वर्ना दोनों दुखिया।
बुध	12	मंगल का फल रद्दी होवे।			ला.की. 281/8
मंगल	बद 7	ला.की. 270/7	मंगल	9	अगर कायम तो देखों
मंगल	6	माता से पहले ही बचपन			बृहस्पत में अरमान नंबर
बुध	8	में गुजर जावे। वर्ना दोनों			ला.की. 124 और 162/14
लेकिन	सूरज	दुखिया।			निहायत मुबारक फल।
चंद्र का	ताल्लुक				मंगल बद तो पैदाइश में
न हो।					भेद। शुतर बेमुहार के
					भेद।

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
		किस्सा वाला तुखम बद	मंगल	10	अहल सरकार से फायदा
		कहलाया जा सकता है।	चंद्र	4	उठावे। बारौब गुस्से वाला
		ला.की. 162/15-16 व			होवे।
		258/14	मंगल	10	आंख से काना होवे।
मंगल	10	सनीचर के घर मंगल राजा	चंद्र	5	
		होगा। जब से और जब तक	मंगल	10	पोते पड़ोते वाला(उम्र लंबी
		मंगल को कोई और ग्रह न	सनीचर	3	ख़ुद अपनी सांप कौवे की
		देखता हो। वालदैन भी			उम्र) जायदाद कायम मगर
		मानिंद राजा हों। बशर्तेकि			नकद दौलत में निर्धन।
		मंगल अकेला हो। वर्ना	मंगल	10	पोते पड़ोते। ख़ुद अपनी
		दुश्मन ग्रहों के साथ	सनीचर	3	उम्र बहुत लंबी जायदादी
		उनके वक्त से और वक्त	चंद्र	4	फल बहुत मंदा मगर धन
		तक सब कुछ उल्ट होवे।			कम होने की शर्त न होगी।
		ख़ुद नर औलाद के लिये	मंगल	बद मय	
		बड़ी उम्र तक तरसे या	सनीचर	10	ला.की. 270/8
		औलाद देर बाद होवे।	मंगल	12	अपनी माता से पहले ही
मंगल	10	आंख से काना हो।	बुध	8	बचपन में गुजर जावे।
सूरज	4		मगर	चंद्र या	
मंगल	10	लड़के पर लड़का मरता	सूरज	का	
सूरज	6	जावे।	ताल्लुक	न होवे।	

अरमान नंबर 160-161

मंगल बद

ये ग्रह हर इक बदी का मालिक, तुखम बद, शुतर बेमुहार हर काम टेढा (तुखम की नाली या पेशाब गाह तक भी न सीधी) चंद्र के समुंद्र को जला देने वालां (मंगल बद है ही तब जबकि मंगल हो चंद्र के ख़ाना नंबर 4 में। लेकिन मंगल के घर ख़ाना नंबर ३ में चंद्र न हो। या मंगल का चंद्र या सूरज की मदद न मिली होवे) बुराई के लिये हसद व कीना से पेट भरे हुए (ऊंट की पानी से या चंद्र से मुहब्बत

नही। रेत का दोस्त है या बुध का ताल्लुकदार है।) हर इक के पांवो में सनीचर के सांप की रस्सी का फंदा डालने वाला और लकड़ियों की बजाये (सनीचर ख़ुश्क लकड़ी माना है और इन्सान को मार कर लकड़ी की तरह सुखा लेने वाला मंगल बद है।) आदमियों के जिंदा जिसमों को आग में झोकने वाला और एक दो तीन की बोली पर बात खतम करने वाला तीन आंख का फरिश्ता अजल माना है। सनीचर के मारे हुए तो बचते देखे गये हैं। मगर मंगल बद का मारा हुआ फिर जिंदा होता न देख न सुना गया।

मंगल नेक से फर्क

मंगल नेक जब कुण्डली में हो तो वो ग्रह सबसे पहले इन्सानी क़िस्मत में उस ग्रह की चीजों से नेकी शुरू करेगा (यानि अपने असर के वकत उसकी निशानी होगी) जो ग्रह कि सबसे ऊंच और नेक होवे। मगर मंगल बद सबसे पहले निहायत मंदे ग्रह से मिल कर उसके मंदे असर की मुतलका चीजों से अपने आने की निशानी देगा।

सनीचर से फर्क

जान से मार देने वाली जहर या तेज हथियार से फौरन मर जाना बड़े भारी बोझ (मानिद पहाड़) के नीचे दब कर अचानक दम के दम मर जाना या ऐसी मौत मर जाना कि ख़ुद मरे मगर बाद वालों की मौत का बहाना न होवे वगैरह सनीचर के काम हैं। कुंद हथियार (पंजाबी खुण्डा) से मर जाना या मारना। लंबी बीमारी से गल गल सड़ सड़ कर मरना। मौत दर मौत देख कर और आखिर पर ख़ुद भी दुखिया होकर मरना या टटोल टटोल कर और दुख दुख कर मर गया है। या अभी जिंदा पहचान कर फिर मारना। ख़ुद मरना और बाद वालों के लिये भी मौत का बहाना खड़ा कर जाना वगैरह मंगल बद के ही काम हैं।

बनावट या बुनियाद

क) काग रेखा रेखा मंगल बद की पूरी निशानी होगी।

ख) सूरज के बगैर मंगल को मंगल बद ही गिनते हैं। सूरज सनीचर इकट्ठे (सांप बंदर की लड़ाई) खाली दुनिया बुध आकाश का तमाश्वा न सिर्फ दूसरों का बल्कि ख़ुद अपना घर फूंक तमाश्वा देखे मंगल बद का असर होता है। अगर बुध कायम या दुरसत हो तो उस वकत ख़्वाह मंगल ख़ाना नंबर 4 में ही क्यूं न हो। पूरा नेक मंगल होगा।

2) मंगल के साथ - मंगल की राशि (ख़ाना नंबर 1-8) में सूरज न हो या सूरज किसी दूसरे घर में (ख़ाना नंबर 6-7-10 या 12) में हो या सूरज अपने किसी दुश्मन ग्रह के ताल्लुक से (शुक्कर ख़ाना नंबर 7, राहू 5-9, केतू 3-6 यानि उन तीनों ग्रहों में से किसी के साथ इस जगह दिये हुए घरों में सूरज भी हो जावे) खराब असर का हो रहा हो या सूरज की तरह मंगल को चंद्र की मदद भी न मिल रही हो तो मंगल को मंगल बद ही गिनेंगे।

3) मंगलीक ख़ाना नंबर 4 का मंगल बद होता है। जिसका बुरा असर चारों औरतों (कुण्डली वाले की मां, नानी, सास जनानी) पर मौत तक होगा। लेकिन अगर ख़ाना नंबर 8 में या ख़ाना नंबर 4 में चंद्र या सूरज या बृहस्पत हो तो ख़ाना नंबर 8 मौत का घर न होगा यानि कुण्डली वाले की उम्र जरूर लंबी होगी। बाकी बातों में बेशक मंगल बद का धुंया आता रहे। जो बाद में कोई गिनने गिनाने वाला न होगा। फर्जी बेमायनी सा अंधेरा जमाना होगा।

4) मंगल को सूरज बृहस्पत चंद्र की मदद भी मिल गई होवे। लेकिन अगर सनीचर या मंगल के दुश्मन ग्रहों (बुध केतू लालकिताब सफ़ा 105) का साथ हो जावे तो सब कुछ मिला मिलाया मंगल बद हो जायेगा।

5) दों पापी (सनीचर केतू, सनीचर राहु) या दो दुश्मन ग्रहों (बुध केतू मुशतरका) के साथ मंगल नेक असर का होगा और दोनों दूसरों से उनका नेक काम लेगा।

6) मंगलबद का बुरा असर लोगों पर ताल्लुकदारों पर भाई बंदो या मुतलका दुनियादारों पर होता है। मगर ख़ुद कुण्डली वाले पर कभी बुरा असर नहीं मानते। यानि वो लोगों के लिये बुरा असर देगा। मगर ख़ुद अपने लिये बुरे असर वाला न होगा।

7) मंगल बद और मंगल नेक (हर इक की बनावट जुदी जुदी जगह लिखी गयी है।) बामुकाबिल हों तो मौतें न होंगी। कारोबार रूप्या पैसा वगैरह बरबाद होगा।

8) मंगल बद नरग्रहों के घरों में वाक्या हो या मंगल बद और नर ग्रह (सूरज बृहस्पत मंगल नेक) बामुकाबल हों तो अपने हकीकी रिश्तेदारों अपने खून जाती के ताल्लुकदारों और ख़ुद अपनी जान पर भी मंगल बद का बुरा असर होगा।

9) मंगल बद हो मखनस मंय पापी ग्रहों (बुध सनीचर) के बामुकाबल या मखनस ग्रहों के

घरों में तो दुनियादारों के बेरूनी रिश्तेदारों (हकीकी नहीं वैसे आम करीबी हो सकते हैं) बुध सनीचर की मुतलका ख़ुद जाती चीजों के माल व असबाब पर मंगल बद का असर माना है। इज्जत दौलत (बीमारी वगैरह) या नीच सनीचर होगा। मंदे हाल।

मंगल बद का इलाज

1) शुतर बेमुहार के कीना के नुकस इसके दिल की बात इसके नाखूनों से जाहिर कर देंगे। क्योंकि इसका दिल या चंद्र नहीं होता। या ऊंट को इसके पांवो के नाखून केतू (कीना) सजा दिलाते हैं या वो केतू के बुरे असर को बरबाद करने के इलाज से काबू होगा या चंद्र की उपासना (पूजा) मदद देगी। यानि चंद्र जिस घर का कुण्डली के मुताबिक हो वही इलाज होगा।

2) चंद्र को शिवजी माना है (लाल किताब सफ़ा 118 ग्रह नंबर 3) मंगल बद को भी शिवजी माना है। (लालकिताब सफ़ा 281 नीचे की दो सतरें 272 ऊपर की दो सतरें) यानि चंद्र व मंगल बद दोनों ही शिवजी माने गये हैं। चंद्र उम्र का मालिक है और हर इक पर मेहरबान होगा। मंगल बद सब के लिये मौत का भण्डारा लिये फिरता है या जहां चंद्र होगा वहां मंगल बद न होगा। जहां मंगल बद होगा चंद्र न होगा। इसी असूल पर मंगल बद का इलाज चंद्र की पूजना या मदद ढूंढना मुबारिक होगा।

अरमान नंबर 162

बुध

(लालकिताब सफ़ा 277 बुध के ग्रह से मुतलका चीजों की तसवीर) पीले (बृहस्पत) नीले (राहु) मुशतरका सब्ज (बुध) रंग के चौडे पत्तों के

हरे (जानदार सूखा हुआ नहीं) दरखतों पर गले में लाल कंठी वाला तोता (लाल कंठी वाला तोता बृहस्पत की नकल करेगा यानि मंगल बुध से बेशक सोना ना होगा जो बृहस्पत की मलकीयत है। मगर बृहस्पत की नकल या मलम्मा जरूर होगा। खाली टैं टैं करने वाला तोता न होगा।) जो बृहस्पत दोनों जहानों के मालिक (हर दो हवा) गुरू की आवा ज की नकल अपनी 35 के हरफों से रंग बिरंग के परों वाली मैना को सुना रहा है। और जिसके नीचे दूध देने वाली मगर मेंगने डाल कर मुंह पर दाढी लटकाये हुए पहाड़ी व मैदानी बकरा मगर बकरी (दुनिया में दूध देने वाला बकरा मौजूद होता देखा गया है। यानि इसमें बकरे के नर होने के चीजें भी मौजूद और दूध भी देवे।) भेड़ों की तरफ देख रहा है। परिंदो में चमगादड़ के नाम से भी ये बुध जाहर होता है। ग्रह चाल में तोते की 35 में कुण्डली के ख़ाना नंबर 9 को उड़कर अपना भेद खोल गया है। (अरमान नंबर 60 लालकिताब सफ़ा 40)।

ये बुध का भेद इन्सान और हैवान में अकल का दायरा है। अगर नर्म हुआ तो इतना कि कलई का नाम पाया। अगर ताकत और क़िस्मत पकड़ी तो हीरा सब्ज रंग जबान पर रखते ही दम बाहर कर देने वाला हुआ। गोल अण्डा बना तो लेटा हुआ तो नर्म था मगर खड़ा अण्डा सखत इतना कि मामूली जोर से तोड़ा न गया। मंगल खून (तमाम मुतलका दुनिया) ने बुध की लड़की को औरत का नाम भी दिया। कि मां पहले थी या धी(लड़की) की दंत कथा हुइ। सूरज के आकार के बुध के दायरा की हदबंदी (लड़के को तड़गी केतू को बुध को ख़ाना नंबर 6 में बांध कर बच्चे के नर हिस्सा की मजबूती) को मालूम करने के लिये सारे आकाश में हवा घूमने लगी। मगर बुध के अकल के दायरा के महत्त इर्द गिर्द की गोलाई की जांच भाल का चक्कर चलने लगा। आसमान व पाताल के दरम्यान आकाश में न मालूम उस मालिक की बनायी हुइ कौन कौन सी चीजें जाहरा व बातन में छुपी छुपायी रखी हैं। एक तरफ दिल को मायूस करने वाला खयाल कि :-

"पड़े भटकते हैं लाखों दाना, करोड़ों पंडित हजारो सयाने।
जो खूब देखा तो यार आखिर, ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने।"

मवज्जन है तो दूसरी तरफ इशारा है। किः-

जिधर देखता हू उधर तूं ही तूं है।
कि हर द्रौ में जलवा तेरा हू बहू है।

गो तूं (वो मालिक) ख़ुद नहीं है। मगर तूं का जलवा या करिश्मा या अकस जरूर है। यानि क़िस्मत को अपनी मर्जी के मुताबक लिख तो नहीं सकते मगर लिखे को पढने के लिये कोशिष जरूर है। अकल व सुराख बरतने और कुरेदने से घटता नहीं । इल्लत मलौल का नतीजा रूह बुत का झगड़ा गो होता नहीं (रूह बुत इकट्ठे चलते हुए को हजरते इन्सान माना कहते हैं।) मगर होता भी जरूर है। (वकत रहलत चल जाने के वकत) ये होते हुए भी न होना या बुध का होना कहलाता है।

मां पहले कि धी

लड़की को बुध और माता को चंद्र माना है। माहवारी अय्याम का खून लड़की को माता बनाता है। नर बच्चे में बच्चा पैदा करने के मादे के दिन से लड़के (केतू) से बाप (बृहस्पत) कहलाया। केतू व बृहस्पत दोनों दरवेश एक ही हैं। केतू पाताल का मालिक था (ख़ाना नंबर 6) तो राहू आसमान का मालिक (ख़ाना नंबर 12) हुआ। दोनों की दरम्यानी खाली जगह बुध ने संभाल ली पहले आकाश हुआ या बुध लड़की बना तो बाद में पानी आया (चंद्र हुआ) या माता बनी। मतलब ये कि अगर बुध नेक हुआ तो माता धर्मात्मा और नेक हुइ। अगर बुध बिगड़ा तो अकल मारी गयी तो चंद्र रद्दी हुआ और माता गंदी बनी और सनीचर की सांपनी अपने ही बच्चों को खाने लगी।

बुध का दूसरे ग्रहों से ताल्लुक

द्रुष्टी में साथी - कुण्डली के खानों में अगर बुध पहले घरों में हो तो बुध का असर प्रबल होगा चंद्र पर।

कुण्डली के खानों में अगर चंद्र पहले घरों में हो तो चंद्र का असर प्रबल होगा बुध पर

एक ही घर में मुशतरका बुध व कोई और ग्रह बुध का फल रद्दी होकर दूसरे को बढा देगा।

हर तरह से खाली व अकेला बुंध दुश्मन ग्रह के घर की पूरी नेक हालत पैदा कर देगा।

ii) बृहस्पत के साथ राहु हो तो बृहस्पत चुप होगा। मगर बृहस्पत के साथ या बृहस्पत की द्रष्टि में बुध हो तो बृहस्पत का नाश होगा। राहु के साथ बुध हो तो दोनों बुध राहु ऊंच और केतू के साथ हो बुध तो बुध घर का मगर केतू नीच होगा। यानि केतू ऊंच होगा बृहस्पत के साथ।

iii) आम तौर पर जिस कुण्डली में केतू कायम या ऊंच हो इस कुण्डली में बुध/राहु नीच या नरग्रहों/स्त्री ग्रहों से घिरा हुआ होगा। (केतू प्रबल)

2) जिस कुण्डली में बुध कायम या ऊंच हो उस में केतू उस में केतू नीच दुर्बल (कमजोर) होगा। लेकिन अगर-

3) दोनों ही एक ही हालत या ताकत के हों तो लड़का लड़की (बुध केतू) दोनों ही एक ही ताकत और हालत के होंगे। या जब लड़का और लड़की एक ही बटन से इकट्ठे पैदा हों तो लड़का केतू बरबाद या खतम होगा।

4) अगर केतू के घर ख़ाना नंबर 6 में या केतू के साथ बुध होवे तो केतू नीच होगा। बुध नीच न होगा। बल्कि ऊंच होगा।

5) अगर राहु ख़ाना नंबर 12 में बुध के साथ हो तो बुध नीच। लेकिन राहु ऊंच होगा।

6) खत AB बुध की रेखा है। जो शुक्कर के बुर्ज में जा निकलती है। हाथ में यही खत सूरज की तरक्की रेखा कहलाता है।

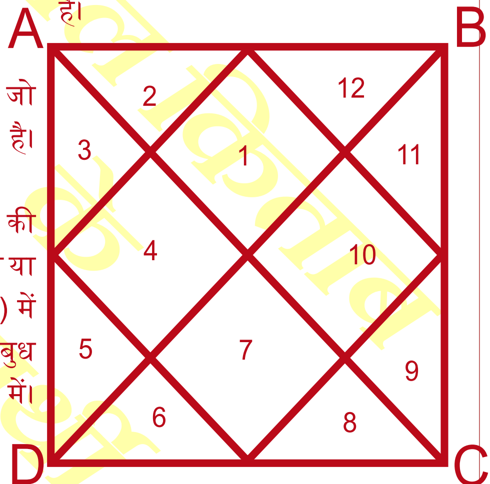

7) खत DC बृहस्पत की रेखा है जो चंद्र से बृहस्पत में जा निकलती है। और पितृ रेखा कहलाती है।

8) खत BA के नीचे की तरफ की मशलस के ABC के खानों में सूरज या बुध ख़्वाह किसी भी घर (3 से 8) में इकट्ठे हों या अकेले अकेले हों। बुध मदद देगा सूरज को ऊंच होने में। यानि सूरज नेक होगा।

9) खत BA के ऊपर की तरफ की मशलश A D B के खानों में सनीचर या बुध ख़्वाह इकट्ठे ख़्वाह जुदा जुदा किसी भी घर में हों (1-2 व 9 से 12) बुध मदद देगा सनीचर को ऊंच फल देने के लिये। या सनीचर नेक होगा।

10) ऊपर की मशलशो में अगर सूरज हो जावे सनीचर वाली मशलशो में और सनीचर हो जावे सूरज वाली मशलशो में तो ऊपर के हिसाब से बुध का ताल्लुक न लेंगें और न ही इस हालत में जब सनीचर मुशतरका हों।

11) मशलश CAD ख़ाना नंबर 1 से 5 और 12 वें ख़ुद बृहस्पत ऊंच होगा और सूरज को मदद देगा। ख़्वाह सूरज किसी भी घर में वाक्या हो।

12) मशलश CAD में (ख़ाना नंबर 6 से 1) बृहस्पत ऊंच होगा और मदद देगा सनीचर को ख़्वाह

सनीचर कुण्डली में 1 से 5 व 12 किसी भी घर में होवे।

13) बुध जिस राशि में बैठा होवे। अगर उस राशि के घर का मालिक ग्रह धन राशि नंबर 9 में जा बैठे तो शादी और गृहसथ में इस ग्रह के फल के मंदे नतीजे होंगें जो ग्रह ऐसी हालत का नंबर 9 में बैठा हो (ख़्वाह वो बुध का दोस्त हो ख़्वाह दुश्मन)। इस मुसीबत के वकत राहु केतू का उपाय इनके अपने अपने दोस्त ग्रहों का मंदा फल हटा कर नेक कर देगा यानि बुध या सनीचर या केतू के लिये राहु का उपाय, शुक्कर या राहु के लिये केतू का उपाय, चंद्र व सूरज बृहस्पत के लिये मंगल नेक का उपाय, मंगल के लिये बृहस्पत का उपाय मगर बुध के लिये अपने फल पर ये शर्त न होगी। (अरमान नंबर 6 बुध नंबर 9 देखें)

बुध का अण्डा

अकल का बीज नहीं मगर अकल की नकल ही बुध का अण्डा है। जो कुण्डली के ख़ाना नंबर 9 में पैदा होता है। ग्रह कुण्डली में।

खङा अण्डा (मैना-आम बकरी) बुध कुण्डली के ख़ाना नंबर 2,4,6 में होगा

लेटा हुआ अण्डा (भेङ) बुध कुण्डली के ख़ाना नंबर 8-10 में होगा

गंदा अण्डा बुध कुण्डली के ख़ाना नंबर 12 में होगा

आम हालत (मां धी) बुध कुण्डली के ख़ाना नंबर 1-7 में होगा

चमगादङ (किसी चीज का साया या अकस मगर बुध कुण्डली के ख़ाना नंबर 3-9 में होगा

असल चीज जिसका साया या अकस है पता न लगे कि वा कहां है)

दुध वाला बकरा मगर बकरी दाढी वाली बुध कुण्डली के ख़ाना नंबर 5 में होगा

चौङे पत्तों वाला दरखत। मैना को उपदेश व लाल कण्ठी वाला तोता। बृहस्पत की नकल बुध कुण्डली के ख़ाना नंबर 11 में होगा

बुध की खाली नाली

हर तीसरे घर के ग्रह यानि 1-3 कभी बाहम नहीं मिल सकते। इसलिये बाहम असर भी नहीं मिल सकते। लेकिन अगर बुध की नाली से कभी मिल जावें तो वो बाहम बुरा असर न देंगे। अगर नेक हो जावें तो बेशक हो जावें।

2) शुक्कर बुध दोनों इकट्ठे ही मुबारिक हैं और ख़ाना नंबर 7 दोनों का पक्का घर है। लेकिन जब जुदा जुदा हों और अपने से सातवें पर हों तो दोनों का फल रद्दी। लेकिन जब तक

इस सातवें की शर्त से दूर हों मगर हों दोनों जुदा जुदा तो बुध जिस घर में बैठा हो। वो (बुध) उस घर के तमाम ग्रहों का और उस घर में उनके बैठे हुए होने का अपना अपना असर शुक्कर के बैठे होने वाले घर में नाली लगा कर मिला देगा। यानि दोनों घरों का असर मिला मिलाया हुआ इकट्ठा ही गिना जायेगा। फर्क सिर्फ ये हुआ कि शुक्कर अपने घर का असर बुध बैठा होने वाले घर में नहीं ले जाता। मगर बुध अपने बैठा होने वाले घर का असर उठा कर शुक्कर बैठा होने वाले घर में जा मिलाता है। किस्सा कौताह जब कभी शुक्कर के घर का राज हो या राशि नंबर के ग्रह बोलने का वकत आ जावे। तो शुक्कर बैठा होने वाले घर में बुध बैठा होने वाले घर का असर साथ मिला हुआ गिना जायेगा। मगर बुध बैठा होने वाले घर के तखत की मालकीयत या राशि नंबर के घर के ग्रहों के बोलने के वकत अकेले ही उन ग्रहों का होगा। जिन में कि बुध बैठा हो। शुक्कर बैठा होने वाले घर के ग्रहों का असर बुध वाले घर में मिला हुआ न गिना जायेगा।

बुध शुक्कर के इस तरह असर मिलाने के वकत अगर बुध कुण्डली में शुक्कर से बाद के घरों में बैठा हो तो बुध का अपना जाती असर बुरा असर होगा और अगर बुध कुण्डली में शुक्कर से पहले घरों में बैठा हो और उठा कर अपने बैठा होने वाले घर का असर ले जावे शुक्कर बैठा होने वाले घर में तो अब बुध का लाया हुआ असर में जाती अपना असर बुरा न होगा। बल्कि भला ही गिना जायेगा। इस मिलावट के वकत अगर बुध वाले घर में शुक्कर के दुश्मन ग्रह भी शामिल हों तो शुक्कर इजाजत न देगा कि बुध अपना बैठे होने वाले घर का असर शुक्कर बैठा होने वाले घर में मिला देवे। यानि ऐसी हालत में बुध की नाली बंद होगी और शुक्कर को जब बुध की मदद न मिली तो शुक्कर अब बुध के बगैर पागल होगा। लेकिन अगर बुध के साथ वहां शुक्कर के दोस्त ग्रह हों तो शुक्कर कोई रूकावट न देगा। बल्कि बुध को जरूर अपना असर शुक्कर बैठा होने वाले घर में ले जाना पडेगा हो सकता है कि ऐसी मिलावट में राहु केतू दोनों ही शामिल हों। (ये हालत सिर्फ उस वकत होगी जब राहु केतू अपने से सातवें घर होने की वजह से बुध और शुक्कर भी आपस में सातवें घर पर होंगे।) तो मंदा नतीजा होगा। खास कर उस वकत जब बुध होवे शुक्कर से बाद के घरों में और साथ ही राहु या केतू का दौरा भी आ जावे और उधर राशि नंबर के घर बोलने वाले हिसाब से दूसरा भी बोल पडे तो ये वकत (जबकि इस मिलावट में राहु केतू शुक्कर बुध

के साथ मिल रहे हैं और राहु केतू का अपना उधर राज या राशि नंबर पर इकट्ठे होने का भी वकत है) कुण्डली वाले के लिये मारग अस्थान का भयानक जमाना होगा। लेकिन अगर ये शर्तें पूरी न हों या बुध होवे शुक्कर से पहले घरों में तो ये मंदा जमाना न होगा। मंदा जमाना सिर्फ राहु केतू के दौरा के वकत का होगा। शुक्कर या बुध के दौरा के वकत ये लानत न होगी।

इस बुध की नाली का खास फायदा मंगल से मुतलका है। बाज वकत मंगल को सूरज की मदद मिलती हुइ मालूम नही होती या चंद्र का साथ होता हुआ मालूम नहीं होता। इस नाली की वजह से मंगल को मदद मिल जाती है। और मंगल जो सूरज चंद्र के बगैर मंगल बद होता है। मंगल नेक बन जाता है। इसी तरह ही मंगल बुध बाहम दुश्मन हैं।

मंगल के बगैर शुक्कर की औलाद कायम नहीं रहती। बुध जब मंगल के साथ होवे। तो वो लाल कण्ठी वाला तोता होगा और ख़ुद उठकर और मंगल को साथ उठाकर शुक्कर से मिला देगा या शुक्कर की औलाद बचा देगा। जिससे कुण्डली वाला ला औलाद न होगा। ऐसी हालत में बुध या शुक्कर के बाहम पहले या बाद के घरों में होने पर बुध के जाती असर की बुराई की शर्त न होगी। भलाई का असर जरूर होगा। क्यांकि मंगल ने शुक्कर के दौरा के पहले साल में अपना असर जरूर मिलाना है। गोया बुध की नाली 100 फीसदी, 50 फीसदी, 25 फीसदी और अपने से सातवें होने की द्रुष्टी से बाहर एक और ही शुक्कर और बुध की बाहम द्रुष्टी है और ये है इसलिये कि शुक्कर में बुध का फल मिला हुआ माना जाता है। मिलावट में राहु के साथ होने के वकत जब शुक्कर ने बुध का बाहर ही रोक दिया तो शुक्कर में बुध का फल न मिला तो बुध के बगैर शुक्कर पागल होगा या शुक्कर ख़ाना नंबर 8 के असर वाला होगा। इसी तरह पर शुक्कर के बगैर बुध का असर सिर्फ फूल होगा फल न होगा यानि कौतबाह होगी तो मंगल की बच्चा पैदा करने की ताकत का शुक्कर को फायदा ना मिलेगा।

बुध के दांत

दांत कायम हों तो आवाज अपनी मर्जी पर काबु में होगी। गोया बृहस्पत की हवाई ताकत पर (पैदाइश औलाद) काबू होगा। मंगल भी साथ देगा। यानि जब तक दांत (बुध) न हों चंद्र मदद देगा। "जब दांत न थे तो दूध दिया् जब दांत (बुध) दिये तो क्या अन्न(शुक्कर) न देगा।" यानि बुध होवे तो शुक्कर की ख़ुदबख़ुद आने की उम्मीद होगी। लेकिन जब दांत आकर चले गये।

(और मुहं के ऊपर के जबाडे के) तो अब मंगल बुध का साथ न होगा न ही बृहस्पत पर काबू होगा या उस शख़्स या औरत के अब औलाद का जमाना खतम हो चुका होगा। जबकि ये दांत आकर चले गये या खतम हो गये। दांत गये दंत कथा गयी। बृहस्पत खतम तो लाऔलाद हुआ।

अरमान नंबर 163 से 165

सनीचर सूरज के बाहमी झगडे की तरह बुध बृहस्पत की खास दुश्मनी का मुफसिल जिकर अरमान नंबर 125 से 129 में लिखा है।

बृहस्पत राहु (जर्द * नीला) = बुध (सबज रंग) बुध कायम तो शुक्कर चंद्र और मंगल बद का बुरा असर न होगा

मंगल बद व बुध मुशतरका त्र सनीचर नीच फल का होगा।मंगल बुध मुशतरका = कण्ठी वाला तोता बृहस्पत की नकल कर लेगा। बुध अपनी नसफ म्याद तक जुदा असर जाहिर न कर सकेगा। मंगल को बुध मंगल बद बनायेगा। जब मंगल पहले ही बद हो। यानि सूरज की मदद मंगल को न हो। वर्ना बुध चुप होगा। खुफिया दुश्मनी करेगा।

बुध शुक्कर = मशनोई सूरज बुध सूरज मुशतरका का पूरा नेक असर औरत पर होगा।

बुध राहु बाहम दोस्त हैं। शुक्कर बुध की तरह जब इकट्ठे हों तो मुबारिक। अगर जुदा जुदा होकर द्रुष्टी में आ मिलें तो दोनों का ही फल रद्दी होगा। कुण्डली में जब बुध बाद के घरों में हो और बृहस्पत होवे बुध से पहले घरों में तो उम्र के पहले 34 साल तक बृहस्पत का असर नेक होगा। जिस दिन 34 साल के बाद बुध शुरू होगा बृहस्पत का असर मंदा हो जायेगा। अगर उल्ट हालत में हों तो नतीजा उल्ट होगा।

बुध शुक्कर का दोस्त है। लेकिन मंगल के साथ हो जावे तो शुक्कर को शेर के दांत दिखा देगा या शेर गाय पर हमला कर देगा। हालां कि मंगल शुक्कर दोस्त हैं। अकेला बुध हर तरफ से खाली। बगैर धूप जंगल होगा। देस परदेस की जिंदगी और लालच का सबब होगा। ऐसा बुध अपनी नसफ म्याद या 17 साल तक कोई भी बुरा या भला असर न देगा। मगर तजारत में फायदा ही रहे। राहु केतू जब अकेले ही हों और बुध किसी एक के साथ हो जावे तो मौत की निशानी होगी। खासकर जब बुध या राहु या केतु का दौरा और वकत होवे।

बुध का तमाम ग्रहों से ताल्लुक

ग्रह	सूरज	चंद्र- शूककर	बृहस्पत	मंगल	राहू	केतू	सनीचर
ताल्लुक होगा बुध का मानिद	पारा	दही में पानी A*	राख	शेर के दांत	हाथी का सूंड	कुत्ते की दुम	कलई

A* दही से पानी निकालना हो तो दही पर (शुक्र पर) कपड़ा (चंद्र) रख दें और ऊपर (कपडे के) राख (बुध) बिछा दें। दही खराब न होगा। बल्कि पानी सब राख पी जायेगी। यानि बुध चंद्र को खा लेगा। मगर शुक्कर को जरा भी खराब न होने देगा।

सूरज को अगर बंदर मानें तो बुध इसकी दुम होगा। लंगूर की दुम के काम मशहूर हैं। केतू कुत्ते की दुम ने कुत्ते को पागल किया। जिस कुण्डली में बुध नीच हो केतू का फल भी पागल कुत्ते की तरह मंदा होगा।

बुध का भेद

(अलफ) अरमान नंबर 181 के मुताबिक जब कुण्डली हर तरह से मुकम्मल हो और ख़ाना नंबर 1 का हिंदसा देकर हर तरह से बात खतम हो चुकी हो तो बुध का खास भेद या बुध की तबीयत देखने के लिये मुदरजा जैल असूल होगा।

9 ग्रह कुण्डली के किसी न किसी घर में ख़्वाह अकेले अकेले या अकेले अकेले घरों में ख़्वाह एक ही घर में कई एक या आइ इकट्ठे ही हों (राहु या केतू अपने से सातवें के असूल पर होने की वजह से दो में से एक जरूर बाहर रह जायेगा) तो हरएक की अपनी ताकत बामुजब अरमान नंबर 27 की मिकदार को ख़ाना नंबर के हिंदसा जिस में कि वो ग्रह बैठा होवे। जरब दे दे कर नौं ही ग्रहों के जवाब का मजमूया (जोड़) कर 9 पर तकसीम करें। अगर :-

1) बाकी कुछ न बचे तो बुध का स्वभाव उस कुण्डली के ख़ाना नंबर 5 में बैठे हुए ग्रह का होगा। अगर ख़ाना नंबर 5 खाली ही होवे तो जिस घर में सूरज हो और जैसा उस घर में वो (सूरज) हो वैसा ही बुध होगा।

2) अगर कोई न कोई कसरों का हिंदसा बच रहे तो उस कसर की मिकदार के लिये अरमान नंबर 27 में जो ग्रह मुकर्रर है। वह ग्रह कुण्डली में जहां बैठा हो। उस ग्रह की ताकत व स्वभाव का बुध होगा। ये स्वभाव बुध का जाती स्वभाव होगा। जैसा कि सनीचर का जाती स्वभाव। (अरमान नंबर 168 राहु केतू के सनीचर के पहले या बाद के घरों में होने पर) मुकर्रर है।

नाम ग्रह	बृहस्पत	सूरज	चंद्र	शुक्कर	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	केतू	मिजान
कुडली में जिस घर का है	4	3	6	5	5	3	12	2	8	
ग्रह की ताकत	6/9	9/9	8/9	7/9	5/9	4/9	3/9	2/9	1/9	45/9= 5
ख़ाना नंबर के हिंदसो को ग्रह की ताकत से जरब	24/9	27/9	48/9	35/9	25/9	12/9	36/9	4/9	8/9	219/9= $24\frac{3}{9}$

कुल मिजान 24 3/9 में से पूरे पूरे हिंदसे छोड़ दें तो 3/9 बाकी रहा। जो सनीचर की ताकत है। जो ख़ाना नंबर 12 में बैठा है। ये हुआ बुध का स्वभाव यानि बुध ख़ाना नंबर 3 में अकेला बैठा है। वो ख़ाना नंबर 12 में बैठे हुए सनीचर के स्वभाव का है और अरमान नंबर 168 के मुताबक ऊपर दी हुइ कुण्डली में (पहले घरों में राहु बाद में केतू और आखर पर सनीचर) सनीचर का जाती स्वभाव "खराब " फल का है। इसलिये जब बुध का वकत होगा सनीचर दोगुना मंदा फल देगा। क्योंकि बुध व सनीचर दोनों ही खराब स्वभाव के हैं।

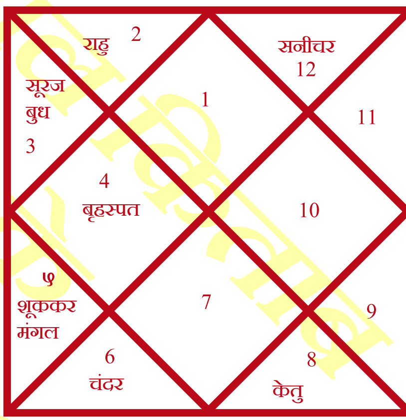

(बे) बुध का स्वभाव जिस ग्रह से मिलता हो उपाय उस ग्रह व बुध दोनों को मिला कर करना होगा।

2) ख़ाना नंबर 3 या 9 के बुध के लिये अरमान नंबर 178 में लाल गोली की मदद लेवें। मगर खयाल रहे कि अगर बुध नेक स्वभाव साबित होवे तो लोहे की बजाये शीच्चे की गोली लेवें। जिस पर या जिस में वो रंग करें या शामिल होवे जो रंग कि उस ग्रह का है। जिस ग्रह के स्वभाव का कि बुध ऊपर के ढंग का साबित हुआ होवे।

ख़ाना नंबर 12 के बुध के लिये नष्ट ग्रह वाले की मदद (अरमान नंबर 62/94 बजज 92) का इलाज या केतू (कुत्ता रंग बिरंग स्याह सफेद मगर सुर्ख न हो) का कायम करना मुबारिक होगा।

"असल बुध"

असल बुध खाली खलाव, सफेद कागज, शीच्चा और फटकड़ी होगा। जब इस पर जरा सी मैल या किसी भी और ग्रह का ताल्लुक हुआ तो इस की गोलाई का मरकज मालूम करना ऐसा ही मुशकिल होगा जैसा कि जमीन का महूर मान लेना। इसलिये इसकी जांच मुकम्मल कर लेना जरूरी होगी।

अरमान नंबर 166-167

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
बुध बामुकाबिल बुध बामुकाबल	सनीचर नीच बृहस्पत	वही असर जो बुध ख़ाना नंबर 2 व बृहस्पत ख़ाना नंबर 6 का है।	बुध बृहस्पत	2 6/7	16 से 19 साला उम्र के दरम्यान न सिर्फ पिता की उम्र खराब करे। बल्कि उस का तोशा भी बरबाद करे। ला.की. 150/16
बुध दृष्टी	1 खाली	दिमागी ख़ाना नंबर 37 सनीचर से मुशतरका राग का मालिक। सूरज का असर नेक होगा। मगर ख़ुद बुध का अपना असर तजारत हिकमत सब्ज रंग वगैरह सब मंदे फल देवें। लालची देस परदेस में घूमने वाला तोता चश्म होगा। खाली सिर के ढांचा का ही मालिक होगा।	बुध दृष्टी	3 खाली दृष्टी	ऊंच फल और धूप के बगैर जंगल होगा। पहली बहन होगी और मुबारक असर की। दिमागी ख़ाना नंबर 39 मंगल से मुश्तरका। वजह सबब की ताकत का मालिक हो। ख़ाना नंबर 9 के सब असर को बेबुनियाद करे और वहां कोई भी ग्रह हों। वो भी बेबुनियाद होंगे। मंदा फल होगा।
बुध चंद्र	1 7	नशेबाजों का सरदार। जबान के चसके का मारा हुआ।	बुध चंद्र बृहस्पत	3 5 9	
			बुध मंगल	3 बद 5/11	दोनों घरों का दुश्मनाना और मंदा फल हो।
बुध राहु	1 1	औलाद के बिघ्न।	बुध चंद्र	3 11	न सिर्फ कुण्डली के ख़ाना नंबर 3 (भाई बंद) का मंदा फल होगा बल्कि बाकी 3 बचने वाले मकान का
बुध दृष्टी	2 खाली	दिमागी ख़ाना नंबर 38 बृहस्पत से मुशतरका जबानदानी। इज्जत मान का सरोवर। नेक असर।			

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
बुध	3	उम्दा असर (ला.की. सफ़ा			असर। दिली ताकत
चन्द्र	11	80 जुज 8) भी (अगर कोई			निकम्मा। ख़ुदकशी।
जारी		ऐसी जद्दी हो भी) हर तरह			राजयोग 280/6
		से जायल और खराब	बुध	4	ला.की. 285/12
		होगा।	सूरज	5	राजयोग
बुध	3	सिर की श्रेष्ठ रेखा होगी।	बृहस्पत	9	
शुक्कर	कायम	चंद्र नीच का बुरा फल न	कायम		
द्रुष्टी	खाली	होगा।	बुध	5	दिमागी ख़ाना नंबर 41
बुध	3	सिर की श्रेष्ठ रेखा का	द्रष्टि	खाली	सूरज से मुश्तरका। इंसानी
शुक्कर	रद्दी	उमदा असर तो होगा।			खसलत उमदा।औलाद का
द्रुष्टी	खाली	लेकिन अगर चंद्र नीच			बुरा असर न होगा। न ही
		होवे तो रद्दी चंद्र का बुरा			मकान का जद्दी असर जो
		फल होने से न रुकेगा।			बाकी 5 बचने वाले मकान
		सिवाय सौतेली माता			का होता है (ला.की. सफ़ा
		कायम होने के।			81 जुज 10) खराब होगा।
बुध	3	औरत व औलाद का फल	बुध	5	जवानी (34 साल उम्र के
शुक	4	बहुत देर बाद (34 साल	सूरज	९/3	बाद) में क़िस्मत जागेगी।
		बाद) उमदा होवे।	बुध	5	उमदा फल होगा।
बुध	3	बुध दोनों ग्रहों का फल रद्दी	चंद्र	3	
सूरज	9	करे निहायत बुरी जिंदगी	बृहस्पत	9	
सनीचर	11	होगी।	बुध	5	दोनों ग्रहों का अपना
बुध	3	ला.की. 295-296/2 बी	चंद्र	११	अपना असर होगा।
सनीचर	7		बुध	6	पौदे लगा हुआ उमदा फूल।
बुध	4	दिमागी ख़ाना नंबर 40	द्रुष्टी	खाली	बुध का जाती असर।
द्रुष्टी	खाली	चंद्र से मुशतरका। मुहब्बत			दिमागी ख़ाना नंबर 42
		के तीनों हिस्से। मुकाबला			रजामंदी का मालिक होगा।
		एक चीज का दूसरी से।			खरबूजा को देख खरबूजा
		कुंभ पानी का खाली कोरा			रंग बदलने की ताकत
		घड़ा उमदा शगुन की तरह			होगी। पहली औलाद
		माली नेक			लड़की होगी। मुबारिक

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
बुध द्रुष्टि	6 खाली जा री	असर की। ऊंच फल या घर का बुध। ख़ाना नंबर 2 के ग्रहों के द्रुष्टी के ताल्लुक से फैसल होगा। ऊंच फल का साबित होने पर उत्तम फल। यानि ला.की. 216/19अलफ, 283/1 व 280/6			झगडों का फैसला हक में होवे। ला.की. 283/1
			बुध सनीचर	6 9/11	औरत अमीर खानदान से और खुशनसीब होवे।
			बुध मगंल	6 4/8	माता बचपन में ही गुजर जावे। वर्ना दोनों दुखिया ला.की. 281/7
			बुध चंद्र	6 6	मिसल राजा।
बुध जब	6 उंच हो और	राजयोग बजरिया कागजी कारोबार। छापाख़ाना वगैरह अज पबलिक। मगर नेक और ईमानदारी	बुध शुक्कर	6 4	स्त्री व औलाद दोनों का फल बहुत देर बाद नेक होगा। खासकर बुध की उम्र 34 साल के बाद अच्छा होगा।
बृहस्पत	क़ायम	का धन साथ देवे। जायदादी फल उमदा। सनीचर के			
या सनीचर	क़ायम	मुतलका कामों के नेक नतीजे।	बुध द्रुष्टी	7 खाली	वीरान जंगल चरिंदों से खाली। रूखी हालत की गृहसथ। या कल्लर जमीन होगी। रेगिस्तान हो सकता है। जिसमें चिकनी मिट्टी का निशान न हो।
या सूरज	क़ायम	अज कलम ख़ुद। राज दरबार सूरज का पूरा नेक असर। मगर नेक व ईमानदारी का धन साथ देवे।			
			बुध चंद्र	7 1	समुंद्र पार लंबे लंबे सफरों के नेक नतीजे होंगे।
बुध शुक्कर	6 6	रेत को सीमेंट बनादे। लङके न होंगे। मगर लङकीयां ही मशनोई सूरज की तरह उत्तम फल देंगी।	बुध सनीचर	7 10	औरत अमीर खानदान से और खुशनसीब होगी।
बुध शुक्कर द्रुष्टी	6 कायम खाली	सिर की श्रेष्ठ रेखा का उत्तम असर। चंद्र का बुरा फल न हो सकेगा। अगर शुक्कर रद्दी तो चंद्र का बुरा असर (जबकि चंद्र भी रद्दी हो रहा हो।) सिर्फ माता की जान पर हो सकेगा।	बुध द्रुष्टी	8 खाली	मामू खानदान सफाचट होगा।बहिनों पर भी मंदा हाल होगा। मगर भाइयों पर कोई ताल्लुक नहीं गिनते। पौदे से टूटा हुआ फूल होगा। ला.की. 269/4

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
बुध मंगल लेकिन सूरज ताल्लुक	8/12 6 चंद्र या का न होवे	माता से पहले ही बचपन में गुजर जावे। वर्ना दोनों दुखिया होंगे। ला. की. सफ़ा 281/8-9	बुध चंद्र बुध चंद्र	10 4 11 5	समुंद्र पार लंबे सफरों के बजरिया/मुतलका नेक नतीजे होंगे। ऐैजन।
बुध बृहस्पत	8 2	पिता की उम्र खतम करने के इलावा (ख़ुद अपनी 16 से 19 साला उम्र तक) इस का तोशा भी खराब करे। बहिन,भुआ,मामू तबाह।	बुध चंद्र	11 3	चंद्र के वक्त बाकी 3 बचने वाले मकान की हालत की तरह (ला.की. सफ़ा 80 जुज 8) का क़िस्मत का हाल होगा।
बुध	9	तमाम ही ग्रहों व ख़ाना नंबर 9 का असर जायल। सब की जड में पारा डाले। ख़्वाह वो बुध के दोस्त हों ख़्वाह दुश्मन। मगर सूरज मंगल दोनों ही बुध के साथ ख़ाना नंबर 9 में हों तो बुध दोनों के मुकाबला पर चुप होगा और उनको भी सोये हुए बना लेगा। मगर जड खाली न करेगा न बोलेगा और न ही उनको बोलने देगा। लसूड़े की गिटक सा जमाना होगा। (नेज अरमान नंबर 6 देखें) ला.की. 145/4-5 व 163/17	बुध	12	ख़ाना नंबर 6 का कुल असर और ख़ाना नंबर 6 के तमाम ग्रहों का असर (ख़्वाह बुध के दोस्त हों ख़्वाह दुश्मन) बुरा कर देवे। कुत्ते की दुम की तरह टेढा रहे और हाथी की सूंड की तरह कीचड फैंके। दीवाना या हडकाया कुत्ता या वो कुत्ता जिसकी दुम बाहर की तरफ और मुहं काटने के लिये अपने ही मकान की तरफ हो। दुम अलहैदा काट देने के बाद सांप की सिर्फ सिरी या सिर जिसको मारना ही मुश्किल हो जावे। मतलब ये कि कुण्डली वाले के लिये ख़ाना नंबर 6 का (ख़्वाह कोई भी ग्रह हो) अपनी जात
बुध	10	सनीचर की जायदाद उमदा। जबान का चसका खराबी का सबब होगा			

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
बुध	12	के लिये बुरा असर होगा।	बुध	12	बेऐतबारी। मंदे काम।
जारी		या अपनी जान पर ख़ाना	सनीचर	6	जायदाद उड़ा देवे।
		नंबर 6 का बुरा असर पैदा			
		करने के लिये ख़ाना नंबर	बुध	12	राजदरबार की आमदन के
		6 वालों को बरबाद करेगा।	सूरज	6	इलावा राज दरबार का
		लेकिन अगर वो ग्रह ख़ाना			ताल्लुक खराब कर देवे।
		नंबर 6 में बुरे असर कर			
		देने वाले हों तो उनके	बुध	12	पिता की उम्र बरबाद और
		मुतलकीन का मदद देगा।	बृहस्पत	6	खत्म के इलावा पिता का
		मगर गरीबी का साथ न			तोशा तक भी खराब करे।
		देगा। और अमीरी का भी			
		उसे अपनी जान के लिये	बुध	12	माता भाग रही। ख़ुदकशी
		कोई भी फायदा न होगा।	चंद्र	6	तक नौबत मगर बवजह
बुध	12	राहु का फल रद्दी होगा।			गरीबी न होगी।
राहु	6				
बुध	12	केतू का फल रद्दी होगा।	बुध	12	मंगल का बुरा फल और
केतू	6		मंगल	6	रद्दी हालत कर देगा। बहन
बुध	12	शुक्कर ख़ुद नीच होता है।			भाई मौत के यम होंगे।
शुक्कर	6	बुध व शुक्कर दोनों का			
		दोनों घरों का फल रद्दी	बुध	12	माता बचपन में गुजर जावे।
		होगा।	मंगल	4	वर्ना दोनों दुखिया।

अरमान नंबर 168 ता 170

सनीचर

ये ग्रह पापीयों के टोले का मालिक और अपनी ताकत में अकेला सानी है। अगर ये गर्क करने में बदनाम हुआ तो एक ही लम्हा में तारने वाला भी जरूर है। शुक्कर को गाये और सनीचर को भैंस माना गया है। शुक्कर केतू का दोस्त है और केतू सनीचर का ऐजंट है। सनीचर व केतू = सनीचर को भैरों (लालकिताब सफ़ा 118 ग्रह नंबर 7) केतू को कुत्ता माना है भैरों का कुत्ता। केतू को गाय (लालकिताब सफ़ा ११८ ग्रह नंबर ९) शुक्कर को मिट्टी और गोबर।

गाय का गोबर। काम देव की नाली केतू को माना गया है। गाय को सब गऊ माता कहते हैं और सनीचर को किसी ने अच्छा नहीं कहा। गाय बैल की सिफत से हमें कोई मतलब नहीं। इल्म सामुद्रक के ग्रह केतू के ताल्लुक में हमें देखना है कि कामदेव का कौन कीड़ा है। गाय का बच्चा जवान हुआ कामदेव की ताकत पैदा हो जाने पर वो अपनी माता को पहचान नहीं सकता या शुक्कर कामदेव (केतू) की दोस्ती में सब कुछ भूल जाता है। मगर सनीचर की भैंस के बच्चे ने जवानी में काम देव के वकत अपनी मां को पहचान लिया।

मतलब ये कि सनीचर गो बदनाम है। मगर कामदेव का कीड़ा नहीं है। केतू को लड़का भी माना है। हर इक अपने बच्चे को बचाता और पालता है। मां बच्चे की मुहब्बत सब को मालूम है। मगर सांपनी (सनीचर को सांप भी माना है। सांप की मादा को सांपनी कहते हैं) अपने बच्चों को खा जाती है। केतू को सूअर माना है। जो गोली लगने के वकत गोली चलने की जगह आकर दम देगा। मगर सनीचर मार पड़ने या मार करने के वकत चारों तरफ चल जाता है। मंगल का शेर भी पानी में तैरते वकत सीधा तैरता है और खुंखारी के वकत राहू के हाथी को चुप करा लेता है। मगर सनीचर के सामने अपना फल सनीचर को ही दे देगा। बुध तो सनीचर के लिये है ही अपना साथी। सांप के जहर के मालिक सांप के दांत ही तो सनीचर की जहर का काम करते हैं। सनीचर इतना रहम दिल भी है कि अव्वल तो इसने शुक्कर को जिस ने किसी को नीच नहीं किया। मदद देने के लिये अपना दोस्त बनाया है। जिसमें केतू कामदेव भरा हुआ है। मगर सनीचर ने मंगल के घर ख़ाना नंबर 3 में जहां कि सब ग्रह धन दौलत के मालिक होते हैं। अपने लिये दौलत रखने का श्राप ले लिया है और ऐवज में ख़ुद मंगल को अपने घर ख़ाना नंबर 10 में राजा की दौलत बखशी है। बृहस्पत दोनों जहानों का मालिक होते हुए सनीचर के घर ख़ाना नंबर 10 में नीचताई के काम करता है। नीच कहलाता है और मंदा फल देता है। मगर सनीचर बृहस्पत के घरों में कभी बुरा फल न देगा। सूरज इतना बलवान है कि कोई उसका रास्ता नहीं बदला सका। मगर सनीचर जो सूरज का लड़का माना है। जब अकेले सूरज के साथ आ बैठे तो बुध की तरह खाली मैदान कर देगा। मगर अपनी बुराई की पूरी ताकत बरतेगा। लेकिन अगर सूरज अपने साथ बृहस्पत को ले बैठे और सनीचर को भी वहां आना पड़े तो सनीचर अपनी ताकत से दोनों ही सूरज बृहस्पत के बल को बरबाद कर देगा और ऐसा मारेगा

कि दोनों का निशान न मिले। हालांकि बृहस्पत के सामने ये बुराई नहीं करता। जिस कदर सनीचर के मुकाबला पर इसके दुश्मन ग्रह तादाद में बढते जावें। सनीचर अपने रास्तों को बढाता जायेगा। ये ख़ुद बुराई नहीं करता। बल्कि उसके ऐजंट राहू केतू बुराई वालों के काम इस के पास फैसले के लिये लाते हैं। बुरे कामों का नतीजा बुरा ही होता है। बुरा ही फैसला करना हो इसीलिये ही बदनाम है।

मकान

(सनीचर जब राहू केतू के ताल्लुक से नेक असर का साबित हो और राहु या केतू के साथ ही बैठा हो तो मकानात बनेंगे। जब राहु केतू के साथ ही मगर बुरे असर का हो तो बने बनाये मकानात भी सब बरबाद और बिकवा देगा।)

सनीचर का सांप सब को डंग मारता है। मगर इकलौते लड़के (सूरज) और हामला औरत के सामने ख़ुद अंधा हो जाता है। हालां कि बीनाई का ये ख़ुद मालिक है। सनीचर मकानों का मालिक है मगर सनीचर का सांप त्यागी होने का सबूत देता है। सांप कभी अपना बिल बना कर नहीं रहता। सूरज का बंदर भी अपना घौंसला नहीं बनाता। मगर जरूरत के वकत सांप को सनीचर की जमीन ख़ुदबख़ुद ही फट कर पनाह दे देती है। सनीचर के काले कीड़े लाख उपाय करें अपने भौन की जगह नहीं बदलते। लेकिन जरा सा दूध डालने लगो वो कीड़े ख़ुदबख़ुद चले जायेंगे। दूध चंद्र का है चंद्र माता है। सनीचर माता को पहचान लेता है। मगर माता इसके पास नहीं रहती। वो इसके घर में नीच फल देगी। चंद्र ख़ाना नंबर ८ में जहां की सनीचर का हैडकवाटर है मंदा फल देता है। मगर उम्र लंबी होती है। जो चंद्र की आशीर्वाद है। जो वो माता सनीचर को भी बखश देती है। इसीलिये उम्र के मालिक चंद्र ने सनीचर के सांप और कौवे की उम्र लंबी की है। मौत के वकत का हाल तरसा तरसा कर मारना मंगल बद ने संभाला है। सनीचर अगर मारेगा तो तरसायेगा नहीं। फौरन फैसला कर देगा। मार देगा या बरी कर देगा। सनीचर पाताल का मालिक है। बृहस्पत तो डर के मारे जर्द रंग होकर साधू ही बन गया है और सूरज जो सनीचर का बाप माना गया है। सनीचर के दोस्त शुक्कर की मिट्टी या अपने दोस्त चंद्र की धरती माता पर कभी भूले से भी नहीं आता। किस्सा कौताह सनीचर का डर जरूर है और इसके फैसला का ऐतबार नहीं कि सजा क्या देगा। राहु केतू पोल खोल देंगें। सनीचर का फल अच्छा होगा या मंदा। राहू केतू के ताल्लुक से जाहर हो जायेगा।

ग्रहों की कुरबानी के बकरे

सनीचर :- दुश्मन ग्रहों से बचाव के लिये सनीचर ने अपने पास राहु केतू दो ऐसे ग्रह ऐजंट बनाये हुए हैं कि वो सनीचर की जगह फौरन दूसरे की कुरबानी दिला देते हैं। राहु केतू मुशतरका को मशनोई शुक्कर माना है। इसलिये जब सनीचर को सूरज का टकराव तंग करे तो वो अपनी जगह शुक्कर औरत को मरवा देता है या सूरज सनीचर के झगडे में औरत मारी जावेगी या ऐसे कुण्डली वाले की औरत पर उन दोनों ग्रहों की दुश्मनी का असर जा पहुंचेगा। न सूरज ख़ुद बरबाद होगा न सनीचर क्योंकि वो बाहम बाप बेटा हैं।

सूरज ख़ाना नंबर 6 सनीचर ख़ाना नंबर 12 = औरत पर औनत मरती जावे।

चंद्र सनीचर राहु = औरत को सुख हलका या औरत बरबाद हो।

बुध :- बुध ने भी अपने बचाव के लिये शुक्कर से दोस्ती रखी है। वो भी अपने दोस्त शुक्कर को ही अपनी बला में डाला करता है या डाल देगा। चंद्र बुध मुशतरका - बकरी दूध देगी मैंगने डाल कर। दरिया में रेत दूध में मिट्टी। चंद्र बुध इकट्ठे हों तो मरेंगे मामु।

मंगल :- मंगलबद (भाई) अपनी बला केतू (लड़के) पर डालता है। शेर कुत्ते को मरवा देगा।

सूरज ख़ाना नंबर 6 मंगल ख़ाना नंबर 10 - लड़के पर लड़का मरता जावे। (भाई भतीजे को मरवाये)

शुक्कर :- शुक्कर (औरत) शैतान स्वभाव। ख़ुद अपनी बला कुण्डली वाले की माता पर जा धकेले।

चंद्र शुक्कर बामुकाबल - माता अंधी होवे।

बृहस्पत :- बृहस्पत ने अपना साथी केतु ही कुरबानी के लिये रखा है। बृहस्पत हो ख़ाना नंबर 5 में और केतू किसी और घर में अब अगर बृहस्पत की महादशा आ जावे तो केतू के ख़ाना नंबर 6 का फल रद्दी होगा। औलाद का नहीं जो ख़ाना नंबर 5 की चीज है। मामु को केतू की महादशा 7 साल तकलीफ होगी।

राहु - केतू :- ख़ुद अपना आप निभायेगें।

सूरज और चंद्र के लिये उनके अपने अपने हाल में दर्ज है।

नोटः- मंगल और बृहस्पत इन्साफ के मालिक होते हुए दूसरे की तो मदद करेंगे और नाजायज तौर पर एक को दूसरे पर ज्यादती करते नहीं देख सकते। मगर जब ख़ुद ही मुसीबत में हों तो गरीब केतू को मरवाते हैं।

सनीचर का अपने ऐैजंट के साथ होने पर अपना जाती असर यानि सनीचर का अपना स्वभाव इस कुण्डली वाले के लिये और ख़ुद सनीचर के ख़ाना नंबर 10 की चीजों पर क्या असर देगा।

पहले घरों में हो	दरम्यान में हो	आखरी घरों में हो	सनीचर का असर होगा	कैफीयत
राहु	सनीचर	केतु	ख़राब	पहले दरम्यानी और बाद के घरों से कुण्डली के एक दो तीन से हद 12 तक की गिनती के हिसाब से पहला दरम्याना आखरी घर होगा। यानि 3-5-7 नंबर के घरों में 3 पहला घर, 5 दरम्यान और 7 आखरी ख़ाना होगा। सनीचर केतू मुशतरका और राहु मुकाबला पर हो तो सनीचर केतू का फल उमदा और नेक होगा। लेकिन अगर कोई भी तीसरा ग्रह सनीचर केतू मुश्तरका होने वाले घर में शामिल हो जावे तो
केतू	सनीचर	राहु	नेक	
राहु	केतू	सनीचर	ख़राब	
केतू	राहु	सनीचर	नेक	
सनीचर	राहु	केतू	ख़राब	
सनीचर	केतू	राहु	नेक	
राहु केतू		सनीचर	सनीचर का अपना ख़राब	
सनीचर		राहु केतू	सनीचर का अपना नेक	
राहु		सनीचरकेतू	ख़राब	
सनीचरकेतू		राहु	सनीचर का अपना नेक	
सनीचरराहु		केतू	ख़राब	
केतू		सनीचरराहु	नेक	

सनीचर केतू दोनों का ही मंदा असर होगा।

नर ग्रहों में से किसी अकेले अकेले के साथ बैठा हुआ सनीचर कभी जाहिरा बुरा फल न देगा। लेकिन जब सनीचर के साथ या मुकाबला पर दो (कोई दो) नर ग्रह शामिल हो जावें । तो सनीचर बुरा फल देगा। जब दो से ज्यादा जितने ग्रह बढते जावें ख़्वाह वो सनीचर के दोस्त हों या दुश्मन। सनीचर बुरा ही फल देगा। अकेला सनीचर अकेले सूरज के साथ या सूरज के पक्के घर में खाली बुध का असर देगा। यानि न सूरज का असर होगा न सनीचर का। अंधेरा और रौशनी मिली हुइ खाली हवा होगी।

बृहस्पत के साथ या बृहस्पत के घरों ख़ाना नंबर 9-12-2 में सनीचर कभी बुरा फल न देगा। बल्कि उमदा फल देगा। सनीचर के पहले घरों में सूरज होवे तो दोनों का असर अपना अपना मौका के मुताबिक बदसतूर होगा। लेकिन अगर सनीचर पहले घरों में और सूरज बाद के घरों में तो सूरज का असर जरूर खराब होगा। सूरज की रोशनी तो होगीं मगर

स्याही से भरी हुइ। इन दोनों की दुश्मनी से शुक्कर का फल रद्दी होगा। ख़ाना नंबर और 12 में उल्ट होगा। ख़ाना नंबर 6 में सूरज और 12 में सनीचर तो औरत पर औरत मरती जावेगी।

सनीचर का दूसरे ग्रहों से ताल्लुक

ख़ाना नंबर 3 या 7 में (लालकिताब सफ़ा 194/14 और 194/17-20 में मुफसिल लिखा है)

(लालकिताब सफ़ा 194/8)

सनीचर देखता हो सूरज को - जिस्मानी कमजोरी।

25 फीसदी पर - स्कूलों के इल्म के इलावा इल्म रियाजी भी होगा।

50 फीसदी पर - इल्म मकानात सनीचर की मुतलका चीजें।

दोनों बाहम मुशतरका हों तो बुध के बराबर मगर दोनों बामुकाबल तो मंगल बद के बराबर होंगे।

अरमान नंबर 171 ता 174

उम्र कितने साल होगी- (मुंदरजा जैल के इलावा लालकिताब में लिखी हुइं शर्तें और होंगी)

उम्र साल होगी	ग्रहों का ताल्लुक	उम्र साल होगी	ग्रहों का ताल्लुक
12दिन	जब चंद्र ख़ाना नंबर 5 में सूरज ख़ाना नंबर 10		शुक्कर केतू दोनों बरबाद या नष्ट।
12 महीने	सूरज सनीचर मुशतरका बृहस्पत के घरों में।	30 साल	बुध बृहस्पत नंबर 2 या राहु बृहस्पत नंबर 3
9 साल	सूरज चंद्र ख़ाना नंबर11 में।	35 साल	चंद्र बुध राहु मुश्तरका।
10 साल ख़ाना	चंद्र केतू ख़ाना नंबर 1 में।	40 साल	राहु हो बृहस्पत के साथ
12 साल	चंद्र नं 5 और सूरज नंब 11		नंबर 9 या 12 में।
15 साल	चंद्र राहु ख़ाना नंबर 1 में।	45 साल	बुध केतू 12 या राहु बृहस्पत नंबर 6
20 साल	बृहस्पत राहु नंबर 2 या बुध बृहस्पत नंबर ६	50 साल	चंद्र राहु नंबर 5
22 साल	सूरज राहू नंबर 10 या नंबर या 5 में।	56साल	चंद्र राहु बुध ख़ाना नंबर 2 11 में।
25 साल	चंद्र राहु नंबर 6 में या मंगल बद और साथी।	60 साल	चंद्र बुध नंबर 2

उम्र साल होगी	ग्रहों का ताल्लुक	उम्र साल होगी	ग्रहों का ताल्लुक
70 साल	केतू बृहस्पत नंबर 9 या सनीचर केतू नंबर 6 में या सनीचर चंद्र न 7 में।	100 साल	5)चंद्र सूरज बृहस्पत कायम।
		120 साल	चंद्र बृहस्पत ख़ाना नं 12 में। अल्प आयू
75 साल	चंद्र राहु मुश्तरका नं 9में।		8X8 कुल 64 ज्यादा से जयादा 8
80 साल	चंद्र बृहस्पत नंबर 4 में।		दिन महीने साल हर आठवां साल मंदा।
90 साल	चंद्र कायम नं 10 या नंबर 11 में		जहमत व खतरा जान। जानवरों से खतरा मौत होगा।
100 साल	केतू बृहस्पत ख़ाना नंबर 12 में और चंद्र कायम। या		1) बृहस्पत बहुत से दुश्मन ग्रहों से घिरा हो।
	2) चंद्र बृहस्पत ख़ाना नं 5 में।		2) ख़ाना नंबर 9 में बुध बृहस्पत शुक्कर।
	3) मंगल नंबर 1-2-7 सूरज नंबर 4		3) ख़ाना नंबर 9 में बुध बृहस्पत के बहुत से दुश्मन।
	4)नर ग्रह कायम या चंद्र को मदद दे रहे हों।		4) चंद्र राहु नंबर या नंबर 8 में।

बामूजब चंद्र लालकिताब सफ़ा 320 जुज नंबर 9 अगर चंद्र राहु मुश्तरका होकर किसी भी राशि में हों तो जुज नंबर 9 में दी हुइ उम्र के सालों की तादाद नसफ हो जायेगी। हर राशि के लिये - बशर्तेकि ये दोनों मुशतरका हर तरह से अकेले। द्रुष्टी से खाली और कुण्डली के पहले घरों में हों। मौत न होवे तो करीब अलमर्गी जरूर होगा।

मौत का बहाना

लालकिताब सफ़ा 316 से मिलाकर पढने से बृहस्पत रेखा का ताल्लुक भी जाहिर हो जायेगा इल्म ज्योतिष से

ग्रहो का ताल्लुक	मौत का बहाना क्या होगा	ग्रहो का ताल्लुक	मौत का बहाना क्या होगा
1) चंद्र मंगल सनीचर ख़ाना नंबर 5/8 साधारण मौत	लड़ाई झगड़े	सूरज कायम और ऊंच ख़ाना नंबर 1 में अकेला और	वाजिब वकत पर कुण्डली में
2) मंगलबद व शुक्कर ख़ाना नंबर 5/8 मगर सूरज चंद्र का साथ न हो।	जंग व जदल।	किसी ग्रह का साथी ग्रह न बन रहा हो	मगर अचानक होगी
		1) चंद्र बुध मुश्तरका ख़ाना नंबर 3/6	सदमा से
सनीचर शुक्कर मुशतरका ख़ाना नंबर 10		2) चंद्र सनीचर मुश्तरका ख़ाना नंबर 7	मौत हो
और सूरज ख़ाना नंबर 4	पुरदर्द मौत	3) चंद्र मंगल बद मुश्तरका ख़ाना नंबर 7/10	

ग्रहो का ताल्लुक	मौत का बहाना क्या होगा	ग्रहो का ताल्लुक	मौत का बहाना क्या होगा
अल्प आयु होगा	जानवरों से खतरा मौत।	बुध बृहस्पत बाहम बामुकाबिल	अधरंग से मरे
सनीचर नंबर ६ बुध नंबर ३-१०-११	एजन	बुध बृहस्पत मुशतरका नंबर ३ में।	सन्नपात से मरे
सनीचर नंबर ६ शुक्कर नंबर ७		चंद्र सनीचर नंबर ४ रात के वकत	
१) बुध हो ख़ाना नंबर १२		चंद्र नंबर १० सनीचर नंबर४ दिन	पानी से मौत होवे
सनीचर नंबर ७		चंद्र सूरज नंबर ७ न रात न के	
२) चंद्र बुध मुशतरका और सूरज		दिन साफ हो वकत	
बरबाद।		राहू या केतू से मुशतरका जब भी	मौत गूंजने की
३) चंद्र बुध ख़ाना नंबर ४ में।	ख़ुदकशी करे।	किसी का दौरा आवे।	निशानी होगी।
१) बुध सनीचर ख़ाना नंबर ४		चंद्र सनीचर नंबर ४	परदेस में मरे।
२) बुध चंद्र सनीचर मुश्तरका या	खूनी होगा।	बाकी सब हालतों में या	मातृ भूमी या अपने
द्रुष्टी में और सूरज कायम होवे।		चंद्र सनीचर नंबर ७	गृहस्थ में।
सनीचर हो ख़ाना नंबर ३में बुधनंबर ११	कैद में मरे।	राहु केतू से बुध मुशतरका और	
शुक्कर नंबर १-सूरज नंबर ७ मय	तपेदिक से मरे।	सनीचर भी जड राशि या द्रुष्टी से	बिजली या सांप से
दुश्मन या पापी ग्रह		देखता या साथी ग्रह हो जावे।	मौत होवे।
सूरज बुध चंद्र मुशतरका ख़ाना	घोडे से गिर कर मरे		
नंबर ४ में			
बुध सूरज सनीचर मुशतरका नंबर ७	सिर कटने से मौत		
या सूरज सनीचर नंबर ७	होवे।		

तखत की मालकीयत या राशि नंबर के हिसाब से जब बुध और राहू केतू इकट्ठे हो जावें मौत की निशानी होगी।

बीमारी का वकत

सेहत रेखा का मालिक सूरज है। जिसका मुर्करर घर (राशि) नंबर ५ है। इसलिये अगर ख़ाना नंबर ५ में -

१) बृहस्पत या सूरज हों (ख़ाना नंबर ५ में बृहस्पत भी शामिल है) तो जब बृहस्पत या सूरज के दुश्मन ग्रहों का तखत की मालकीयत का जमाना होगा। बीमारी खडी होगी।

२)   लेकिन अगर ख़ाना नंबर ५ में सूरज बृहस्पत ख़ुद तो न हों। मगर उन दोनों के दुश्मन ग्रह बैठे हों तो जब बृहस्पत या सूरज का दौरा   (तखत की मालकीयत का जमाना) होगा। बीमारी आ दबायेगी। (अगर ख़ाना नंबर ८ खाली ही हो। तो सेहत उमदा होगी।)

ऊपर की दोनों हालतों में बृहस्पत की दुश्मनी या बृहस्पत से इस के दुश्मन के टकराव से बीमारी की निशानी औलाद की होगी। यानि उस के हां औलाद पैदा होने वाली होगी। क्योंकि बृहस्पत औलाद की पैदाइश का मालिक है। (मुफसिल औलाद में देखें)

और दूसरा फर्क ये होगा। कि जब बृहस्पत ख़ुद तखत का मालिक हो कर चले और अपने घरों में दुश्मन बैठा देखे । तो ऐसे शख़्स की औलाद (वो बच्चा अभी औरत के पेट में है) पैदा होकर खतम हो जायेगा। तो बीमारी खतम होगी। (ये औलाद गालिबन (लड़की) बुध जो बृहस्पत का दुश्मन है होगी। इस तरह बृहस्पत को एक तो अपने घर के दुश्मन का झगड़ा और दूसरा औरत के पेट में बुध का झगड़ा तंग करेगा)।

लेकिन जब बृहस्पत ख़ुद ख़ाना नंबर ५ में हो या उसका दोस्त सूरज हो। तो तखत के मालिक ग्रह के वकत जो सूरज या बृहस्पत का दुश्मन हो झगडे का सबब औरत के पेट का बच्चा फिर वही लड़की होगी। जो बुध गिना है। इसलिये जब तक वो लड़कर पैदा न हो लेवे। बीमारी कायम होगी। मगर पैदा हो कर वो लड़की मरेगी नहीं । लेकिन अगर उसकी औरत के पेट में नर बच्चा या सूरज का सबूत हो। तो तखत का मालिक दुश्मन ग्रह उसे सूरज समझ कर जो सूरज से बरताव कर सकता है। करेगा। यानि लड़के का जिंदा रहना या मर जाना सूरज व दूसरे दुश्मन के बाहमी टकराव का जैसा भी नतीजा होगा।

सनीचर की सवारी - 1)   अकेला राहु (जिस्म पर तिल या खाल का निशान) सनीचर का हाथी। 2) राहु सनीचर मुशतरका (पदम लालकिताब सफ़ा 78) इच्छाधारी सांप। (लालकिताब सफ़ा 76 जुज 3)

3) राहु मंगल (लसन लालकिताब सफ़ा 78) राजा का हाथी या हाथी मय महावत। मुंदरजाबाला ग्रह मुश्तरका निशान मुतलका जिस्म के दायें हिस्सा पर मुबारिक होगा। जो कुण्डली के खानों में हसब जैल होगा-

कुण्डली में:-

दायां होगा ख़ाना नंबर	1	2	3	4	5	6
बायां होगा ख़ाना नंबर	7	8	9	10	11	12

अरमान नंबर 175

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
सनीचर	1	दिमागी ख़ाना नंबर 1			कंगाल मगर जायदाद
		शुक्कर से मुशतरका।			होगी। भाई बंदो से खराबी
		इश्क़ जबानी। ईंधन, सूखी			153/4,198/17
		लकड़ी। आग का कीड़ा।	सनीचर	3	पानी से मौत हो। अपने ही
		काग रेखा वे मच्छ रेख का	चंद्र	10	कुए से। उर्ध रेखा। चोर
		मुश्तरका। ईमानदारी में			डाकू फिर भी मंदा हाल।
		बददयानती का बींज।	सनीचर	4	पितृ रेखा। चंद्र की
		मगर शुक्कर का पतंग।			जायदाद उमदा फल।
सनीचर	2	दिमागी ख़ाना नंबर 7			दिमागी ख़ाना नंबर 4
		(शुक्कर से मुशतरका)			मुहब्बत के तमाम हिस्से।
		ज़िंदगी बढने की ख़्वाहिश।			चंद्र से मुशतरका। खूनी
		(दुनयावी तरक्की से मुराद			और पानी के किनारा और
		है। लंबी उम्र का मतलब न			कुए पर का सांप होगा। या
		लेंगे।)			जायदाद जद्दी मंदा फल
सनीचर	2	बात को मुहं की हवा से			देगी। ला.की. 213/9
बृहस्पत	4	ताड़ लेगा। अपनी ख़ुद	सनीचर	4	औरतें ख़्वाह बेवाह बतौर
		मुखतयारी और नंबरदारी	चंद्र	10	फर्ज दुन्यावी या माशूका
		के वकत अपनी उम्र के			वगैरह धन दौलत बरबाद
		आखिर तक अपने लिये			करें या करा दें। चंद्र का
		उमदा क़िस्मत का मालिक।			असर मंदा और प्रबल।
सनीचर	3	दिमागी ख़ाना नंबर 10 -			सनीचर का मध्धम। सांप
		जायका बुध से मुशतरका।			को दूध पिलाना मुबारिक
		मजबूत जिस्म। दौलत के			फल देगा।
		लिये निर्धन			

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
सनीचर चंद्र	4 3	पितृ रेखा। चंद्र की जायदाद का उमदा और नेक असर होवे।	सनीचर बुध	6 12	सनीचर के तमाम फल को बुध बरबाद करे। बेइतबारी मंदे काम। बुध के हाल में मुफसिल लिखा है।
सनीचर बृहस्पत	4 3	उर्ध रेखा जिस का दोस्त हो उसे ही बरबाद कर के ख़ुद अमीर हो जावे। ला.की. 296/4	सनीचर	7	दिमागी ख़ाना नंबर 17 शुक्कर से मुशतरका। ऊंच सनीचर का फल। जिंदगी बढने की ख़्वाहिश (अरूज तरक्की से मुराद है लंबी उम्र से मतलब नहीं है।) सनीचर ख़ाना नंबर 7 या 3 का ताल्लुक बाकी ग्रहों से ला.की. सफ़ा 198/17-20 में देखें।
सनीचर चंद्र	4 2	ला.की.14-/13, 225/4-5			
सनीचर	5	दिमागी ख़ाना नंबर 15 बृहस्पत से मुशतरका। ख़ुद्दारी। मुकदमा, जहमत, बीमारी का आम झगडा खास कर औलाद पर ज्यादा मंदा हाल हो। दमकते सोने का लोहा कर देवे।	सनीचर दुश्मन ग्रह	7 7	बीमारियां (शुक्कर मिट्टी की - जिस्मानी, बदनी, मंगल खून से मुतलका और चंद्र दिल से मुतलका) ला.की. 198/17-19-20
सनीचर बृहस्पत	5 9	मुफसिल बृहस्पत में लिखा है। क़िस्मत का असर और वकत ख़ाना नंबर ५ के ग्रह (सनीचर) के दौरा से शुरू होवे। नेक और उमदा असर होगा धन दौलत के लिये। मगर औलाद के लिये मंदा ही लेंगे।	सनीचर मय दीगर ग्रह	7	
			सनीचर शुक्कर चंद्र सूरज	7 1 4	नामर्द वर्ना बुजदिल होगां। सूरज अपना असर चंद्र में और चंद्र आगे अपना असर शुक्कर और सनीचर के मुशतरका असर में मिला देगा।
सनीचर	6	दिमागी ख़ाना नंबर 16 केतू से मुशतरका ईसतकलाल। ला.की. २८७/१९			

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
सनीचर चंद्र	7 7	हथियार से मौत हो।	सनीचर मंगल	9 4	औलाद के बिघ्न। मामु, ससुराल सब को खा पी कर बरबाद कर जावे। मगर ख़ुद अपनी जद्दी हालत उमदा रहे। मौतों का तो प्लेगी चूहा होगा।
सनीचर	8	जहमत बीमारी मौत का सबब। बुढापे में नजर की तकलीफ या धोका होवे। दिमागी ख़ाना नंबर 14 तकब्बर ख़ुदपसंदी।			
सनीचर	9	दिमागी ख़ाना नंबर 9 बदला लेने की ताकत। अगर ख़ुद बदला न ले सके तो औलाद को बदला लेने की नसीहत कर जावे। स्त्री भाग में निहायत उत्तम (सिवाये औलाद) चंद्र भाग में मंदा असर होवे। ला.की. सफ़ा 163/18, 165/27	सनीचर बृहस्पत	9 12	गो माया ज्यादा होगी मगर माया पर पेशाब की धार मारने वाला होगा। ला.की. 300/5 जीम
			सनीचर बृहस्पत	9 10	आग के वाकयात हों। बृहस्पत की चीजों (सोना हवाई जरद रंग और चंद्र की चीजें चांदी बजाजी)और बृहस्पत के कामों से नफा मगर सनीचर की चीजें
सनीचर बृहस्पत	9 5	बृहस्पत के वकत क़िस्मत असर देवे। सनीचर बृहस्पत मुशतरका में मुफसिल लिखा है। अब औलाद का हाल मंदा न होगा। दिमागी ख़ाना नंबर 9 सनीचर का जाती असर बदला लेने की पूरी ताकत। और सनीचर के मुतलका काम मंदा फल देवें।	सनीचर सूरज	9 5	दूसरों से हमदर्दी वालदैन की बाहमी नेक मुआफकत। अब सूरज और सनीचर का बाहम झगङा न होगा। (अरमान नंबर 6 जुज़ सूरज (iii)
			सनीचर बुध	9/11 6	औरत अमीर खानदान से और ख़ुश क़िस्मत होवे।

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
सनीचर	9/11	कुदरत की तरफ से कोई			का ताल्लुक यानि सनीचर
मंगल	3	बुरा वाकया मौत वगैरह			11 के साथ ऊपर भी
		दुख देने वाला न होगा।			जिकर है।
		मंगल सनीचर का नेक	सनीचर	11	भागवान होवे।
		असर होगा।	चंद्र	6	
सनीचर	9/11	रफाये आम के फायदे और	सूरज	10	
शुक्कर	7	आराम की पूरी ताकत और	मंगल	10	
		नेक असर। ख़ुद भी आराम	सनीचर	11	आली मर्तबा। साहबे
		पावे।	चंद्र	2	जायदाद होवे।
सनीचर	9	ला.की. 95/1	सूरज	1	
शुक्कर	3		सनीचर	11	सनीचर व सूरज दोनों का
सनीचर	9/11	मां बाप दोनो की तरफ से	बुध	3	फल रद्दी। बुरी जिंदगी। बुध
चंद्र	4	हर तरह से उमदा क़िस्मत	सूरज	9	दोनों ग्रहों को बेवकूफ
		और भला लोग होगा।			बना देवे।
सनीचर	10	दिमागी ख़ाना नंबर 13	सनीचर	12	दिमागी ख़ाना नंबर 12
		सनीचर का जाती असर			राहु से मुशतरका।
		दूरअंदेश होशयारी का			राजदारी। अपना भेद छुपाये
		मालिक होगा। कुण्डली			रखने और फरेब पोशीदा
		वाले का बाप कुण्डली वाले			करने का आदी और
		की उम्र तक जिंदा रहेगा।			कामिल होगा।
सनीचर	10	औरत अमीर खानदान से	सनीचर	12	औरत पर औरत मरती
बुध	7	और खुशक़िस्मत होगी।	सूरज	6	जावे।
सनीचर	10	हर किसम की सवारी का	राहु		स्त्रीयों (माता औरत वगैरह
बृहस्पत	4	सुख नसीब होगा।	सनीचर	12	का सुख हल्का। चंद्र चुप
चंद्र	1		चंद्र		होगा।)
सनीचर	11	दिमागी ख़ाना नंबर 11	सनीचर		मर्दो का सुख हलका।
		सनीचर का जाती असर।	राहु	12	बृहस्पत चुप होगा।
		जखीरा जमा करने की	बृहस्पत		
		पूरी ताकत और आदत।	सनीचर	12	मच्छ रेखा। ला.की. 86/1
			राहु	6/3	
			केतू	9/12	

अरमान नंबर 176

राहु

राहु - बाकी ग्रहों की तरह राहू केतू की ऊंच हालत व नीच हालत का अलैहदा ज़िक्र नहीं किया गया।

असतलाह में जिस चीज का कोई रंग न हो। नीला रंग दिया जाता है। नक़्शे में समुंद्र का रंग जिसकी गहराई लाइन्ताह है। नीला माना है और आसमान भी हर तरह से साफ हो नीला नजर आता है। दही (शुक्कर) और दूध (चंद्र) की रंगत में भी यही फर्क है कि दूध रंग सफेद होगा। मगर दही की सफैदी में नीलगो शामिल होगी। चोट लगने पर खून जम जावे नीला निशान होगा। ये रंग हर रंग पर चढ जाता है और सिर्फ़ सनीचर का स्याह रंग ही इसको छुपा सकता है। सनीचर लोहे के स्याह रंग और राहु पूरे स्याह (घना स्याह) रंग में माना है। जिस्म के हिस्सों में दिमाग में नकल व हरकत की ताकत माना है। जो हसद व कीना के नाम से भी याद होता है। चलती गाङी में रोङ अटकाना। मासूम बेगुनाह को गुनहगार ठहरा कर सजा के मातम से कच्चा धुआं पैदा करना इस का काम है। बैठे बैठे किसी के खून करने का खयाल पैदा कर देना या दिल में अचानक किसी बात का फिरना (भासरना) खुदबख़ुद बगैर सोच या किसी के बताये आ जाना इस का करिश्मा है। सनीचर के साथ बैठा सांप को मनी का काम देता है। सांप की जहर चूसने का मनका। ख़ुदबख़ुद उङकर जहर के पास जाकर जहर को चूस कर अपने आप में मिला लेता है और जहर आलूदा को बरी कर देता है। ऐसा सांप इच्छाधारी और हर जगह मदद करने वाला सांप होता है। सांप के लिये ये मनी अंधेरे में रोशनी का काम देती है। सनीचर के लोहे के साथ ये चमक पत्थर का काम करता है। ख़ुद तो अपनी जगह से नहीं हिलता लोहे को अपनी तरफ खींचता है। धातूओ के अंदर ये जंग या जंगार बन जाता है। जब सूरज से मिला तो सूरजग्रहण या पाप का अंधेरा इसकी रौशनी के सामने कर देता है। बृहस्पत को पीतल किया तो नीले रंग के जंग में देखा गया। चंद्र के दूध में नीला रंग होने पर वो शुक्कर का दही हुआ। बुध के हीरे में सबको काट देने की हिम्मत दी। मगर ख़ुद बुध के हीरे को इसी की मामूली नर्म सी चीज कलई से कटवा दिया। मंगल के शेर को नींद से सुलाये रखा। केतू के कुत्ते को कुत्ते के दांतो के रास्ते

इसके पागलपन के मादे से दूसरों को भी पागल किया। इन्सान को हसद ने जला दिया । जहां सांप को मनी की हालत में मिला उसके जहर चूसने का दोस्त बना। तो उसे दूसरी तरफ डर भय देकर दुनिया को बचाया। किस्सा कोताह ये अपने घर में आम साधारण हालत या घर का भी है। और नीच भी है। बुध के साथ या अकल से ऊंच होता है। या आकाश के खुल मैदान होने की वजह सेराहु का आसमान जमीन में भूचाल भी हैं। हाथी का सूंड तो दरिया में इसी हाथी के अकस से तेंदूये का जाल भी है। बुध का दोस्त तो जबान 'बुध' का तंदूया भी है। मामूली दिमागों में नकल व हरकत की लहर लाता तो शेरों "बहादुरों' को सुलाता भी है। राशियों में सबसे आखरी राशि नंबर १२ संभाल कर बात का आखिर भी हो जाता है। अगर सिर उल्टी खोपड़ी (दिमाग का ख़ाना नव ३ केतू से मुश्तरका प्यार या वालदैनी मुहब्बत जिसका मुफसिल जिकर शुक्कर के खानों अरमान नंबर ५९ में है) इस की ऊंच हालत है तो टट्टी या पाख़ाना के रास्ते का मुंह । गुदा इसका रास्ता केतू से मुश्तरका और केतू के बराबर का होने की हालत है।

ऊंच हालत

हाथी का सवार या सवारी। शेरों के शिकारी हाथी की ताकत का मालिक। जमीन व आसमान के हाथी की ताकत वालों को नीले समुंद्र के तेंदुये की तरह आसमान की नील चोटी से पकड़कर दिमाग में खवाब की तरहसे फिरा देगा। जहां एक राहू दोस्त हो वहां आसमान व जमीन दोनों के दरम्यानी दुश्मनों का नाश होगा। बहुत ज्यादा गहराई वाली हथेली के असर का मालिक होगा। (लाल किताब फरमान नंबर 69 सफ़ा 49 से 52 ब्यान हथेली)

नीच हालत

बाहर को उभरी हुइ ऊंची हथेली के असर का मालिक। हसद से मारा हुआ या मारने वाला, खयालात की परागंदगी, बिल्ली की तरह पिछले मकान का दोस्त मगर अपने मालिक की खैरखवाही के लिये इसके साथ की परवाह नही के असूल पर। मालिक से मुहब्बत न होगी। मकान से मुहब्बत होगी और मकान के ताल्लुक से भी चारदीवारी से मुहब्बत नहीं। छत से मुहब्बत करेगा। सिर पर भूत सवार की तरह मारा मारा फिरने वाला और नाहक बदनामी दिलाने की हालत का जमाना

पैदा करने वाला। दुश्मन ग्रहों के वकत। मुकदमात फौजदारी का पैदा होना। चोरी धोखादेही गबन की इल्लत का ताल्लुक आम होगा।

बनावट

सूरज सनीचर मुशतरका = बुध होगा। जिसमें राहु की शरारत का स्वभाव होगा।

मंगल बद और सनीचर मुशतरका = राहु बुरी नीयत का होगा।

दो मंगल मुश्तरका (मंगल ख़ुद अकेला मय मंगल मशनोई के जुजवी ग्रह) = राहु होगा नेक नीयत का।

राहु बृहस्पत मुशतरका = बृहस्पत चुप होगा मगर बृहस्पत खतम ही न होगा।

बृहस्पत चंद्र मुशतरका मय राहु = बृहस्पत और चंद्र में से किसी का भी फल खराब न होगा।

राहु चंद्र मुशतरका या बामुकाबिल = चंद्र का असर मध्धम। दिल कर फर्जी वहम दीवाना बना देवे।

बृहस्पत चंद्र-शनीचर शुक्कर मय राहु = 5 की पंचायत बहुत उत्तम फल। क़िस्मत का धनी होगा।

राहु चंद्र सनीचर/या राहु चंद्र बृहस्पत मुशतरका = औरत का सुख लक्ष्मी का सुख हलका होगा। खासकर मीन राशि में।

राहु को सनीचर देखता हो :- हसद से तबाह होगा।

राहु शुक्कर बुध मुशतरका त्र शादी कई बार फिर भी गृहस्ती सुख का मंदा ही हाल होवे।

राहु बुध दोस्त हैं उनकी मुशतरका हालत में कौन प्रबल होगा :- गुफतार फैसला करेगी। (लालकिताब सफ़ा 73 फरमान नंबर 86)।

राहु सनीचर मुश्तरका:- इच्छाधारी या मददगार सांप। (लाल किताब सफ़ा 73 जुज 3) दिमागी ख़ाना नंबर 14 तकब्बर या ख़ुदपसंदी का मालिक होगा।

मंगल मय राहु या सनीचर या राहु सनीचर दोनों के बामुकाबल हों सूरज चंद्र मुश्तरका:- रात दिन हर वकत मुसीबत पर मुसीबत देखे।

राहु या केतू बामुकाबिल पर बुध किसी तरह भी साथ हो:- मौत गूंजे खासकर इन ग्रहों की तखत की मालकीयत के जमाना में।

शुक्कर राहु मुशतरका = बगैर बुध के शुक या पागल शुक्कर होगा।

रंग का फर्क

आम तौर पर राहु का रंग नीला होता है और केतु का दोरंगा स्याह और सफेद मुशतरका। मगर जब दोनों ऊंच हों तो राहू की चीजों का रंग दही सफेद होगा। स्याही का निशान न होगां। बाकी सिफतें

वही होंगी जो राहु की हैं। केतू का रंग बिरंग होगा। मगर लाल रंग का साथ जरूर होगा। जो बुध होगा। मगर असर केतू का ही होगा।

राहु की दो अमली

राहु का निशान जाल या पदम है। हाथी भी कहलाता है। दरिया में इसी हाथी के लिये दरयायी जाल तेंदुया भी हो जाता है। जब राहु चंद्र के ताल्लुक में हो जावे। राहु बुध का दोस्त है। और जबान बुध की चीज है। मगर ये जबान का तेंदुया भी बन जाता है। और जबान को थुथलाने की बीमारी भी कर देता है। जब राहु बृहस्पत की राशि में हो।और उस राशि में बैठा हुआ बुध के टकराव या द्रुष्टी में आ जाये।

2) राहु का भूचाल चंद्र से रूक जाता है। (मुफसिल चंद्र में लिखा है।) और चंद्र बैठा होने वाले घर से आगें नहीं जा सकता। लेकिन सूरज के ताल्लुक से आतशी मादे की लहर और भी गर्म होकर आगे बढेगी। सूरज अपने घर में बैठे ग्रह को कुण्डली वाले की मदद पर खङा करता है और सूरज जब अपने दोस्त ग्रह और दुश्मन ग्रह के साथ ही हो तो दुश्मन ग्रह का असर अपने दोस्त पर डाल देता है। लेकिन अगर इतफाकिया सूरज चंद्र नंबर 5 में मय राहु या केतू वाकया हों तो राहु या केतू का असर ख़ाना नंबर 5 की चीजों औलाद वगैरह और चंद्र पर बुरा ही होगा। मगर सूरज पर बुरा न होगा।

राहु केतू का बाहमी ताल्लुक

1) दोनों ग्रहो का बाहमी ताल्लुक अरमान नंबर 108 में एक खानावार फैरिशत की शकल में लिखा है कि कौन कौन से घर ये दोनों ग्रह बाहम दोस्त, बाहम दुश्मन या बराबर के हैं। उस फ़ेहरिस्त के असर के लिये सफ़ा की (आगे दी हुइ) फ़ेहरिस्त देखें।

2) राहू सिर में लहर का मालिक तो केतू पावों तले होगा या अगर " सिर बङे सरदारां (राहु ऊंच) - पैर बङे गवारां केतू नीच) "मगर केतू जब राहू के मुकाबला पर खङा होवे तों केतू के कुत्ते ने राहु के हाथी को ऐसी मार मारी कि आज तक हाथी सीधे पांव न चल सका। कजरू कहलाया और कभी निचला न बैठ सका और हिलता ही रहा और इसके पांव ऐस उङे कि टांगें सिर्फ मोटे थम ही नजर आने लगे।

राहु हो ख़ाना नंबर में	केतू होगा ख़ाना नंबर में	असर होगा
1	7	पैदाइश के वक्त सख्त आंधी, बारिश, नाना-नानी वकत पैदाइश मौजूद-40 साला उम्र तक दोनों का फल खराब वास्ते ख़ुद मुतलका ख़ाना नंबर 1
2	8	25 साल उम्र तक केतु का फल उमदा 26 शुरू से दोनों का मंदा फल होगा।
3	9	दोनों का उत्तम और ऊंच राशि का।
4	10	24/48 साला उम्र तक चंद्र का फल मद्धम। बाद अजां 45 सो दोनों का उत्तम फल होगा।
5	11	दोनों का दुश्मनाना और खराब।
6	12	दोनों का उत्तम और ऊंच राशि का।
7	1	पैदाइश नानके घर। दोनों ग्रहों का फल रद्दी वास्ते ख़ुद मुतलका ख़ाना नंबर 7
8	2	केतू का उत्तम राहु का खराब फल होगा।
9	3	दोनो का खराब बाप और ससुराल के लिये। भाई बंद दुखिया करें।
10	4	बाप के लिये उमदा माता के लिये खराब। ख़ुद अपनी सेहत भी मंदी।
11	5	अपने लिये उत्तम औलाद पर मदां असर।
12	6	दोनो का खराब और नीच हालत का।

मुंदरजा बाला असर उस वकत होगा। जब राहु या केतू राशि नंबर के घरों के ग्रह बोलने के हिसाब से जारी हो जावें। तखत की मालकीयत के जमाना में राहू या केतू का उन ग्रहों से टकराव या दोस्ती होगी। जो उन के तखत की मलकीयत के जमाना मे राशि नंबर के हिसाब से बोलेंगे। राहु का असर पोशीदा और केतू का असर जाहिरा हुआ करता है।

2) मन मंदर दरवेश कलंदर - मन (चंद्र) मंदर (बृहस्पत) या चंद्र बृहस्पत मुशतरका मन का मंदर आलीशान होगा। दरवेश(बृहस्पत या केतू)कलंदर (तमाशा के जानवरों का मालिक बुध) बुध बृहस्पत, बुध केतू, राहु केतू मय बुध इकट्ठे हों तो मन के मंदिर में कलंदर के तमाशे देंगे।

अरमान नंबर १७७

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
राहु	1	औलाद के विघ्न।			ख़ुदपसंदी का मालिक
बुध	1				होगा।
राहु	1	औरत की सेहत खराब।	राहु	6	राहु का फल रद्दी होगा।
शुक्कर	1	दिमागी कमजोरी।	बुध	12	
		दीवानगी।	राहु	7	लालकिताब सफ़ा 241/17
राहु	5	कुडली वाले की औलाद	राहु	7	औरत की सेहत रद्दी
		(लड़का) के 21 साला उम्र	शुक्कर	1	(दिमागी खराबियां।)
		तक बाबे पोते का झगड़ा	राहु	7	शादी और औलाद में
		होगा। यानि बाबा होगा तो	शुक्कर	7	गड़बड़ होवे।
		पोता न होगा। कुण्डली	बुध	7	लालकिताब सफ़ा 239/9
		वाले की ख़ुद अपनी उम्र	राहु	9	औलाद 21 साल फर्क
		42 साला या इस वक्त			वाली कायम होगी। यानि
		पौते की उम्र 21 साला में			अगर कुण्डली वाले की 21
		अगर दूसरी औलाद हो तो			साला उम्र में औलाद होवे।
		वो जरूर नष्ट होगी अगर			तो जब तक वों 42 साल
		बाबा भी जिंदा हो वर्ना			उम्र पूरी न कर लेवे। दूसरी
		बाबा खत्म होगा। गर्जेकि			औलाद (लड़का) न होगी।
		42 और 21 साला उम्र के			या उत्तम फल की न हो
		टकराव में बाबा होगा पोता			सकेगी। बाप की 42 साल
		न होगा।			उम्र तक ये मनफी का
राहु	6	दिमागी ख़ाना नंबर 14			लफ्ज कायम होगा।
		सनीचर से मुश्तरका			सलाह मशवरा उत्तम फल
		तकब्बर			देगा। ला.की. 163/19
			राहु	10	सिर फट जावे।
			चंद्र	४	

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
राहु	10	उम्र 22 साल तक होगी।			है। फिर भी राहु औरत की
सूरज	11				सेहत मंदी कर देगा।
राहु	12	दिमागी ख़ाना नंबर 12	राहु		स्त्रीयों (औरत व माता) का
		राजदारी। खर्चा हाथी का।	चंद्र	12	सुख हल्का।
		राहु की शरारत फिजूल	सनीचर		
		खुफिया ही कामों में खर्चे।	राहु		मर्दो का सुख हल्का। चंद्र
राहु	12	गो शुक्कर नंबर 12 में	चंद्र	12	चुप ही होगा। बृहस्पत
शुक्कर	12	ऊंच	बृहस्पत		खामोश होगा।

अरमान नंबर 178

केतू

तूं कौन, मैं ख़्वाहमखाह बिन बुलाया मेहमान। जब दो रंगी हुइ इन्सान दोचिता हुआ। जमाने की मिट्टी उड्ने लगी आग लगी शौले बुलंद हुए और तूफानी हवा आ मौजूद हुइ। ये मिला मिलाया जमाना केतु का अहद हुआ। छलावा बना। मगर जान से न मारेगा।

ऊंच हालत:- सूअर की तरह बहादरी में गोली चलने की जगह आकर मरने वाला। या कुत्ते की तरह मालिक की वफादारी में ही मर मिटने वाला। गुजरे हुए जमाने की बुराई को भुला देने और मुस्तकबिल के लिये हौसला दिलाने वाला खुदबख़ुद ही सलाहकार होगा। सनीचर शुक्कर मुश्तरका= ऊंच केतू।

नीच हालत:- कानों का कच्चा पांव चक्कर लगा हुआ। दरवेश की तरह बिला मतलब दौरा लगा लेने वाला। बाओबगूले के चक्कर का मालिक। रस्सी से बंधे हुए पतंग की तरह उड्ने वाला। मगर उलझन में जकड्ा हुआ। मुकदमात दीवानी की लंबी लंबी चालें करने वाला। सहर व समुंद्र का सैलानी और जंगल में मगंल की हवाये बद और नींद (राहु) में जहर मिली हवा का ताल्लुकदार होगा। मकान से मुहब्बत नहीं मालिक से मुहब्बत होगी। और मालिक के ताल्लुक में भी

इसकी नेकी और खूबी को याद रखता और बदी को भूल जाता है।

भेद :- बृहस्पत के ताल्लुक से केतू उंच होगा और जहां केतू उंच होगा वहाँ सब का गोल दायरा और बे-बुनियाद भी कर देने वाला बुध बुरा फल न देने पायेगा। अगर बाप को किस्मत ने मदद न दी तो उसका केतू (लड़का या लड़के की कुंडली के हिसाब से केतू के दौरा शुरू होने का ज़माना) तबदीली हालत जरूर देगा। इस की गैर हाजरी में बुध का आकाश बृहस्पत की खाली और ठहेरी हुई हवा से भरपूर होगा। मगर हवा को चला कर सब जगह की कमी बेशी केपी पूरा करने वाला बृहस्पत दो जहानों का मालिक की तरह दो रंगी का बलवान बिन बुलाया हुआ महमान आ हाजिर होगा। तेज़ी से आया तो तूफ़ान कहलाया अगर बंद खड़ा हो गया तो दम घोंटने का ज़माना होगा। मगर मौत न होगी सुस्ती और बेहोशी (मुरदापन सा ज़माना) जरूर होगी। हाथी के सिर और लंबे सूंड वाले राहू का मुक़ाबला करना इसी दरवेश का काम है। बृहस्पत केतु (बृहस्पत) हवा केतु (तूफान) ने हर चंद कोशिश की कि मुसाफ़िर के कपड़े उतरवा दें। मगर ये काम सिर्फ़ सूरज कि गर्मी ने ही करवाया यानी केतु ने बृहस्पत को चलाया बृहस्पत ने बुध के बुरे असर पर गलबा पाया। मगर दोनों का असल मतलब सूरज कि गर्मी से ही हासिल हुआ। यानी जब सूरज में लाली न हों या मंगल का .... साथ न हो (लाल सूरज सुबह या शाम का होगा जिसमें गर्मी पूरी नहीं होती। गर्मी बढ़ती है तो लाली घटती है। मंगल सूरज मुश्तरका चमकीला और उंच सूरज जरूर होगा। मगर ठंडा जमाना जो अमूमन सुबह या शाम के वक़्त का होता है। लाली मंगल कि है और मंगल में चंदर कि ठंडक जरूर होती है। सूरज नमक है तो मंगल मीठा दोनों का मुश्तरका मेल नमक में मीठा मिला हुआ होगा। केतु तुर्श खटाई है जो नमक या सूरज के नमक को मद्धम और हल्का करती है या केतु के ज़ोर पर होने से सूरज कि गर्मी का असर मालूम होता है और मंगल कि मिठास भी जायका बदल लेती है। ज़ायका ख़ुद सूरज का ही सुभाओ (ख़ाना नंबर 5 बमुजब अरमान नंबर 5 मकान व इंसान के जुजों का ताल्लुक) है। केतु के इस चक्र और बुध कि गोलाई और सूरज व मंगल कि मीठी गर्मी को तेज़ करने या केतु को नेक बना कर बुध को दुरस्त कर के सब ग्रहों कि चाल और बुनियाद को दूरस्थ करना सनीचर कि होंशियारी कि ताकत से होगा। यानी ऐसा कम होवे कि सनीचर भी आ जावे केतु ख़ुद ब ख़ुद इसकी ताबेदारी में जा बैठे। सनीचर कि दुरस्ती से मंगल सूरज

से अलहैदा हो जायेगा और लाली के घटते ही गर्मी पैदा होगी या केतू को कायम करने के लिए सनीचर मंगल बुध का उपाओ करें। ये सिफ़त बेर (गोल लाल बेर) में भी मौजूद है। मगर हो सकता है की इसमें कोई बुध का पोल भी हो। इसलिए लोहे की गोल गोली पर मंगल का रंग जमकर मतलब हल करें। ये लाल मगर लोहे की गोली सब ग्रहों को अपनी अपनी जगह कर देगी। ग्रहों के असर में तबदीली नहीं कर सकते सिर्फ़ उनको दूरस्त चाल (उनकी अपनी अपनी जैसी भी हो पर लगा सकते है)

केतू का घर ख़ाना नंबर 6:- केतू कुत्ता माना तो बुध को कुत्ते की दुम। दुम वाले कुत्ते का घर ख़ाना नंबर 6 मुकरिर है। जिस में बुध और केतू इकट्ठे माने है। (लाल किताब सफ़ा 100 अरमान नंबर 106) दोनों ग्रहों की पक्की बात या पक्का घर होने की हालत में ये ख़ाना नंबर 6 बमूजब ला.की. सफ़ा 97 फरमान नंबर 103 सिर्फ केतू का ही माना है और बुध शुक्र के साथ ख़ाना नंबर 7 में जा मिला है जो नेक है। कुत्तें की दुम, शुक्र की दुम, गाय की दुम स्त्री की गुत बन गई। ये दुम जब शुक्र से हटी या औरत ने सिर के बाल कटवाये। गाये से हटी- बैल गाये लंडवा हुए। केतु कुत्ते से हटी कुत्ता आधा रहा। सांप सनीचर से हटी सिर्फ सांप का सिर ही बाकी रहा। हाथी का सूंड कटा वो महंत बाबा बच्चों का हव्वा हुआ। गर्जेकि जब बुध अपनी जगह छोड़कर यानि ख़ाना नंबर 6 से 12 राशियों के आखिर पर नंबर 12 में ही जा पहुंचा तो कुत्ते की दुम सीधी हुई। कुत्ता पागल हुआ। सांप की अकेली सिरी सांप से और भी ज्यादा नुकसान करने लगी। सूरज का बंदर दुम कटाये आदमी हुआ तो पागलपन का तालूक हुआ। शुक्र की स्त्री ने सिर मुंडवाया मातम की निशानी या दीवाना शुक्र जनाहकार औरत हुई। बाप बेटे के मिलाप में फर्क उड़ा बैठी। चंद्र के घोड़े धन दौलत जायदाद की आमदन की नाली उल्टने लगी। दोनों जहानों के मालिक बृहस्पत ख़ाना नंबर 12 बृहस्पत का घर है। गुरू ने सिर पर राख (बुध) डाली। किस्सा कोताह बुध नंबर 12 ने बृहस्पत गुरू (ख़ाना नंबर 12 का बृहस्पत) को दुनयावी बुध अकल दी। इसका आत्म ग्यान बंद हुआ। गुरू ख़ाना नंबर 12 से हटा ख़ाना नंबर 2 में जा बैठा। जो गुरू की असल जगह है। जिसमें राहु केतू की बैठक है और जिसे पापी ग्रहों की बैठक ख़ाना नंबर 8 देख रहा है और जिसके सामने की नजर पर बृहस्पत के दोस्त

केतु का घर नंबर 6 है। गुरू ख़ाना नंबर 2 में बैठा है तो इस का दूसरा साथी दरवेश कुत्ता इसके चरणों में ख़ाना नंबर 6 (पाताल) का निवासी है। गुरू में हिम्मत है कि वो ख़ाना नंबर 2 गुरूदवारा से पाताल के ख़ाना नंबर 6 में देखता है और पाताल के ख़ाना नंबर 6 से वो गुरू बृहस्पत आसमान ख़ाना नंबर 12 में जा निकलता है।

बृहस्पत ख़ाना नंबर 2 और 12 का मालिक है। ख़ाना नंबर 2 गुरू का गुरदवारा राहु केतू की बैठक दुनिया का मशनोई शुक्र सब गोरख धंधा और ख़ाना नंबर 12 गुरू की समाधि की जगह या गृहस्तियों के सुख की जगह या "शुक्र उंच का स्थान है। ख़ाना नंबर 6 दोनों के दरम्यान में है। सिर्फ बृहस्पत ही ख़ाना नंबर 6 के रास्ते अपने ख़ाना नंबर 12 में जा सकता है। क्योंकि नंबर 6 के दोनों रास्तों के आखिर पर बृहस्पत के ही दोनों घर हैं। ये बृहस्पत की कुटिया केतु का ख़ाना नंबर 6 कुत्ते की असल मलकीयत के मुकाम में सिफत है कि वो अपने घर आये ग्रह को ख्वाह वो केतु के दोस्त हों या दुश्मन कभी बरबाद न होने देगा। मुकाबलतन बृहस्पत ख़ुद बुध से तंग होता है और दुनिया का बृहस्पत साधु अपने सामने से बुध की राख को उठा उठा कर लोगों में बांटता है। (बुध को राख माना है अरमान नंबर 163 ता 165) जो उंच फल की होती है। लेकिन जब यही राख (बुध) बृहस्पत के अपने घर ख़ाना नंबर 2 मे पड़ गयी । तो दुनियादारों के लिये या कुण्डली वाले का बाप राख हुआ। मगर कुण्डली वाला ख़ुद बरबाद न होगा। बाप का सोना दौलत कुतों ने ही खा लिया और जब बृहस्पत के ख़ाना नंबर 12 में पड़ गयी तो न सिर्फ ख़ाना नंबर 6 बरबाद हुआ बल्कि बुघ ख़ाना नंबर 12 के मुकाबला के ख़ाना नंबर 6 में बैठे हुए सब ही ग्रह कुण्डली वाले के लिये जहर के असर के हो जायेंगे।

अगर केतु भी ख़ाना नंबर 6 में आ बैठा हो तो भी बाहर से और आने वाले ग्रहों को खराब न करेगा। अगर खराब करे तो ख़ुद केतु नंबर 6 वाले को तो बुध ही करेगा नंबर 12 का। केतु बजाते ख़ुद गरीब कुत्ते की तरह मालिक की वफादारी और बेवकुफ गधे (केतु ही का नाम है) की तरह सब का बोझ उठा कर मदद देगा। केतु ख़ुद अपना ख़ाना नंबर 6 का फल मामु की तरफ बेशक बरबाद ही करवा लेवे। ख़ाना नंबर 6 सब का भला करे और नंबर 6 का मालिक केतु ख़ाना नंबर 6 ही में सब की सेवा करेगा और ऐवज में अपनी खिदमत का ऐवज न चाहेगा। ख्वाह दुश्मन ग्रहों के वकत केतु के अपने लिये कहरे खवेश बरजाने दरवेश

ही का हाल क्युं न हो। केतू की माता "शुक्र भी ख़ाना न० ६ में नीच फल का होगा।

पापी ग्रहों की खसलत का भेद - जहां कहीं भी लफज पापी ग्रह होगा "शनीचर राहु केतु तीनों ही ग्रहों से मुराद होगी। राहु केतु मुश्तरका को पाप कहते हैं। और "शनीचर उनका मुनसिफ है।

राहु केतू भी शनीचर का ही स्वभाव रखते हैं।

पापी ग्रहों का स्वभाव ये है कि:-

(1) जब कभी भी कोई दुश्मन ग्रह अकेला ही उनके मुकाबला पर हो तो वो उस दुश्मन ग्रह ही की ताकत को जायल करते हैं।

(2) जब दो दुश्मन ग्रह उनके मुकाबला पर हो जावें या ज्यादा तो मुकाबला पर के दुश्मन ग्रहों की ताकत खत्म करने के लिये पापी ग्रहों की ताकत भी दुगनी या और ज्यादा हो जावेगी। ज्युं ज्यूं दुश्मन ग्रह तादाद में ज्यादा होते जावें पापी ग्रहों की पाप करवाने या करने की हिम्मत और भी बढती जावेगी। और:-

(3) जब किसी पापी ग्रह अकेले के मुकाबला पर का दुश्मन ग्रह किसी ऐसे ग्रह को साथ लाकर मुकाबला पर हो जावे जो ग्रह कि पापी ग्रहों का दोस्त हो तो ऐसी हालत में तो ऐसी हालत में पापी ग्रह अपने बुरे काम की हिम्मत को आम हालात की बजाये न सिर्फ दुगना कर देंगे। बल्कि आम हालत की निसबत निहायत ही बुरा फल पैदा कर देंगे। कुण्डली वाले का खूब जोर से नाश करेंगे और अपने दोस्त ग्रह को तो बुरी तरह से मारेंगे। फरजन:-

केतू मंगल बृहस्पत मुशतरका हों तो कुण्डली वाले का भाई लंगड़ा निर्धन और 45 साला उम्र तक किसमत के मैदान में हर तरह से मंदा होगा।

केतू सूरज बृहस्पत- सूरज का फल निहायत ही मंदा होगा।

केतू सूरज चंद्र- लाखोंपति होता हुआ भी मुसीबत पर मुसीबत देखता चला जावे। अकल की कोई पेश न जायेगी। न रात चैन ना दिन सुख हर वकत दुगना मंदा हाल होगा।

केतू सूरज बुध मुश्तरका:- भतीजे भांजे खा पी कर डकार मारने वाले होंगे।

दो केतू मुश्तरका(असल केतू व मशनोई केतू ख्वाह उंच मशनोई खवाह नीच मशनोई) दो गुना मंगल नेक की ताकत को भी बरबाद कर देंगे।

(4) पापी ग्रह जब अपने बराबर के या दोस्त ग्रहों से मुश्तरका हो जावें तो भी अनर्थ या पाप ही करेंगे। मसलन केतू "शनीचर बृहसपसत मुशतरका हों तो औलाद पर हवाये बद के अचानक हमलों से औलाद की मौते होंगी।

(5) पापी ग्रहों से कोई एक जब अपने दोस्त पापी ग्रह ही से मिले(लाल किताब सफ़ा 105 पर मुकरिर किये हुए से) तो निहायत नेक फल देगा। मसलन "शनीचर राहु" शेष नाग इच्छाधारी मददगार सांप होगा। राहु केतु मुशतरका में से जो कुण्डली के पहले घरों मे होगा। वो अपना फल दूसरे में मिला देगा। यानि दृष्टि के वकत में बाद के घरों में होने वाले का असर नेक होगा। पहले घर वाले के नेक असर होने की "शर्त ख़ाना नंबर के हिसाब से होगी। अगर दृष्टि का तालूक न हो यानि ख़ाना नंबर 5-11-2 में तो मंदा फल होगा। अरमान नंबर 176 –

(6) शनीचर का ख़ुद जाती स्वभाव अरमान नंबर 168 (राहु केतु "शनीचर से पहले या बाद के घरों में वाली फैरिस्त) से जाहिर होगा।

(7) राहु व केतु का बाहमी स्वभाव और उनका सूरज व चंद्र से तालूक अरमान नंबर 108 (ग्रहण की फहरिश्त) में दर्ज है।

(8) पापी ग्रहों का फल जब मंदा हो बृहस्पत भी मंदी हैसीयत का गुरू होगा।

(9) लाल किताब सफ़ा 118 फरमान नंबर 114 जुज :- केतू दरअसल शुक्र का असर है। जिसे गऊ माता जो शुक्र का नाम है भी माना है और कुत्ता या सुअर भी। यानि इसके दोनों नाम ही हो गये या जब केतु तकलीफ मे हो उसके बुनयादी ग्रह शुक्र को भी आराम न होगा। केतू ने घुटना जब जमीन पर रखा धरती माता को बृहस्पत याद आया। केतू नीच हुआ बृहस्पत नीच हुआ तो शुक्र बन गया। मगर दोनों जहानों का मालिक न रहा या इन्सान ने मालिक के आगे हार मानी और आजिज़ बन गया। मंगल बद ने घुटना टेका ऊंट बैठा तो दुनिया का बोझ उस पर आ गया। बुध भी तो शुक्र का ही जुज है और केतु भी शुक्र का ही असर है। दोनों का फर्क ये है कि बुध तो अपनी नाली लगा कर शुक्र में मिल जाता है और शुक्र के पीछे पीछे जाता है। मगर केतू के लिये शुक्र ख़ुद बेताब होकर केतू के ढूंढने को जाता है। मतलब ये कि जब कभी शुक्र को बुध की मदद न मिले या शुक्र को मंगल बद सतावे तो केतू की मदद से वो शुक्र आराम पायेगा। दुन्यावी कहानी में औरत

लाल किताब ब्लॉग

को (बुध) की कौतबाह ने तलाश करबाया। मगर केतू को शुक्र ने ख़ुद ढूंढा और फलना फुलना पाया। केतू ख़ुद बृहस्पत के बराबर का है और बृहस्पत हरएक पर मेहरबान है। इसलिये जब शुक्र की मदद करने वाला केतू अगर किसी वजह से ख़ुद ही रद्दी हो जावे तो बृहस्पत के उपाय से केतू को मदद मिलेगी और केतू आगे शुक्र को मंगल से छुड़ा कर ठीक कर देगा। बुध में नुकस है कि शुक्र के साथ बैठा हुआ भी मंगल के साथ मिल कर मंगल बद बन कर शुक्र को बरबाद करता है। मगर केतू अपने बुन्यादी ग्रह शुक्र की जरूर मदद ही करेगा। ख्वाह वो ख़ुद कितना ही दूसरे दुश्मनों से बरबाद हो जावे। शुक्र और केतू दोनों ही एक हुए या जब दोनों ही नीच हुए। गाय और कुत्ता दोनों ही गंद (गुंह) खाने लगे। ये कलयुग की निशानी हुइ।

(10) केतू की तीन पाया शकल का मुंह जिस बुर्ज की तरफ हो तो समझेंगे कि केतू अपना असर मिला रहा है या डाल रहा है। उस बुर्ज में जिस की तरफ कि इसके डंडो का मुंह है। डंडों के मुंह का रूख कुत्ते के मुहं का रूख होगा।

(11) केतू की तीन टांगे बृहस्पत बुध मंगल हैं। इसीलिये "शुक्र की जान माना गया है।

राहु केतू की दूसरे ग्रहों से नाखून बाजी

दिल का भेद शनीचर की आंख की बीनाई ने बाहर जाहिर कर दिया। अभी इन्सान ने आंख दिख्लायी भी न थी कि राहु केतू का पुन पाप इन्सान के नाखुनों से जाहिर होने लगा। नौ ग्रहों ने बारह राशियों के चक्कर को तो बच्चे पर नौ महीने में असर किया तो इन्सानी नाखून भी 9 महीने में ही मुकम्मल हुआ।

नाखुन- खराब हो जावें। कट जावें या उड़ जाने पर :-

तबदीली हालात की निशानी

राहु का असर....हाथ के नाखुन पर	दायें हाथ पर......राहु का आम अरसा म्याद 6 साल होगा। बायें हाथ पर..... राहू की महाद'शा 18 साल बुरा हालत या राहु की उम्र कुल 42 का अरसा (नेक असर) होगा।
केतू का असर...पांव के नाखुन पर	दायें पावं पर - केतू का अरसा आम यानि 3 साल होगा। बाये पांव पर...केतू की महादशा 7 साल बुरी हालत या केतू की कुल उम्र 48 साल का अरसा (नेक असर) होगा

चूंकि राहु केतू एक दूसरे के सातवें होते हैं। बाहम दोस्त भी हैं। एक दूसरे की बनी बनायी बिगाड़ भी देते हैं। (ख्वाह एक की नेक हो या बद दूसरा नेक को बद और बदी को नेक कर देगा।) जिस जगह घर के ग्रह बनते हैं वहां ही उंच भी हो जाते हैं। इस असूल पर अगर राहु हाथ के दायें हिस्सा पर असर दे रहा हो तो केतु पांव के बायें हिस्से पर असर दे रहा होगा और हरइक अंगुली मय अंगूठे के नाखुन से उनका बाकी ग्रहों से तालुक जाहिर कर देगा। यानि राहु केतु का असर बाकी ग्रहों से जाहिर होगा।

अंगूठे से शुक्र का :- (ख्वाह अंगूठा हाथ का ख्वाह पांव का। केतू मुशतरका या मशनोई शुक्र कुण्डली में ख़ाना नंबर 2 राहु केतू की मुशतरका बैठक है और तमाम तरफ से बिगड़ी हुइ बात की बिगड़ी को बनाने वाली चीज ढला ढुलाया शुक्र होता है। यानि अंगूठा इन दोनों ही ग्रहों का मैदान है। जिसमें राहु केतू का दोस्ताना या दुश्मनाना अपनी मर्जी का होता है। 5) ये जगह राहु

तर्जनी से-बृहस्पत का-कुण्डली का ख़ाना नंबर 9-12

मध्धमा से-शनीचर का-कुण्डली का ख़ाना नंबर 10

अनामिका-सूरज का-कुण्डली का ख़ाना नंबर 1-5

कनिष्का-बुध का-कुण्डली का ख़ाना नंबर 6-7

अंगुलियां मय अंगूठे और हथेली के अंदरूनी तरफ का हिस्सा } चंद्र कूण्डली का ख़ाना नंबर 4

अंगूठा मय अगूठे के जोड़ या गांठ या नाखुत के खून का रंग } मंगल का (हर दो मंगल) कुण्डली का ख़ाना नंबर3-8

ख़ाना नंबर 11 राहु केतू का एक अकेला दो ग्यारह का है। यानि जब $\frac{3-9}{5-11}$ एक ही का असर ख़ाना नंबर 11 में आवे तो अकेले की ताकत। यानि जब दोनों बैठे हों तो सिर्फ एक का नंबर 11 में असर होगा। जब शनीचर भी साथ होकर ख़ाना नंबर 11 में असर होवे तो 11 गुना असर होगा। (अच्छा या बुरा)

(1) जो नाखुन बरबाद या खराब हो जावे। समझ लेंगें कि इस नाखुन के मुतलका ग्रह पर राहु केतू का असर होने की तबदीली आ गयी। जो कुण्डली के मुताबिक अच्छी या बुरी गिनी जावेगी। मगर तबदीली हालात जरूर होगी।

(2) ख़ाना न० २- अंगुठा शुक्र तो बना मगर सिर्फ राहु केतू मुश्तरका का मशनोई शुक्र का छलावा होगा। या अगर $\frac{\text{राहु}}{\text{केतू}}$ ख़ाना नंबर $\frac{2-8}{8-2}$ में हों तो किसमत का मैदान एक न शुद दो शुद के रंग बिरंग की झलक देगा।

अरमान नंबर 179

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
केतू	1	औलाद के विघ्न हों।	केतू	6	दिमागी ख़ाना नंबर 14 शनीचर
शुक्र	1				से मुशतरका। तकब्बर
केतू	2	ला.की. 163/20,			ख़ुदपसंदी।
		164/25	केतू	6	केतू का फल रद्दी होगा।
केतू	3	न सिर्फ कुण्डली वाले	बुध	12	
		को अपने भाई बंदो से	केतू	6	कुत्ते को घी हजम न होने का
		दिक्कत होगी। बल्कि	शुक्र	6	हाल होगा। औरत बांझ होगी।
		लड़की जात (लड़की			
		की ससुराल) का	केतू	7	शादी औलाद में गड़बड़ होवे।
		फल मंदा होगा।	शुक्र	7	
		ला.की. 315/7	बुध	7	
केतू	4	दिमागी ख़ाना नंबर			
		16 ईस्तकलाल काम	केतू	8	केतू का असर सोया हुआ। कुत्ते
		में लगा रहना। ख्वाह			की नींद कम होती है। मगर
		भला काम हो ख्वाह			ख़ाना नंबर 8 में शेर की नींद
		बुरा काम हो।			वाला कुत्ता होगा और सोया हुआ।
केतू	5	लड़के ज्यादा से			यानि औलाद की पैदाइश या
		ज्यादा 2 और बस।			औलाद जिंदा रहने का वकत
		मगर वो मुकमल			बहुत देरी से आयेगा।
		और हर तरह के			
		उमदा होवे। अगर	केतू	9	औलाद गिनती ही की होगी।
		बृहस्पत मंदा तो घर			बड़ा लड़का फिर भी किसमत
		में लड़के की आवाज			का हल्का। मगर कुण्डली वाला
		की जगह कुत्ते रो देंगे।			ख़ुद हर तरह से उत्तम फल का।
		यानि 45 साल उम्र			
		तक औलाद का	केतू	12	औरत जात औलाद और बहादुरी
		असर के। बशर्ते कि	शुक्र	12	में सूअरनी होगी। (12-12
		बृहस्पत उमदा फल			बच्चे और वो सब मोटे और
		मुबारिक न होगा।			सूअर की तरह बहादुर)।

बाकी खानों के लिये लालकिताब में दिया हुआ केतु का हर खाने का हाल देखें।

अरमान न० 180

दो इकट्ठे ग्रह एक ही घर में बुरा फल(मौत) न देंगे।

खासकर (1) नंबर 1-2-7-10 में। (2) ख़ाना नंबर 11 में अपन अपना फल होगा।

ख़ाना नंबर	**बृहस्पत सूरज मुश्तरका (शेर दमकता सोना)**	ख़ाना नंबर	**बृहस्पत सूरज मुशतरका (शेर दमकता सोना)**
दोनों मुशतरका	दिमागी ख़ाना नंबर 20 आराम होवे।	दोनों ख़ाना नंबर 1 में	दुनिया का पूरा आराम हो।
दोनों बा - मुकाबिल	इज्जत बजुरगी का मालिक। अंदर और बाहर से नेक हो। राजदरबार से नेक तालूक व तरक्की मगर किसमतअखत्यार किसी दूसरे के हाथ में होगा। यानि जिस जिस राशी नंबर में हों उस उस राशी के घर के मालिक के तालुक का असर होगा। ला.की. 194/3, 193/4		**बृहस्पत चंद्र मुश्तरका(छतर)**
		दोनों मुशतरका या बा-मुकाबिल	चंद्र का पूरा नेक असर होगा। दिल की पूरी शांति होवे। कुण्डली में अपने दोस्त ग्रहों से पहले घरों में हों तो अपने से
दोनों नंबर 1	ला.की. 194/7	दोनों मुशतरका	बाद अगर बाद के घरों हों तो पहले घरों को मदद जरूर देंगे। दिमागी ख़ाना नंबर 21 हमदरदी या रहम मिजाजी का मालिक होगा।
दोनों बाहम देख रहे और चंद्र कायम	जरूरी सफर मुतलका राजदरबार के नेक नतीजे हों।		
दोनों मुश्तरका को केतू देखे।	नतीजा ज्यादा मंदा। दृष्टि का ज्यादा दर्जा मंदेपन की ज्यादती का दर्जा होगा।	दोनों मुशतरका के बा-मुकाबिल	शुक्र मंगल शुक्र शनीचर मंगल शनीचर } नेक फल देंवे।
दोनों मुशतरका को शनीचर देखे	फैसला हक में होने की कोई तसल्ली न होगी। शनीचर अगर बजाते ख़ुद नेक तो कदरे उमदा वर्ना सख्त खराबी होवे।	दोनों मुशतरका	सबसे उत्तम लक्ष्मी।

ख़ाना नंबर	बृहस्पत चंद्र मुश्तरका (छतर)	ख़ाना नंबर	बृहस्पत चंदर मुशतरका (छतर)
दोनों	मंगल :- सबसे उतम लक्ष्मी होगी।	दोनों	दिमागी ख़ाना नंबर 39 - वजह सबब की
मुश्तरका	सूरज :- ताजिर। अहले कलम	को बुध	ताकत
	दूसरों को भी फायदा पहुंचे	का	दिमागी ख़ाना नंबर 40 - मुकाबला एक
	बजरिया ठोस हाजिर माल।	साथ	चीज का दूसरी से
को देखे	बुध:-तजारत (दलाली) फायदा		दिमागी ख़ाना नंबर41-इन्सानी खसलत
	अजीम होवे।		दिमागी ख़ाना नंबर 42 रजामंदी का
या साथ हो	शुक्र:-शादी के दिन से धन दौलत		मालिक होगा।
	आगे बढना बंद होवे बल्कि घटना	दोनों	बुध का साथ नंबर 2-4 का और नंबर 2-4
	शुरू हो जावे।	को	के इलावा दूसरे घरों का बृहस्पत के हाल
	शनीचर बृहस्पत का धन शादी के		में अरमान नंबर 125 ता 129 मुफसिल
	दिन से आगे और बढना शुरू होता		लिखा है। मंदाफल होगा। ख्वाह
	है।		लाखोंपति फिर भी मुसीबत पर मुसीबत।
	शनीचर:- इसकी दोस्ती से दूसरों		अकल मदद न देवे।
	का फायदा ही फायदा मिले।	दोनों	दोनों का उतम फल।
अकेले चंद्र	बुध बृहस्पत या:- समुंद्र पार सफर	नंबर 1	
के बा-	सूरजबुध:- का बुरा नतीजा होवे।	दोनों	दोनों का उतम और बृहस्पत का अच्छा
मुकाबिल		नंबर 2	होगा। बृहस्पत का जो नंबर 4 में उंच
दोनों को	बुध का साथ उत्तम फल। बुध की		होता है। बड़ के दरखत का।ला.की.
	दुश्मनी न होगी। बल्कि मदद		219/1
	होगी। दिमागी ख़ाना नंबर 18	दोनों	धन रेखा। दौलत का मालिक होगा मगर
	भरोसा, अगर शनीचर उमदा तो	नंबर 3	इसका धन भाइयों को तारे। जो
	नेक असर वर्ना फोकी उम्मीद।		इकबालमंद हो जावें। ला.की. 302/8
	नासतिक होगा।	दोनों	दोनों ग्रहों का उतम मगर बढेगा। चंद्र का
	दिमागी ख़ाना नंबर 37 - राग	नंबर 4	नेक फल। बड़के दरखत की तरह बड़के
	दिमागी ख़ाना नंबर 38 -		तने ही से जड़े निकलकर इसके स्तून
	जबानदानी		मददगार

ख़ाना नंबर	बृहस्पत चंद्र मुश्तरका (छतर)	ख़ाना नंबर	बृहस्पत चंदर मुशतरका (छतर)
नंबर 4 जारी	बनते जाने की तरह सुख सागर नेक हो जावे। दिल की पूरी शांति हो। नेक से नेकी से नेक होता चला जावे। पानी की नाव हवाई जहाज का काम देवे। ला.की. 159/7 व 219/1	नंबर 9	दबा हुआ धन होगा। जो दरखत की अच्छी जगह पर होने वाली जड़की तरह चंद्र बृहस्पत के वकत जिस का इसके वर्षफल से पता चलेगा। फिर उपर को यानि नीचे से दरखत के उपर के हिस्से में नेक असर करने की तरह फिर चल पड़ेगा। और कुण्डली वाले के अपने काम आयेगा। दिल की पूरी शांति और बड़के दरख्त की तरह वालदैन (बजरूगों) का पूरा नेक और उतम साया होगा। चंद्र की तमाम चीजों का नेक असर होगा। पानी की नाव हवाई जहाज का काम देवे। ला.की. 159/7
नंबर 5	चंद्र बृहस्पत से मिला हुआ सूरज उतम फल देगा। यानि अब सूरज का फल दोनों की जगह बुलंद और नेक होगा। ला.की. 301/5		
नंबर 6	बुध और केतू के तालूक से यानि जैसा भी उनका हाल हो वो इन दोनों ग्रहों के उतम फल में अपना असर मिलायेंगे।		
नंबर 7 ला.की. 301/5	बचपन में तकलीफ हो। चंद्र के वकत (24 साला उम्रसे) माता पिता दोनों दुखिया होवें। धन दौलत शादी के दिन (शुक्र का असर) और लड़की के जनम से(बुध का असर) घटना शुरू हो जावे।	नंबर 10	मां बाप के पास सोने चांदीकी ईटे होते हुए भी आखरी वकत कुण्डली वाले के लियेअधयारे के पत्थर और नेक पानी की जगह सिर्फ पानी के बुलबुलों की झाग होगी। किसमत मंदी (सिर्फ वालदैन की तरफ से लड़के के अपने लिये देने के लिये)। वो झाग भी समुंद्र झाग न होगी। जो किसी दवाई के काम आ सके। "घोड़ी
नंबर 8	उम्र लंबी होगी। मगर धन की खातिर भाइयों को मारे। इसका या ऐसा धन भाइयों को मरवावे या मारे। ला.की. 302/9		

ख़ाना नंबर	बृहस्पत चंद्र मुश्तरका (छतर)	ख़ाना नंबर	बृहस्पत शुक्र (कल्लर जमीन)
नंबर 10 जारी	की दुम लंबी तो सवारी को क्या मदद बाप की दाढी उमदा तो बेटे को क्या सहारा"। सिर्फ दिखलावे की शान (वो भी वालदैन की अपनी) मगर लड़का दूसरों का निगरान होगा।	दोनों मुश्तरका या बा-मुकाबिल	दोनों का फल खराब। सोने में मिट्टी मिली हुई।मगर औरतकी मदद मिलती रहे। ला.की. 167/33
		दोनों नंबर 2	नर औलाद के बिघ्न। सोने की जगह मिट्टी तो होगी। मगर वो मिट्टी आम मिट्टी से कीमती असर की हालत की होगी। या मिट्टी के कामों से सोना और सोने के कामों से राख हासिल होगी। ला.की. 144/1
नंबर 11	रफाये आम के काम। दूसरो का तारें। मगर अपनी किसमत (अपने पेट का तालुक) के मालक ख़ाना नंबर 3 के ग्रह होंगे। अगर ख़ाना नंबर 3 खाली ही हो तो ख़ाना नंबर 11 के ग्रह सोये हुए ही गिने जायेंगे। ख़ाना नंबर 5 का ख़ाना नंबर 11 पर कोई असर न होगा।	दोनों नं 3	खुशहाल भागवान होगा।
नंबर 12	मिसल राजा मगर धन दौलत से पूरा त्यागी होगा। शादी के दिन (शुक्र का वकत) और लड़की की पैदाइश (बुध शुरू) से धन बरबाद और जायदाद का फल मद्धम होगा। चांदी (चंद्र) की जगह कलई की सफेदी (बुध का असर) होगी। सोने चांदी के थालों में अब पायेदार उमदा गजा की जगह गंदी बदबो के फूल होंगे। जायदाद के मकान अंधेरे और उनमें मकड़ी के जाले बहुतेरे पैदा होंगे।	दोनों नंबर 7	मिट्टी भरी तेज आंधी की तरह की किसमत। बृहस्पत का असर मंदा होगा। शूककर का असर भी सिर्फ जाहिरदारी का और बिन मतलब होगा। जो बृहस्पत के असर में जहरीला-पन (वासते पैदाइश नर औलाद खासकर) देगा। जमाने की तरफ से बृहस्पत की हवा का सहारा फर्जी। बल्कि जहरीला होगा। या वो ख़ुद ही यज्ञ के लिये अपनी ही औलाद की कुर्बानी देकर सोने की जगह मिट्टी बटा लायेगा। या बट कर आ जायेगी।

ख़ाना नंबर	बृहस्पत शुक्र	ख़ाना नंबर	बृहस्पत मंगल
दोनों को बुध का साथ नं ७	अगर बुध का भी साथ हो जावे। (बुध नंबर 7) तो आंधी की मिट्टी भरी हवा से बुध का शीशा अगर और नही तो शुक्र बुध मशनोई सूरज का असर (धन दौलत न सही खुराक अन्न-पानी) तो जरूर पैदा रखेगा। जर्द गैस होगी। ख्वाह दोनों जहरीली ही हो। ला.की. 144/1	दोनों नं 2 बुध नंबर6 दोनों नं 6 बुध नंबर 2	ला.की. 282/12 ला.की. 282/14 **बृहस्पत बुध** (औखली-फकीर की गूदड़ी)
दोनों नं 9	दुनिया का पुरा आराम।	दोनों मुश्तरका	आवाज की हालत (ला.की. फरमान नंबर 87 सफ़ा 73) फैसला करेगी कि दोनों मुशतरका में प्रबल कौन है। दोनो ग्रह मुशतरका होने का फल अरमान नंबर 130 जूज (अ) में जिकर है। बुध बृहस्पत एक ही घर में होने पर आकाश में हवा बंद वाली हालत होगी। अगर ऐसी हालत में कुण्डली में शनीचर उमदा होवे तो कुछ भरोसा व मतलब होगा।(वासते धन दौलत) वर्ना फोकी तबाह करने वाली उमीद होगी।
	बृहस्पत मंगल (जुजवी सोना-नेक-अंकुश, बद ढाल)		
दोनों मुशतरका	हरदम मदद मर्दां मददे ख़ुदा। निहायत उतम असर। हौसला अंदरूनी व गैबी ताकत की मदद होगी। ला.की.166/31-32		
दोनो को शनीचर देखे	मुखालफत मर्दां न होगी। बल्कि धन दोलत के लिये महावन उम्र (ला.की.सफ़ा 322) का नेक असर होगा।	दोनों ग्रह बा मुकाबिल	अपना ही बेड़ी डोब मल्लाह होगा। पिता की उम्र और उसके धन दौलत पर तबाही कर देगा। मगर कबीला का भारी बौझ उस के जुम्मे होगा। दोनों ग्रहों के बामुकाबिल या आमने सामने होने की दृष्टि अगर :- 100 फीसदी हो.....निहायत खराबी का असर होगा। 50 फीसदी हो..खराब असर होगां 25 फीसदी हो..मामूली असर होगा।
मंगल बद का तालूक	मुखालफत मर्दां, रिश्तेदारो की मौतें, मातम, रंज व गम आम होंगे।		
दोनों नंबर 2 नंबर 7	दोनों ग्रहों का निहायत ही उतम फल होगा। ला. की. सफ़ा 255 जुज़ 2		

ख़ाना नंबर	बृहस्पत बुध
दोनों ग्रह बा मुकाबिल जारी	अगर बृहस्पत कुण्डली के पहले घरों में हो तो बृहस्पत का 34 साल उम्र तक अच्छा फल होगा। 35 से बुध का बुरा असर शुरू होगा। लेकिन अगर बुध पहले घरों का हो । तो बुध का 34 साल उम्र तक अच्छा असर और 34 तक बृहस्पत का मंदा फल होगा। 35 से बुध का असर निकम्मा और बृहस्पत का उमदा शुरू होगा। बृहस्पत कायम और बुध उंच घरों में } दोनों का मुश्तरका असर राजयोग होगा। कागजी कारोबार छापाख़ाना वगैरह अज पवलिक नेक असर देवे। ईमानदारी का धन साथ देवे।
बृहस्पत बुध नं 2	ला.की. सफ़ा 153/3
दोनों नं 3	साबर व शाकर होवे।
दोनों नं 6	इबादतगार होवे।ला.की.286/13
दोनों नंबर 7	कभी शाह कभी मलंग कभी खुशहाल कभी तंग ऐसे मर्द/औरत

ख़ाना नंबर	बृहस्पत बुध
	की ख़ुद अपनी औलाद न होवे। मतबन्ने रखे। फालतू और बेमायनी खर्चा।
दोनों मुशतरका और चंद्र बा मुकाबल	} सफर का बुरा नतीजा होवे।
	बृहस्पत शनीचर **(फकीर की झोली)**
दोनों मुशतरका	दोनों की मुशतरका धन रेखा होगी। जो धन कि शादीके दिनसे बढने लगे। (कुण्डली वाले की शादी)। ऐसे शख्स में कौत खयाल। सोच विचार की ताकत दर्जा कमाल होगी। जिंदगी (अरूज) बढने की ताकत ख़ुद्दारी मगर हसद से बरी होगा। ऐसे शख्स की किसमत का फैसला ख़ाना नंबर 11 के ग्रह करेंगे।
दोनों ग्रह बाहम बा-मुकाबिल	बिलकुल अलैहद अलैहदा और दृष्टि से भी न मिलते हों का हाल अरमान नंबर 120 में जिकर है। जब दोनों 100 फीसदी के

ख़ाना नंबर	बृहस्पत सनीचर	ख़ाना नंबर	बृहस्पत सनीचर
दोनों ग्रह बा मुकाबल जारी दोनों दृष्टि में	खानों में बाहम देख रहे हों। तो मुशतरका ही होने का असर देंगें। बृहस्पत देखता हो शनीचर को 50फीसदी पर-इलम तिलसमात जादुगरी। 25 फीसदी योग अभ्यास का मालिक हो। शनीचर देखता हो बृहस्पत को तो:- कुदरती तौर पर जिसमानी कमजोरी और धनदौलत हलका होगा।		इशक न होगा। चंद्र उंच का नेक फल साथ होगा। इस जगह अगर चंद्र साथ भी होवे। तो चंद्र नष्ट या रद्दी न होगा। दुन्यावी तोहफा होगा। ला.की. 158/2
दोनों को देखता हो	शुक्र :-ऐसे शख्स का धन मानिंद मिट्टी का पहाड़होगा। दिखलावा बहुत किसमत कम। ऐसा धन उसके अपने खानदान और औरत के काम लगे। (अपने खानदान बाबे की तरफ का हिस्सा) और शादी के दिन से ऐसा धन बढे। केतू :- औलाद पर बुरी हवा के हमले। (जिन भूत की मार) मकान में शारेआम से सीधी आने वाली बुरी हवा का बुरा असर लेंगे।	दोनों नंबर 3	औसत दर्जा जिंदगी वाला। (क्योंकि शनीचर ख़ाना नं 3 में निर्धन हो जाता है। आखरी उम्र में आराम पावे।
दोनों नंबर 1	मंदा हाल। साधू या गुरू मगर काग रेखा वाला होगा।	दोनों नंबर 4-5-6 में	साधारण हालत जैसी कि बाकी ग्रहों के हिसाब से होवे।
दोनों नंबर 2	सेहत अफजा। खुशगंवार। सर-सबज पहाड़की तरह चंद्र का उतम फल होगा। इशक में दर्जा अव्वल होगा। मगर गलबा	दोनों नंबर 7	धन बरबाद मगर जायदाद उमदा। लड़की (बुध का दौरा) की पैदाइश से धन दौलत (बृहस्पत का) खासकर बुरा फल होगा। शनीचर के वाकयात नया मकान दीगर मुतलका चीजें मुबारिक फल देंगी। जिन पर धन खरचने पर भी और बढेगा। और बरकत देगा। मगर ख़ुद नेक किरदार भला लोग भले काम करे। मगर बचपन में तकलीफ रहे।

ख़ाना नंबर	बृहस्पत सनीचर	ख़ाना नंबर	बृहस्पत सनीचर
दोनों नंबर 7 और	चंद्र या शुक्र या मंगल कायम ला.की. — बरकत बढनेवाली मगरमच्छ रेखा का असर होगा। 307/ बे (i) (ii)		आसूरी माया होगी जो दूसरों को तबाहकरे।
दोनों नंबर 7 या 12 और	चंद्र या शुक्र या मंगल नष्ट या नीच होवे। — नीचे को मुंह किये या कुछ अरसा के बद (यानि जब से नष्ट या नीच ग्रहका दौरा शुरू होवे) बरकत घटने वाली मगरमच्छ रेखा होगी।	दोनोंनं11 यादोनों बजरिया दृष्टिनं11 में इकट्ठेहों	इश्क़ में दर्जा मअतदल का होगा। दूसरों के लिये मददगार इच्छाधारी (ला.की. 153/4 व 213/10) हरदम साया करने वाला सांप होगा। बल्कि लोहे को पारस का काम देगा। ऐसा शख्स माया पर पेशाब की धार मारने वाला होगा।
दोनों नंबर 8	दरम्याना असर (धन का)ये घर अब मार्गअस्थान न होगा। उम्र जरूर लंबी होगी।	दोनों नंबर 12 में ला.की. 300/5 जीम	इस का धन ऐसा होगा जो ख़ुद खरचे और खाये मगर दूसरों को कोई फायदा या नुकसान न होगा। शादी के दिन से धन औरभी बढेगा।
दोनों नंबर 9 नोट ला.की. 296/4	मच्छ रेखा और उर्ध रेखा की पूरी बलवान ताकत का। ख़ुद अपने लिये नेक असर होगा। (दुन्यावी तोशा ला.की.सफा158/2,164/21, 168/27) ऐसा धन जो अपने हाथों खर्चे बरते दूसरों का बुरा न होगा। और नही नफा देगा।ला.की. 309	दोनों नंबर 12 चंद्र 7 या शुक्र या मंगल कायम	शुक्र मंगल -या मगरमच्छ रेखा होगी। अगर चंद्र नष्ट तो आरजी वकत की मगरमच्छ रेखा होगी। शुक्र या चंद्र या मंगल में से जो ग्रह कायम होवे मगरमच्छ रेखा उस ग्रह का उमदा असर देगी। जो रद्दी हो जावे उसका मुतलका असर मंदा देगी। मंदा असर होने का दिन रद्दी ग्रह के दौरा के
दोनों नंबर 10	ख़ुद अपने लिये श्री गनेशजी के असर वाला यानि निहायत उतम असर का मालिक होगा। मगर इसका धन न		

ख़ाना	बृहस्पत सनीचर	ख़ाना	सूरज चन्द्र
नंबर		नंबर	
दोनों12/7	शुरू होने का दिन होगा। इसी	चंद्र को	खुश्क कुएं ख़ुदबख़ुद पानी देने
चन्द्र या	तरह और बढने का अरसा और	देखे	लग जायें। चंद्र का फल चंद्र की
शुक्र या	दिन अच्छे और कायम (सिर्फ	सूरज	नसफ म्याद यानि 12 साल तक
मंगल	शुक्र या चंद्र या मंगल में से	मगर	सूरज के नीचे दबा रहने के बाद
कायम	कोई एक या तीनों ही बाकी	सूरज नं	अलैहदा और सूरज की तरह उतम
जारी	ग्रहों का मगरमच्छ रेखा से	1 न हो	होगा।
	कोई तालूक न होगा।) ग्रह के	दोनों नं1	मिसल राजा होवे।
	दौरा और शुरू होने का दिन होगा।	दोनों नं2	हानि होवे।
	सूरज चंद्र (रथ)	दोनों नं3	मतलब परस्त होगा।
	खालिस/बड़ का दूध	दोनों नं4	मौत दरिया नदी से दिन के
दोनों	सूरज का पूरा उतम फल होगा।	शनीनं10	वकत होगी।
मुशतरका	मगर औरतों से मुखालफत।	दोनों नं5	जिंदगी भर आराम रहे।
	बुढापा खास कर उमदा होगा।	दोनों नं6	माता पिता के कतल से ख़ुद भी
दोनों	दिल की ताकत में सूरज का	मय राहु	मौत पावे। बशर्तेकि ख़ाना नंबर 2
बा -	नेक और उतम असर होगा।	या केतू	खाली हो।
मुकाबिल	ला.की. 192/1	दोनों 11	उम्र 9 साल होवे।
दोनों के	मंगल बद और केतू:- निहायत		**सूरज शूक्र**
बा -	बुरी जिंदगी। ला.की. 194/5		(लाल मन्नूर)
मुकाबिल	लाखोंपति होता हुआ भी न रात	दोनों	हवाई बृहस्पत का फल होगा।
	आराम न दिन चैन। हरदम	मुशतरका	
	दुखिया होवे।	दोनों	वालदैन बचपन में गुजर जावें।
	बुध:-कौत दिल।ला.की.195/11	बा -	जिस घर में शुक्र होवे उस
	मंगल बद या ऐजन	मुकाबिल	
	पापी ग्रह या शुक्र		
	लाल किताब सफ़ा 224/4		

ख़ाना नंबर	**सूरज शुक्र**	ख़ाना नंबर	**सूरज बुध**
	घर का हाल खराब होगा। शुक्र		असर देगा।औरत का रंग व स्वभाव
	की मुतलका चीजों का। सूरज		(आत्मिक शक्ति)सफ़ा वनेक होगा।
	का ख़ुद या सूरज के बैठे होने		दूसरो की बजाये ख़ुद अपनी और
	वाले घर पर शुक्र का बुरा असर		अपने हाथों की पैदा करदा कमाई
	न होगा।		पर भरोसा और सबर करने वाला
दोनों नं7	औरत से झगड़ा होवे।		होगा। जिस का नतीजा नेक होगा।
सूरज मंगल			या वा ख़ुद साख्ता (अपने आप
(तलवार-लाल(हीरे मोती) - लाल (रंग)			अमीर बना हुआ) मर्द होगा। उमदा
दोनों	लाली का उतम फल। दोनों का		सेहत होगी।(ला.की.सफ़ा 196/14)
मुशतरका	साफ दिली में उतम फल होगा।		सिर रेखा और सेहत रेखा के
	उम्र 100 साल खासकर ख़ाना		मिलने की जगह का जाविया।
	नंबर 1 या 2 में।		ला.की. 192/2, 194/4, 195/9
दोनों नं9	आहली मर्तबा होगा।	दोनों के	चंद्र या बृहस्पत:- मंदे नतीजे होंगे।
नंबर 10	अजीजों से जर व माल का	बा -	शनीचर :-नेक फल दोनों दुश्मन
	झगड़ा होवे।	मुकाबिल	(सूरज और शनीचर) अपना अपना
दोनों न	शनीचर नंबर 11 भागवान		नेक काम करते जावें।
10 में और	चंद्र नंबर 6:- होवे।		सूरज कायम सूरजका पूरा
	सूरज बुध		और बुध उंच घर नेक असर।
	(पहाड़- शीशा)		ख़ुद अपनी कलम के जरिये
दोनों	गो बुध चुप होगा। (सूरज के		राजदरबार से बरकत पावे। नेक
मुशतरका	साथ में) मगर स्त्री की दिमागी		और ईमानदारी का धन साथ देवे।
	ताकत निहायत उतम होगी। या		सूरज देखे बुध को 100 फीसदी
	उसकी जबान का लफज पत्थर		पर :- बुध की ताकत जुदी जाहिर
	पर लकीर का		न होगी। सूरज को मदद ही होगी।
			स्त्री धर में (मर्द के

ख़ाना नंबर	सूरज शुक्र	ख़ाना नंबर	सूरज बुध
सूरज देखे बुध को जारी	के ससुराल) सूरज की चमक होगी। या वो अमीर होंगे।		मर्द बेशक इतना नफा अपनी जान के लिये न पा सके।
बुध देखें सूरज को	नेक फल सूरज के नेक असर से मिट्टी दूर.और शीशे की तरह चमक और बढेगी। 50 फीसदी से:- दुन्यावी तुजरबा उमदा। 25 फीसदी से :- इल्म जौतिष उमदा। चंद्रनष्ट:-दिमागी सदमात होंगे।		"आर ढांगा पार ढांगा बिच टल्लम टल्लीयां आवण कूंजा देन बच्चे नदी नहावन चल्लीयां।" चलते हुए रहट की तरह हरदम आमदन जारी फव्वारे का उठता हुआ और ताजा पानी की तरह की किसमत का मालिक हो। मगर राजदरबार से कोई ऐसा नफा न पावेगा।
दोनों नं 5 शनी नं 9	उमदा सेहत होगी। औलाद पर बुरा असर न होगा।		**सूरज शनीचर** **(कव्वा- दो मुहं का सांप)**
दोनों नं 7 ला.की. 240/13	औरत अमीर खानदान से और सूरज की तरह उतम और मुकम्मल होगी। रंग और स्वभाव भी नेक और साफ होंगे। सूरज नंबर 7 में नीच फल कर देता है शुक्र का इसलिये ख़ुद	दोनों मुशतरका	कीकर का दरख्त- वकत के मुताबिक लट्टू की सूई की तरह घूम जाने वाला। गैर तसल्ली वख्श दोस्त होगा।
	औरत का फल (केतु औलाद) बेशक मंदा होवे और औरत ख़ुद इतना आराम न पावे। या औलाद कम........या औलाद की	सूरज देखे शनीचर को	मजबूत तबै: उम्र रेखा और सेहत रेखा के मिलने का जाविया। ला.की. सफ़ा 196/14 - जिसमानी ताकत उमदा। ला.की.सफा198/18
	उम्र के तकाजे हों। मर्द ख़ुद की आमदन की नाली हजारों जंगल पहाड़ों के मैदानों को सैराब करेगी। ख़ुद आप वो	शनीचर देखता हो सूरज को	जिसमानी कमजोरी। 25 फीसदी पर :-स्कूलों के इल्म के इलावा इल्म रियाजी (ला.की. 194/8)

ख़ाना नंबर	सूरज सनीचर	ख़ाना नंबर	शुक्र चंद्र
सनी देखता	भी होगा।	ला.की.	का घर कुण्डली वाले की ससुराल
हो सूरज को	50 फीसदी पर- इल्म मकानात	214/15	और माता का घर मामु तरफ इस
जारी	(शनीचर की मुतलका चीजों		तरह दोनों ही घरों का मंदा हाल
	का काम) होगा।		होगा।
दोनों नं 5	मजबूत तबै:। ला.की. 168/18	दोनों	माता न होगी अगर होगी तो अंधी
दोनों नं 6	सोने की जगह मिट्टी के तवे	मुशतरका	होगी। (मुफसिल ला.की. सफा 18
बुध चंद्र	रोटी पकाने के होंगे। अगर कोई		फरमान नंबर 39) नौह सास का
दोनों	उसका लड़का सेहत व आंखों		झगड़ा होगा। मंदा असर उपर की
कायम	से रद्दी मस्त मलंग सा होवे। वो		दोनों बातों का शादी के दिन से
	18 साल के बाद गया हुआ		गिनते हैं।
	सोना फिर वापिस दिला देगा।	दोनों को	
दोनों नं 9	दौलतमंद मगर मतलब परस्त	सूरजदेखे	ला.की. 224/1
	होगा।	दोनों के	स्त्रीयां (औरत शुक्र माता चंद्र)
दोनों नं 9	ख़ाना नंबर 3-9 दोनों ही का	बामु-	तबाह होंगी।
और मंगल	फल रद्दी होगा और दुश्मनाना	काबिल	
बद या बुध	होगा। सब ग्रहों का बुध ने	मंगल बद	
नंबर 3	ख़ाना नंबर 3 से 9 पर असर	दोनों	औरत की सेहत रद्दी(दिमागी
	कर दिया।	नंबर 1	कमजोरी व दीवानगी वगैरह)
दोनों 11		दोनों	दवाइयों के काम से फायदा हो।
मंगलबद		नंबर 2	ख़ुद हकीम होने की शर्त न होगी।
या बुध	ऐजन		इश्क़ में दर्जा कमाल होगा। दुध
नंबर 3			में खांड की जगह मिट्टी मिली
	शुक्र चंद्र (खुसरा-गाये)		वाली किसमत होगी। ख़ास कर
दोनों	दोनों ग्रहों के अपने अपने घरों		बृहस्पत का असर किसी नेक
मुशतरका	का हाल मंदा होगा। शुक्र औरत		फल का न होगा।

ख़ाना नंबर	शुक्र चन्द्र	ख़ाना नंबर	बुध चंद्र
दोनों	मा बाप दोनों की तरफ से		से बाहर किसी और जगह और
नंबर 4-7	ख़ालिस और ख़ुद भला लोग		दृष्टि हर तरह से खाली। या मां बेटी
शनीचर	होगा।		ही अकेली ही तो इकबालमंद होंगे।
नं 10-11			ही अकेली ही तो इकबालमंद होंगे।
दोनों नंबर	ऐैजन		धन दौलत उमदा होगा। दिल का
4-7 सूरज	लड़कियों की तरह शरमीला		डरपोक होगा।
नं९	होगा मगर बुधु न होगा।	दोनों को	मंगल बद:-उम्र ख़ुद तो अपनी
दोनों नं 7	माता की आंखों पर झगड़ा	देखे-	उमदा(लंबी) मगर मामु तरफ
दोनों नं 8	बल्कि नजर गुम होवे। ला.की.		खराबियां।
	224/1, 301/5 काफ		बृहस्पत या }
	नामर्द वर्ना बुजदिल। अपने ही		सूरज या } नेक असर होगा।
	कारनामो की वजह से चंद्र का		शनीचर }
	धन और शुक्र से गृहस्ती सुख	दोनों	दृष्टि में यक तरफा तबीयत वाला।
	बरबाद पावे। बदचलनी की मर्ज	बा -	100 फीसदी-निहायत खराब असर।
	का तालूक भी हो सकता है	मुकाबिल	50 फीसदी-खराब असर।
	या होगा।		25 फीसदी --- मामूली खराब।
	बुध चंद्र (टुनिया तोता)		हर हालत में धन की हार न होगी।
दोनों	दोनों मंदे शनीचर का फल देंगे।		दिल का तालूक खराब असर देगा।
मुशतरका	चंद्र नष्ट लेंगे। चांदी की जगह		दिल बकरी का होगा। बुजदिल(बज
या बाहम	कलई होगी। चंद्र का फल रद्दी		बकरी बुध , दिल चंद्र)
दृष्टि में	होगा। गलबा इश्क़ बायस	दोनों	ख़ुदकशी। वजह गरीबी न होगी।
	तबाही होगा। जब अपने अपने	नंबर 4	बल्कि दिल न होने का सबब होगा।
	घरों में हों। लेकिन जब दोनों		या गलबा इश्क़ का सबब होगा।
	मुशतरका और अपने अपने घरों		ला.की. 224/3

ख़ाना नंबर	**बुध चंद्र**	ख़ाना नंबर	**मंगल शुक्र**
दोनों नंबर 6	खूनी मगर मिसल राजा।अकल कायम मातृ रेखाका नेक असर मगर ख़ुद अपनी नजर कम होवे। ला.की. 214/13, 215/18बी , 219/2,		रहने वाला होवे। दोनों हालत में ससुराल अमीर होंगे। लावल्द न होंगे।
दोनों नंबर 7	लाखोंपति फिर भी दुखिया। अकल मदद न देवे। बाकी 6 बचने वाले मकान सा हाल रहे। तकिया मुसाफिर होगा। माता न होगी या वो अंधी होगी। ला.की. 213/12, 215/18बी, 219/2, 221/1	दोनो नंबर 3	जनाकार। ऐय्याश। इसका धन अपने ही भाई बंदो को तारने वाला होगा।
	मंगल शुक्र (गेरू)	दोनों नंबर 4	माता के भाई बंद (नर आदमी) खराबी का सबब होंगे। वो ख़ुद भी तबाह होवें। या दरअसल पानी में मौतें पावें या डूबते जावें।
दोनों मुश्तरका को देखे	चंद्र बृहस्पत :- ऐसा धन हर तरह से नेक फल देवे। माल दौलत भी हो और परिवार भी हो। (उमदा मायनों में) पापी ग्रह :-रात दिन मुसीबत पर मुसीबत होवे।	दोनों नंबर 7	औलाद दर औलाद साहिबे औलाद। पोते पड़ोते सब जिंदा। हरदम बढे परिवार। इसका धन अपने ही खून से पैदा शुदा (मारफत अपनी औरत भाई बंद के बाद बहिन भुया नहीं) को तारने वाला हो। दौलत का भण्डारा और दौलत का दीगर सुख होवे।
दोनों नंबर 2	औरत खानदान से दौलत आवे। ससुराल के घर ही	दोनों नंबर 8	आसूदा हाल मगर निंदक। हरइक की बदखोई करने वालाहो दिमागी ख़ाना नंबर 8 हमला रोकने की हिम्मत का मालिक होवे।

ख़ाना नंबर	मंगल शुक्र	ख़ाना नंबर	मंगल बुध
दोनों नंबर 10	निर्धन और झगड़ालू। मामूली सी मिट्टी की डली पर लंबा झगड़ा करने वाला होवे। ला. की. 285/9	दोनों मुश्तरका जारी	स्त्रीकी दिमागी ताकत उतम होगी। पहाड़की तरह सरसब्ज और उतम शनीचर का फल होगा। सिर्फ इस की जबान का लफ्ज जो पत्थर पर लकीर होगा। या बृहस्पत गुरू से सुन कर बोली हुइ जबान होगी।
	मंगल बुध (राये तोता)	दोनो नंबर 1	मजबूत जिसम। औरत खानदान को तारे।
दोनों मुश्तरका	लाल कण्ठी वाला तोता होगा। राये तोता बोल कर नकल कर लेने वाला। खासकर बृहस्पत या गुरू की नकल कर लेने वाला तोता। चंद्र बुध बकरी के दिल वाला (बिल्ली देखी या आयी तोता मर गया। ख्वाह बिल्ली छुहे भी न) टुनिया तोता जो सिर्फ टैं टैं ही करता है। रद्दी फल का होता है। मगर ये लाल रंग के साथ वाला पक्का बुध होगा। यानि चंद्र बुध 'दरिया का रेत' और मंगल बुध मीठे में रेत होगी। जिसके असर को हटाना मुशकिल होगा। मंगल को मंगल बद तक कर सकता है। लाल रंग का फर्क खून गले पर लगाये खून कर दिया खून कर दिया का अर्लाम लगा कर बदनाम और दुखिया बना देगा। मंगल के साथ बुध चुप होगा।	दोनों नंबर 2	ससुराल दौलत मंद और दौलत देवें। धन दौलत मुबारिका।
		दोनों नंबर 3	धन दौलत के बहुत गम देखेगा। ला. की. 285/10
		दोनों नंबर 4	बेशक इस घर में बुध उंच है मगर ख़ाना नंबर 3 चोरी का और धन चले जाने का दरवाजा गिना गया है।
		दोनों नंबर 6	अपनी जात पर बुरा असर न होगा।
		दोनों नंबर 7	वही असर जो उपर नंबर ३में लिखा है। ला.की. 256/4 मंगल का शेर बुध के दांत होने के सबब अपने घरमें शुक्र की गाय पर भी हमला कर देगा। हालांकि बुध शुक्र दोस्त हैं और मंगल शुक्र दोस्त। मगर फिर भी गृहस्त

ख़ाना नंबर	मंगल बुध	ख़ाना नंबर	शुक्र बुध
दोनों नंबर 7 जारी	बरबाद और जहर के वाक्यात। वजह ये कि बुध अपनी नाली लगा कर ख़ाना नंबर७ का फल बाहर जहां भी शुक्र हो ले जायेगा और गृहस्त का ख़ाना खाली होगा। सिर्फ मंगल बद बाकी रहेगा।		ख्वाह किसी भी घर हों। (सिवाये ख़ाना नंबर 4 के जहां कि दोनों का फल रद्दी होगा)। व्यापार से नफा और सूरज ग्रहण के वकत भी उमदा नतीजा होगा। जबकि शुक्र बुध मुश्तरका मशनोई सूरज
दोनों नं 8	लाल किताब सफ़ा 269/5		का ही काम दे देंगे। रोटी पानी की
दोनों मुश्तरका नं 10/11	मालदार अयालदार। पोते पड़ौते वाला। अगर कुण्डली में पापी ग्रह अच्छे घरों के हों और रद्दी न हो गये हों। लेकिन अगर रद्दी घरों में हों तो मंगल बुध का नेक असर राहु की तमाम उम्र (42 साला उम्र) के बाद पैदा होगा। ख़ाना नंबर 11 दरअसल बृहस्पत का है। जिसमें शनीचर भी हिस्सेदार है। इसलिये बृहस्पत शनीचर का असर जरूर इस खाने के असर में दखल देगा।		कभी कमी न होगी। 2) ऐसे घरों में हों। जहांकि शुक्र कायम और बुध उंच होवे। यानि ख़ाना नंबर 3 में तो सिर की श्रेष्ठ रेखा (ला.की. सफ़ा 283 जुज 4) का उतम फल होगा। जो चंद्र के बुरे असर से बचायेगी। जबकि चंद्र रद्दी हालत का हो। लेकिन अगर चांद ग्रहण ही हो तो भी सिर्फ माता की उम्र या सौतेली माता का सुख न होगा। मगर चंद्र की बाकी सब चीजों का मंदा फल न होगा। 3) लेकिन अगर ऐसे घर में हों
	शुक्र बुध (तराजू - रेतली मिट्टी)		जहांकि बुध उंच मगर
दोनों मुश्तरका	धन दौलत कभी हार न देवे		

ख़ाना नंबर	शुक्र बुध	ख़ाना नंबर	शुक्र बुध
दोनों मुश्तरका जारी	शुक्र नीच फल का होवे।मसलन ख़ाना नंबर 6 तो सिर की श्रेष्ठ रेखा चंद्र के बुरे फल से तो बचायेगी। मगर औलादके बिघ्न देर बाद होना या उम्र कम का होना वगैरह शुक्र नीच का फल होगा। सिर की श्रेष्ठ रेखा बुध की उंच हालत का नाम है। शुक्र से मुतलका नहीं है।	दोनों बा - मुकाबिल जारी	लेकिन अगर दृष्टि में होते हुए अपने से सातवें हों। तो दोनों का फल बाहम न मिलेगा। या बुध के बगैर शुक्र पागल और शुक्र के बगैर बुध सिर्फ फूल होगा। फल न बन सकेगा। दृष्टि के घरों में होते हुए अगर बुध ख़ुद मंदा होवे। तो बुध इसके मंदे फल को रोक नही सकता। और जब मंदा बुध होवे। और शुक्र से पहले घरों का तो शुक्र में बुध का मंदा फल होगा। गृहस्त के मंदे नतीजे होंगे।
दोनों बा - मुकाबिल	जब दोनों ग्रह दृष्टि के खानों की शर्त से बाहर हों। तो जिस घर में शुक्र हो वहां बुध अपना असर अपनी नाली के जरिये लाकर मिला देगा। और शुक्र के फल को कई दफा बुरे से भला कर देगा। लेकिन अगर बुध के साथ शुक्र के दुश्मन ग्रह हों जब वो शुक्र से अलैहदा हो। तो शुक्र अब बुध को अपने घर में नाली लगाने की इजाजत न देगा। इस तरह बुध शुक्र को रद्दी नहीं कर सकता। अगर दृष्टि वाले घरों म हों तो मिले मिलाये असर में शुक्र का असर प्रबल होगा।	शुक्र बुध मुश्तरका को सूरज देखे	ला.की. सफ़ा 195/12
		दोनों नंबर 1	मशनोई सूरज का असर उमदा मगर अल्प आयू। मवेशियों के सुख से महरूम होगा।
		दोनों नंबर 2	जानी होगा।
		दोनों नंबर 3	उमदा नतीजे। पहले उपर जिकर हुआ है।
		दोनों नंबर 4	मामू खानदान व ससुराल का

ख़ाना नंबर	शुक्र बुध
दोनों नंबर 4 ला.की. २१४/20	मंदा हाल होगा। ख़ुद ऐसा शख्स बदफैल बदकिरदार गंदे चालचलन का मालिक होगा। ऐसी हालत में चंद्र अगर दुरस्त होवे तो शुक्र का बुरा असर न होगा।
दोनों नंबर 5	शुक्र के पतंग का हाल होगा। (लाल किताब सफ़ा 232-233) मगर औलाद पर बुरा असर न होगा।
दोनों नंबर 6	शुक्र का हल्का बुध का उमदा। जो उपर जिकर हुआ। ला.की. 285/11
दोनों नंबर ७	उतम फल होगा। सेहत रेखा बुध को से चलकर शुक्र के बुर्ज में। ला.की. सफ़ा 197/14
दोनों नंबर 7 मय राहु या केतू	मंदा फल होगा। औलाद के बिघ्न ला.की. 239/9
दोनों नंबर 8	दोनों मार्गस्थान। शुक्र नंबर 8 से ख़ुद वो अकल के खिलाफ काम करने वाला। बुध नंबर 8 से मामु खत्म।
दोनों नंबर 9	औलाद के बिघ्न। सब ग्रहों का मंदा फल। ला.की. 240/11-12 (बुध नंबर 9 में असर करेगा)

ख़ाना नंबर	शुक्र बुध
	बुध के वक्त में बाप की सब उम्मीदों पर पानी फेर देगा।
दोनों नंबर 10	साहबे अकल।
दोनों नंबर 11	अजीजों से जुदाई।
दोनों नंबर 12	दोनों का फल रद्दी होगा।
	मंगल चंद्र (मधुपान- दुध में शहद)
दोनों मुश्तरका	मुतलका दुनिया से मदद।
दोनों मुश्तरका देखता हो	बृहस्पत:- सबसे उतम लक्ष्मी। -महावन उम्र। यार दोस्त की मदद। ला.की. 303/12 सूरज:-राजयोग ला.की. 303/13 शुक्र:-औलाद के बिघ्न। ख़ुद भी अपना धन बरते बगैर मरे। या अपने धन का जाती कोई सुख न पाया हो कि चल बसा। ला.की. 304/18 बुध:- व्यौपारी।अकल का धनी। मगर धन की शर्त नहीं। 304/14-20 शनीचर:-मंदा हाल जहर खा मरे। हथियार से मौत। जहरीले जानवर मार दें। 304/15

ख़ाना नंबर	मंगल चंद्र	ख़ाना नंबर	मंगल चंद्र
दोनों नं २	ला.की. 303 जुज 11	दोनों	होगी। मगर उम्र लंबी होगी।
दोनों	धन श्रेष्ठ रेखा (ला.की. सफ़ा	मुश्तरका	मंगल अपना फल शनीचर को
नंबर 3	306 जुज 11) के नेक धन का	जारी	ग्रहों की बजाये एक ही ग्रह या
	उतम असर। ला.की. 399/5बे		शनीचर की दुगनी ताकत हो
मंगलबद	नंबर 4 ला.की. 270/8		जायेगी। या दूसरे भाइयों की
और चंद्र			किसमत का हिस्सा भी इसी के
दोनों	लालची पैसे का पुतर ला.की.		पास आ जायेगा। और हो सकता
नंबर 7	215/18		है कि दूसरे भाई बहुत ही मामूली
दोनों	मौत हादसा से होवे। लालची		हैसीयत के होवें। और वो ख़ुद ही
नंबर 10	वहमी - लालची		बुलंद हो जावे। सांप और शेर की
नंबर 11	ला.की. 212/5, 216/18		मुश्तरका तबीयत होगी। यानि
मंगल शनीचर (नारयल- छुहारा)			आजज को माफ और जालिम को
	दृष्टि में चूल्हा मुश्तरका कमान		कतल ही कर के छोड़ेगा। इसका
	सेहत के मुतलका ला.की. सफ़ा		घर डाका के काबिल होगा। या
	198/18-19		धन की ज्यादती देख कर हो
दोनों	जिसमानी ताकत उमदा। इन दो		सकता है। कि इसके हां डाके के
मुश्तरका	डाकूयों का जिकर खासतौर		वाकयात होवें।
	पर मंगल के हाल अरमान नंबर		
	145 से 158 में दर्ज है। ऐसी		
	कुंडली वाला दूसरे मर्दा पर	दोनों	बृहस्पत-मगर बृहस्पत नंबर 2
	हरदम मौत की तरह छाया	मुश्तरका	का न हो। लोगों को सरा देने
	रहने वाला होगा। छुपते सूरज	को देखे	वाला बृहस्पत होगा। मगर ख़ुद
	की लाली की तरह बुढापे में	या साथ	अपने लिये महावन उम्र गैबी मदद।
	किसमत का असल उमदा जोर	होवे	मददे मर्दां और यार दोस्तों की
	होगा। बीमारी जब होगी सख्त		पूरी मदद होगी। माकूल आमदन
	होगी। और जान का धोका देती		फिर भी कर्जाई होगा।
	मालूम		

ख़ाना नंबर	मंगल सनीचर	ख़ाना नंबर	मंगल सनीचर
दोनों मुश्तरका को देखे या साथ होवे	सेहत के लिये ला.की. सफ़ा 198/19 – बीमारियां ख्वाशात बदा। बृहस्पत नंबर 2 का साथ- अब ये गुरू भी चोरों में सरगना होगा। कुण्डली वाले के लिये धन दौलत का नतीजा उमदा होगा।	दोनों 10 चंद्र नं 4	पानी की बजाये दूध से पले दरख्त की तरह उतम किसमत का मालिक। बारौब या गुस्सा। अहले सरकार से खास नफा पावे। सरकारी मुलाजमत जरूर होवे। मंगल नेक का धन बढता चले। **चंद्र शनीचर (विसर्ग) कछुआ फटा हुआ दुध**
दोनों नंबर 1	अपने रिश्तेदारों को उजाड़े। बीमारियां मुतलका खून होवें। ला.की. 259/15, 255/3-10	दोनों मुश्तरका	मोटर लारी या लोहे की चीज वगैरह या दीगर हथियार होगा। जो शनीचर या चंद्र के अपने अपने उंच होने के घरों में (चंद्र नंबर 2 शनीचर नंबर 7) ख़ुद कुण्डली वाले पर मौत का हमला कर देगा। हादसा होगा। या आंखों की नजर उड़ा देगा। मुश्तरका हालत में दोनों ग्रहों में कौन प्रबल है का फैसली आंख की हालत (ला.की. फरमान नंबर 84 सफ़ा 71) से होगा।
दोनों नं 2	ला.की. 258/13		
\दोनों नं3	ला.की. 255/3 व 314/लाम		
दोनों नं 6	नेकी फरामोश होगा।		
दोनो नंबर 7	अपने रिश्तेदारों को तारनेवाला धन होगा। (अपनी औरत की औलाद वगैरह को तारेगा) ला.की. 150/13, 255/3, 314/मीम		
नंबर 8	मोत मार्गअस्थान।		
नंबर 9	सबसे ज्यादा उतम फल के ग्रह होंगे। जनमदिन से ही शाही जंगी धन और शाही परवरिश व हकूमत साथ होगी। जो 60 साल उम्र तक कभी हार न देगी। बल्कि बढती जावे।	दोनों मुश्तरका से दृष्टि ख्वाह साथ	बृहस्पत का साथ:- (मंगल शनीचर के उल्ट का होगा) यानि उमदा नतीजे।इसकी दोस्ती से दूसरों का फायदा ही फायदा। लोहे को पारस का काम देवे। गैबी
नंबर 10	हुकमरान जायदाद वाला। दौलतमंद। ला.की. 258 जुज12		

ख़ाना नंबर	चंद्र सनीचर	ख़ाना नंबर	चंद्र सनीचर
दोनों	मददा। मददे मर्दां दौलत का		में। मगर मकान वगैरह जायदाद
मुश्तरका	फल उमदा। ऐसा धन औलाद के		जरूर होगी।
से दृष्टि	हाथ लगे।	नंबर 4	ये ख़ुद चंद्र की राशि है। जोशनीचर
ख्वाह	शुक्र :- मौत परदेस में। इसका		के पहाड़के तले पानी बहा देगा।
साथ	धन मिट्टी का पहाड़। जाहिरदारी		मौत दरिया नदी से होगी रात के
जारी	उमदा मगर अंदर खराब औरत		वकत अगर सूरज का साथ हो तो
	(ससुराल खानदान औरत के		मौत दरिया नदी से दिन को होगी।
	वालदैन) के काम आवे।		दबाया हुआ धन होगा। जो चल
	मंगल:-धन वैसा ही जाहिरदारी		पड़ता है। लावल्द होने पर या मौत
	का मगर वो भाई बंदो, ताये चाचे		के बाद दूसरों के काम आयेगा।
	के काम आवे।		चाल चलन भी गंदा होगा। औरतों
दोनों	धन रेखा :- (चंद्र शनीचर की)		की कबूतरबाजी (बेवाह फर्ज या
मुश्तरका	चंद्र धन तो शनीचर खजानची		माशुका) के फालतू और फजूल
	होगा। विसर्ग का निशान होगा।		खर्चे बरबाद करें। सांप को दुध
	आंख का काना पन होगा। या		पिलाना मुबारिक ही होगा।
	सीधी टेढी मुश्तरका-स्याह मुंह	दोनों	
	माया।	नंबर 4	ला.की. 425/4 बे,जीम
	ला.की. सफ़ा 197/16 दुनयावी	सूरज 7	
	कच्छु (पानी का जानवर) होगा	नंबर 5	(सूरज की राशि है) औलाद पर
दोनों 1	ला.की. 299 जुज 5		खराबी होगी। (बराये धन दौलत)
नंबर 2	उमदा असर होवे।		मुसीबत में दुख का यम आतिश
दोनों	ये घर दौलत के लिये चोरी		खेज शनीचर के पहाड़का धुयाधार
नंबर 3	नुकसान का है। शनीचर इस		जमाना खड़ा कर देगा।
	जगह निर्धन कंगाल हो जायेगा।		
	नकद नामा		

ख़ाना नंबर	चंद्र सनीचर	ख़ाना नंबर	सनीचर शुक्र
नंबर 5 जारी	जो चंद्र के समुंद्र के पानी में गर्क होकर गोता देने का बायस होगा।		(काला रंग-बिजली-लोहा) दोनों दोस्त हैं। या स्याह रंग (कपिला) गाय पर बिजली जादू
दोनों नंबर 6	(ये बुध व केतू की राशि है) दुनिया के कुत्ते 1. ससूराल के घर जवाई कुत्ता। 2. बहिन के घर भाई कुत्ता। 3. नानके घर दोहता कुत्ता। इसका धन बरबाद करेंगे। चंद्र शनीचर दोनों की मिट्टी खराब। नकद माल व मकान दोनां का फल रद्दी।		मंतर शनीचरका बुरा असर न होगा। शनीचर की बिजली को शुक्र मिट्टी में दबा देने (Earthing बिजली को जमीन में गाड़ दिया करते हैं) का काम देगी। मकान के उपर लोहे की सलाख से मकान बिजली या शनीचर के बुरे असर से तबाह न होगा। जहां स्याह गाय मौजूद हो या जिस
नंबर 7	स्त्री झगड़ों से जिंदगी तबाह। दिल और आंखों की बीमारियां अंधापन तक हो सकती है। स्याह मुंह माया बरबाद बदनाम करने वाली होगी। मौत गृहस्त में। ला.की. 315/5, 314/नून, 197/16, 282/130, 150/13		मकान के उपर लोहे की सलाख होवे। वहां शनीचर की अपनी मर्जी और तरफ से तबाही न होगी। मिट्टी का ख़ुश्क पहाड़ होगा।
नंबर 8	बुढापे में नजर की तकलीफ।	दोनां	बुध देखे :-जबान का चसका
नंबर 9	निहायत उतम असर धन दौलत का होगा।	नंबर 1	बरबाद करे। सूरज देखे :-शनीचर का बुरा
नं 10-11	असर दरम्याना होगा।		असर निहायत जोर से होगा।
नंबर 12	माया पर पेशाब की धार मारने वाला होगा। औरत का सुख हल्का।	दोनों 1	मौत पुरदर्द होगी। दलिद्री - आलसी -
	शनीचर शुक्र (स्याह मन्नूर)	चंद्र 12	निर्धन होगा।
दोनों	शुक्र (गाय मिट्टी लक्ष्मी)	सूरज 2	
मुश्तरका	शनीचर	मंगल 4	

ख़ाना नंबर	चंद्र सनीचर	ख़ाना नंबर	सनीचर शुक्र
दोनों	जानी ऐय्याश होगा।		हमदर्द। किसमत नेक और
मुश्तरका			उमदा नतीजे हों । वालदैन का
ख़ाना नं१			सुख सागर लंबा और नेक ।सिर
दोनों	ला.की. 313/1 दाल		रेखा और उम्र रेखा के मिलने
नंबर 3			का जाविया कायम। ला.की.
दोनों	निहायत करीबी रिशतेदार		सफ़ा 196/14
ख़ाना	इसका धन दौलत खुब खा पी	दोनों	नेक फल हर दो (सूरज सनीचर)
नंबर 7	जायेंगे। ला.की. 313/सीन	मुश्तरका	का- बुध का फल नदारद।
दोनों नंबर	जायदाद की जायदादों वाला।	मय सूरज	
9/12	स्त्री सुख पूरा।	या तीनो	
बृहस्पत		मुश्तरका	
नंबर 5/6		दोनों	ख़ुदकशी। जो बवजह गरीबी न
या		के बा -	होगी।
मुश्तरका		मुकाबिल	
या बा -		चंद्र	
मुकाबिल		दोनो चंद्र	हमदर्द । माता पिता की बाहमी
दोनों	बेशुमार गृहसथी साथी अपनी	के साथ	नेक मुआफकत व उनका सुख
ख़ाना	लड़की लड़कों के रिशतेदार	दृष्टि या	सागर लंबा।
नंबर 10	उस की कमाई से परवरिश	नंबर 4 में	
	पायेंगे। ला.की. 313/1 रे	दोनों	
दोनों	सनीचर का बुरा असर न होगा।	ख़ानानं१	ख़ूनी होगा।
ख़ाना	बल्कि जायदाद बनेगी। मौत भी	सनीचर	ला.की. 280/3
नंबर 10	पुरदर्द न होगी। नकद रूप्या	बुध नं 2	
सूरज 4	बेशक कम होगा।	दोनों	
दोनों		मुश्तरका	नेकी फरामोश होगा।
नंबर 12		नंबर 7	
बुध नं 6	जानी ऐय्याश होगा।	सनीचर	ला.की. 164/22
दोनों		बुध नं 9	
नंबर 12	ला.की. 313/ सीन	दोनों	हमदर्द। माता पिता की बाहमी
	सनीचर बुध (गांव)	मुश्तरका	नेक मुआफकत व उनका सुख
दोनों	एक सांप दूसरा उड़ने वाला।	ख़ाना	सागर लंबा।
मुश्तरका		नंबर 9	

राहु-केतु

ग्रह मुश्तरका का	असर होगा
राहु बृहस्पत नंबर 2	ला.की. सफ़ा 148/9
राहु सूरज	जब ख़ाना नंबर 10 में उम्र सिर्फ 22 साल।
राहु चंद	फर्जी वहम व चिंता से दीवाना होवे।
राहु बुध	मौत की निशानी जब ख़ाना नंबर 1 में,औलाद के बिघ्न।
राहु सूरज बुध	शादियां एक से ज्यादा फिर भी गृहस्त का सुख नेक न होवे। बशर्तेकि शुक्र किसी और ग्रह का साथ ग्रह न बन रहा हो।
राहु चंद्र सनीचर	औरत का सुख हल्का होगा। खासकर जब ख़ाना नंबर 12 में हों। ला.की. सफ़ा 225/4 जीम
राहु चंद्र बृहस्पत	चंद्र बृहस्पत के नेक फल पर कोई बुरा असर न होगा। औरत का सुख हल्का खासकर ख़ाना नंबर 12 में।
राहु शुक्र सूरज नंबर 1 में।	औरत की सेहत रद्दी। (दिमागी कमजोरी दीवानगी) जब ख़ाना
राहु बुध चंद्र सूरज	वालिद पानी में डूब मरे।
राहु सनीचर	जब दोनों मुश्तरका। राजदारी। इच्छाधारी सांप ला.की. 76/3 जब सनीचर देखता हो राहु को। हसद से तबाह होवे।
केतू सूरज	औलाद का मंदा हाल।
केतू बृहस्पत नंबर 2	ला.की. सफ़ा 148/9
केतू शुक्र	जब ख़ाना नंबर 1 में औलाद के बिघ्न।
केतू बुध	मौत की निशानी।
केतु सनीचर तीसरा ग्रह नदारद	ईसतकलाल। जब तक कोई और तीसरा ग्रह शामिल न हो नेक। जब तीसरा ग्रह साथ आ मिले नतीजा मंदा होगा।
केतू मंगल बृहस्पत	भाई लंगड़ा जो जो 45 साल उम्र तक मददगार फिर बेमायनी।
केतू सूरज बुध चंद्र	बालिद डूब मरे।
केतू सूरज शुक्र	जब ख़ाना नंबर 1 में औरत की दिमागी कमजोरी दीवानगी वगैरह।
केतू सनीचर नंबर 6	ला.की. सफ़ा 296 जुज 3 व 318(ख़ाना उम्र 70 साल)

तीन ग्रह मुश्तरका या बाहम दृष्टी में

ग्रह	असर
मंगल सूरज बुध नंबर 1 व चंद्र 7	ला.की. सफ़ा 211 जुज 2
मंगल सनीचर कोई और तीसरा	मंगल सनीचर का तीसरा साथ का ग्रह शराप देने वाला मंदे फल का होगा।
मंगल सनीचर मय पापी ग्रह	रात दिन मुसीबत पर मुसीबत होवे।
मंगल सनीचर मय बृहस्पत	शराप या बददुया देने में बृहस्पत की ताकत का आदमी कम कर्जाई होगा। जो उसके सामने रहेगा बरबाद होगा। चोरों का चोर साधु मरवाये। बीमारियां, खवाहिशात बद। ला.की. 198/15
मंगल सनीचर मय बुध	खयालात पर बुरा असर होगा। मृगशाला गिनते हैं।
मंगल सनीचर मय बुध नंबर 8	ला.की. सफ़ा 270जुज 6
मंगल सनीचर मय सूरज	जब ख़ाना नंबर 11 में हों ख़ुद तो झूठा न बनेगा दुनिया को झूठा कहेगा। मगर धन उमदा।
मंगल सनीचर चंद्र	जब ख़ाना नंबर 11 में हों ला.की. 211 जुज 3 जब ख़ाना नंबर 1 में हों बीमारी का घर होगा। जब ख़ाना नंबर 2 में हों फुलबहरी होवे।
मंगल बृहस्पत चंद्र	बृहस्पत ख़ाना नंबर 2 का फल किसमत में मिलेगा। पीपल बड़ और नीम तीनों मुश्तरका और एक ही जड़ का दरखत होगा।
मंगल शुक्र बुध	जब ख़ाना नंबर 3-7 में हों शादी और औलाद में मंदे नतीजे।
मंगल शुक्र बुध नंबर 7 मय राहु/केतू	ला.की. सफ़ा 239 जुज 10
बृहस्पत बुध सनीचर नंबर 7	या तीनों किसी भी जगह मुश्तरका या बृहस्पत सनीचर से बुध का तालूक। ला.की. 165/28 व 166/30
बृहस्पत शुक्र बुध नं 7	गऊ ग्रास होगा।
सनीचर शुक्र बुध	ला.की. 240/11व 12
बुध चंद्र शुक्र	दिमागी सदमात ला.की. सफ़ा 198 जुज 20
बुध नंबर 7 चंद्र शुक्र	ला.की. सफ़ा 239 जुज 8
चंद्र बृहस्पत नंबर २	ला.की. सफ़ा 212/6 व सफर 152 जुज 2
चंद्र बृहस्पत शुक्र	कभी शाह कभी मंलग कभी खुशहाल कभी तंग होगा। ला.की. 151/1, 161/12 व 167/35

चार ग्रह

ग्रह	असर
चंद्र बृहस्पत शुक्र नंबर२ मंगल नष्ट	लाल किताब सफ़ा १५२ जुज़ १
सूरज चंद्र शुक्र	रात दिन मुसीबत पर मुसीबत होवे।
सूरज बृहस्पत शुक्र	शादी के दिन से किसमत जागेगी। औरत रंग स्वभाव व किसमत में नेक होगी।
सूरज बृहस्पत सनीचर	तीनों जब ख़ाना नंबर ६ में हों। हर जगह कदर व मंजलत होवे। इज्जत रेखा उतम।
सूरज बृहस्पत मुश्तरका	ला.की. सफ़ा १९८ जुज १९
सूरज बृहस्पत बुध	सूरज और बृहस्पत के असर पर कोई बुरा असर न होगा। नेक फल होगा।

चार ग्रह	असर
बृहस्पत चंद्र सूरज मंगल	बृहस्पत ख़ाना नंबर २ की किसमत रेखा का उतम फल होगा। उतम गुरू जिसे सब प्रणाम करेंगे। और उपदेश लेंगे।
बुध सनीचर सूरज मंगल	चारों नष्ट हों तो एक ही आदमी लाखों की ताकत का होगा।
बुध चंद्र शुक्र मंगल	सब का बुरा असर होगा। लड़की की शादी के दिन से नेक असर होगा। ला.की. सफ़ा २२१/२
बुध चंद्र शुक्र सनीचर	बदफैल, बदकिरदार बदचलन होगा।
बुध सूरज शुक्र सनीचर	फटा पतंग। दहशत परेशानगी। उस घर ही की जिस घर में कि ये चारों ग्रह बैठे हों।
चंद्र मंगल शुक्र सनीचर ११	ला.की. सफ़ा २११ जुज ४
चंद्र बुध बृहस्पत शनी नंबर२	ला.की. सफ़ा २४२ जुज़ १२
बृहस्पत चंद्र शुक्र शनि राहु	"पंचायत" - धन्ने भगत की गऊयें राम चरावे। मिट्टी का माधो किसमत का धनी होगा। बृहस्पत की जबरदस्त किसमत रेखा सही और दुरसत। ला.की. १५७ फरमान १२२/२

आंख :- आंख का खोल या डेला या पुतला का वजूद सूरज चंद्र का होता है। दायीं आंख का डेला सूरज, बायीं आंख का डेला चंद्र नजर बीनाई का मालिक सनीचर और नजर के असर का मालिक मंगल होगा। आंख की गोलाई, लंबाई, गहराई वगैरह बुध व बृहस्पत यानि गहराई अंदर को धस जाना या घुस जाना बृहस्पत का तालूक सनीचर से और बाहर को निकले होना उभार बृहस्पत का तालूक सूरज चंद्र से, गोलाई या शक्ल वगैरह बुध से मुतलका होगी। आंख = (चंद्र का ख़ाना नंबर ४)

कनपटी या पुड़पुड़ी :- सनीचर का हैडकवाटर ख़ाना नंबर ८ होगा।

हल्क का कौआ:- दायीं तरफ राहु बायीं तरफ केतू दरम्यान में सनीचर

तालू :- ख़ाना नंबर ८ बगैर ग्रहों के होगा।

तमाम ग्रह इकट्ठे हों	असर होगा
ख़ाना नंबर में	
ख़ाना नंबर २ में	हुकमरान
ख़ाना नंबर ३ में	मिसल राजा साहिबे इकबाल।
ख़ाना नंबर ८ में	हुकमरान- आली मर्तबा- सिर्फ अपने आम को बढावे।
ख़ाना नंबर ९ में	हुकमरान-साथियों को बढा कर ख़ुद भी बढावे।

अरमान नंबर 181

इल्म जोतिष की बनाई हुइ जनम कुण्डली

हस्त रेखा - इल्म जोतिष और सामुद्रिक में राशीयों के एक ही नंबर मुकरिर हैं। कुण्डली वाले की जो जनम राशी का नंबर होता है। इल्म जोतिष वाले वो हिंदसा सब से ऊपर की चौकोर जगह में लिखते हैं। इस नंबर को वो लोग जनम लगन गिनते हैं। इल्म सामुद्रिक में यही ख़ाना नंबर एक दे दिया गया है। ताकि बार बार न गिनना पडे कि हर एक ग्रह जनम लगन से कौनसे नंबर के घर में है। या यूं कहो कि पंजाब में कुण्डली के बारह खानों की शकल पक्के तौर पर मुकरिर है। खवाह इल्म जोतिष वाले ऊपर के चौकार ख़ाना में जनम राशी के नंबर

का हिंदसा लिख देवें। खवाह सामुद्रिक वाले उस ऊपर के चौकोर को ख़ाना नंबर 1 दे देवें। बात एक ही है।

कुंडली की शक्ल

1 मेख़
2 बृख
3 मिथुन
4 कर्क
5 सिंह
6 कन्या

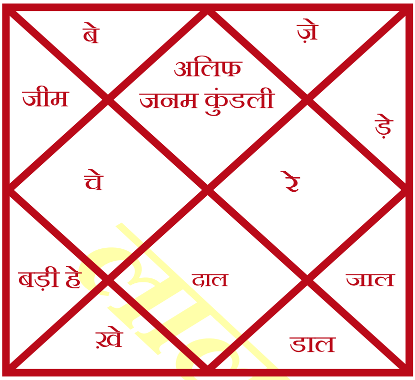

7 तुला
8 बृचक
9 धन
10 मकर
11 कुंभ
12 मीन

फरजन किसी की जनम राशी या जनम लगन की राशी है सिंह। जिसका नंबर है 5 वां। जोतिष वाले तो लिखेंगे ख़ाना अलफ में हिंदसा नंबर 5 -बे में 6 और आखिर या बातरतीब जे में हिंदसा नंबर 4 लिखेंगे। सामुद्रक वाले ख़ाना अलफ में हिंदसा नंबर 1- बे में हिंदसा नंबर 2- और बातरतीब आखिर जे में हिंदसा नंबर 12 लिखेंगें। जोतिष वाले ख़ाना नंबर बे को कहेंगे कि वो बे वाला ख़ाना जनम लगन से दूसरे नंबर पर है। सामुद्रिक वालों के लिये बे होगा ख़ाना नंबर 2-वगैरह। ख़ाना अलफ से दोनों इल्म वालों ने शुरू करना है। जोतिष में वो लगन कहलाता है। सामुद्रिक में वो अलफ का मुकाम ख़ाना नंबर 1 होता है। गोया ख़ाना नंबर एक में हिंदसा नंबर एक लिखने से सामुद्रिक में राशी नंबर एक "मेख" मुराद नहीं हो जाती वो लगन है। सामुद्रिक वालों को धोका नहीं लगता। क्योंकि ला.की. के फरमान व अरमान यही बुनियाद मान कर लिखे गये हैं। अलफ को 1 बे को 2 जीम को 3 चे का 4 वगैरह बातरतीब हिंदसे देकर लिखी हुइ कुण्डली मुंदरजा जैल होगी। ख़ाना नंबर चे में 4 का हिंदसा देखकर

लाल किताब की पक्की कुंडली

जोतिष वाले कहेंगे कि वो चे का घर कर्क राशी नंबर 4 है। मगर नहीं दरअसल ये घर सामुद्रिक में ख़ाना नंबर 4 और जोतिष में जनम लगन से चौथा घर है। सामुद्रिक में राशी और नछत्तर (पक्की ग्रह कुण्डली में ला.की. सफ़ा 97) बाद में उड़ा ही दिया गया है। नछत्तर पहले छोड़ दिये थे। कुण्डली के हिंदसे बदलने से

सामुद्रिक वालों ने लगन से हरइक घर गिन लिया। अब ये राशी नंबर का हिंदसा नहीं लेंगे। या यूं कहो कि सामुद्रिक वाले एक पक्की कुण्डली बना कर इस में सबसे ऊपर के चौकोर में एक का हिंदसा लिख कर तमाम 12 खानों में हिंदसे लिख देंगे। और जहां सामुद्रिक वालों का हिंदसा नंबर एक है इस घर में जोतिष वालों की बनायी हुइ कुण्डली के इस घर के हिंदसे वाले ग्रह को लिख देंगे जो हिंदसा कि इन्होंने जनम राशी का सबसे ऊपर के चौकोर खाने में लिखा है। अब सामुद्रिक वालों की कुण्डली के हिसाब से हर ग्रह का पता लग गया कि वो जनम लगन से कौन से घर में है। इस तरह जब पता लग गया कि हरएक खाने में कौन कौन सा ग्रह है तो ला.की. के मुताबिक जवाब देखना शुरू करें।

चंद्र कुण्डली   जिस घर में जोतिष वालों ने लफज चंद्र का ग्रह लिखा हो उस घर को जनम राशी वाले घर का नंबर लगा कर तमाम खानों में 12 हिंदसे पूरे कर देंगे। इस तरह पर जहां भी एक का हिंदसा आवे वो घर सामुद्रिक में पहला ख़ाना होगा। चंद्र कुण्डली के देखने के लिये। मसलन जनम राशी है सिहं या राशी नंबर 5

सामुद्रिक की पक्की कुण्डली

जोतिष की कुण्डली को जनम राशी का नंबर दिया

जोतिष की चंद्र कुण्डली

अब सामुद्रिक के हिसाब से एक कुण्डली तो जनम कुण्डली कहलायी। दूसरी चंद्र कुण्डलीं दोनों का फर्क ये होगा कि जनम लगन में चंद्र का ग्रह ख़ाना नंबर 3 पर आ गया और चंद्र कुण्डली में वही चंद्र ख़ाना नंबर 5 पर हो गया। क्योंकि जनम राशी दोनों हालतों में सिहं राशी नंबर 5 फर्ज कर लिया था। अब दोनो कुण्डलियों का जुदा जुदा हाल ला.की. के फरमान व अरमान के हिसाब से जुदा जुदा देखा गया।

फर्क हालात में ये होगा कि चंद्र कुण्डली का असर अचानक और सहवन और भूले भुलाये कभी कभी जाहिर होगा और वो भी महादशा के खाली रखे

हुए सालों में और धोके के ग्रह के सालों में। ये होगा पक्का भेद जिसे राशी फल कहकर शक का फायदा उठायेंगे। राशीफल व ग्रहफल का फर्क वगैरह जुदी जगह लिखा गया है।

इल्म जोतिष में जनम कुण्डली बनाने का तरीका

बमूजब इल्म जोतिष:- सूरज गिना जायेगा जिस राशी नंबर में

नंबर राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
नाम राशी का	मेख़	बृख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृचक	धन	मकर	कुंभ	मीन
म्याद सूरज फी राशी फी दिन	3 घड़ी	4	5	6	6	6	6	6	6	5	4	3
नाम महीना	बैसाख	जेठ	हाड़	सावन	भादों	असौज	कार्तिक	मग्धर	पोह	माघ	फागन	चेत

एक घडी होगी बराबर होती है 24 मिनट के

राशी नंबर 1--12=3 घडी
राशी नंबर2-11= 4 घडी
राशी नंबर 3-10=5 घडी

राशी नंबर4-9=6घडी
राशी नंबर5-8=6 घडी
राशी नंबर6-7=6 घडी

वक्त पैदाइश 5 बजे सुबह सनीचर वार 2 चेत सम्वत 1992 मुताबिक 14-3-1936 जंत्री मसनफा पंडित देवी दयाल 1936 का सफ़ा नंबर 13 पर 14 से 17 मार्च वाली कुण्डली बनी बनाई मौजूद है। जिस में सिर्फ़ चंद्रमा का ग्रह नहीं लिखा हुआ। जंतरी के सफ़ा 12 ख़ाना नंबर दाखला औकात राशी चंद्रमा के मुताबिक 13-3-1936 से शुरू करके चंद्र को खत्म किया है। इतवार 15-3-36 तक यानि 13-3-36 को चंद्रमा हुआ बृच्चक राशी में 30 घडी 45 पल(टाइम चलता है मशस का लाहौर व मशस का फर्क सफ़ा 54 पर जो 32 मिंट लिखा है) तलूया आफताब के बाद और रहेगा बृच्चक में इतवार के दिन 15-3-36 वकत 35 घडी 19 पल तक। गोया 14-3-36 का चंद्रमा बृच्चक राशी में ही था। जो ख़ाना नंबर 8 में लिख देंगे।

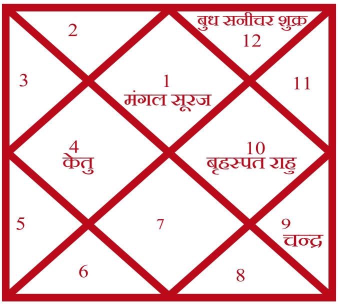

लगन की बुनियाद तलवा आफताब से होती है। जिस के लिये सफ़ा 49 मददगार होगा और जिसके मुताबक 6-06 बजे तक कुंभ लगन या राशी नंबर 11 होगा। 14-3-36 को सूरज

--निकलना लिखा है सफ़ा 49 पर 7-38 बजे तक मीन राशी में और इसके बाद मेख बिरख वगैरह तरतीबवार दर्ज हैं। इस बच्चे का वकत है 5 बजे सुबह। मगर जंतरी में 4-30 बजे सुबह से लेकर 6-06 बजे सुबह तक कुंभ लगन में सूरज निकलना लिखा है । जो लाहौर और मशस के फर्क से 32 मिंट बाद तक यानि 6-06 जमा 32 मिंट या 6-38 तक रहेगा। इसलिये इस बच्चे का जनम लगन हुआ कुंभ या राशी नंबर 11 या सबसे ऊपर की चौकोर के खाने में जहां कि हिंदसा नंबर 12 लिखा है अब असल कुण्डली के लिये हिंदसा नंबर 11 मय ख़ाना नंबर 11 वाले ग्रह उस चौकोर में कर देंगे।

जनम कुण्डली जोतिष की

A

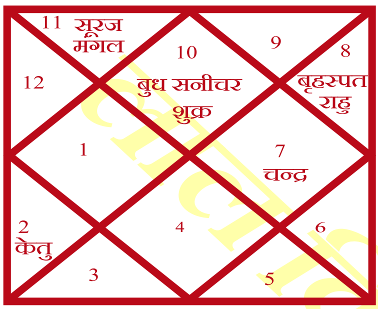

चंद्र कुण्डली में जिस खाने में चंद्रमां ऊपर के हिसाब से आवे वो ख़ाना ऊपर के चौकोर मे लिख कर वही ग्रह नकल कर देंवे। ऊपर की मिसाल से ला.की. के हिसाब से वही जोतिष वाली जनम कुण्डली सामने वाली होगी। सिर्फ हिंदसा नंबर बदला गया। बाकी वही ग्रह बदस्तूर जोतिष वाले जो जनम कुण्डली में थे लिखे गये हैं।

चंदर कुंडली

B

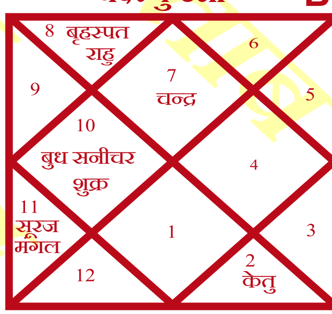

अब इल्म जोतिष वाली चंद्र कुण्डली भी लाल किताब के मुताबिक सामने वाली होगी।

तरीका:- कुण्डली B में जिस घर में चंदर लिखा हैं वहा हिंदसा नंबर 11 जो जनम लगन था लिखा तो सामने वाली कुण्डली हुई।

C

D

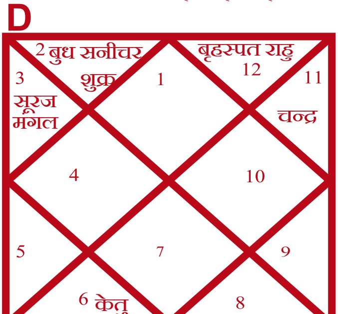

अब बमूजब ला.की. जिस घर में हिंदसा नंबर एक लिखा गया है वो घर सबसे ऊपर कर लेंगे। या आखरी चंद्र कुण्डली हसब जैल होगी।

खुलासतन लाल किताब के मुताबक जवाब देखने के लिये आखिर पर सिर्फ दो कुण्डलियां निशान नंबर सी जनम कुडली और निशान नंबर डी जनम कुण्डली होगी।

असर में फर्क क्या होगा :- जनम कुण्डली पक्का और लगातार फल-चंद्र कुण्डली अचानक और सहवन किसमत का नजारा होगा।

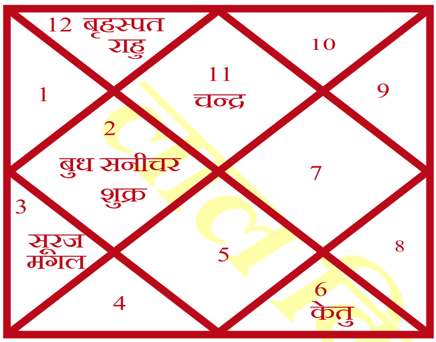

1) जौतष की बुनियाद जनम वकत का लगन है। जिस का वकत दो दो घंटे लगातार एक ही होता है। फरजन दो बजे से लेकर बजे तक पैदा शुदा बच्चों के लिये एक ही लगन होगा और एक ही लगन के सब ही की किसमत का जवाब तकरीबन एक ही होगा।

2) इल्म सामुद्रिक में 12 साला या नाबालिग बच्चे की रेखा का इतबार नहीं गिनते।

ऊपर के दोनों वहमों का जवाब दोनों इल्मों की कुण्डलियों के मिल जाने पर दूर होगा। लेकिन हो सकता है कि आखिर पर वो कुण्डलियां किसी तरह भी न मिलें। ऐसी हालत में दोनों का गलत समझ लेना मुनासिब न होगा। फर्क ये होगा कि इल्म जोतिष वाली कुण्डली ने सिर्फ इस शख़्स का जाती हाल बोला तो हस्त रेखा की कुण्डली इस बच्चे की गुजसता पुशतों का हाल बतायेगी। यानि अगर उस हसत रेखा वाली कुण्डली के जवाब उस शख़्स से न मिलें तो उसके बाप (1) बाबे (2) दादे (3) जरूर जा मिलेंगे। ऐसी हालत में पितृ या मातृ ऋणों की वजह फर्क का सबब होगा। मगर कुण्डली गलत न समझी जायेगी। इसलिये ऐसे इल्म जोतिष /हस्त रेखा वाले टेवे के लिये सबसे पहले ऋण का उपाय करें। इस फर्क का ये मतलब न लेवें कि दोनो इल्म की कुण्डलियों पर नजरसानी ही न की जावें कि फर्क क्या है। लेकिन मकसद ये है कि चंद देख भाल की और फिर भी फर्क ही रहा तो ऊपर का इलाज मददगार होगा। मगर जरूरी बात तो ये होगी कि फर्क निकाल ही लिया जावे।

किसमत का हाल बमूजब फरमान लाल किताब

आप का शुभ नाम व मुस्तकिल पता..
पैदाइश (जनम वक्त)...........................जनम
दिन..................तारीख...............महीना..................साल
संवत..................पक्ष ....दिनमान....................मुताबिक बहिसाब
अंग्रजी जनम वकत...तारीख महीना सन
ईसवी...तलुवा आफताब...........गरूब
आफताब................मुकाम
पैदाइश..तारीख तहरीर.............. आज
उम्र जारी है.....................साल.....................

इल्म जोतिष की जनम कुण्डली

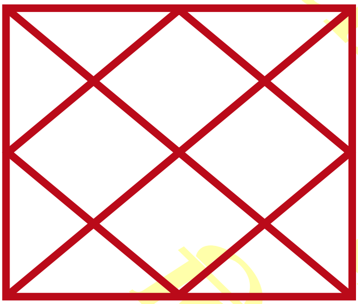

(बामुजिब जंत्री या पत्रिका)

चंद्र कुण्डली

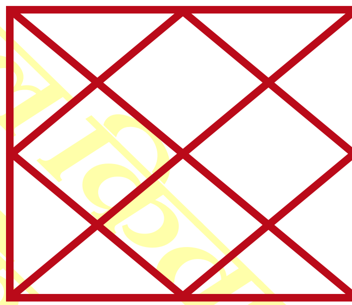

दायां हाथ

बायां हाथ

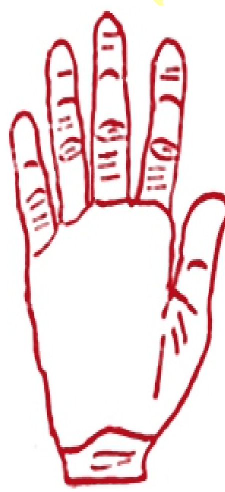

12 खानों के मुताबिक
मोटी मोटी बातों के लिये
अरमान सफ़ा 103 से
108 माली हालत
अरमान नंबर 59 से 62
ख़ुशी गमी अरमान 55/56
औलाद अरमान 115/119
शादी अरमान156 से 160
पेशा कारोबार अरमान
16-17
मकान अरमान 50 से 55
व 192
सेहत बीमारी अरमान
197/198, उम्र अरमान
195/197 व ला.की. सफ़ा
316 ता 321

ला.की. सफ़ा 124-127 हस्त रेखा से जनम कुण्डली की खानापूरी अरमान सफ़ा 107

व 133 ता 142 व 250 ता 254

ग्रह	हाथ पर निशानी	ख़ाना नंबर होगा	ग्रह	हाथ पर निशानी	ख़ाना नंबर होगा
बृहस्पत			बुध		
सूरज			सनीचर		
चंद्र			राहु		
शुक्र			केतू		
मंगल नेक			मंगल बद		

"ला.की. में फरमान नंबर 181 के मुताबिक वही"

इल्म जोतिष की जनम कुण्डली

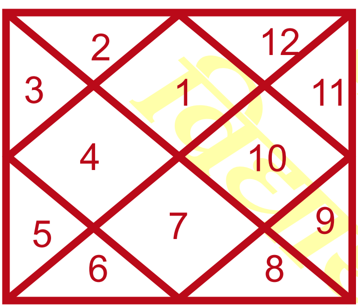

आखरी चंद्र कुण्डली

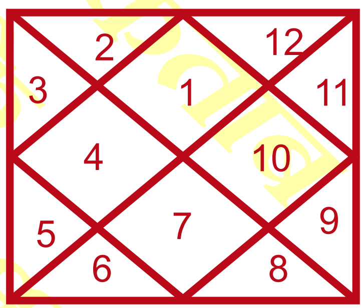

हस्तरेखा से कुण्डली

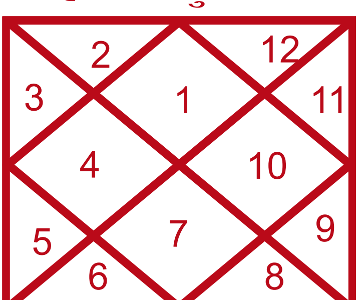

फालतू चंद्र कुण्डली

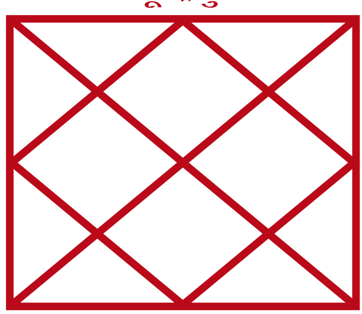

ग्रहों की जांच भाल

	बमुजब जन्म कुंडली	बमुजब चन्द्र कुंडली
अपने घर में महदूद या बंद पङा हुआ :-		
अरमान सफ़ा 10		
ऊंच ग्रह ला.की. सफ़ा 114		
घर के ग्रह ला.की. सफ़ा 114		
पक्के घर के ग्रह ला.की. सफ़ा 97		
नीच ग्रह ला.की. सफ़ा 114		
मंदे ग्रह अरमान सफ़ा 21		
निरपक्ष ग्रह अरमान सफ़ा 24		
जागते ग्रह अरमान सफ़ा 17		
सोये ग्रह अरमान सफ़ा 17		
जागते ग्रह अरमान सफ़ा 17		
सोये घर अरमान सफ़ा 17		
पहले घरों के ग्रह अरमान सफ़ा 23		
बाद के घरों के ग्रह 23		
साथ लाये खजाने सफ़ा 2		
हकीकियों से लेगा सफ़ा 2		
गैरों से लेगा सफ़ा 2		

हर ग्रह का सुभाओ

ग्रह	बमूजब जनम कुण्डली	बमूजब चंद्र कुण्डली	ग्रह	बमूजब जनम कुण्डली	बमूजब चंद्र कुण्डली
बृहस्पत	112-121 ता 125 132-170 जुज 11		बुध	178 ता 185	
सूरज	133 ता 138, 179 (8-10)		सनीचर	191 ता 195, 179(9)	
चंद्र	70-71-144 ता 148, 36, 179-7		राहु	202 ता 206, 179(5)	
शुक्र	145-156, 179(6)		केतू	209 ता 216, 179 (2 ता 4)	
मंगल नेक	166 ता 170		मंगल बद	173 ता 176	

वर्षफल का राजा हुकमरान   अरमान सफ़ा 92 ता 94

6 साल बृहस्पत	2 सूरज	1 चंद्र	3 शुक्र	6 मंगल	2 बुध	6 सनीचर	6 राहु	3 केतू

उम्र के कौन कौन से साल में किस किस ख़ाना नंबर के ग्रह बोलेंगे(अरमान सफ़ा 94)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

आम धोके के ग्रह उम्र में साल ब साल (अरमान नंबर 82 ता 86)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120

नाबालिग टेवा   अरमान सफ़ा 19

उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ख़ाना	7	4	9	10	11	3	2	5	6	12	1	8

दरम्यानी ग्रह (हर ग्रह - राजा हुक्मरान)अरमान सफ़ा 79

दौरा होवे	बृहस्पत	सूरज	चंद्र	शुक्र	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	केतु
शुरू	केतू	सूरज	बृहस्पत	मंगल	मंगल	चन्द्र	राहु	मंगल	सनीचर
दरम्यान	बृहस्पत	चंद्र	सूरज	शुक्र	सनीचर	मंगल	बुध	केतु	राहु
आखरी हिस्सा	सूरज	मंगल	चन्द्र	बुध	शुक्र	बृहस्पत	सनीचर	राहु	केतु

महादशा में धोके के ग्रह की तरतीब अरमान सफ़ा 79 से 92

सूरज	चंद्र	केतू	मंगल	बुध	शनि	राहु	ख़ाना 8	ख़ाना 9	बृहस्पत	शुक्र	ख़ाना 12

और क्या है - सालवार हाल

(1) मुश्तरका खानदान का असर :-

1 बाप बेटे व दीगर रिश्तेदारों हकीकी (अपना ख़ून) के इस जगह नीचे ही दिये हुए सालाना नतीजों के मुश्तरका असर का फल खानदान मुश्तरका का ग्रहों व द्रुष्टी के ख़ाना नंबरों के हिसाब से सालवार हाल होगा। यानि अगर (अगले सफ़ा पर)

मायने :- 1. जो रिश्तेदार जिंदा न हों उसकी बजाये कुण्डली वाले का ख़ुद अपना ही ग्रह (रिश्तेदारों से मुतलका) होगा। रिश्ते में कई एक होने की हालत में बड़ा या उनमें पहला काबिले गिनती होगा।

उम्र का साल	वर्षफल का राजा		राशि नंबर वजीर		धोके का ग्रह	महादशा का ग्रह	दरम्यानी ग्रह	नतीजा
अज जन्म वक़्त	ग्रह	किस ख़ाना नंबर का	ग्रह	किस ख़ाना नंबर का	आम उम्र	ग्रह देगा	चलते होंगे	मुश्तरका
1				1				
2				1				
3				1				
4				2				
5				2				
6				2				
7				3				
8				3				
9				3				
10				10				
11				10				
12				10				
13				11				
14				11				
15				11				
16				12				
17				12				
18				12				
19				4				
20				4				
21				4				
22				5				
23				5				
24				5				
25				6				
26				6				
27				6				
28				7				
29				7				
30				7				

और क्या है - सालवार हाल

बृहस्पत (बाबा) सूरज (ख़ुद) चंद्र (माता) शुक्र (स्त्री) मंगल (भाई) बुध (बहिन) सनीचर (हम उम्र रिशतेदार। उम्र में तो बराबर मगर रिशतेदारी में पुश्त या पुश्तों का फर्क) राहु (ससुराल) केतू (लड़का) गिने जावें तो बाबे का नतीजा

उम्र का साल	वर्षफल का राजा		राशि नंबर वजीर		धोके का ग्रह	महादशा का ग्रह	दरम्यानी ग्रह	नतीजा
अज जन्म वक़्त	ग्रह	किस ख़ाना नंबर का	ग्रह	किस ख़ाना नंबर का	आम उम्र	ग्रह देगा	चलते होंगे	मुश्तरका
31				8				
32				8				
33				8				
34				9				
35				9				
36				9				
37				1				
38				1				
39				1				
40				2				
41				2				
42				2				
43				3				
44				3				
45				3				
46				10				
47				10				
48				10				
49				11				
50				11				
51				11				
52				12				
53				12				
54				12				
55				4				
56				4				
57				4				
58				5				
59				5				
60				5				

और क्या है - सालवार हाल

लिखेंगे जहां कि कुण्डली वाले का बृहस्पत है। माता का जहांकि चंद्र। वगैरह वगैरह। सूरज दोबारा न होगा। क्योंकि वो ख़ुद अपना है।

(2) अपने से सातवें का हाल :- सूरज (ख़ुद अपना आप) को दरम्यान

उम्र का साल	वर्षफल का राजा		राशि नंबर वजीर		धोके का ग्रह	महादशा का ग्रह	दरम्यानी ग्रह	नतीजा
अज जन्म वक़्त	ग्रह	किस ख़ाना नंबर का	ग्रह	किस ख़ाना नंबर का	आम उम्र	ग्रह देगा	चलते होंगे	मुश्तरका
61				6				
62				6				
63				6				
64				7				
65				7				
66				7				
67				8				
68				8				
69				8				
70				9				
71				9				
72				9				
73				1				
74				1				
75				1				
76				2				
77				2				
78				2				
79				3				
80				3				
81				3				
82				10				
83				10				
84				10				
85				11				
86				11				
87				11				
88				12				
89				12				
90				12				

और क्या है - सालवार हाल

और तीन पुशत ऊपर की तरफ और तीन नीचे की तरफ गिन कर अपने सातवें का हाल सालाना होगा। बाप बेटे में (अरमान नंबर 57) बुध की खास नाली (अरमान नंबर 162) बालिग शुक्र और नाबालिग बुध होगा।

उम्र का साल	वर्षफल का राजा		राशि नंबर वजीर		धोके का ग्रह	महादशा का ग्रह	दरम्यानी ग्रह	नतीजा
अज जन्म वक़्त	ग्रह	किस ख़ाना नंबर का	ग्रह	किस ख़ाना नंबर का	आम उम्र	ग्रह देगा	चलते होंगे	मुश्तरका
91				4				
92				4				
93				4				
94				5				
95				5				
96				5				
97				6				
98				6				
99				6				
100				7				
101				7				
102				7				
103				8				
104				8				
105				8				
106				9				
107				9				
108				9				
109				1				
110				1				
111				1				
112				2				
113				2				
114				2				
115				3				
116				3				
117				3				
118				9				
119				9				
120				9				